॥ ओ३म् ॥

सार्व-भौम आर्य डाईरेक्टरी

(सं० १९९१ विक्रमी के तिथि-पत्र सहित)

सम्पादक—लक्ष्मण आर्य्योपदेशक

मिलने का पता—

प्रकाशक—१—आर्य्य साहित्य पुस्तकालय (आर्य्य होटल), लाहौर
२—आर्य्य पुस्तकालय, सरस्वती आश्रम, लाहौर
३—नेशनल बुकडिपो, नई सड़क, देहली

२०००] [मूल्य ।।।)

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ (यजु० अ० १, मं० ३)

धर्म तथा पवित्रता का फैलाने वाला आर्य समाज रूपी यज्ञ शतशः एवं सहस्रशः शाखा उपशाखा सहित देदीप्यमान है। समस्त ब्रह्माण्ड की गति तथा प्रत्येक व्यवहार का यथार्थ मार्ग दर्शाने वाला वेद सूर्य्य भी सत्य विद्या तथा निश्चित सिद्धान्त रूपी रश्मियों के साथ उदय हो चुका है। प्रकाश स्वरूप परमात्मा मनुष्य मात्र के बुद्धि तथा आत्म नेत्रों को प्रकाशित करे, जिससे वह भले प्रकार समझ सकें कि कौन २ सा उपकार वह जगतोद्धारक समाज से और कौन २ सी विद्या किस २ प्रकार किस २ अवस्था से विद्याके भंडार वेद में पाकर कृतकृत्य होसकते हैं।

मुद्रक—लाहौर [illegible] देहली।

विषय सूची

जंत्री

विषय	पृष्ठ
वेद में सर्व सत्य विद्या	१
१३ मास के पत्र	१०-२५
ज्ञान पुष्पांजली	१०
नक्षत्र तथा राशि	१८
सृष्टि सम्वत्	१९
प्रान्तकाल या महाकल्प	२१
शिक्षादायक वचन	२४
आर्य्यों के यज्ञ तथा पर्व	२६
वर्तमान प्रचलित सम्वत्	२७
आ० स० की विशेष घटनायें	२८
विदेशों में भारतीयों की संख्या	३१

डाईरैक्टरी

विषय	पृष्ठ
सार्वभौम आ० डाईरेक्टरी	१
आर्य्य समाज का परिचय	२
आ० प्र० नि० सभा, सार्वदेशिक सभा	१०
आ० प्र० नि० सभा पंजाब	११
,, ,, संयुक्तप्रान्त	१२
,, ,, राजस्थान	१३
,, ,, मध्यप्रदेश	१४
,, ,, बम्बई	१४
,, ,, बिहार	१४
,, ,, बंगाल	१५
,, ,, मद्रास	१५
,, ,, निज़ाम स्टेट	१५
,, ,, बर्मा	१५
,, ,, सिन्ध	१५
आ० उ० प्र० नि० सभा	१६
प्रचार मण्डल	१७
विविध संस्था	१८
उपदेशक विद्यालय	२१
आ० स० के उपदेशक	२३
विद्या सभायें	२७
गुरुकुल	२९
कन्या गुरुकुल	३७
आर्य्य कालिज	३८
आर्य्य स्कूल	४०
आर्य्य पाठशाला	४६
स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी संस्थायें	४८
आर्य्य पुत्री पाठशाला	४८
विधवा रक्षा सम्बन्धी संस्था	५३
आर्य्य अनाथालय	५४
,, औषधालय	५८
आश्रम	५९
लाइब्रेरी आदि	६१
आर्य्य पुस्तक विक्रेता	६४
आर्य्य समाचार पत्रादि	६२
शुद्धि सभा	६४
दलित तथा अछूत उद्धार	३०
आर्य प्रेस	७०
कान्फ्रेंस	७१
आर्य्य डिबेटिंग क्लब	७३
शास्त्रार्थ	७४
आर्य्य वीर दल	७५
मुतफ़र्रिक संस्था	७६
भारतवर्ष के आर्य्य समाज	७७
देहली व पंजाब प्रान्त के आ० स०	७७
पंजाब की देशी रियास्तों आर्य्य सभा	८८
सिन्ध	९०
संयुक्त प्रान्त	९१
राज स्थान	१०१
बिहार उड़ीसा	१०२
बङ्गाल	१०३
बम्बई, मद्रास	१०४
ब्रह्मा	१०५
निज़ाम स्टेट	१०५
आर्य्य कुमार सभा	१०६
आर्य्य स्त्री समाज	१०७

विदेशों में आर्य्य समाज

विषय	पृष्ठ
सार्वभौम आर्य्य डाइरेक्टरी और विदेशों के आर्य्य पुरुषों से निवेदन	१११
बृटिश पूर्वीय अफरीका	११३
दक्षिणीय अफरीका	११९
मोरीशस	१२१
फिजी द्वीप	१२६
डच गायना	१२८
बृटिश गायना	१२९
ट्रिनी डाड, लंका, बैंकांग	१३०
सिंहापुर, मलाया स्टेट	१३१
सुमात्रा टापू, बग़दाद	१३१
लन्दन, जर्मनी, मिश्रित	१३२
नि० आ० श० महोत्सव अजमेर	१३३

वेद में सर्व सत्यविद्या पूर्णरूप से विद्यमान हैं

(विशेष भ्रम मूलक आक्षेपों का निराकरण)

(मत मतान्तरों के साथ वैदिक धर्म का कितने ही विषयों में मत भेद प्रसिद्ध है और अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ होते हैं परन्तु सब मत भेद को निर्मूल करने वाला एक ही विषय सत्य विद्या सम्बन्धी मूल रहस्य को समझना है अतः आर्य्य मात्र को इस महत्वपूर्ण लेख को ध्यान पूर्वक पढ़ना और उसका मनन तथा निदिध्यासन करना चाहिये)

ईश्वरीय ज्ञान और मानवीय विद्या में क्या भेद है इसे न समझने से वेद के यथार्थ महत्व का अनुभव करना सर्व साधारण के लिये अति कठिन हो रहा है। महर्षि दयानन्द के कथनानुसार ज्ञान की दृष्टि से परमात्मा सूर्य्य है और मनुष्य का आत्मा उस ज्ञान को ग्रहण करने के लिये नेत्रवत है। परन्तु वर्तमान स्थूलदर्शी पुरुष मनुष्यों के विचारों को ही ईश्वरीय ज्ञान मान रहे हैं। वैदिक ऋषियों का सिद्धान्त है कि मनुष्य समाधिस्थ होने पर ही आत्मिक नेत्रों से यथार्थ ज्ञान के दर्शन पाता है। इस से इतर अवस्था में उसका सम्बन्ध केवल स्मृति या संस्कारों से होता है। इसीलिये ऋषि कृत ग्रन्थों को भी स्मृति कहते हैं। ईश्वरीय अथवा यथार्थ ज्ञान एक रस परिवर्तन एवं देश काल के बंधन से रहित है परन्तु मानवीय ज्ञान देश काल अवस्था आदि के निमित्त से बदलता रहता है। जब तक इस भेद का अनुभव नहीं होगा वेद की विशेषता का बोध भी न हो सकेगा।

एक और भ्रान्ति आर्य्यों में भी मौजूद है। ऋषियों ने बीज और वृक्ष का दृष्टान्त केवल इस लिये दिया था कि वैदिक शब्दों के यौगिक होने से उनके प्रकरणानुसार अनेकार्थ होने तथा उनके विस्तृत सम्बन्ध की योग्यता आदि को मनुष्य भले प्रकार जान सकें परन्तु वर्तमान काल में इस का यह आशय समझा जा रहा है कि वेद में बीज की भांति ज्ञान है और मनुष्य ने अपने पुरुषार्थ से उसे वृक्ष का रूप दिया है। परन्तु यह सर्वथा असत्य है। यथार्थ ज्ञान वेद में सर्वांग पूर्ण रूप से विद्यमान है, मनुष्य न ज्ञान को ईजाद कर सकता है न उस की व्याख्या या विस्तार। यथार्थ ज्ञान मौलिक सिद्धान्त तथा व्याख्या रूप में सब वेद में मौजूद है। हां उसका प्रयोग भिन्न २ निमित्तों से भिन्न २ रूप में दिखाई देता है। इल्मी उसूल वही है और सदा ज्यों का त्यों है। विभिन्नता केवल निमित्त भेद से है। और इस अवस्था में उसका नाम यथार्थ ज्ञान नहीं रहता तारीख़ जुग़राफ़िया आदि होता है। उदाहरण रूप से एक नियम सत्य भाषण को लीजिये। धर्मोपदेश, गृह कार्य, व्यापार व्यवहार हिसाब किताब आदि में यथार्थ विषय का प्रकाश

कितने भी भिन्न २ प्रकार से क्यों न हों, मौलिक नियम केवल सत्य भाषण ही है। राजा हरिश्चन्द्र के जीवन, अथवा राम वा किसी अन्य महापुरुष के इतिहास में इसे देखें तो सैकड़ों पृष्ठों में सार नियम केवल सत्य भाषण वा प्रतिज्ञा पालन ही दिखाई देगा और यह नियम किसी मनुष्य की नहीं ईश्वरीय सम्पत्ति है।

रही बात व्याख्या की इस विषय में भी यह बात ध्यान में रहनी चाहिये कि सिद्धान्त रूप से जो व्याख्या होनी चाहिये उसके बिना कोई विषय आत्मा वा बुद्धि से ग्रहण हो ही नहीं सकता अतः मौलिक सिद्धान्त और व्याख्या भाग दोनों यथार्थ ज्ञान के अन्तर्गत हैं। इस के उदाहरण रूप में नियोग को लीजिये जिसे आज कल के मतवादी पक्षपात और अविद्या के कारण अति भयंकर रूप में जनता के सामने रखते हैं। समझा यह जाता है कि इस विषय में जो कुछ स्वामी दयानन्द ने लिखा है वह मनु या अन्य विद्वानों या स्वामी जी की अपनी तरफ से है वेद में यह व्याख्या नहीं। परन्तु यथार्थ यह है कि क्या मनु और क्या दयानन्द सब ने वेद की ही व्याख्या का उल्लेख मात्र किया है। वेद में स्त्री पुरुष के सम्बन्ध में नियम बताए हैं कि (१) उनका समागम सन्तानोत्पत्ती के उद्देश्य से होता है। उनमें परस्पर के न्याय व्यवहार तथा आरोग्यता की दृष्टि से विवाह सम्बन्धी नियम प्रकाशित करके उन्हें कुंवारे और कुंवारी पर लागू किया तो दूसरी तरफ़ विधवा और देवर के नियोग की आज्ञा दी। स्वामी दयानन्द ने मनु आदि के प्रमाण से १० तक नियोग का विधान बताया परन्तु वास्तव में यह अथर्ववेद कांड ५ के सूक्त १६ में अति स्पष्ट रूप से उपस्थित है। नियोग विषय का प्रकरण इस सूक्त से पूर्व भी है और इसके पश्चात भी परन्तु १० तक नियोग तथा १० तक सन्तान उत्पन्न करना विशेष रूप से इस सूक्त के ११ मन्त्रों में है।

यद्येक वृषोसि सृजो रसोसि--१--यदि द्विवृषोसि सृ०—२—इत्यादि १० मन्त्रा के पश्चात ११ वां मन्त्र है:—**यद्येकादश वृषोसि सोपोदकोसि ॥**

अर्थात् एक वृषा, दो वृषा ऐसे ही तीन चार और दस वृषा तक तो सन्तानोत्पत्ति का व्यवहार कल्याणकारी है परन्तु ११ वृषा होने पर वीर्य्य क्षीण, दुर्बल निस्तेज आदि होता है पहिली वार जिस पुरुष ने गर्भाधान संस्कार किया हो वा जिस स्त्री ने गर्भ धारण किया हो अथवा जो बालक पहिले समागम में पैदा हुआ हो उन सब को एक वृषा कह सकते हैं। इसी प्रकार जिस रंडवे पुरुष ने किसी विधवा से नियोग द्वारा तीसरी वार समागम किया हो त्रिवृषा कहलाता है और वह विधवा सन्तानोत्पत्ति करने के कारण द्विवृषा इत्यादि।

इन मन्त्रों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि न केवल १० तक औलाद पैदा करने का वेद में स्पष्ट विधान है मनु, और दयानन्द से अधिक व्याख्या भी मौजूद है। मनुष्य व्याख्या कर ही क्या सकता है। अधिक से अधिक २-३ शब्द विवाहित, दुहेजू त्रिहेजू के रक्खे, जिससे तीसरी बार तक के सन्तान की संज्ञा का बुरी-भली तरह बोध हो सकता है, १० तक की संज्ञा कहीं किसी भी मत में नहीं मिलती। ऐतिहासिक

ग्रन्थों में किसी व्यक्ति के साथ किसी विषय का लम्बा वर्णन देखकर उसे ज्ञान समझना केवल अविद्या है। मूल विद्या एक क्या असंख्यात इतिहासों में उतनी ही है, जितनी वेद ने कही है।

गणित ज्योतिष सत्य और फलित सर्वथा मिथ्या है।

पूर्व लेख में जो वेद में व्याख्या पूर्ण मौलिक सिद्धान्त होने का संकेत मात्र वर्णन किया है उसे पढ़कर प्रत्येक पाठक सुगमता से आर्य्य समाज की ज्योतिष विद्या सम्बन्धी पोज़ीशन को समझ सकता है। महर्षि दयानन्द ने फलित ज्योतिष का युक्त रीति से निषेध किया तथापि सारी जन्त्रियों में अभी तक फलित ज्योतिष के आधार पर बड़ा भारी भ्रम जाल फैलाया जा रहा है और आर्य्य समाज इसे हटाने का कोई उपाय नहीं करता। ज्योतिष विद्या केवल सूर्य्य, चाँद, नक्षत्रादि ज्योतियों अथवा चमकने वाले लोकों से सम्बन्ध रखती है और इन ज्योतियों के विषय में जो कुछ ज्ञान मनुष्य को हो सकता है, उसका आधार केवल

गणित विद्या

पर है, इसी लिये इसका नाम गणित ज्योतिष है। मनुष्यों को जो सुख दुःख रूप फल मिलता है, उसका आधार उनके अपने भले-बुरे कर्म हैं, न कि जड़ नक्षत्रादि लोक। इतने नियम को समझने वाला कोई भी मस्तिष्क कभी स्वीकार नहीं कर सकता, कि फलित ज्योतिष कोई सार वा यथार्थ विद्या है। परन्तु, हायरी अविद्या! तूने करोड़ों भारतवासियों को इस भ्रम एवं पाखण्ड जाल में फँसाकर उन्हें पुरुषार्थ-हीन कर रक्खा है। यहाँ प्रसङ्ग वश यह स्पष्ट करना आवश्यक है, कि वेद में ज्योतिष विद्या भी पूर्ण रूप से विद्यमान है। इसमें एक नियम तो आकर्षण का है। वेद के अनेक मन्त्रों में सूर्य्य, चन्द्र आदि लोकों के परस्पर के आकर्षण सम्बन्ध को वर्णन किया गया है, दूसरा नियम है, गरदिश करने वा घूमने का। सूर्य्य के गिर्द तथा अपने महवर पर पृथिवी के घूमने को वर्तमान पदार्थ तथा भू गर्भ विद्या के जानकार एक स्वर होकर मान रहे हैं और हमें जो विषय यहाँ लक्ष्य है, उसमें आकर्षण आदि सम्बन्धी कोई मतभेद नहीं, अतः इन नियमों को छोड़कर हम केवल तीसरे नियम गणित को लेते हैं। सब लोक नियत मार्ग वा गति रखते हैं, उनकी गति का ज्ञान ही उस सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान प्रभु के अद्भुत ज्ञान और शक्ति का बोध कराता है। इसीसे ज्ञात होता है, कि कौनसा तारा किस समय किस स्थान पर है। सूर्य्य-ग्रहण कब लगेगा, चाँद-ग्रहण कब होगा इत्यादि। वेद में ज्योतिष विद्या के पूर्ण रूप से विद्यमान होने की सिद्धि के लिये पहिली आवश्यक बात यह है, कि वेद में गणित विद्या का पूरा पूरा होना सिद्ध किया जावे। इसके लिये **पहिला नियम** ९ तक की इकाइयों का है, उनका वर्णन वेद में अति सुन्दर रूप से है, अथर्ववेद के मन्त्रों में इस प्रकार है।

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते ॥६॥ न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते ॥७॥

नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते ॥८॥ तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव ॥९॥ सर्वे अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति ॥१०॥

परमेश्वर एक है, एक है, एकही है, ऐसा कहने से जहाँ पूरे बल से सच्ची तौहीद का डंका बजाया गया है, वहाँ २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ ईश्वर न होने का निषेध करके एक की व्यापकता और ९ तक की इकाइयों का ज्ञान दिया है जो गणित की आधार शिला है।

दूसरा नियम गिनती के दर्जों दहाई, सैंकड़ा, हज़ार आदि का है, उनके लिये यजुर्वेद अध्याय १७ का मन्त्र २ मौजूद है।

एकं दश शतं चैव सहस्रमयुतं तथा। लक्षं च नियुतं चैव कोटिरर्बुदमेव च॥१॥ वृन्दः खर्वो निखर्वश्च शंखः पद्मं च सागरः। अन्त्यं मध्यं परार्द्धं च दशवृद्ध्या यथाक्रमम् ॥२॥

लीलावती की प्रसिद्ध एवं प्रामाणिक गणित पुस्तक में इसी का उल्लेख इस प्रकार है।

एकदशशत शतं सहस्रायुत लक्ष प्रयुतकोट्याः क्रमशः। अर्बुदमन्तं खर्वं निखर्वं महापदम शंख सस्तस्मात्। अन्त्यं मध्यं परार्द्ध श्चैता दश गुणोत्तरं संज्ञा व्यवहारार्थे कृता पूर्वैः॥

यह निर्विवाद है, कि वर्त्तमान गणित विद्या में मनुष्य जाति ने लीलावती के द्वारा ही वेद की गणित विद्या को लिया है।

तीसरा नियम जमा, तफ़रीक़, जरब और तक़सीम के चार नियमों का है। इसमें मुख्य जमा करना या बढ़ाना है। एक बार जमा करने के लिये तो इकाइयों में ही बुनियाद है, एक में एक जमा करने से २ और इसी प्रकार ३, ४ आदि बनते हैं। इसको और स्पष्ट करने के लिये २, २ बढ़ाकर समझाया जा सकता है, सो यजुर्वेद अध्याय १८ मन्त्र २४ से यही आशय पूरा होता है।

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मे एकादश च मे एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पंचदश च मे पंचदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मे एकविंशतश्च मे एकविंशतिश्च मे त्रयाविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे पंचविंशतिश्च मे पंचविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे एकत्रिंशच्च मे एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥

इस मन्त्र में एक पर दो बढ़ाने से ३ और इसी प्रकार ५-७-९-११-१३ आदि का हासिल होना बताया है और यदि उल्टा चलें तो घटाने का नियम आप से आप सिद्ध होता है। ३३ में से २ कम किये तो ३१ रहे इसी प्रकार २९-२७-२५-२३ इत्यादि।

परन्तु यह एक बार घटाना बढ़ाना है अनेक बार घटाने बढ़ाने के लिये गुणा और

विभाग के नियम हैं उनका आधार पहाड़ों पर होता है और वह यजुर्वेद अ० १८ के २५ मन्त्र में ४ का पहाड़ा बताकर समझाया गया है:—

चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च मे विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मेऽष्टावि शतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे द्वात्रिꣳशच्च षट्त्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मेऽष्टचत्वारिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥

एक बार और ४ में ४ बढ़ाए तो दो बार के ८ हुए इसी प्रकार तीन बार के १२ और ४ बार के १६ इत्यादि। इसी को यूँ लिखा जायगा १×४=४, २×४=८, ३×४=१२, ४×४=१६ इत्यादि और इसी से उल्टा चलते हुए सिद्ध होता है कि ४८ में से ४ कम करते जायें तो १२ बार कम होगा, ४४ में से ११ बार और ४० में से १० बार यही विभाग का नियम है। ४८÷४=१२, ४४÷४=११। संख्या के जो दर्जे ऊपर बताए उन से भी यह चारों नियम स्पष्ट तौर पर ज्ञात हो रहे हैं एक पर एक बढ़ाता जाने से ९ इकाइयों तक पहुंचे तो ९ पर एक बढ़ाने से १० वा दहाई का दर्जा बना। उस पर फिर एक-एक बढ़ाने से १९ पर पहुंच कर एक बढ़ाया तो २० हुआ अर्थात् एक बार १० पहिले और दूसरी बार १० अब मिले तो १०×२=२० हुआ। इसी प्रकार तीसरी बार करने से ३०-४० इत्यादि हुए। ९० पर पहुंच कर इकाइयों को बढ़ाया तो ९९ हुए और उस पर एक जोड़ने से १०० अर्थात १०×१० हुए। इसी प्रकार १०० को दस बार जोड़ने से हज़ार का और सौ बार जोड़ने से १० हज़ार का दर्जा बना इत्यादि। परन्तु इन दर्जों में इन नियमों के विद्यमान होने पर भी वेद ने २-२ बढ़ाने घटाने तथा ४ का पहाड़ा बता कर समझाया तो यह गणित की पूरी व्याख्या होने का ही प्रमाण है। प्रतिपक्षी शङ्का कर सकता है कि हिसाब में जो कसर आम और कसर आशारिया के नियम हैं वह इन में कहाँ है। परन्तु यह भ्रान्ति मात्र है। कसर आम भी विभाग नियमों के अन्तर्गत है। एक को ४ पर विभक्त किया तो $\frac{१}{५}$ बना। इस १ हिस्से की जगह २-३-४ लिये तो $\frac{२}{५}$, $\frac{३}{५}$, $\frac{४}{५}$ हुए इसीप्रकार २०) रुपये यदि ५० मनुष्यों में बाँटने हों तो $\frac{२०}{५०}$ और २३ में बांटने हों तो $\frac{२०}{२३}$ लिखा जायगा। कसर आशारिया भी केवल इसी का रूपान्तर है जहाँ १०-१० गुणा करने से दहाई, सैंकड़ा, हज़ार आदि के दर्जे बनते हैं वहाँ १०-१० बार विभाग देने पर उल्टे दर्जे हो सकते हैं १ को १० पर विभक्त किया और $\frac{१}{१०}$ के स्थान में शून्य देकर उसे जताया तो .१ हुआ, १०० पर विभाग हुआ तो .०१ और हज़ार की अवस्था में .००१ इत्यादि। इस पर अधिक विचार करने पर स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि नियम तो वही है केवल उन को लेख द्वारा प्रयुक्त करने में भिन्न भिन्न प्रकार के संकेत वा चिह्नों से काम लेने का नाम भिन्न भिन्न रखा गया है। यहाँ एक रहस्य पूर्ण शास्त्रार्थ का स्मरण आता है जो—

स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द जी और पादरी ज्वालासिंह जी

में मुक्ति से पुनरावृत्ति विषय पर हुआ था। स्वामी जी ने युक्ति दी कि एक किनारे का दरिया नहीं होता, अतः मुक्ति में जाना होगा, तो लौटता भी होगा। पादरी साहब ने फ़रमाया। आपने यह बात बिना समझे कह दी है, स्कूल के आठवीं श्रेणी के विद्यार्थी से भी पूछा जाए, कि गिनती का अन्त क्या है? तो कहेगा कि आदि तो एक से है, पर अन्त कहीं नहीं, अर्थात् एक ईश्वर के निमित्त से मुक्ति का आदि तो है, परन्तु अन्त नहीं। स्वामी जी ने उत्तर दिया, मेरे भाई ने जो कुछ कहा सर्वथा असत्य है। एक किनारे का दरिया होना असम्भव है। एक पाँचवीं श्रेणी का विद्यार्थी भी जानता है, कि एक गिनती का आदि नहीं, किन्तु मध्य है। यदि एक तरफ़ एक से २, ३, १००, १००० हो जाते हैं, तो दूसरी ओर $\frac{१}{२}$, $\frac{१}{३}$, $\frac{१}{४}$, $\frac{१}{१००}$, $\frac{१}{१०००}$ होते जाते हैं और इस प्रकार जहाँ गिनती अनन्त है, वहाँ अनादि भी है, अतः दोनों किनारे सिद्ध हैं और चूंकि मुक्ति अनादि नहीं अतः अनन्त भी नहीं।

इस युक्ति को हमें अपने प्रति पक्षियों के लिये भी अकाट्य उत्तर समझते हैं, जहाँ १ को योग और गुणा के नियमों से बढ़ाया जाता और सैकड़ा, हज़ार, लाख आदि के दर्जे होते हैं, वहाँ दस, सौ या हज़ार पर विभाग करता जाने से, क़सर आम या आशारिया का नियम आपसे आप सिद्ध होना आवश्यक है।

एक और आक्षेप यह होता है, कि वेद में गणित विद्या सम्बन्धी तिजारत और सूद आदि के नियम कहाँ हैं। परन्तु हमारा उत्तर स्पष्ट है कि यह नियम सिद्धान्त रूप से गणित विद्या नहीं कहला सकते, हाँ गणित विद्या के मनुष्यों से प्रयोग किया जाने पर इनका प्रकाश हो सकता है, अतः यह मनुष्य के व्यवहारादि का नाम है, यथार्थ गणित विद्या इनका नाम नहीं, ऐसे अनेक नामों के नियम मनुष्य अपनी अपनी आवश्यकता अथवा अवस्था के अनुसार बना सकते हैं। ईश्वरीय ज्ञान में इस प्रकार के व्यवहार के लिये प्रेरणा अवश्य होनी चाहिये, और वह वेद के इन्हीं मंत्रों में "यज्ञेन कल्पन्ताम" के शब्दों में उपस्थित है। ईश्वर ने वेद में सब पदार्थों के नाम दिये। मनुष्य, पशु, पत्थर, वृक्ष, ईंट इत्यादि, काल के सम्वत्सर रात दिन आदि नपैने बताये, लम्बाई के नपैने गज़ आदि हैं। तोल के नपैने मन, सेर आदि हैं। इसी प्रकार रुपया, आना, पौंड शिलिङ्ग आदि मूल्यादि के नपैने हैं, भिन्न भिन्न प्रकार के कामों में भिन्न भिन्न प्रकार के नपैने से काम पड़ता है और एक ओर पदार्थों के नाम और गुण का ज्ञान दूसरी ओर भिन्न भिन्न प्रकार के नपैनों और शुभ कार्मों का ज्ञान पाकर मनुष्य उनसे अनेक प्रकार के व्यवहार करता है। अतः तिजारतादि मनुष्य के काम हैं ईश्वरीय ज्ञान इनका नाम नहीं। ईश्वर की ओर से जो प्रेरणा होनी चाहिये वह इस व्यवहार सम्बन्धी हर यंत्र के अन्त में 'यज्ञेन कल्पन्ताम' के शब्द देकर की गई है। अर्थात इन सब पदार्थों और इनके सम्बन्ध में दिये गए ज्ञान को ठीक २ व्यवहार में लाओ। यज्ञ शब्द के अर्थ में मनुष्य के सारे काम सम्मिलित हैं। देव पूजा, संगति करण और दान तीन अर्थ इसके

बताए हैं; परन्तु जगत का कोई भी काम इन तीन अर्थों से बाहर नहीं रहा। देव पूजा से तातपर्य एक ओर सब विद्वानों धर्मात्माओं, आप्त पुरुषों की सेवा, सुश्रूषा, उनसे विद्यादि श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति, इसी प्रकार ईश्वर रचित सकल पदार्थों तथा अग्नि वायु जलादि देवताओं को शुद्ध रखना और विद्वत्ता पूर्ण उनका सदुपयोग करना है। संगती करण से अभिप्राय मिलाना है। नुसखों में औषधियों की संगती, समुदायों में व्यक्तियों की संगती, पुस्तकों में क़ागज़ों की, लेखों में अक्षरों और शब्दों की, व्याख्यानों में विचारों की, गणित में इकाइयों की संगती (योग और गुणा) होती है। रहा दान उसका आशय देना या घटाना, या बांटना है। धन, विद्या, दर्शन, समय सब कुछ भिन्न भिन्न प्रकार से दिया जाता है। इससे सिद्ध है कि यज्ञ शब्द के अति विस्तृत अर्थों को ३ शब्दों में बन्द करके उपदेश दिया गया है कि कोई भी व्यवहार यज्ञ शब्द के अर्थ से बाहर नहीं रहता। और साथ ही यह भी शिक्षा मिलती है कि उपरोक्त गिनती, उसके दर्जों पहाड़ों तथा जमा तफ़रीक़ जरब तकसीम के नियमों को मनुष्य, पशु, ईंट पत्थर, फल, सिक्का आदि के साथ जोड़ कर काम में लाओ इसी व्यावहारिक प्रयोग को ही तिजारतादि नियम कहते हैं। अब यह समझना कुछ कठिन नहीं कि—

गणित ज्योतिष ही सत्य है।

वेद के छः अंग हैं उनमें से एक ज्योतिष शास्त्र है। सूर्य्य चांद आदि ज्योतियों के सम्बन्ध में गणित विद्या का प्रयोग होने से इस ज्योतिष को गणित ज्योतिष कहते हैं। ऋग्वेदादि भा० भू० में य० अ० १८ मं० २४-२५ की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि इन मन्त्रों में ईश्वर ने अंक, रेखा, बीज, गणितादि विद्याओं का प्रकाश किया है 'च' के वार वार आने से गणित का अनेक प्रकार का होना पाया जाता है पर चूंकि गणित विद्या ज्योतिष शास्त्र नाम वेदांग में मौजूद है इसलिये उसे यहां नहीं लिखते। हां यह जताना आवश्यक है कि ऐसे वेद के मन्त्र ही ज्योतिष शास्त्र में वर्णित गणित का मूल है। गणित विद्या सम्बन्धी उपरोक्त व्यापक नियमों को 'यज्ञेन कल्पन्ताम' के पवित्र उपदेश को लक्ष्य रखकर सूर्य्य चन्द्रमादि के व्यवहार में प्रयुक्त करने से गणित ज्योतिष ही सिद्ध हो सकता है। फलित ज्यौतिष का कहीं सम्बन्ध सिद्ध नहीं होता। मनुष्यों को जो सुख दुख आदि फल मिल रहे हैं उनका आधार उनके भले बुरे कर्म हैं जड़ नक्षत्र वा ग्रह मनुष्य को सुख दुख देने वाले नहीं। सूर्य्यादि लोकों के सम्बन्ध में एक नियम इन लोकों के परस्पर के आकर्षण का है और उसे भी आकृष्णेनादि मन्त्रों में वर्णन किया गया है। दूसरा नियम उनके सूर्य्य के गिर्द तथा अपने धुरे या महवर पर घूमने का है प्रत्येक लोक अपनी परिधि में नियत मार्ग (Orbit) पर सूर्य्य के गिर्द चक्कर लगाता है इसके भी प्रमाण स्वामी जी ने दिये हैं परन्तु हमारे इस लेख से उनका सम्बन्ध नहीं इसलिये हम तीसरे नियम अर्थात् गणित तक ही अपने लेख को सीमित रखते हैं। इस ब्रह्माण्ड में सूर्य्य चांद तारागणादि का छिद्र रहित सर्वांग पूर्ण अद्भुत नियन्त्रण उस सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान परमात्मा के अनन्त ज्ञान और सामर्थ्य का ज्वलन्त प्रमाण है सूर्य्य के गिर्द चक्कर लगाने वाला कोई

भी लोक अपने नियत मार्ग से तनिक भी इधर उधर नहीं हो सकता, एक इंच का हजारवां हिस्सा भी एक लोक का इधर उधर सरकना सारे ब्रह्मांड को ऊपर नीचे कर सकता है। इसी प्रकार उनके चक्कर की गति भी नियत है कभी एक आध इंच भी न्यून वा अधिक कोई लोक नहीं चलता इन नियमों को लक्ष्य रखकर साधारण बुद्धि का मनुष्य भी समझ सकता है कि मार्ग और गति की ऐसी निश्चित स्थिति में नक्षत्रों के विषय में गणित द्वारा यह जानना सुगम है कि कौनसा लोक किस समय किस स्थान पर होगा किस समय सूर्य्य और चांद के बीच में यह पृथिबी आकर चांद को सूर्य्य से प्रकाश मिलने में बाधक होगी अर्थात् चांद ग्रहण होगा और किस समय चाँद सूर्य और पृथिवी के बीच में आकर सूर्य ग्रहण का कारण होगा। साधारण से विद्यार्थी भी जानते हैं कि ५० मील की यात्रा करनी हो तो १० मील एक घण्टा में जाने वाली गाड़ी के द्वारा ५ घंटे में पूर्ण होगी। इसी प्रकार १०-१० मील पर पड़ाव बने तो ५० मील में पांच पड़ाव होंगे और पहिले घंटे में पहिला और चौथे में चौथा पड़ाव आएगा इसी प्रकार इन लोकों के सम्बन्ध में हिसाब ज्योतिष शास्त्र में बताया गया है।और सर्वज्ञ के अटूट नियमों के द्वारा प्रबन्ध होने से यह हिसाब भी सर्वथा ठीक २ लगता है। इसी के द्वारा सूर्य्य और चांद ग्रहण को जितना समय पहिले चाहें जाना जा सकता है और गणित विद्या में ज्योतिष में निपुण ज्योतिषियों की भविष्य वाणी ग्रहण के विषय में आज तक कभी असत्य सिद्ध नहीं हुई। मिनट और सैकंड तक सत्य सिद्ध होते हैं। सूर्य्य का गोलाकार बनाकर चांद पृथिवी आदि को लट्टू के रूप में उसके गिर्द घुमाकर हिसाब लगाया और समय बताया जाता है न केवल ग्रहण का समय इस भूगोल के भिन्न २ नगरों का परस्पर का नियत फासला जानकर कहा जाता है कि कितने मिनट और कितने सैकंड कहां २ ग्रहण दिखाई देगा इत्यादि। इन नियमों के अतिरिक्त ज्योतिष और कुछ नहीं और यह कहना कि अमुक लोक वा नक्षत्र अमुक ग्रह में होगा तो अमुक पुरुष को यह फल मिलेगा इत्यादि केवल पाखण्ड मात्र है यदि जड़ नक्षत्रादि के प्रभाव पर सुख दुख को माना जावे तो निर्विवाद रूप से माना गया कर्म और फल का नियम टूट जावे। राजा और न्यायालय की आवश्यक्ता न रहे। जीवात्मा शरीर द्वारा कर्म करता है और उसे ही दुख सुख का भान होता है अतः कोई ज्योतिषी जिसे आत्मा के सामान्य तथा विशेष गुणों का ज्ञान नहीं। किसी आत्मा के कर्मों का उसके संस्कारों का ज्ञान नहीं न यह ज्ञान है कि किस समय किसमें कौनसे संस्कार प्रबल हैं और किन कर्मों का क्या फल अथवा किन संस्कारों से किस तरफ़ प्रेरणा होती है वह प्रारब्ध के विषय में कह ही क्या सकता और जड़ ग्रहों में सामर्थ्य ही क्या है कि वह दुख या सुख दें। यही कारण है कि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाशादि में जन्म पत्रादि बनाने वालों का मखौल उड़ाया है जो विद्या शून्य निकम्मे तथा आलसी लोगों की मूर्खता से अनुचित लाभ उठाते हैं। कोई बुद्धि और विद्या रखने वालों पुरुष फलित ज्योतिष के पाखंड जाल का शिकार नहीं हो सकता न सामुद्रिक, रमल फ़ालनामा आदि के भ्रमजाल में फंस सकता है। इन सबके खण्डन के लिये एक साधारण सी युक्ति ही पर्याप्त है कि यदि फलित ज्योतिष कोई सार

विद्या है, तो क्यों आज तक कोई भी ज्योतिषी निश्चित रूप से किसी की प्रारब्ध के विषय में एक भी भविष्य वाणी ऐसी सच्ची नहीं कर सका, जैसी कि सूर्य्य चन्द्रादि ग्रहण के विषय में सदा से गणित ज्योतिष के ज्ञाता करते, और सच्चे सिद्ध होते आ रहे हैं। हमें शोक है, उन मनुष्यों की बुद्धि और प्रारब्ध पर जो नित्यप्रति देखते हैं, कि फलित ज्योतिषी फल बताते हुए कोई न कोई शब्द संदिग्ध कह जाते हैं और किसी भी ग्रह से दुःख मिलना हो, उसके निवारण के उपाय भी बताए जाते हैं, पर मूर्ख लोग विचार नहीं करते, कि क्या निश्चित सचाई किसी उपाय से यथार्थता को छोड़ सकती है ? ज्योतिषी को ब्राह्मणको हजार दान दो कितने मी प्रयोग करो सूर्य्य ग्रहण टल नहीं सकता, चाँद ग्रहण टल नहीं सकता, तब मनुष्यों की तक़दीर किस प्रकार पलट सकती है, यदि फलित कोई सत्य विद्या है ?

फलित ज्योतिष के मिथ्या होने का एक और प्रमाण यह है कि किसी भी प्राचीन आर्ष ग्रन्थ में इसका संकेत मात्र तक भी वर्णन नहीं। ब्राह्मण आरण्यक, श्रौत, गृह्य, सूत्र, निरुक्त आदि कहाँ महाभारत तक में भी इसका पता नहीं। ज्योतिषी को गणक कहते हैं और गणक गणना करने वाले को ही कह सकते हैं। बापुदेव शास्त्री के चेले अर्थात् प्रसिद्ध ज्योतिषी महामहोपाध्याय सुधाकर जी द्विवेदी अपनी पुस्तक गणक तरंगिणी में गणक शब्द को मुनीम या Accountant के अर्थ में लेते हैं। कुम्बा कोनम महाभारत सभापर्व अध्याय ५ श्लोक ७६ पृष्ठ ६ पर इस प्रकार है।

कच्चिदाय व्यये युक्ता सर्वे गणक लेखकाः अनुतिष्ठन्ति पूर्वाह्णे नित्यमायं व्ययं तव।

इसमें सर्वे गणक लेखकाः स्पष्ट तौर पर हिसाब किताब लिखने वालों के लिये आया हैं। जो आय व्यय का लेखा करते हैं। अंग्रेज़ी अनुवाद में इस श्लोक के लिये यह शब्द हैं। "Do the accountants and clerks employed by thee in looking after thy income and expenditure, always apprise thee every day in the forenoon of thy income and expenditure. अमरकोष तथा शब्दस्तोम महानिधि ताराचन्द तर्क वाचस्पती में ज्योतिषी के लिये गणक के साथ दैवज्ञ (तकदीर जानने वाला) का शब्द भी आया है परन्तु यह बहुत अल्प काल अर्थात् फलित ज्योतिष का पाखण्ड जाल चलने के पीछे की रचना है अतः इनका प्रमाण नहीं हो सकता। प्राचीन साहित्य सब एक स्वर होकर गणित ज्योतिष को सत्य मानता और फलित का न केवल प्राचीन साहित्य में ही निशान नहीं मिलता वर्तमान काल के पाश्चात्य फ़िलासोफर तथा पदार्थवेत्ता भी बड़े २ इजलास करकें व्यवस्था दे चुके हैं कि फलित ज्योतिष की कोई यथार्थ स्थिति नहीं यह केवल अविद्या की उपज और स्वार्थी लोगों का पाखण्ड जाल है।

सं० १९९१ चैत्र शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	मार्च	ऐल	उदय		अस्त	
२९	३०	१	शु.	२३	४	उ. भा.	३३	१७	शु.	३६	५८	२९	१५	१६	३	६	६	५	५४
२९	३५	२	श.	२१	९	रे.	३३	२०	ब्र.	३२	४७	३०	१६	१७	४	६	५	५	५५
२९	४०	३	र.	२०	३४	ऽश्व.	३४	१४	ऐं.	२९	३५	१	१७	१८	५	६	४	५	५६
२९	४५	४	चं.	२०	५८	म.	३७	६	वै.	२७	२५	२	१८	१९	६	६	३	५	५७
२९	५०	५	मं.	२२	५२	कृ.	४०	५३	धि.	२६	१६	३	१९	२०	७	६	२	५	५८
२९	५५	६	बु.	२५	५९	रो.	४६	४७	प्री.	२५	५८	४	२०	२१	८	६	१	५	५९
३०	००	७	बृ.	२९	५८	मृ.	५१	३२	ऽऽ	२६	३१	५	२१	२२	९	६	००	६	००
३०	५	८	शु.	३४	४१	ऽऽ	५७	५३	सो.	२७	३७	६	२२	२३	१०	५	५९	६	१
३०	१०	९	श.	४०	७	पु.	६०	००	शो.	२९	६	७	२३	२४	११	५	५८	६	२
३०	१५	१०	र.	४५	१६	पु.	४	२९	ऽगं.	३०	३४	८	२४	२५	१२	५	५७	६	३
३०	२०	११	चं.	५०	१०	पु.	१०	५३	सु.	३१	४६	९	२५	२६	१३	५	५६	६	४
३०	२५	१२	मं.	५४	६	ऽश्ले.	१६	३९	धृ.	३२	२९	१०	२६	२७	१४	५	५५	६	५
३०	३०	१३	बु.	५७	६	म.	२१	३२	शू.	३२	२५	११	२७	२८	१५	५	५४	६	६
३०	३५	१४	बृ.	५८	५०	पू. फा.	२५	२१	गं	३१	२८	१२	२८	२९	१६	५	५३	६	७
३०	४०	१५	शु.	५९	१८	उ. फा.	२७	५७	व.	२९	३०	१३	२९	३०	१७	५	५२	४	८

ज्ञान पुष्पाञ्जली

ओ३म्—ईश्वर का निज नाम है। अ, उ और म से मिलकर बना है। शेष सब नाम गौणिक हैं।

वेद—ईश्वरीय ज्ञान का नाम है जो मनुष्यमात्र के लिये कल्याणकारी है।

चारों वेद—ऋग्, यजु,साम, अथर्व वेद के चारों भाग हैं। ऋग् का अग्नि ऋषि,यजु का वायु ऋषि, साम का आदित्य, और अथर्व का अङ्गिरा ऋषि के आत्मा में प्रकाश हुआ।

वेद का उद्देश्य—मनुष्य कर्म उपासना ज्ञान विज्ञान को क्रमशः पूर्ण करके जीवन के चार फल धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कर सकें।

ऋग्वेद—इसमें १० मण्डल ८ अष्टक, ६४ अध्याय, ८५ अनुवाक १०३८ सूक्त, २०२४ वर्ग १०५८९ मन्त्र, १५३७९२ शब्द, ४३२००० अक्षर हैं इसमें त्रिष्टुप गायत्री आदि २० प्रकार के छन्द हैं।

यजुर्वेद—इसमें ४० अध्याय, १४ काण्ड, १९७५ मन्त्र हैं जिनमें ९०५२५ शब्द और १२३० छ हैं।

सामवेद—इसके दो भाग हैं जिनमें २९ अध्याय, ८७ साम और १०६४ मन्त्र हैं।

अथर्ववेदः—इस में २० काण्ड ३४ पाठक १११ अनुवाक ७३१ वर्ग और ५०४७ मन्त्र हैं।

वेद के मन्त्रः—मन्त्रों का सर्व योग १९४०४ है।

सम्वत् १९९१ वैशाख शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	अप्रैल	वैशाख	उदय		अस्त	
३१	५५	१	श.	५५	३	ऽश्व.	५४	३०	वि.	४८	१६	२८	१५	१४	२	५	३७	६	२३
३२	..	२	र.	५५	३०	भ.	५६	३९	प्री.	४५	५६	२९	१६	१५	३	५	३६	६	२४
३२	५	३	चं.	५७	२०	कृ.	६०	....	ऽऽ.	४४	३९	१	१७	१६	४	५	३५	६	२५
३२	१०	४	मं.	६०	...	कृ.		६	सौ,	४४	१०	२	१८	१७	५	५	३४	६	२६
३२	१५	४	बु.	०	२२	रो.	४	३९	शो.	४४	३७	३	१९	१८	६	५	३३	६	२७
३२	२०	५	बृ.	४	१६	मृ.	१०	१४	ऽगं.	४५	४०	४	२०	१९	७	५	३२	६	२८
३२	२५	६	शु.	९	१२	ऽऽ.	१६	२५	सु.	४७	१२	५	२१	२०	८	५	३१	६	२९
३२	३०	७	श.	१४	१६	पु.	२३	....	धृ.	४८	४६	६	२२	२१	९	५	३०	६	३०
३२	३५	८	र.	१९	२३	पु.	२९	२९	शू.	५०	९	७	२३	२२	१०	५	२९	६	३१
३२	४०	९	चं.	२४	१४	ऽश्ले.	३५	२९	गं.	५१	५	८	२४	२३	११	५	२८	६	३२
३२	४४	१०	मं,	२९	१	म.	४०	४०	वृ.	५१	१९	९	२५	२४	१२	५	२७	६	३३
३२	४८	११	बु.	३०	५७	पू.फा.	४४	४४	ध्रु.	५०	३८	१०	२६	२५	१३	५	२७	६	३३
३२	५२	१२	बृ.	३२	३६	उ. फा.	४७	३९	व्या.	४९	१	११	२७	२६	१४	५	२६	६	३४
३२	५६	१३	शु.	३३		ह.	४९	१९	ह.	४५	२३	१२	२८	२७	१५	५	२५	६	३५
३३	....	१४	श.	३२	१	चि.	४९	४४	व.	४२	४५	१३	२९	२८	१६	५	२४	६	३६
३३	४	१५	र.	२९	४७	स्वा.	४९	..	सि.	३८	८	१४	३०	२९	१७	५	२३	६	३७

ईश्वरीयज्ञानः—के नाम-वेद, श्रुति, मन्त्र, छन्द, ऋचा, निगम, यजु, साम, अथर्व, ब्रह्म आगम आम्नाय त्रै विद्या शास्त्र।

वेद की विद्याः—वेद में अनेक प्रकार की विद्या हैं। परन्तु इसके दो भाग हैं (१) जगत संबन्धी (२) ब्रह्मसंबन्धी जिन्हें परा और अपरा कहते हैं।

उपवेद ४:—आयुर्वेद (चिकित्सा) धनुर्वेद, (शस्त्र विद्या) गांधर्व वेद, (गायन,) अर्थ वेद, (विज्ञान)।

वेदाङ्ग ६:—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त ज्योतिष, छन्द।

उपनिषद् १०:—ईश, केन, कठ प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरेय, छांदोग्य, वृहदारण्यक।

ब्राह्मण ६:—ग्रन्थ ४—ऐतरेय, शतपथ, साम गोपथ।

उपाङ्ग ६:—शास्त्र-मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य, वेदान्त।

अनादिपदार्थ ३:—ईश्वर, जीव प्रकृति।

प्रकृति के गुण ३:—सत, रज, तम, उनकी साम्यअवस्था को प्रकृति कहते हैं।

द्रव्य ९:—पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन।

द्रव्यों के गुण २४:—रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, द्रवत्व, गुरुत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म, शब्द।

कर्म ५:—ऊपर को चेष्टा करना, नीचे को चेष्टा करना, संकोच, फैलाना, आना जाना घूमना आदि।

सम्वत् १६६१ ज्येष्ठ वदि परपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	क्राइस्ट	वैशाख	उदय		अस्त	
३३	८	१	चं.	२६	३४	वि.	४७	१७	व्य.	३३	४३	१५	१	३०	१८	५	२३	६	३७
३३	१२	२	मं.	२२	२९	ऽनु.	४४	३७	व.	२६	३६	१६	२	१	१९	५	२२	६	३८
३३	१६	३	बु.	१७	२४	ज्ये.	४१	२१	प.	२०	१२	१७	३	२	२०	५	२१	६	३९
३३	२०	४	बृ.	१२	१	मू.	२७	३५	शि.	१२	३८	१८	४	३	२१	५	२०	६	४०
३३	२४	५	शु.	५	५६	पू.षा.	३३	३०	सि.	४	५१	१९	५	४	२२	५	१९	६	४१
३३	२४	६	शु.	५९	५५	अवम													
३३	२८	७	श.	५३	५७	उ.षा.	२९	२०	शु.	४९	४६	२०	६	५	२३	५	१९	६	४१
३३	३२	८	र.	४७	५६	श्र.	२५	१८	शु.	४२	१४	२१	७	६	२४	५	१८	६	४२
३३	३६	९	चं.	४२	३३	ध.	२१	३७	ब्र.	३४	५९	२२	८	७	२५	५	१७	६	४३
३३	४०	१०	मं.	३७	३१	श.	१८	२५	ऐं.	२८	१७	२३	९	८	२६	५	१६	६	४४
३३	४४	११	बु.	३३	३२	पू. भा.	१६	२	वै.	२२	१६	२४	१०	९	२७	५	१५	६	४५
३३	४८	१२	वृ.	३०	२३	उ.भा.	१३	२६	वि.	१६	५७	२५	११	१०	२८	५	१५	६	४५
३३	५२	१३	शु.	२८	१८	रे.	१३	५३	प्री.	१२	२८	२६	१२	११	२९	५	१४	६	४६
३३	५६	१४	श.	२७	२३	ऽश्व.	१४	३२	ऽऽ.	८	५८	२७	१३	१२	३०	५	१३	६	४७
३४	....	३०	र.	२७	४८	भ.	१६	२५	सौ,	६	२८	२८	१४	१३	३१	५	१२	६	४८

कर्म्मः—संचित, प्रारब्ध, क्रियामान ।

दुःख ३ प्रकार केः—आध्यात्मिक, अधिभौतिक, अधिदैविक।

तत्व २५ः—पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द, आंख, कान, सूंघना, रसना, जिह्वा, छूना, हाथ, पांव, गुदा, उपस्थ, पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन ।

वृत्ति ५ः—प्रमाण, विपर्य्य, विकल्प, निद्रा, स्मृति।

क्लेश ५—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश।

चित्त की दशा ५—विक्षिप्त, क्षिप्त, मूढ़, एकाग्र, निरुद्ध।

उपासना २—सगुण, निर्गुण।

योग ४—व्रत, मन्त्र, जप, निष्काम तथा शुभ कर्म्म, ईश्वर अर्पण।

योग के अङ्ग ८—यम, नियम, आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धोरना, ध्यान, समाधि।

यम ५—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य्य, अपरिग्रह।

नियम ५—शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणिधान।

प्राणायाम ४—वाह्य, आभ्यन्तर, स्तम्भ वृत्ति, वाह्याभ्यन्तर आक्षेप।

प्रमाण ८—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, एतिह्य अर्थापत्ती, सम्भव, अभाव।

प्रत्यक्ष प्रमाण ३—अव्यपदेश, अव्यभिचार, व्यवसायात्मक।

अनुमान ३—पूर्ववत, शेषवत्, सामान्यतोदृष्ट।

सं० १६६१ वैशाख वदि परपक्ष श ५६।१३ व्या ५८।४७ ऐं ५६।१

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फसली	मास	तारीख	उदय		अस्त	
३०	४५	१	शा.	५८	२७	ह.	२९	७	ध्रु.	२६	३३	१४	१	३१	१८	५	५१	६	९
३०	५०	२	र.	५५	२४	चि.	२९	१२	व्या.	२२	२५	१५	२	१	१९	५	५०	६	१०
३०	५५	३	चं.	५३	११	स्वा.	२८	५	ह.	१७	४५	१६	३	२	२०	५	४९	६	११
३१	००	४	मं.	४९	११	वि.	२६	९	व.	१२	४	१७	४	३	२१	५	४०	६	१२
३१	५	५	बु.	४४	११	ऽनु.	२३	२०	सि.	५	४३	१८	५	४	२२	५	४७	६	१३
३१	१०	६	बृ.	३८	५२	ज्ये.	१९	५४	व.	५१	४२	१९	६	५	२३	५	४६	६	१४
३१	१५	७	शु.	३२	५२	मू.	१५	५९	प.	४४	१८	२०	७	६	२४	५	४५	६	१५
३१	२०	८	श.	२६	५६	पूर्वा.	१२	५३	शि.	३६	४३	२१	८	७	२५	५	४४	६	१६
३१	२५	९	र.	२०	४८	उ. षा.	७	४५	सि.	२९	११	२२	९	८	२६	५	४३	६	१७
३१	३०	१०	चं.	१५	५०	श्र.	३	४५	सा.	२२	१	२३	१०	९	२७	५	४२	६	१८
३१	३५	११	मं.	९	३५	ध.	००	१३	शु.	१५	५२	२४	११	१०	२८	५	४१	६	१९
३१	४०	१२	बु.	४	५०	पू. भा.	५४	६	शु.	८	२५	२५	१२	११	२९	५	४०	६	२०
३१	४५	१३	बृ.	००	५५	उ. भा.	५३	५३	ब्र.	२	३६	२६	१३	१२	३०	५	३९	६	२१
३१	४५	१४	बृ.	५७	५९	अवम.													
३१	५०	३०	शु.	५५	५०	रे.	५३	३५	वै.	५१	३९	२७	१४	१३	१	५	३८	६	२२

अभाव ५—प्राग अभाव, परध्वंस अभाव, अन्योन्याभाव, अत्यन्ताभाव, अन्य अभाव।

यज्ञ—अग्निहोत्र, वलिवैश्यदेव, दर्ष पौर्णमास, नवसेष्टी, समवत्सरेष्टी, प्रजन्येष्टी अग्नि, अन्त्येष्टी, चातुर्मास, सूत्रामनी, ज्योतिष्टोम, वाज्ये, अग्निष्टोम अश्वमेध, अति रात्र, पुत्रेष्टि, राजसूय।

महायज्ञ ५—ब्रह्म, देव, पितृ, वलिवैश्य, अतिथि।

यज्ञ कर्त्ता—यजमान, ऋत्विक, आचार्य्य, ब्रह्मा, पुरोहित, होता, अध्वर्यू, औयाहू, अग्निमन्द, गुरुग्राम, श्रुतः उदगाता।

वर्ण ४—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

आश्रम ४—ब्रह्मचर्य्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास।

अवस्था ४—जागृत, स्वप्न, सुषुप्ती, तुर्य्या।

सृष्टि ४—जेरज, अण्डज, स्वेदज, उदभिज।

देवता ३३—८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, इन्द्र, प्रजापति।

वसु ८—अग्नि, पृथिवी, वायु, जल, अन्तरिक्ष, चन्द्रमा, सूर्य्य, नक्षत्र।

रुद्र ११—प्राण, अपान, व्यान, उदान समान, नाग, कूर्म्म, कर्कल, देवदत्त, धनञ्जय, जीवात्मा।

आदित्यः—वर्ष के १२ मास।

भूत ५—आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी।

भूत के गुण—शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।

सं० १९९१ ज्येष्ठ शुदि पूर्व पक्ष मलमास प ५४।५६

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फसली	मई	जून	उदय		अस्त	
३४	४	१	चं.	२९	३२	कृ.	१९	३५	शो.	४	५९	२९	१५	१४	१	५	११	६	४९
३४	८	२	मं.	३२	१५	रा.	२३	५४	ऽगं.	४	२४	३०	१६	१५	२	५	११	६	४९
३४	१२	३	बु.	३५	३०	मृ.	२९	१६	सु.	४	४५	१	१७	१६	३	५	१०	६	५०
३४	१६	४	वृ.	४०	१३	ऽऽ	३५	२०	धृ.	५	४६	२	१८	१७	४	५	९	६	५१
३४	२०	५	शु.	४६	१०	पु.	४१	५२	शू.	७	१६	३	१९	१८	५	५	८	६	५२
३४	२३	६	श.	५१	९	पु.	४८	२६	गं.	८	५६	४	२०	१९	६	५	७	६	५३
३४	२६	७	र.	५५	३९	ऽश्ले.	५४	३३	व.	१०	४६	५	२१	२०	७	५	७	६	५३
३४	२९	८	चं.	५९	३९	म.	५९	५६	धु.	११	३३	६	२२	२१	८	५	६	६	५४
३४	३१	९	मं.	६०	००	पू. फा.	६०	००	ऽया.	१२	००	७	२३	२२	९	५	६	६	५४
३४	३३	९	बु.	२	२२	पू. फा.	४	१६	ह.	११	३८	८	२४	२२	१०	५	६	६	५४
३४	३५	१०	वृ.	४	१६	उ. फा.	७	२७	ब.	१०	१४	९	२५	२४	११	५	५	६	५५
३४	३७	११	शु.	४	२२	ह.	९	२३	सि.	७	५२	१०	२६	२५	१२	५	५	६	५५
३४	३९	१२	श.	३	२५	चि.	१०	३	व्य.	४	३१	११	२७	२६	१३	५	४	६	५६
३४	४१	१३	र.	१	१३	स्वा.	९	३१	व.	००	१०	१२	२८	२७	१४	५	४	६	५६
३४	४१	१४	र.	५७	५८	अवम.													
३४	४३	१५	चं.	५३	४१	वि.	७	५७	शि.	४९	४	१३	२९	२८	१५	५	३	६	५७

ज्ञानेन्द्रिय ५—श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नासिका।

कर्मेन्द्रिय ५—वाणी, हाथ, पांव, लिंग, गुदा।

पूजा के योग—ईश्वर, माता, पिता, आचार्य्य, अतिथि, राजा।

धर्म के लक्षण—धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धीर, विद्या, सत्य, अक्रोध।

धातु ७—खून, चरबी, मांस, हड्डी, मज्जा, वीर्य आदि।

रस—कड़वा, तीक्ष्ण, खट्टा, मीठा, फीका लावण्य।

ईष्णा—लोकैष्णा, वित्तैष्णा, पुत्रैष्णा।

सप्तऋषि—वशिष्ठ, अत्रि, कश्यप, भारद्वाज, जमदग्नि, गौतम।

वायु—शीतल, मन्द, सुगन्ध।

मनवन्तरः—स्वायम्भुमनु। स्वारोचश गौत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णी, दक्षसावर्णी ब्रह्मसावर्णी, धर्मसावर्णी, रुद्रसावर्णी, रौच्य, मौत्य।

युगः—सत्युग, त्रेता, द्वापर, कलियुग।

राशीः—१२ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन।

नक्षत्रः—अश्विनी, भरनी, कृत्तिका, रोहणी, मृगशिरा, आद्रा, पुनरवसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्टा शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।

सं० १९६१ ज्येष्ठ वदि परपक्ष मलमास मृ० ५८।४३ वै ५८।२

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	मई	ज्येष्ठ	उदय		अस्त	
३४	४५	१	मं.	४८	४३	ऽनु.	५	३४	सि.	४१	२८	१४	१	२९	१६	५	३	६	५७
३४	४७	२	बु.	४३	१६	ज्ये.	२	२६	सा.	३५	२३	१५	२	३०	१७	५	३	६	५७
३४	४९	३	बृ.	३७	८	पू. षा.	५४	४१	शु.	२७	५८	१६	३	३१	१८	५	२	६	५८
३४	५०	४	शु.	३१	३	उ. षा.	५०	३०	शु.	२१	३१	१७	४	१	१९	५	२	६	५८
३४	५२	५	श.	२४	४५	श्र.	४६	२६	ब्र.	१२	४३	१८	५	२	२०	५	२	६	५८
३४	५३	६	र.	१८	५३	ध.	४१	३९	ऐं.	५	१४	१९	६	३	२१	५	१	६	५९
३४	५५	७	चं.	१३	२४	श.	३९	२२	वि.	५१	१४	२०	७	४	२२	५	१	६	५९
३४	५६	८	मं	८	१६	पू. भा.	३६	४५	प्री.	४५	६	२१	८	५	२३	५	१	६	५९
३४	५८	९	बु.	४	८	उ. भा.	३४	५९	ऽऽ.	३९	१८	२२	९	६	२४	५	१	६	५९
३५	००	१०	बृ.	००	५४	रे.	३४	११	सौ.	३५	१	२३	१०	७	२५	५	००	७	००
३५	००	११	बृ.	५९	२	अवम.													
३५	२	१२	शु.	५७	३८	ऽश्व.	३४	३३	शो.	३१	१८	२४	११	८	२६	५	००	७	००
३५	३	१३	श.	५७	५८	भ.	३६	९	ऽगं.	२८	३७	२५	१२	९	२७	५	००	७	००
३५	४	१४	र.	५९	३५	कृ.	३९	२	सु.	२६	५६	२६	१३	१०	२८	४	५९	७	१
३५	६	३०	चं.	६०	००	रो.	४३	२	ध्र.	२६	१४	२७	१४	११	२९	४	५९	७	१
३५	७	३०	मं.	२	११	मृ.	४८	१२	सू.	२६	२७	२८	१५	१२	३०	४	५८	७	२

ऋतुः—शिशर, बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शीत, हेमन्त ।

सूर्य्य की गतिः—उत्तरायण, दक्षिणायन ।

संस्कारः—१६, गर्भाधान, पुनसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुण्डन, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, समावर्तन विवाह, गृहस्थ, वानप्रस्थ संन्यास, मृतक ।

बिवाह—ब्रह्म, देव, आर्ष, प्रजापत, असुर, गंधर्व, राक्षस, पिशाच ।

ब्रह्मचर्य्य ३—निकृष्ट २५ वर्ष मध्यम ३६ वर्ष, उत्तम ४८ वर्ष ।

शरीर की अवस्था—वृद्धी, यौवन, सम्पूर्णता किंचित परिहानी ।

ब्रह्मचर्य्याश्रम वर्जित पदार्थ—मद्य, मांस भूषण, स्वाद, स्त्री दर्शन, स्पर्श शृङ्गार, आलस्य, नाचना, गाना, क्रोध, दिन का सोना, प्रमाद ।

धर्म के साक्षाताकारः—वेद, स्मृति, सदाचार आत्मा की साक्षी ।

ऋणः ३—ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण ।

आर्य्यसभाः ३—धर्मसभा, विद्यासभा, राजसभा ।

कारणः—निमित्त, उपादान, साधारण ।

निमित्तकारणः—ईश्वर, जीव ।

अविद्या ४ प्रकार की—अनित्य में नित्य, अशुद्ध में शुद्ध, अनात्मा में आत्मा, दुख में सुख जानना ।

अक्षरों के स्थानः—हृदय, कंठ, सिर, जिह्वा की जड़, दांत, नासिका, ओष्ट, तालु ।

रोग निदान के स्थानः—नाड़ी, मूत्र, मल, ज़बान, शब्द, रूप, स्पर्श, नेत्र ।

सम्वत् १९९१ ज्येष्ठ शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	जून	जेठ	उदय		अस्त	
३५	९	१	बु.	६	८	ऽऽ.	५४	७	ग.	२५	२२	२९	१६	१३	३१	४	५८	७	२
३५	११	२	बृ.	१०	३९	पु.	६०	००	व.	२६	४९	१	१७	१४	१	४	५८	७	२
३५	१३	३	शु.	१६	३३	पु.	००	३६	ध्रु.	२८	२९	२	१८	१५	२	४	५८	७	२
३५	१४	४	श.	२०	४६	पु.	७	९	व्या.	२९	५४	३	१९	१६	३	४	५७	७	३
३५	१५	५	र.	२५	१६	ऽश्ले.	१३	२०	ह.	३१	१९	४	२०	१७	४	४	५७	७	३
३५	१६	६	चं.	२९	१७	म.	१८	५३	व.	३१	५५	५	२१	१८	५	४	५७	७	३
३५	१७	७	मं.	३१	५८	पू. फा.	२२	२६	सि.	३१	३८	६	२२	१९	६	४	५७	७	३
३५	१८	८	बु.	३३	३७	उ. फा.	२६	५५	व्य.	३०	३०	७	२३	२०	७	४	५६	७	४
३५	१९	९	बृ.	३३	५८	ह.	२९	४	व.	२८	२३	८	२४	२१	८	४	५६	७	४
३५	२०	१०	शु.	३३	००	चि.	२९	५९	प.	३५	१७	९	२५	२२	९	४	५६	७	४
३५	१९	११	श.	३०	५१	स्वा.	२९	४१	शि.	२१	१९	१०	२६	२३	१०	४	५६	७	४
३५	१८	१२	र.	२७	३७	वि.	२८	१८	सि.	१६	१४	११	२७	२४	११	४	५६	७	४
३५	१७	१३	चं.	२३	२९	ऽनु.	२६	५	सा.	१०	२७	१२	२८	२५	१२	४	५६	७	४
३५	१६	१४	मं.	१८	२०	ज्ये.	२३	३	शु.	४	३	१३	२९	२६	१३	४	५७	७	३
३५	१५	१५	बु.	१२	५७	मू.	१९	२९	ब्र.	४९	४०	१४	३०	२७	१४	४	५७	७	३

मंगलकारी पदार्थः—ब्राह्मण, गौ, अग्नि, पुष्पमाला, घृत' सूर्य्य, जल, राजा।

जीव की शक्तियां २४ः—बल, पराक्रम, आकर्षण, प्रेरणा, गति, भीषणा, विवेचन, क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा प्रेम, द्वेष' संयोग, वियोग, संयोजक, विभाजक, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन, गति ग्रहण, ज्ञान।

शरीर ४ प्रकार केः—स्थूल, सूक्ष्म, कारण, तुर्या।

कोष ५ः—अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय।

प्राण ५—प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान।

शक्ति के साधनः—विवेक, वैराग्य, षट् सम्पत्ति, मुमुक्षत्व।

विवेक चार प्रकार के—सत्यासत्य, पांच कोष, तीन अवस्था, तीन शरीर की विवेचना।

षट् सम्पत्तिः—शम, दम, उपरती, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान।

अनुबन्ध ४ प्रकार केः—अधिकारी, सम्बन्ध, विषय, प्रयोजन।

श्रवण चतुष्टयः—(ब्रह्मविद्या की मनज़िल) श्रवण, मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार।

सभ्यता का आधार ४ः—मैत्रेयी, करुण, मुदिता, उपेक्षा।

पदार्थ १६—(इनके तत्वज्ञान से न्याय शास्त्रानुसार मुक्ति होती है) प्रमाण, प्रमेय, संशय प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धांत, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितंडा, हेतवाभास, छल, जाति, निग्रह, स्थान।

सम्वत् १९९१ आषाढ वदि परपक्षश ५९।४७

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	जून	आषाढ़	उदय		अस्त	
३५	१४	१	बृ.	६	५६	पू.षा.	१५	२८	ऐं.	४२	५६	१५	१	२८	१५	४	५७	७	३
३५	१३	२	शु.	००	३९	उ.षा.	११	१६	वै.	३६	१६	१६	२	९	१६	४	५७	७	३
३५	१३	३	शु.	५४	३९	अवम.													
३५	११	४	श.	४८	३२	श्र.	७	९	वि.	२८	५४	१७	३	३०	१७	४	५८	७	२
३५	९	५	र.	४२	४६	ध.	३	१६	प्री.	२१	२७	१८	४	१	१८	४	५८	७	२
३५	८	६	चं.	३७	४२	पू.भा.	५६	५९	ऽऽ.	१४	३६	१९	५	२	१९	४	५८	७	२
३५	६	७	मं.	३३	२२	उ.भा.	५५	१	सौ.	८	१९	२०	६	३	२०	४	५८	७	२
३५	५	८	बु.	३०	१	रे.	५३	५३	शो.	२	४२	२१	७	४	२१	४	५९	७	१
३५	३	९	बृ.	२७	४३	ऽश्व.	५४	००	सु.	५४	१	२२	८	५	२२	४	५९	७	१
३५	१	१०	शु.	२६	३६	भ.	५५	१६	ध्र.	५०	४४	२३	९	६	२३	४	५९	७	१
३४	५९	११	श.	२६	४२	कृ.	५७	५१	शू.	४९	१२	२४	१०	७	२४	५	००	७	००
३४	५७	१२	र.	२९	१२	रो.	६०	००	गं.	४८	२२	२५	११	८	२५	५	००	७	००
३४	५५	१३	चं.	३०	५२	रो.	१	३८	व्र.	४८	२२	२६	१२	९	२६	५	१	६	५९
३४	५३	१४	मं.	३४	३१	मृ.	६	३३	ध्रु.	४९	१०	२७	१३	१०	२७	५	१	६	५९
३४	५१	३०	बु.	३८	५२	ऽऽ.	११	१६	व्या.	५०	२८	२८	१४	११	२८	५	२	६	५८

प्रमेयः—आत्मा, शरीर, इन्द्रिय अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुख, अपवर्ग।

सिद्धान्त ४ प्रकार के:—सर्वतन्त्र, प्रतितन्त्र, अधिकरण, अभ्युपगम।

अवयव ५—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन।

हेत्वाभासः—सव्यभिचार, विरुद्ध, प्रकरणसम, साध्यसम, अतीतकाल।

छल ३ प्रकार के—वाक्य, सामान्य, उपचार।

जातिः—साधर्म्य सम, वैधर्म्य सम, उतकर्ष सम, अपकर्ष सम, आवर्ण्य सम, वर्ण्य सम, विकल्प सम, साध्य सभ, प्राप्ति सम, अप्राप्ति सम, प्रसंग सम, प्रति दृष्टान्त सम, अनुत्पत्ती सम, सत्य सम, अकरण सम, हेतु सम, अर्थापत्ति सम, अविशेष सम, उपपत्ति सम, उपलब्धि सम, अनुपलब्धि सम, नित्य सम, अनित्य सम, कार्य्यसम।

निग्रह स्थान २२:—प्रतिज्ञा हानि, प्रतिज्ञान्तर, विरोध, प्रतिज्ञा संन्यास, हेत्वान्तर, अर्थान्तर, निरार्थक, अविज्ञातार्थ, उपार्थक, अप्राप्तकाल, न्यून, अधिक, पुनरुक्ति, अनअनु-भाषण, अज्ञान, अप्रतिभा, विक्षेप, मतानुज्ञा, परिअनुयोज्या, निरानुयोज्या, उपसिद्धान्त, हेतवाभास।

मुक्ति का साधनः—(वैशेषकानुसार) द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, सम-वायि-नाम के ६ पदार्थों का ज्ञान।

कर्म के अनुबंध ३:—साध्य, साधन, अति कर्तव्यता।

कर्म के लिये विचारणीय स्थलः—विधि, मंत्र, नाम, ध्येय, निषेध, अर्थवाद, विधि, उत्पत्ती, विनियोग, अधिकार, प्रयोग।

सं० १९९१ आषाढ़ शुदि पूर्व पक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फसली	जुलाई	आषाढ़	उदय		अस्त	
३४	५०	१	वृ.	४४	४	पु.	१८	३८	ह.	५२	९	२९	१५	१२	२९	५	२	६	५८
३४	४८	२	शु.	४९	२	पु.	२५	१३	ब.	५३	४६	३०	१६	१३	३०	५	२	६	५८
३४	४६	३	श.	५३	४७	ऽश्ले.	३१	३३	सि.	५५	५३	१	१७	१४	३१	५	३	६	५७
३४	४४	४	र.	५७	३५	म.	३६	१४	व्य.	५५	४८	२	१८	१५	३२	५	३	६	५७
३४	४२	५	चं.	६०	००	पू. फा.	४२	१	व.	५५	४२	३	१९	१६	१	५	३	६	५७
३४	४०	५	मं.	००	२२	उ. फा.	४५	४४	प.	५४	४६	४	२०	१७	२	५	४	६	५६
३४	३८	६	बु.	२	१३	ह.	४८	१३	शि.	५२	४७	५	२१	१८	३	५	४	६	५६
३४	३६	७	वृ.	२	३५	चि.	४९	२१	सि.	४९	३८	६	२२	१९	४	५	५	६	५५
३४	३४	८	शु.	१	४१	स्वा.	४९	२१	सा.	४५	४९	७	२३	२०	५	५	५	६	५५
३४	३४	९	शु.	५९	१४	अवम.													
३४	३२	१०	श.	५६	३६	वि.	४८	९	शु.	४०	५८	८	२४	२१	६	५	५	६	५५
३४	३०	११	र.	५२	१३	ऽनु	४६	१०	शु.	३५	१७	९	२५	२२	७	५	६	६	५४
३४	२८	१२	चं.	४७	२१	ज्ये.	४३	१३	ब्र.	२९	६	१०	२६	२३	८	५	६	६	५४
३४	२५	१३	मं.	४१	५३	मू.	३९	४४	ऐं.	२२	२	११	२७	२४	९	५	७	६	५३
३४	२२	१४	बु.	३५	४७	पू. षा.	३५	४८	वै.	१४	४१	१२	२८	२५	१०	५	७	६	५३
३४	१९	१५	वृ.	२९	४२	उ. षा.	३१	४०	वि.	७	८	१३	२९	२६	११	५	८	६	५२

विनियोग के प्रमाण ६:—श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान, समाख्या।

श्रुति के भेद:—विधातृ, अभिधातृ, विनियोगत्रय।

प्रकरण २:—प्रकरण, महाप्रकरण। ध्यान २:—पाठक्रत, अर्थक्रत।

पाठक्रत २:—यथा संख, सन्निधि। फल ३:—दृष्टार्थ, अदृष्टार्थ, दृष्टादृष्टार्थ।

कर्म के ६ प्रमाण:—श्रुति, अर्थ, पाठ, स्थान, मुख, प्रोक्रति।

पाठ कर्म २:—मन्त्र, ब्राह्मण। अर्थवाद ३:—गुणवाद, अनुवाद, भूतार्थवाद।

वेद की शाखा, ११३१:—ऋग, २१ यजु १०१, साम १०००, अथर्व ९।

नक्षत्र तथा राशि

आकाशवर्तीय गगन-मंडल की १२ भागों में कल्पना करके ज्योतिष का हिसाब लगाने में सुगमता की गई है। इसलिये कि सूर्य्य के गिर्द पृथवी का एक चक्कर १२ मास में पूरा होता है, अतः एक मास में जितनी गति होती है, उसके लिये एक एक राशि का नाम तारागण समूह की आकृति के अनुसार रक्खा गया है। इन्हीं को यवन देशों में १२ बुज कहा गया है। दूसरा सावन ज्योतिष के हिसाब में प्रत्यक्ष सहायता देने का चन्द्रमा है, चाँद की एक दिन की गति का नाम एक नक्षत्र रक्खा गया है। जिससे १२ राशियों के साथ ही २७ नक्षत्र बनते हैं, अर्थात एक राशि में २$\frac{1}{4}$ नक्षत्र होते हैं। फिर जैसे दिन के चार पहर हैं, याचरण उसी प्रकार नक्षत्र के भी ४ चरण रक्खे गये है। यह सब ज्योतिष के हिसाब की सुगमता में सहायक हैं।

१२ राशियों के नाम:—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चीक, धन, मकर, कुम्भ, मीन।

२७ नक्षत्रों के नाम:—अश्वनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाषा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।

सम्वत् १९९१ श्रावण वदि परपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	जुलाई	श्रावण	उदय		अस्त	
३४	१६	१	शु.	२३	३६	श्र.	२७	३०	ऽऽ.	५१	५१	१४	१	२७	१२	५	८	६	५२
३४	१२	२	श.	१७	२५	ध.	२३	३०	सौ,	४४	२८	१५	२	२८	१३	५	९	६	५१
३४	८	३	र.	११	५१	श.	१९	५६	शो.	३७	२८	१६	३	२९	१४	५	१०	६	५०
३४	४	४	चं.	६	३७	पू. भा.	१६	५५	ऽगं.	३१	१	१७	४	३०	१५	५	११	६	४९
३४	००	५	मं.	२	२१	उ.भा.	१४	४६	सु.	२५	१४	१८	५	३१	१६	५	१२	६	४८
३४	००	६	मं.	५८	५५	अवम													
३३	५६	७	बु.	५६	२९	रे.	१३	२६	धृ.	२०	१४	१९	६	१	१७	५	१३	६	४७
३३	५२	८	बृ.	५५	१७	ऽश्व.	१३	१३	शू.	१६	७	२०	७	२	१८	५	१३	६	४७
३३	४८	९	शु.	५५	१८	भ.	१४	१०	गं.	१२	५९	२१	८	३	१९	५	१४	६	४६
३३	४४	१०	श.	५६	४८	कृ.	१६	२५	वृ.	१०	५१	२२	९	४	२०	५	१५	६	४५
३३	४०	११	र.	५९	१५	रो.	१९	५६	ध्रु.	८	४७	२३	१०	५	२१	५	१६	६	४४
३३	३६	१२	चं.	६०	००	मृ.	२४	३३	व्या.	६	२७	२४	११	६	२२	५	१७	६	४३
३३	३२	१२	मं.	२	४९	ऽऽ.	३०	७	ह.	१०	९	२५	१२	७	२३	५	१८	६	४२
३३	२८	१३	बु.	७	२६	पु.	३६	२०	व.	११	२०	२६	१३	८	२४	५	१८	६	४२
३३	२४	१४	बृ.	१२	१९	पु.	४२	५४	सि.	१२	५५	२७	१४	९	२५	५	१९	६	४१
३३	२०	३०	शु.	१७	३७	श्ले.	४९	१७	व्य.	१४	३२	२८	१५	१०	२६	५	२०	६	४०

कल्प (सृष्टि सम्वत्) का हिसाब

शातं ते युत हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृणमः । अथर्व॰ ८-१-२-२१ ।

परमत्मा जीवों को ज्ञान देते हैं कि सृष्टि की स्थिति का हिसाब १० हज़ार सैकड़ा अर्थात् १० लाख पर २-३-४ लगाने से सिद्ध होता है । इस से पाया जाता है कि वर्त्तमान सृष्टि ४३२०००००० (चार अरब, बत्तीस करोड़) साल तक काइम रहेगी । कल्प नाम ब्रह्म दिन का है । एक कल्प में १२ मन्वन्तर होते हैं । प्रत्येक मन्वन्तर में ७१ चतुर्युगी (अर्थात् सत्युग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का सर्व योग) प्रत्येक कल्प के आदि में तथा प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में १७ लाख २८ हज़ार वर्ष की सन्धी होती है और अन्त में संध्यांश । ब्रह्म दिन व्यतीत होजाने पर उतने ही काल की ब्रह्म रात्रि अर्थात् प्रलय है उस के बीत जाने पर पुनः ब्रह्म दिन अर्थात् सृष्टि का उदय होता है । कल्प का जितना समय गुज़र जाय उसको सृष्टि सम्वत् कहते हैं । इसलिये कि उत्पत्ति के आरम्भ से उस का सम्बन्ध है और वैदिक सम्वत भी कहते हैं इसलिये कि वेद का प्रकाश भी सृष्टि के आदि से होता है । इसको आर्य सम्वत भी कहते हैं इसलिये कि आर्य धर्म भी वेद के प्रकाश से अथवा सृष्टि के आदि से ही प्रचलित है तथा आर्य पुरुष मुख्य रूप से इसी सम्वत् के अनुसार अपने सारे यज्ञ आदि व्यवहार करते हैं ।

सम्वत् १९९१ श्रावण शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	अंगरेज़ी	श्रावण	उदय		अस्त	
३३	१६	१	श.	२२	९	म.	५५	७	व.	१६	१३	२९	१६	११	२७	५	२१	६	३९
३३	१२	२	र.	२६	६	पू.फा.	६०	००	प.	१६	३९	३०	१७	१२	२८	५	२२	६	३८
३३	८	३	चं.	२९	११	पू.फा.	००	९	शि.	१६	४८	१	१८	१३	२९	५	२२	६	३८
३३	४	४	मं.	३१	०	उ. फा.	४	४	सि.	१५	५९	२	१९	१४	३०	५	२३	६	३७
३३	००	५	बु.	३१	३४	ह.	६	४९	सा.	१४	१०	३	२०	१५	३१	५	२४	६	३६
३२	५६	६	बृ.	३०	४६	चि.	८	१८	शु.	११	२१	४	२१	१६	१	५	२५	६	३५
३२	५२	७	शु.	२८	५०	स्वा.	८	३२	शु.	७	३५	५	२२	१७	२	५	२६	६	३४
३२	४८	८	श.	२५	४३	वि.	७	३८	वृ.	३	४८	६	२३	१८	३	५	२६	६	३४
३२	४४	९	र.	२१	४३	ऽनु.	५	४५	वै.	५०	५६	७	२४	१९	४	५	२७	६	३३
३२	४०	१०	चं.	१६	५६	ज्ये.	३	२	वि.	४३	२३	८	२५	२०	५	५	२८	६	३२
३२	३६	११	मं,	१२	२०	पू. षा.	५५	४५	प्री.	३६	४३	९	२६	२१	६	५	२९	६	३१
३२	३२	१२	बु.	५	३३	उ. षा.	५१	३९	ऽऽ	२९	६	१०	२७	२२	७	५	३०	६	३०
३२	३२	१३	बु.	५९	१५	अवम													
३२	२८	१४	बृ.	५३	११	श्र.	४६	२५	सौ.	२१	३२	११	२८	२३	८	५	३०	६	३०
३२	२४	१५	शु.	४७	१४	ध.	४३	२२	शो.	१३	४२	१२	२९	२४	९	५	३१	६	२९

कल्प के गुज़रे हुए वर्ष

इसे समझने के लिये पहिले एक मन्वन्तर का समय निकालना चाहिये। चतुर्युगी में ४३२०००० वर्ष होते हैं (सत्युग १७२८०००, त्रेता १२९६०००, द्वापर ८६४०००, कलियुग ४३२०००) इस काल को ७१ के साथ गुणा करके और उस में सन्धि का समय बढ़ाने से मन्वन्तर का समय बनेगा अर्थात (४३२००००×७१) +१७२८०००= ३०८४४८००० ।

सच्चे इतिहास तथा प्रत्येक कार्य के समय नित्यप्रति पढ़ा जाने वाले संकल्प से सिद्ध होता है कि इस समय तक ६ मन्वन्तर गुज़र चुके हैं ७ वें मनु की २७ चतुर्युगी गुज़र कर २८ वीं चतुर्युगी के ३ युग बीते हैं और चौथे कलियुग का अब ५०३४ वां वर्ष है। अतः वर्तमान सृष्टि या वैदिक या आर्य सम्वत् इस प्रकार सिद्ध हुआ।

६ मन्वन्तर का समय

३०८४४८००० × ६+सन्धि १७२८०००+(२७ चतुर्युगी) २७×४३२००००+(२८ वें के ३ युग) १७२८०००+१२९६०००+८६४०००+(२८ वें कलियुग के गुज़रे हुए वर्ष) ५०३४=१९७२९४९०३४ ।

नोटः—१४ मन्वन्तरों के नाम आदि के लिये देखो ज्ञान पुष्पांजली शीर्षक लेख।

कल्प के शेष वर्ष

४३२००००००० — १९७२९४९०३४ = २३४७०५०९६६ ।

सं० १९९१ भाद्रपद वदि परपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फसली	अगस्त	भाद्रपद	उदय		अस्त	
३२	२०	१	श.	४१	२९	श.	३९	४०	ऽगं.	६	१३	१३	१	२५	१०	५	३२	६	२८
३२	१६	२	र.	३६	२५	पू. भा.	३५	२९	सु.	००	२	१४	२	२६	११	५	३३	६	२७
३२	१२	३	चं.	३२	२	उ. भा.	३३	६	शू.	४६	२७	१५	३	२७	१२	५	३४	६	२६
३२	८	४	मं.	२८	३५	रे.	३२	३२	गं	४१	१३	१६	४	२८	१३	५	३४	६	२६
३२	४	५	बु.	२६	११	ऽश्व.	३२	१	वृ.	३६	५०	१७	५	२९	१४	५	३५	६	२५
३२	००	६	बृ.	२४	५७	भ.	३२	४१	ध्रु.	३३	२५	१८	६	३०	१५	५	३६	६	२४
३१	५६	७	शु.	२३	५९	कृ.	३४	३६	व्या.	३२	१२	१९	७	३१	१६	५	३७	६	२३
३१	५२	८	श.	२६	१७	रो.	३७	४९	ह.	२९	५०	२०	८	१	१७	५	३८	६	२२
३१	४८	९	र.	२८	५२	मृ.	४२	१०	व.	२९	४५	२१	९	२	१८	५	३८	६	२२
३१	४४	१०	चं.	३२	२८	ऽऽ	४७	३२	सि.	२९	४५	२२	१०	३	१७	५	३९	६	२१
३१	४०	११	मं.	३७	६	पु.	५३	३५	व्य.	३०	४६	२३	११	४	२०	५	४०	६	२०
३१	३५	१२	बु.	४२	००	पु.	६०	००	व.	३२	१३	२४	१२	५	२१	५	४१	६	१९
३१	३०	१३	बृ.	४६	५०	पु.	००	४	प.	३३	४६	२५	१३	६	२२	५	४२	६	१८
३१	२५	१४	शु.	५१	५६	ऽश्ले.	६	३०	शि.	३५	८	२६	१४	७	२३	५	४३	६	१७
३१	२०	३०	श.	५५	५९	म.	११	२९	सि.	३६	३	२७	१५	८	२४	५	४४	४	१६

परान्तकाल या महाकल्प

अनेक सज्जन शंका करते हैं, कि उपनिषद में जो यह लिखा है, कि मुक्ति में जीव परान्तकाल तक रहता है, इसका पता वा प्रमाण वेदादि शास्त्रों में नहीं मिलता। स्वामी जी ने मनघढन्त रूप से लिख दिया है, परन्तु यह केवल भ्रान्तिमात्र है, स्वामी जी ने जो कुछ लिखा है, वेद को ही समझकर और वेद के ही अनुकल लिखा है। भेद केवल बिचार करने न करने में है। वेद में जहाँ कहीं जीव को जीने का उपदेश दिया है, १०० वर्ष की आयु का वर्णन है। अतः शरीर के बन्धन अर्थात मनुष्य जीवन में १०० वर्ष माने जाते हैं, पर आयु केवल यही नहीं, न दिन २४ ही घंटे का या वर्ष ऐसे ही ३६० दिन का है। अथर्व वेद का मन्त्र कल्प की आयु में जो हमने उद्धृत किया है, ब्रह्म दिन की अवधि बताता है, ४ अरब बत्तीस करोड़ वर्ष। इसी प्रकार शरीर सहित आयु के अतिरिक्त शरीर रहित (मुक्त) आत्मा की आयु भी १०० वर्ष है। अर्थात २ प्रकार की हमारी आयु है और २ ही प्रकार के दिन हैं, जहाँ २४ घंटे के दिन से शरीधारी आत्मा की आयु सिद्ध होती है, वहाँ दूसरे ब्रह्म दिन के हिसाब से १०० वर्ष की अवधि मुक्ति की है। मनुष्य जीवन में ३० दिन का महीना और १२ महीने का वर्ष होने से १०० वर्ष बराबर है १२×३०×१००=३६००० दिन के। तब मुक्ति की अवधि स्पष्ट रूप से ३६००० को ८६४०००००० में गुणा करने से सिद्ध होगी, क्योंकि उस १०० वर्ष के जीवन का एक एक दिनरात अथर्व वेद के कथन से ८६४०००००० का सिद्ध होता है, अतः स्वामी जी का कथन सर्वथा इसी सिद्धान्त का स्पष्टीकरण करता और इससे सिद्ध होता है, कि मुक्ति की अवधि या प्रान्तकाल या महाकल्प हमारी ३११०४०००००००००० ३१ नील १० खर्व और ४० अर्व साल के बराबर है।

सम्वत् १९९१ भाद्रपद शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	सितम्बर	भाद्रपद	उदय		अस्त	
३१	१५	१	र.	५९	१२	पू. फा.	१७	४५	सा.	३६	१५	२८	१६	९	२५	५	४५	६	१५
३१	१०	२	चं.	६०	००	उ. फा.	२१	५५	शु.	३५	३३	२९	१७	१०	२६	५	४६	६	१४
३१	५	२	मं.	१	१०	ह.	२४	५८	शु.	३३	५७	१	१८	११	२७	५	४७	६	१३
३१	००	३	बु.	१	४८	चि.	२६	४३	ब्र.	३१	१८	२	१९	१२	२८	५	४८	६	१२
३०	५५	४	बृ.	१	२	स्वा.	२७	१५	ऐं.	२७	३१	३	२०	१३	२९	५	४९	६	११
३०	५५	५	बृ.	५९	२१	अवम													
३०	५०	६	शु.	५६	२४	वि.	२६	३४	वै.	२३	२	४	२१	१४	३०	५	५०	६	१०
३०	४५	७	श.	५२	२८	ऽनु.	२४	५३	वि.	१७	१८	५	२२	१५	३१	५	५१	६	९
३०	४०	८	र.	४७	४७	ज्ये.	२२	१८	प्री.	११	१२	६	२३	१६	१	५	५२	६	८
३०	३५	९	चं.	४२	१६	मू.	१९	४	ऽऽ.	४	३२	७	२४	१७	२	५	५३	६	७
३०	३०	१०	मं.	३६	३०	पू. षा	१४	१९	शो.	४९	२८	८	२५	१८	३	५	५४	६	६
३०	२५	११	बु.	३०	२०	उ.षा.	११	११	ऽगं	४१	४२	९	२६	१९	४	५	५५	६	५
३०	२०	१२	बृ.	२४	१८	श्र.	६	८	सु.	३३	५६	१०	२७	२०	५	५	५६	६	४
३०	१५	१३	शु.	१८	११	ध.	२	५१	धृ.	२६	२१	११	२८	२१	६	५	५७	६	३
३०	१०	१४	श.	१२	४३	पू. भा.	५५	४१	शू.	१८	५९	१२	२९	२२	७	५	५८	६	२
३०	५	१५	र.	७	४३	उ. भा.	५३	४	गं.	१२	८	१३	३०	२३	८	५	५९	६	१

सं० १९९१ अश्विनी वदि शुदि परपक्ष

दिन मान	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	सितंबर	आश्विन	उदय	अस्त
३० ००	१	चं.	३	१९	रे.	५१	१७	वृ	५	५७	१४	१	२४	९	६ ००	६००
३० ००	२	चं.	५९	५५	अवम.											
२९ ५५	३	मं.	५७	३१	ऽश्व.	५०	३१	ध्रु.	००	२६	२५	२	२५	१०	६ १	५५९
२९ ५०	४	बु.	५६	२१	भ.	५०	५५	ह.	५२	००	१६	३	२६	११	६ २	५५८
२९ ४५	५	बृ.	५६	२३	कृ.	५२	३५	व.	४९	१७	१७	४	२७	१२	६ ३	५५७
२९ ४०	६	शु.	५७	५२	रो.	५५	२९	सि.	४७	३३	१८	५	२८	१३	६ ४	५५६
२९ ३५	७	श.	६०	००	मृ.	५९	३२	व्य	४६	४७	१९	६	२९	१४	६ ५	५५५
२९ ३०	७	र.	००	२१	ऽऽ	६०	००	व	४६	५४	२०	७	३०	१५	६ ६	५५४
२९ २५	८	चं.	४	१२	ऽऽ	४	४२	प.	४७	३४	२१	८	१	१६	६ ७	५५३
२९ २०	९	मं.	८	३७	पु.	१०	३७	शि.	४९	००	२२	९	२	१७	६ ८	५५२
२९ १५	१०	बु.	१३	५४	पु.	१७	३	सि.	५०	३१	२३	१०	३	१८	६ ९	५५१
२९ १०	११	बृ.	१८	४८	ऽश्ले.	२३	३३	मा.	५१	५३	२४	११	४	१९	६ १०	५५०
२९ ५	१२	शु.	२३	२७	म.	३९	४१	शु.	५२	५२	२५	१२	५	२०	६ ११	५४९
२९ ००	१३	श.	२८	०३	पूर्वा फा.	३३	२१	शु.	५३	१६	२६	१३	६	२१	६ १२	५४८
२८ ५५	१४	र.	३१	१०	उ. फा.	३९	३७	वृ	५३	२	२७	१४	७	२२	६ १३	५४७
२८ ५०	३०	चं.	३१	२३	ह.	४२	५९	ऐं.	५१	८	२८	१५	८	२३	६ १४	५४६

सं० १९९१ आश्विन शुदि परपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	अक्तू०	आश्वि०	उदय		अस्त	
२८	४५	१	मं.	३४	६	चि.	४५	२	वै	४८	४८	२९	१६	९	२४	६	१५	५	४५
२८	४०	२	बु.	३३	३५	स्वा.	४५	५०	वि	४५	२०	३०	१७	१०	२५	६	१६	५	४४
२८	३५	३	वृ.	३१	५०	वि.	४५	२८	प्री	४०	५०	१	१८	११	२६	६	१७	५	४३
२८	३०	४	शु.	२९	१	ऽनु.	४३	५९	ऽऽ	३५	३२	२	१९	१२	२७	६	१८	५	४२
२८	२५	५	श.	२५	७	ज्ये.	४१	४३	सौ	२९	२७	३	२०	१३	२८	६	१९	५	४१
२८	२०	६	र.	२०	३१	मू.	३८	३७	शो	२२	४४	४	२१	१४	२९	६	२०	५	४०
२८	१५	७	चं.	१५	६	पू.षा.	३४	५८	ऽगं	१५	३१	५	२२	१५	३०	६	२१	५	३९
२८	१०	८	मं.	९	२५	उ. षा.	३०	५४	सु	७	५४	६	२३	१६	३१	६	२२	५	३८
२८	५	९	बु.	३	२०	श्र	२६	४१	धृ	००	२७	७	२४	१७	१	६	२३	५	३७
२८	५	१०	बु.	५७	२३	अवम													
२८	००	११	वृ.	५१	३६	ध.	२३	३२	गं	४४	३०	८	२५	१८	२	६	२४	५	३६
२७	५५	१२	शु.	४५	४५	श.	१८	४०	वृ	३७	२	९	२६	१९	३	६	२५	५	३५
२७	५०	१३	श.	४०	५९	पू.भा.	१५	१०	ध्रु	३१	००	१०	२७	२०	४	६	२६	५	३४
२७	४५	१४	र.	३६	४०	उ: भा.	१२	२१	व्या	२३	३३	११	२८	२१	५	६	२७	५	३३
२७	४०	१५	चं.	३३	२१	रे.	१०	२५	ह	१७	४३	१२	२९	२२	६	६	२८	५	३२

शिक्षा दायक वचन

१—उल्लू को दिन को नजर नहीं आता और काग को रात को, परन्तु कामी पुरुष ऐसा विलक्षण अंधा है कि उसे न रात को नज़र आवे न दिन को।

२—हाथ का भूषण दान, कंठ का सत्य, कान का वेद है, ऐसे ही राजा का भूषण न्याय, धनवान का दान, और पंडित का निरलोभ व निःस्वार्थ भाव।

३—सत्य, क्षमा, इन्द्रिय दमन, प्राणीमात्र पर दया, मधुर वचन, धैर्य, शुभकर्म और ज्ञान ही सच्चे तीर्थ हैं।

४—जगतरूपी उद्यान में अनेक प्रकार के पुष्प खिलते हैं। मनुष्य पशु सब के मनों के लिये प्रिय सर्व पदार्थ बड़ी संख्या में उपस्थित हैं। पर हंस का मन मानसरोवर के बिना कहीं नहीं लगता, सुन्दर से सुन्दर पुष्प तथा बड़े से बड़े रमणीय स्थान उसके लिये वीराना के समान हैं। इसी प्रकार सर्व साधारण के प्रिय पदार्थ परम हंसों के लिये कुछ भी आकर्षण नहीं रखते, उनका मन केवल उत्तम विचार तथा ब्रह्मानन्द में ही मग्न रहता है।

५—हंस और बगुला दोनों श्वेत हैं पर दूध और जल के भेद से उनका भेद मालूम हो जाता है। दूध पीने वाला हंस है और पानी पीने वाला बगुला, इसी प्रकार भले पुरुष अपने २ भोग, निर्वाह के साधनों तथा स्वभाव से पहिचाने जाते हैं।

सं० १९९१ कार्तिक बदि परपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	अक्तू०	कार्तिक	उदय		अस्त	
२७	३५	१	मं.	३१	२	ऽश्व.	९	२०	व.	१२	४९	१३	१	२३	७	६	२९	५	३१
२७	३०	२	बु.	२९	५८	भ.	९	२५	सि.	८	३९	१४	२	२४	८	६	३०	५	३०
२७	२५	३	बृ.	२९	११	कृ.	११	४३	व्य.	५	३३	१५	३	२५	९	६	३१	५	२९
२७	२०	४	शु.	३१	४०	रे .	१३	१९	व.	३	२५	१६	४	२६	१०	६	३२	५	२८
२७	१५	५	श.	३४	१४	मृ.	१७	७	प.	२	२१	१७	५	२७	११	६	३३	५	२७
२७	१०	६	र.	३८	११	ऽऽ	२१	५९	शि.	२	७	१८	६	२८	१२	६	३४	५	२६
२७	५	७	चं.	४२	४१	पु.	२७	४६	सि.	२	४४	१९	७	२९	१३	६	३५	५	२५
२७	००	८	मं.	४८	३	पु.	३४	५	सा.	३	४७	२०	८	३०	१४	६	३६	५	२४
२६	५५	९	बु.	५३	२	ऽश्ले.	४०	३७	शु.	५	९	२१	९	३१	१५	६	३७	५	२३
२६	५०	१०	बृ.	५८	१५	म.	४६	५४	शु.	६	४२	२२	१०	१	१६	६	३८	५	२२
२६	४५	११	शु.	६०	००	पू .फा.	५२	३४	ब्र.	७	३५	२३	११	२	१७	६	३९	५	२१
२६	४०	११	श.	२	२७	उ. फा.	५७	१०	ऐं	८	६	२४	१२	३	१८	६	४०	५	२०
२६	३५	१२	र.	५	४८	ह.	६०	००	वै.	७	४४	२५	१३	४	१९	६	४१	५	१९
२६	३०	१३	चं.	७	५३	ह.	००	५५	वि.	६	३२	२६	१४	५	२०	६	४२	५	१८
२६	२५	१४	मं.	८	४३	चि.	२	४८	प्री.	४	१८	२७	१५	६	२१	६	४३	५	१७
२६	२०	३०	बु.	८	१२	स्वा.	४	२२	ऽऽ	००	५४	२८	१६	७	२२	६	४४	५	१६

६—वृक्ष की छाल और पत्ता सब उपयोगी हैं वह स्थिर रूप से अपनी छाया अपना फल, और अपना सर्वस्व दूसरों के समर्पण किये हुए हैं। इसी प्रकार सत्पुरुष भी अपने मन, वचन, कर्म तथा अपने प्रत्येक पदार्थ से परोपकार में लगे रहते हैं।

७—समुद्र अमूल्य रत्न, हीरा, मोती, जवाहरातादि को नीचे दवाये रखता है और बिना मूल्य की झाग को ऊपर निकाले रखता है। यही हाल मूर्ख धनिकों का है जो विद्वानों का निरादर तथा अविद्वानों का सत्कार करते हैं। या यूं समझो कि बुरे लोग अच्छे पदार्थों को स्वयं दबा बैठते और बुरे औरों को देते हैं।

८—हवा तेज़ चली, समुद्र में लहरें उठी, उनका शोर सुन मुसाफ़िर बोला तेरी इतनी तरङ्गों तथा लहरों को धिक्कार है, इतना पानी फिर भी मैं प्यासा ही चला, नतुझ में कुआं न बावली।" मुसाफ़िर के यह शब्द उन मूर्ख धनिकों पर पूरी तरह लागू होते हैं जो अपनी बड़ाई में मस्त हैं अपने धन से किसी का कोई उपकार नहीं करते।

९—उस सागर के मुकाबले में कुएं को देखो। उसमें जल थोड़ा है पर जो बरतन उसमें डालो भरकर आता है। उदारचित दानी पुरुषों की यही दशा है उनकी थोड़ी सी पूंजी भी दूसरों के बड़े २ उपकार करती है।

१०—सोना सुनार से कहता है, मूर्ख ! दूसरों के संकट का ध्यान कर। तू मुझे तो बार २ तपाता है पर याद रख, मैं तो सोने का सोना ही रहूँगा। पर तेरे हाथ पल्ले इसके अतिरिक्त कुछ न पड़ेगा कि तेरे मुख पर राख पड़े।

११—करो अणुकरण पुष्पों का सुगंधि जग में फैलाओ।

१२—सांच बराबर तप नहीं और झूंठ बराबर पाप।

सम्वत् १९९१ कार्तिक शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	नव०	कार्तिक	उदय		अस्त	
२६	१५	१	बृ.	६	३०	वि.	४	१७	शो.	५१	४५	२९	१७	८	२३	६	४५	५	१५
२६	१०	२	शु.	३	४३	ऽनु.	३	३	ऽगं.	४५	५१	१	१८	९	२४	६	४६	५	१४
२६	५	३	श.	००	१	ज्ये.	००	२९	सु.	३१	१५	२	१९	१०	२५	६	४७	५	१३
२६	५	४	श.	५५	१८	अवम													
२६	००	५	र.	५०	१०	पू. षा.	५३	२९	घृ	३२	६	३	२०	११	२६	६	४८	५	१२
२५	५५	६	चं.	४४	२२	उ. षा.	५०	३०	शू.	२४	३५	४	२१	१२	२७	६	४९	५	११
२५	५०	७	मं.	३८	३४	श्र	४६	२०	गं	१८	५०	५	२२	१३	२८	६	५०	५	१०
२५	४५	८	बु.	३२	२९	ध.	४२	८	वृ.	८	५१	६	२३	१४	२९	६	५१	५	९
२५	४०	९	बृ.	२६	४४	श.	३८	८	ध्रु.	००	५१	७	२४	१५	३०	६	५२	५	८
२५	३६	१०	शु.	२१	११	पू. भा.	३४	३३	ह.	४६	१०	८	२५	१६	१	६	५३	५	७
२५	३२	११	श.	१६	२०	उ. भा.	३१	३२	व.	३९	२६	९	२६	१७	२	६	५४	५	६
२५	२८	१२	र.	१२	९	रे.	२९	२४	सि.	३३	२३	१०	२७	१८	३	६	५४	५	६
२५	२४	१३	चं.	८	५४	ऽश्व.	२८	४	व्य	२८	५	११	२८	१९	४	६	५५	५	५
२५	२०	१४	मं.	६	४२	भ.	२७	५२	व	२३	३७	१२	२९	२०	५	६	५६	५	४
२५	१८	१५	बु.	५	४५	कृ.	२८	५०	प.	२०	८	१३	३०	२१	६	६	५६	५	४

आर्यों के यज्ञ तथा थर्व

१ ब्रह्म यज्ञ, प्रतिदिन प्रातः सायं
२ देव यज्ञ प्रति दिन प्रातः सायं
३ वलि वैश्यदेव यज्ञ ,, ,,
४ पितृ यज्ञ ,, ,,
५ अतिथि यज्ञ ,, ,,
६ दर्शेष्टि (कृष्ण पाक्षिक यज्ञ प्रति अमावस्या)

७ पौर्ण मासेष्टि (शुक्ल पाक्षिक यज्ञ प्रति पूर्णमासी । ८ संवत्सरेष्टि (नए वर्ष का यज्ञ चत्र सुदि ९, १६ मार्च १९३४ । ९ दयानन्द महायज्ञ (आर्य समाज की स्थापना) चैत्र सुदि ५, २० मार्च १९३४ १० रामनवमी (राम जन्म दिन) चैत्र सुदि ९, २४ मार्च १९३४ ११ वैशाखी, सौरवर्ष का आरम्भिक दिन, प्रथम वैशाख, १३ अप्रैल १९३४ । १२ वसन्त नवान्नेष्टि (नए अन्न का यज्ञ) मीन मेष के सूर्य । १३ श्रावणी-कर्म-यज्ञ (रक्षा बन्धन) श्रावण पूर्णमासी, २४ अगस्त १९३४ १४ कृष्णाष्टमी (कृष्ण जन्मदिन) भाद्रपद बदि ८, १ सितम्बर १९३४ १५ विरजानन्द उत्सव, अश्विन बदि १३, ६ अक्तूबर १९३४। १६ विजय दशमी दशहरा) अश्विन सुदि १०, १७ अक्तूबर १९३४ १७ शात नवान्नेष्टि (नए अन्न का यज्ञ) कार्तिक, कन्यातु ला के सूर्य । १८ दयानन्द निर्वाण (दीपमाला) कार्तिक अमावस्या, ७ नवम्बर १९३४ । १९ साकमेध चातुर्मासेष्टि, कार्तिक पूर्णमासी, २१ नवम्बर १९३४ २० उत्सर्ग कर्म (यज्ञ) पौष रोहिणी नक्षत्र । २१ लोहड़ी, पौष मासन्त,१२ नवम्बर १९३४ २२ संक्रान्त माघी, प्रथम माघ, १२ जनवरी १९३४। २३ वसन्त पञ्चमी (हकीकत वलिदान) माघ सुदि ५, २० जनवरी १९३४। २४ दयानन्द बोधोत्सव (शिवरात्रि) फाल्गुण बदि १४, १२ फ़रवरी १९३४। २५ वीरोत्सव (लेखराम-बलिदान) फाल्गुण सुदि ३, १६ फरवरी १९३४

२६ होली, फाल्गुण पूर्णिमा, १ मार्च १९३४

२७ गुरुदत्त उत्सव, चैत्र बदि १४, १४ मार्च १९३४

२८ श्रद्धानन्द बलिदान उत्सव पौष बदि ४, २५ दिसम्बर १९३४

२९ राजपाल बलिदान चैत बदि द्वादसी, १२ मार्च १९३४ (१९२९, ६ एप्रिल को चैत बदि द्वादसी थी)

सं० १९९१ मघर वदि परपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फसली	नवम्बर	मघर	उदय		अस्त	
२५	१४	१	वृ.	६	४	रो.	३१	७	शि.	१७	३९	१४	१	२२	७	६	५७	५	३
२५	१२	२	शु.	७	४२	मृ.	३४	३८	सि.	१६	१५	१५	२	२३	८	६	५८	५	२
२५	९	३	श.	१०	३६	SS	३९	१६	सा.	१५	३१	१६	३	२४	९	६	५८	५	२
२५	८	४	र.	१२	२८	पु.	४४	५३	शु.	१५	५८	१७	४	२५	१०	६	५८	५	२
२५	७	५	चं.	१५	२२	पु.	५१	६	शु.	१६	४९	१८	५	२६	११	६	५८	५	२
२५	६	६	मं.	२४	२३	Sश्ले.	५७	३७	ब्र	१८	५	१९	६	२७	१२	६	५९	५	१
२५	५	७	बु.	२९	४७	म.	६०	००	ऐं.	१९	३०	२०	७	२८	१३	६	५९	५	१
२५	४	८	वृ.	३४	५५	म.	३	५९	व.	२०	३४	२१	८	२९	१४	६	५९	५	१
२५	३	९	शु.	३९	३८	पूर्वा फा.	९	४९	वि.	२१	१३	२२	९	३०	१५	६	५९	५	१
२५	२	१०	श.	४४	००	उ. फा	१५	४९	प्री.	२१	८	२३	१०	१	१६	६	५९	५	१
२५	१	११	र.	४४	३५	ह.	१८	४१	SS	२०	९	२४	११	२	१७	६	५९	५	१
२५	००	१२	चं.	४५	२५	चि.	२१	२४	सौ.	१८	१४	२५	१२	३	१८	७	००	५	००
२४	५९	१३	मं.	४४	५४	स्वा.	२२	५०	शो.	१५	१९	२६	१३	४	१९	७	००	५	००
२४	५८	१४	बु.	४३	११	वि.	२३	२	Sगं	११	२४	२७	१४	५	२०	७	००	५	००
२४	५७	३०	वृ.	४०	२८	Sनु	२२	३५	सु.	६	३३	२८	१५	६	२१	७	००	५	००

वर्तमान प्रचलित सम्बत्

१—सृष्टि, आर्य या वैदिक सम्वत् सृष्टि के आदि से १९७२९४९०३४।
२—चीनी सम्वत्, चीन के पहले बादशाह से, ९६००२४३३।
३—खताई सम्वत्, खता के पहले बादशाह से ८८८४०३०६।
४—पारसी सम्वत्, ईरान के पहिले बादशाह से १८९९०३।
५—कल्डिया (मूरसेआला) प्राचीन पूर्वज से, १५१९३३।
६—मिसरी सम्वत् ३७५०७।
७—कुस्तुन्तुनिया सम्वत् ७५४०।
८—अनताकिया सम्वत् ७४२६।
९—जूलियन सम्वत्, ६६४७।
१०—ईसाई दुनिया का सम्वत ५९३८।
११—खरानी सम्वत् ५९३८।
१२—यहूदी सम्वत् ५६९३।
१३—कलियुगी सम्वत् ५०३५।
१४—ह० नूह सम्वत्, ५०३५।
१५—युधिष्ठरी सम्वत् ४३८२।
१६—परसराम संबत्, ४१०८।
१७—इब्राहीमी संबत् ३८५४।
१८—स्पाटी सम्वत ३६३७।
१९—मूसवी सम्वत् ३५०६।
२०—दाऊदी सम्वत् २९६८।
२१—यूनानी सम्वत् ३७०९।
२२—रूमी सम्वत २६८६।
२३—चालुसारी सम्वत बावल के प्रथम बादशाह से २६८०।
२४—बुद्ध साखी मुनि सम्वत बुद्ध के ५०वें वर्ष से २५०७।
२५—बरमी सम्बत् २४७८।
२६—सिकन्दरी सम्वत २२८७।
२७—विक्रमी सम्वत १९९१।
२८—ईसवी सम्वत् १९३४।
२९—मुहमदी सम्वत् १३५२।
३०—बंगाली सम्वन् १३४१।
३१—शालवाहन सम्वन् १८५६।
३२—यजीदी सम्वत् १३०३।
३३—मशहूर सम्वत् (महाराष्ट्र) ५९२
३४—नानकशाही सम्वत ४६४।
३५—विलायती सम्वत ३८३।
३६—दयानन्दी सम्वत् ५१।

सं० १६६१ मघर शुदि पूर्व पक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	दिसम्बर	मघर	उदय		अस्त	
२४	५६	१	शु.	३६	३९	ज्ये.	२०	११	धृ	००	५२	२९	१६	७	२२	७	००	५	००
२४	५५	२	श.	३०	८	मू.	१७	२७	गं	४७	३१	३०	१७	८	२३	७	१	४	५९
२४	५४	३	र.	२३	४९	पू. षा.	१४	२	वृ.	४०	२	१	१८	९	२४	७	१	४	५९
२४	५३	४	चं.	२१	१९	उ. षा.	१०	१९	ध्रु	३२	१८	२	१९	१०	२५	७	१	४	५९
२४	५२	५	मं.	१५	२०	श्र.	६	००	व्या	२४	२३	३	२०	११	२६	७	१	४	५९
२४	५१	६	बु.	९	३३	ध.	१	४६	ह.	१६	३१	४	२१	१२	२७	७	२	४	५८
२४	५०	७	वृ.	३	३	पू.भा.	५४	००	व.	८	४७	५	२२	१३	२८	७	२	४	५८
२४	५०	८	वृ.	५८	२९	अवम.													
२४	४९	९	शु.	५३	३६	उ.भा.	५१	५०	सि.	१	२०	६	२३	१४	२९	७	२	४	५८
२४	४८	१०	श.	४९	३९	रे.	४८	३०	व.	४८	५	७	२४	१५	१	७	२	४	५८
२४	४७	११	र.	४६	३४	ऽश्व.	४६	५८	प.	४२	१८	८	२५	१६	२	७	२	४	५८
२४	४६	१२	चं.	४४	२८	भ.	४६	३१	शि.	३७	४१	९	२६	१७	३	७	३	४	५७
२४	४५	१३	मं.	४३	३८	कृ.	४७	१५	सि.	३३	५०	१०	२७	१८	४	७	३	४	५७
२४	४४	१४	बु.	४४	३	रो.	४९	१५	सा.	३१	१	११	२८	१९	५	७	३	४	५७
२४	४३	१५	वृ.	४५	५७	मृ.	५२	३२	शु	२९	१०	१२	२९	२०	६	७	३	४	५७

आर्य्य समाज के इतिहास की विशेष घटनायें

१७९७—स्वामी विरजानन्द का जन्म। १८२४—स्वामी दयानन्द का जन्म टंकारा, (रियासत मोरवी में) १८३६—स्वामी विरजानन्द का मथुरा में वास आरम्भ। १८३८—स्वामी दयानन्द की बोध शिवरात्रि। १८४०—स्वामी दयानन्द की बहन का देहान्त। १८४७—मूलशंकर का संन्यास धारण कर दयानन्द बनना। १८५४—स्वामी दयानन्द का गृह त्याग। १८५४—महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) का जन्म। १८५७—स्वामी विरजानन्द की प्रतिज्ञा ऋषिकृत ग्रन्थ पढ़ाने विषयक। १८५८ पं० लेखराम का जन्म। १८६०—स्वामी दयानन्द की स्वामी विरजानन्द द्वारा शिक्षा। १८६३ स्वामी दयानन्द का स्वामी विरजानन्द से आज्ञा प्राप्त कर सत्य का प्रचार करना। १८६४—पण्डित गुरुदत्त का जन्म। १८६६—स्वामी दयानन्द की स्वामी विरजानन्द से पुनः भेंट। १८६७—स्वामी दयानन्द का हरिद्वार कुम्भ पर पाखण्ड-खण्डिनी पताका का गाड़ना। १८६७—स्वामी दयानन्द को प्रथमवार विष दिया गया। १८६८ स्वामी विरजानन्द जी का देहान्त। १८६९—स्वामी दयानन्द का काशी शास्त्रार्थ। १८७२—स्वामी दयानन्द का बाबू केशव चन्द्रसेन तथा देवेन्द्रनाथ से वार्तालाप। १८७५—आर्यसमाज की बम्बई में स्थापना। १८७७—आर्यसमाज लाहौर की स्थापना। १८७८—आर्यसमाज मेरठ की स्थापना। १८८१—पण्डित लेखराम की दयानन्द से भेंट। १८८३—पण्डित गुरुदत्त को स्वामी दयानन्द का दर्शन प्राप्त। स्वामी दयानन्द का देहान्त दीपावलि के दिन अजमेर में। १८८६—दयानन्द कालिज लाहौर की स्थापना। १८९७—पण्डित लेखराम का एक मुसलमान द्वारा बलिदान ६ मार्च लाहौर में। १९०१—गुरुकुल वृन्दावन की स्थापना। सिकन्दरा-

सम्वत् १९९१ पौष वदि परपक्ष

दिन मान	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	दिसम्बर	पौष	उदय	अस्त
२४ ४२	१	शु.	४८	४६	ऽऽ.	४८	४६	शु.	२८	१५	१३	१	२१	७	७ ४	४ ५६
२४ ४१	२	श.	५२	४८	पु.	५२	४८	ब्र.	२८	१५	१४	२	२२	८	७ ४	४ ५६
२४ ४०	३	र.	५७	५१	पु.	५७	४१	मैं	२८	५६	१५	३	२३	९	७ ४	४ ५६
२४ ४१	४	चं.	६०	००	पु.	६०	००	वै.	३०	३	१६	४	२४	१०	७ ४	४ ५६
२४ ४२	४	मं.	३	१२	ऽश्ले.	३	१२	वि.	३१	२५	१७	५	२५	११	७ ४	४ ५६
२४ ४३	५	बु.	८	३०	म.	८	३०	प्री.	३२	३९	१८	६	२६	१२	७ ४	४ ५६
२४ ४५	६	बृ.	१३	२५	पू. फा.	१३	२५	ऽऽ.	३३	२९	१९	७	२७	१३	७ ३	४ ५७
२४ ४७	७	शु.	१७	४६	उ.फा.	१७	४६	सौ.	३३	३९	२०	८	२८	१४	७ ३	४ ५७
२४ ४९	८	श.	२१	३	ह.	२१	३	शो.	३३	५७	२१	९	२९	१५	७ ३	४ ५७
२४ ५१	९	र.	२३	५	चि.	२३	५	ऽगं.	३१	२५	२२	१०	३०	१६	७ २	४ ५८
२४ ५३	१०	चं.	२३	५०	स्वा.	२३	५०	सु	२८	५२	२३	११	३१	१७	७ २	४ ५८
२४ ५५	११	मं.	२३	१३	वि.	४२	१६	धृ	२५	१९	२४	१२	१	१८	७ १	४ ५९
२४ ५७	१२	बु.	२१	२४	ऽनु.	४१	३६	शू.	२१	४६	२५	१३	२	१९	७ १	४ ५९
२४ ५८	१३	बृ.	१८	३३	ज्ये.	३९	५५	गं.	१५	२३	२६	१४	३	२०	७ १	४ ५९
२४ ५९	१४	शु.	१४	३९	मू.	३७	२३	वृ.	९	१४	२७	१५	४	२१	७ ००	५ ००
२५ १	३०	श.	१०	८	पू.षा.	३४	८	ध्रु.	२	३६	२८	१६	५	२२	७ ००	५ ००

बाद में। १९०२—गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना। १९०५कांगड़ा दुर्भिक्ष में आर्यसमाज की सहायता। १९२१—मोपला विद्रोह के पश्चात् मालावार में आर्य समाज का कार्य वा कालीकट (मद्रास) में आर्यसमाज की स्थापना। १९२३—म० रामचन्द्र का जम्मू रियासत में अछूतोद्धार कार्य के कारण बलिदान। १९२५—मथुरा में दयानन्द-शताब्दी-उत्सव। ९९२६—टंकारो में दयानन्द-शताब्दी-उत्सव। १९२६—स्वामी श्रद्धानन्द का एक मुसलमान अबदुर्रशीद द्वारा बलिदान २३ दिसम्बर को देहली में। १९२७ म० राजपाल पर २६ दिसम्बर को खुदाबख्श का आक्रमण। १९२७—स्वामी सत्यानन्द जी पर ९ अक्तूबर को अब्दुल अज़ीज़ का लाहौर में आक्रमण। १९२७, ५ नवम्बर को देहली में भारत के आर्यों की कांग्रेस। १९२९—६ अप्रैल को लाहौर में इलमदीन तरखान ने खंजर से २ बजे दोपहर म० राजपाल को शहीद किया। १९३३ दयानन्द निर्वाण अ० श० अजमेर।

सं० १९९१ पौष शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	जनवरी	पौष	उदय		अस्त	
२५	३	१	र.	४	४६	उ. षा.	३०	२४	ह.	४८	२८	२९	१७	६	२३	७	००	५	००
२५	३	२	र.	५९	१४	अवम													
२५	५	३	चं.	५३	१९	श्र	२६	१९	व.	३९	३७	१	१८	७	२४	६	५९	५	१
२५	७	४	मं.	४७	३१	ध.	२२	७	सि.	३१	४२	२	१९	८	२५	६	५९	५	१
२५	९	५	बु.	४१	४३	श.	२८	३	व्य.	२३	५४	३	२०	९	२६	६	५८	५	२
२५	१०	६	बृ.	३६	३३	पू. भा.	१४	१५	व.	१६	२०	४	२१	१०	२७	६	५८	५	२
२५	१२	७	शु.	३१	४३	उ. भा.	१०	५९	प.	९	१४	५	२२	११	२८	६	५८	५	२
२५	१४	८	श.	२७	५३	रे.	८	२६	शि.	३	४०	६	२३	१२	२९	६	५७	५	३
२५	१६	९	र.	२४	५१	ऽश्व.	६	४४	सा.	५१	४५	७	२४	१३	३०	६	५७	५	३
२५	१८	१०	चं.	२२	५७	भ.	६	३	शु.	४७	३५	८	२५	१४	१	६	५७	५	३
२५	२१	११	मं	२३	१५	कृ.	६	३१	शु.	४४	२२	९	२६	१५	२	६	५६	५	४
२५	२४	१२	बु.	२२	५०	रो.	८	१४	ब्र.	४२	११	१०	२७	१६	३	६	५५	५	५
२५	२७	१३	बृ.	२४	५२	मृ.	११	१४	ऐं.	४१	१	११	२८	१७	४	६	५५	५	५
२५	३०	१४	शु.	२७	४८	ऽऽ.	१५	२१	वै	४१	४५	१२	२९	१८	५	६	५४	५	६
२५	३२	१५	श.	३२	४	पु.	२०	३७	वि	४१	१५	१३	३०	१९	६	६	५४	५	६

सम्वत् १९९१ माघ वदि परपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	जनवरी	माघ	उदय		अस्त	
२५	३५	१	र.	३६	५५	पु.	२६	३६	प्री	४२	१७	१४	१	२०	७	६	५३	५	७
२५	३७	२	चं.	४२	२८	श्ले.	३३	५	ऽऽ.	४५	३८	१५	२	२१	८	६	५३	५	७
२५	४०	३	मं.	४७	४३	म.	३९	३७	सौ,	४५	१	१६	३	२२	९	६	५२	५	८
२५	४२	४	बु.	५२	४८	पू. फा.	४५	४८	शो.	४६	१	१७	४	२३	१०	६	५२	५	८
२५	४५	५	वृ.	५६	४१	उ. फा.	५१	१६	ऽगं.	४६	१	१८	५	२४	११	६	५१	५	९
२५	४८	६	शु.	६०	००	ह.	५५	४४	सु.	४६	९	१९	६	२५	१२	६	५०	५	१०
२५	५३	६	श.	००	५	चि.	५९	४	धृ.	४५	००	२०	७	२६	१३	६	५०	५	१०
२५	५६	७	र.	२	००	स्वा.	६०	००	शू.	४२	४८	२१	८	२७	१४	६	४९	५	११
२६	००	८	चं.	२	३८	स्वा.	१	७	गं.	३९	३४	२२	९	२८	१५	६	४८	५	१२
२६	४	९	मं.	१	५७	वि.	१	५५	वृ.	३५	३४	२३	१०	२९	१६	६	४७	५	१३
२६	८	१०	बु.	००	२	ऽनु.	१	३१	ध्रु.	३०	१०	२४	११	३०	१७	६	४७	५	१३
२६	८	११	बु.	५७	१६	अवम.													
२६	१२	१२	वृ.	५२	५८	ज्ये.	००	२	व्या.	२४	१७	२५	१२	३१	१८	६	४६	५	१४
२६	१६	१३	शु.	४८	३०	पू. षा	५४	३८	ह.	१७	५३	२६	१३	१	१९	६	४५	५	१५
२६	२०	१४	श.	४३	८	उ.षा.	५१	००	व.	१०	४७	२७	१४	२	२०	६	४४	५	१६
२६	२४	३०	र.	३७	३१	श्र.	४७	००	सि.	३	२३	२८	१५	३	२१	६	४३	५	१७

विदेश में कितने भारतीय कहाँ बसते हैं।

एशिया—लङ्का में ६९७२०५, ब्रिटिश मलाया में ६३४००९, ब्रिटिश बोर्नियो में १२९८, डच ईस्ट इंडीज में २७६३८, श्याम में ४०००, फ्रान्सीसी इन्डोचीन में ६०००, हाँगकाँग में ४७४५, जापान में ३१९, अफ़गानिस्तान में १५९, फारस में ३९०००, इराक में २५९६, मुस्कट में ४०००, अदन में ७२४७, टर्की में २५, सिचेलीज में ५५५, अण्डमन में ७५००, पेलेस्टाइन में ६०, कौमन वेल्थ आफ अस्ट्रेलिया में २०००, डोमिनियन आफ न्यूज़ीलैन्ड में ११६६, फिजी में ७६७२२, टोन्गा (द्वीप) २३, फानिग (द्वीप) ४।

अफ्रीका—द्रपोन्मी में १२, ईजिप्त में ५११, सूदान में ५२५, मडरा सोमानीलण्ड ५२०, इटालियन सोमानीलैण्ड में ३२६, अबीसीनिया में २०००, केनिया में ३९६४४, जंजीबार (प्रोटेक्टोरेट) १५२६४, यूगेण्डा में १५०७७, टांगानिका (टेरीटरी) में ३२४२२, पुर्तगाल ईस्ट अफ्रीका में ५०००, उत्तरी रोडेशिया में १७१, दक्षिणी रोडेशिया में १०००, न्यासालैंड में १५०९, नेटाल में १४६६८६, ट्रान्सवाल में १५७४७, केपकॉलोनी में ६६५५, वेलजियम कोगो में ३५०, मेडागास्कर में ७९४५, रिपूनियन में १०००, मौरीशस में २१५७९६, गोल्ड कोस्ट कॉलोनी में ५६, नाइजीरिया में ३२, सीरिया लीनो में २५।

उत्तरीय अमरीका—कनाडा में ११००, यू० एस० ए० में १८५०।

मध्य अमरीका—मेक्सिको में २५०, पानामा में ३००, ब्रिटिश होन्डरस में ४९७।

दक्षिणी अमरीका—ब्रिटिश गायना में १३१९१९, डच गायनामें ३६१५०, मानी में २०००।

वेस्ट इंडीज़—जमैका में १७७७५, ट्रिनीडाड टोबेगी में १३७८३२, क्यूबा में १०००।

यूरोप—इङ्गलैंड वेल्स में ७१२८, फ्राँस में ३५०, जर्मनी में २००, वेलजियम में १५, इटली में ३०, आस्ट्रिया में ३०, स्विटजरलैंड में २२, स्पेन में २००, जिब्राल्टर में ७९, माल्टा में ४३।

सम्वत् १६६१ माघ शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फसली	फरवरी	माघ	उदय		अस्त	
२६	२८	१	चं.	३१	३०	ध.	४२	४९	प.	४७	३३	२९	१६	४	२२	६	४३	५	१७
२६	३२	२	मं.	२५	४५	श.	३८	४२	व.	३९	४५	३०	१७	५	२३	६	४२	५	१८
२६	३६	३	बु.	१९	५८	पू. भा.	३२	५१	शि.	३२	५	१	१८	६	२४	६	४१	५	१९
२६	४०	४	वृ.	१४	४८	उ. भा.	३१	२६	सि.	२४	५३	२	१९	७	२५	६	४०	५	२०
२६	४४	५	शु.	१०	००	रे.	२८	४३	सा.	१८	११	३	२०	८	२६	६	३९	५	२१
२६	४८	६	श.	६	१५	ऽश्व.	२६	५२	शु.	१२	६	४	२१	९	२७	६	३९	५	२१
२६	५२	७	र.	३	१७	भ.	२५	५५	शु.	६	५०	५	२२	१०	२८	६	३८	५	२२
२६	५६	८	चं.	१	२८	कृ.	२६	८	ब्र.	२	२२	६	२३	११	२९	६	३७	५	२३
२७	००	९	मं.	००	५१	रो.	२७	३४	वै.	५६	२७	७	२४	१२	१	६	३६	५	२४
२७	४	१०	बु.	१	२९	मृ.	२९	१८	वि.	५५	६	८	२५	१३	२	६	३५	५	२५
२७	८	११	वृ.	३	३९	ऽऽ	३४	१३	प्री.	५४	३४	९	२६	१४	३	६	३४	५	२६
२७	१२	१२	शु.	६	४३	पु.	३९	१३	ऽऽ.	५४	५४	१०	२७	१५	४	६	३४	५	२६
२७	१६	१३	श.	११	४	पु.	४५	८	सौ.	५५	५२	११	२८	१६	५	६	३३	५	२७
२७	२०	१४	र.	१५	५३	श्ले.	५१	३४	शो.	५७	१३	१२	२९	१७	६	६	३२	५	२८
२७	२४	१५	चं.	२१	२७	म.	५८	८	ऽगं.	५८	४०	१३	३०	१८	७	६	३१	५	२९

सम्वत् १९९१ फाल्गुण वदि परपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	फ़रवरी	फाल्गुण	उदय		अस्त	
२७	२८	१	मं.	२७	१२	पू. फा.	६०	००	सु.	५९	५०	१४	१	१९	८	६	३१	५	२९
२७	३२	२	बु.	३१	१९	पू. फा.	४	३६	धृ.	६०	००	१५	२	२०	९	६	३०	५	३०
२७	३६	३	बृ.	३५	२९	उ. फा.	१०	७	धृ	००	३६	१६	३	२१	१०	६	२९	५	३१
२७	४०	४	शु.	३८	२४	ह.	१४	५९	शू.	००	३७	१७	४	२२	११	६	२८	५	३२
२७	४५	५	श.	४०	१९	चि.	१८	२६	वृ.	५८	६	१८	५	२३	१२	६	२७	५	३३
२७	५०	६	र.	४०	४५	स्वा.	२०	४८	ध्रु.	५५	२६	१९	६	२४	१३	६	२६	५	३४
२७	५५	७	चं.	३९	५७	वि.	२१	५०	व्या.	५१	२७	२०	७	२५	१४	६	२५	५	३५
२८	००	८	मं.	३७	५७	ऽनु.	२१	४३	ह.	४६	४२	२१	८	२६	१५	६	२४	५	३६
२८	५	९	बु.	३४	४९	ज्ये.	२०	२८	व.	४१	१६	२२	९	२७	१६	६	२३	५	३७
२८	१०	१०	बृ.	३०	५२	मू.	१८	२५	सि.	३४	५०	२३	१०	२८	१७	६	२२	५	३८
२८	१५	११	शु.	२५	५७	पू. षा	१४	२७	व्य	२७	५५	२४	११	१	१८	६	२१	५	३९
२८	२०	१२	श.	२०	४२	उ. षा.	१२	५५	व	२०	५१	२५	१२	२	१९	६	२०	५	४०
२८	२५	१३	र.	१४	५१	श्र.	७	५९	प.	१२	५१	२६	१३	३	२०	६	१९	५	४१
२८	३०	१४	चं.	८	५९	ध.	३	५१	शि.	५	००	२७	१४	४	२१	६	१८	५	४२
२८	३५	३०	मं.	२	५२	पू. भा.	५५	४७	सा.	४९	३७	२८	१५	५	२२	६	१७	५	४३

सम्वत् १९९१ फाल्गुण शुदि पूर्वपक्ष

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	मार्च	फाल्गुण	उदय		अस्त	
२८	३५	१	मं.	५७	२१	अवम													
२८	४०	२	बु.	५१	५६	उ. भा.	५२	१८	शु.	४२	४६	२९	१६	६	२३	६	१६	५	४४
२८	४५	३	बृ.	४७	२०	रे.	४९	२४	शु.	३५	५४	१	१७	७	२४	६	१५	५	४५
२८	५०	४	शु.	४३	१९	ऽश्व.	४७	२३	ब्र	२९	४३	२	१८	८	२५	६	१४	५	४६
२८	५५	५	श.	४०	३३	भ.	४६	१३	ऐं.	२३	३२	३	१९	९	२६	६	१३	५	४७
२९	००	६	र.	३८	४२	कृ.	४६	११	वै.	१८	५६	४	२०	१०	२७	६	१२	५	४८
२९	५	७	चं.	३८	६	रो.	४६	१९	बि.	१५	१६	५	२१	११	२८	६	११	५	४९
२९	१०	८	मं.	३८	५०	मृ.	४९	४६	प्री.	१२	३८	६	२२	१२	२९	६	१०	५	५०
२९	१५	९	बु.	४०	५६	ऽऽ	५३	२९	ऽऽ	११	००	७	२३	१३	३०	६	९	५	५१
२९	२०	१०	बृ.	४२	५५	पु.	५८	१५	सौ.	१०	१५	८	२४	१४	१	६	८	५	५२
२९	२५	११	शु.	४८	१७	पु.	६०	००	शो.	१०	२८	९	२५	१५	२	६	७	५	५३
२९	३०	१२	श.	५३	५	पु.	३	००	ऽगं.	११	२०	१०	२६	१६	३	६	६	५	५४
२९	३५	१३	र.	५८	३५	ऽश्ले.	१०	२०	सु.	१२	४०	११	२७	१७	४	६	५	५	५५
२९	४०	१४	चं.	६०	००	म.	१६	५५	धृ	१४	११	१२	२८	१८	५	६	४	५	५६
२९	४५	१४	मं,	३	४१	पूर्वा फा.	२३	१९	शू.	१५	३४	१३	२९	१९	६	६	३	५	५७
२९	५०	१५	बु.	८	३३	उ. फा.	२९	१०	गं	१६	३०	१४	३०	२०	७	६	२	५	५८

सं० १९९१ चैत्र वदि परपत्र

दिन मान		तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	हिजरी	फ़सली	मार्च	चैत	उदय		अस्त	
२९	५५	१	बृ.	१२	२३	ह.	३४	७	वृ.	१६	४८	१५	१	२१	८	६	१	५	५९
३०	००	२	शु.	१५	१७	चि.	३७	५८	ध्रु.	१६	१४	१६	२	२२	९	६	००	६	००
३०	५	३	श.	१६	५३	स्वा.	४०	३७	व्या	१४	१७	१७	३	२३	१०	५	५९	६	१
३०	१०	४	र.	१७	१४	वि.	४१	५८	ह.	१२	२०	१८	४	२४	११	५	५८	६	२
३०	१५	५	चं.	१६	१७	ऽनु	४२	७	व.	८	५१	१९	५	२५	१२	५	५७	६	३
३०	२०	६	मं.	१४	३	ज्ये.	४१	६	सि.	४	२४	२०	६	२६	१३	५	५६	६	४
३०	२५	७	बु.	१०	५१	मू.	३९	१३	व.	५३	५	२१	७	२७	१४	५	५५	६	५
३०	३०	८	बृ.	६	४९	पू. षा.	३५	२६	प.	४६	२३	२२	८	२८	१५	५	५४	६	६
३०	३५	९	शु.	१	४८	उ. षा.	३३	१	शि.	३९	११	२३	९	२९	१६	५	५३	६	७
३०	३५	१०	शु.	५६	४७	अवम.													
३०	४०	११	श.	५०	३०	श्र	२९	९	सि.	३१	३८	२४	१०	३०	१७	५	५२	६	८
३०	४५	१२	र.	४४	३७	ध.	२५	२	सा.	२३	५६	२५	११	३१	१८	५	५१	६	९
३०	५०	१३	चं.	३८	३१	श.	२०	५३	शु.	१६	८	२६	१२	१	१९	५	५०	६	१०
३०	५५	१४	मं.	३२	५१	पू. भा.	१६	५५	शु.	८	३१	२७	१३	२	२०	५	४९	६	११
३१	००	३०	बु.	२७	२२	उ: भा.	१३	२०	ब्र.	१	७	२८	१४	३	२१	५	४८	६	१२

आर्य पुस्तकालय, नई सड़क, देहली

[शेष पृष्ठ ३५ का]

७—भजन भूलचूक की महिमा अथवा आनन्द दायक गलतियों का नमूना— स्वा० भीष्म जी के भजनों की अनोखी रचना। रिआयती -)

८—ऐतिहासिक-अमर-जीव भजनावली— बिलकुल नए भजन, राजपूताने के वीर, वीराङ्गनाओं के रोमांचकारी जीवन वृत्तान्त है। पं० रामानन्द उपदेशक इन्द्रप्रस्थ आर्य प्रतिनिधि सभा देहली कृत। रिआयती =)

९—भजन अग्नि-बाण— पाखण्डखण्डनी के रचियता पं० बस्तीराम कृत। आखिरी भजन सवाल जवाब महाराणा "प्रताप" और राजा "मान" देखने योग्य हैं। रिआयती दाम ≡)

१०—लालसिंह भजनावली ३ भाग— ठा०लालसिंह उपदेशक श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल रचित नई पुस्तक, अनेक रङ्गतों और तर्जों में भजन दिये हैं। महाराणा "प्रताप" और "भामाशाह" की उदारता पूर्ण सहायता से चित्तौड़गढ़ की मुश्किल आसान होना। महाराजा पृथ्वीराज और उनके महाकवि चन्द्रवर्दाई का अपने मरने से पहले, शहाबुद्दीन ग़ौरी के प्राण लेने का वृत्तान्त है दाम ≡)

११—हरियाना-भजन-पुष्पाञ्जली— इसमें हरियाने (ज़िला रोहतक, करनाल, गुड़गांवा, हिसार और देहली सूबे) के वर्तमान प्रसिद्ध कवि भजनीक स्वा० भीष्म जी, चौ० ईश्वरसिंह जी, चौ० न्यादरसिंह जी और चौ० फ़कीरचन्द जी के भजन, गीत, पहिले न छपी हुई आदर्श कथायें (१—तारावती, २—विधवा लड़की, ३—राजा हरिश्चन्द्र मदनावत, ४—चन्द्रकान्ता, ५—भोगवती, ६—ध्रुवभक्त, ७—सती सुलोचना) संग्रहीत हैं दाम ॥)

१२—सचित्र योगासन— यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है। इसमें दिये हुये आसनों से आदमी निरोगी रह सकता है, कई रोगों का इलाज है डाक्टर हकीम की दवा खाये बिना इनसे अच्छा हो जाता है, पहला एडीशन ख़तम है। दूसरा छप रहा है। ।=) रिआयती।)

१३—वेदान्त दर्शन— स्वा० दर्शनानन्द जी भाष्य दाम १।) भारी कमीशन।

१४—बाल-शिक्षा— स्वा० दर्शनानन्द कृत छोटे बालक पढ़ते ही अपने धर्म-कर्म से वाकिफ हो जाते हैं। दाम)॥

१५—मुबाहिसा देहली उर्दू हिन्दी— मार्के का शास्त्रार्थ पं० रामचन्द्र देहलवी का ४ मौलिवियों के साथ ईश्वर, जीव, प्रकृति के अनादित्व पर। दाम।)

इनके अतिरिक्त सर्व प्रकार की आर्य सामाजिक पुस्तकें, हवन सामग्री रजिस्टर्ड नं० ७८३ ॥) और ।) सेर, असली ज्वालामुखी धूपबत्ती १) सेर और ॥) सेर, आर्य कैलेन्डर =), योगासन चार्ट =), धूपदान -) से ।-) तक, हवन कुण्ड =)॥ से १) ताम्बे, लोहे के मिलते हैं। मंगाने का पता—चतुर आर्य सुखसेना एण्ड संज अध्यक्ष

मिलने का पता—"आर्य-पुस्तकालय" रौशनपुरा नई सड़क, देहली।

सार्व भौम आर्य्य-डाइरेक्टरी

आर्य्य-समाज प्रत्येक नगर में पृथक् २ दिखाई देता है। मेम्बर, अधिकारी, मन्दिर, कोष, संस्थादि सब कुछ जुदा हैं, परन्तु सिद्धान्त रूप से आर्य्य-समाज जो कलकत्ता में है वही बम्बई में है वही भारतवर्ष में है और वही अफ्रीका में, नियम, उप-नियम, उद्देश्य, आशा इत्यादि सब कुछ समान है और इस समानता को क़ायम रखना ही आर्य्यों का काम है। स्थूलदर्शी को मतभेद, विरोधादि भी दिखाई देते हैं, परन्तु सूक्ष्म-दर्शी इन झगड़ों को भी एक ही व्यापक उद्देश्य की रक्षा का साधन समझते हैं। सङ्कीर्ण हृदय निस्सन्देह आर्य्य-समाज की इस विशाल एवं उदारसत्ता का अनुभव नहीं कर सकता तथापि "सार्व भौम आर्य डाइरेक्टरी" वह पवित्र संस्था है जो सारी जनता के सामने आर्य्य मात्र को संसार के उपकार का यज्ञ रचाये हुये दिखाती है आर्य्य जगत के सामने आर्य समाज का सारा काम आता है और प्रत्येक आर्य्य पुरुष व्यक्तियों से गुज़र कर वैदिक मिशन की व्यापकता का दृश्य देखता और बड़े गर्व से कह सकता है कि

देखो क्या कुछ कर दिखलाया समाज ने

आर्य समाज करनाल का निस्सन्देह सारे आर्य जगत् को कृतज्ञ होना चाहिये कि उसने सर्व प्रथम आर्य डाइरेक्टरी के विचार को कार्य्य रूप में परिणत किया और आर्य-समाज के काम और उसकी उन्नति की गति के ज्ञात होता रहने का सिलसिला क़ायम किया। हमने भी वर्षों ही इसे अधिक उत्तम एवं लाभकारी बनाने के लिये भारत आर्य्य डाइरेक्टरी का सम्पादन तथा प्रकाशन किया, परन्तु १९१७ ई० से यह काम बन्द रहा। स्वर्गीय म० राजपाल जी से आशा थी कि वह किसी समय इस काम के लिये स्थाई प्रबंध कर सकेंगे। सन् १९२८ और २९ ई० के २ नम्बर आपने निकाले भी, परन्तु आपकी शहादत की दुर्घटना के पीछे ४ वर्ष से फिर यह कार्य्य बन्द था कि इस वर्ष "सार्व भौम आर्य धर्म सभा" के विचार के साथ अनेक कारणों से हमें इसका प्रकाशित करना अत्या-वश्यक प्रतीत हुआ और हर्ष का विषय है कि हम ईश्वर कृपा से इस वर्ष इसे पूर्व की अपेक्षा बहुत उत्तम रूप से तय्यार कर सके हैं और म० राजपाल के आर्य पुस्तकालय द्वारा ही यह प्रकाशित होती है। सार्व भौम आर्य धर्म सभा की सूक्ष्म व्यापकता को लक्ष्य रखते हुये हमें आर्य समाज के स्थूल व्यापक रूप के दर्शन कराने की आवश्यकता प्रतीत हुई और हमें पूर्ण आशा है कि आर्य मात्र के हृदय में इस डाइरेक्टरी के दर्शन के द्वारा आर्य समाज का दर्शन आनन्द और उत्साह का सञ्चार करेगा और वह वैदिक मिशन को सारे संसार में फैलाने के लिये इस विचार से पूरा साहस कर सकेंगे कि यदि भूत काल में हमारी तुच्छ अथवा अल्प शक्तियाँ ऐसा शानदार फल ला सकी हैं तो भविष्य में आर्य-समाज की बढ़ी हुई शक्तियाँ सङ्गठित रूप से क्या कुछ करके दिखा नहीं सकतीं!

—लक्ष्मण।

आर्य्य समाज का परिचय

चीन की दीवार, बाबल का बुर्ज आदि दुनिया के सब से बड़े अजाइबात कहे जाते हैं परन्तु हमारी सम्मति में आर्य्यसमाज सबसे निराला और अनूठा अजूबा है। चर्म दृष्टि से नज़र आने वाली ईंटें, चूने अथवा पत्थर की इमारत कहाँ आर्य्य समाज इन्द्रियों से अग्राह्य निरवयव सूक्ष्म परमाणुओं की मानवीय मस्तिष्क पर वह शानदार इमारत तामीर कर रहा है कि सारा वर्तमान इञ्जीनियरिंग कमाल उसके सामने तुच्छ है। वर्त्तमान साइन्स अपनी इतनी उन्नति और इक़बाल के साथ विद्युत के अनेक आविष्कार करने तथा वायरलैस टैलीग्राफ़ी (Wireless Telegraphy) से काम लेने पर भी प्रकृति के सत्, रज्, तम्, नाम के गुणों का साक्षात् नहीं कर सकता परन्तु आर्य्यसमाज इस प्रकृति के सूक्ष्म रूप से भी गुज़र कर सूक्ष्म तर आत्मा और अति सूक्ष्म परमात्मा के उस दरबार का जलवा दिखाता है जिसका दर्शन वर्तमान साइन्स की अन्तिम प्राकाष्ठा पर पहुँचे हुए विद्वानों को स्वप्न में होना भी असम्भव है।

वर्त्तमान ज्ञानरूपी संसार की सतह पर तैरने वाले बड़े २ प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफ़ेसर, धार्मिक अथवा पोलिटिकल नेता, बड़े से बड़े पूंजीपती, धनिक व्यापारी अपनी २ अवस्था में मस्त निश्चय किये बैठे हैं कि हम ही तरक़्क़ी के आस्मान के चमकते सितारे हैं, दुनिया उनकी इस गर्वपूर्ण स्थिति के सामने सिर झुकाती है परन्तु स्वामी दयानन्द उनके धर्मच्युत व्यवहार एवं दुखी अवस्था का चित्र उनके सामने रखता है तो वह अपने आप को अविद्या और पाप की गहरी कन्दरा में गिरा हुआ पाते हैं और मुक्त कण्ठ से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें अविद्या के विष के स्थान में यथार्थ ज्ञानरूपी अमृत मिले। धर्म से शून्य अवस्था में संसार का सारा ऐश्वर्य और सम्पत्ति भी दुख ही दुख का कारण होती है। महात्मा गांधी जैसा जगत में प्रसिद्ध नेता भी आयु भर स्वतन्त्रता के लिये परिश्रम करने के पश्चात् यह स्वीकार करता है कि मेरी नाकामी का मुख्य कारण मेरे देशवासियों में सदाचार की कमी होना है। स्वामी दयानन्द ने भारत वासियों को परीक्षा एवं आपत्ति में डालने के बिना ही योग बल से अनुभव कर लिया था कि प्रत्येक कार्य्य में सफलता का आधार मनुष्यों के Character (सदाचार) पर है और इस सदाचार का एकमात्र साधन धर्म है इसी धर्म के अप्रचार के कारण आनन्द स्वरूप परमात्मा का रचा स्वर्गरूप जगत् भी नरक बन रहा है इस कमी को पूरा करना उसने अपना मुख्य कर्तव्य समझा और—

नरक को स्वर्ग बनाने वाला आर्य्य-समाज

कायम किया। दुनिया उनके पीछे चल रही है जिन्होंने मानवीय विचारों के आधार पर मज़हब चला रखे हैं परन्तु आर्य्यसमाज मानवीय विचारों की बेड़ियों को काटता है। मतवादी लोग चाहते हैं कि उनके मज़हब क़ायम रहें उनकी कमाई में विघ्न न पड़े परन्तु

आर्य्यसमाज यह चाहता है कि सब मत मतान्तर का सफ़ाया हो क्योंकि बिना इसके मनुष्यों का एक ईश्वरीय धर्म के झण्डे तले इकट्ठे होना असम्भव है। अन्य विचारक जैसे परस्पर विरुद्ध साम्राज्यों में सुलह कराने आदि के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार की लीग बनाते अथवा कान्फ्रेन्सों के द्वारा समझौते करने का यत्न करते हैं, उसी प्रकार मत-मतान्तर में भी समझौतों के स्कीम सोचते हैं परन्तु आर्यसमाज सत्य और असत्य में समझौते का होना असम्भव मानता है और ऐसी रेतीली दीवार पर मनुष्य जाति के सुख-सम्पदा की इमारत बनाने वालों की बुद्धियों पर शोक प्रकाश करता है। आर्य-समाज मनुष्यों के परस्पर के प्रेम तथा एकता का आधार दिलों के मेल को समझता है और दिलों के मेल के लिये मत-मतान्तरों की सत्ता घातक विष है यही कारण है कि वह मत मतान्तर को निर्मूल करने के लिये उनका बलपूर्वक खंडन करता है। और इसके इसी मिशन के महत्व को अनुभव करते हुए पाताल में बैठा Andro Jackson Davis (एण्ड्रो जैक्सन डैविस) अपनी पुस्तक Beyond the Valley के ३८२ पृष्ठ पर बड़े सुन्दर शब्दों में इस का फ़ोटो खींचता है कि मुझे एक आग दिखाई देती है कि जो विश्व-व्यापी है असीम प्रेम की आग जो द्वेषादि को जलाती और सब चीज़ों को शुद्ध करती है। अमरीका के साफ़ मैदानों, अफ़रीका की विस्तृत भूमि, एशिया के ऊंचे पहाड़ों, यूरुप के बड़े २ साम्राज्यों पर मुझे इस सबको जलाने और साथ ही सब को इकट्ठा करने वाली आग के चिंगारे नज़र आते हैं............इस अग्नि को देख कर मैं अति प्रसन्न होरहा हूँ और उत्साहपूर्ण जीवन बिता रहा हूँ.......सब ऊंचे २ पहाड़ जल उठेंगे आबादियों के सुन्दर शहर जल जायेंगे। प्यारे घर और प्रेम भरे दिल साथ २ पिघलेंगे। पाप पुण्य मिल कर इस तरह ग़ायब होंगे जिस तरह सूरज की किरणों से ओंस के कतरे।

क्या यह शब्द न्याय और सत्य प्रिय विद्वानों को निश्चय नहीं दिलाते कि यथार्थ ऐक्य के लिये मनुष्यकृत मत-मतान्तर को निर्मूल करना ही एकमात्र साधन है। यही नहीं पाताल का यही फ़िलासफ़र आगे कहता है कि "यह आग सनातन आर्य्य-धर्म को असली पवित्र दशा में लाने के लिये एक भट्टी में थी जिसे आर्य्य-समाज कहते हैं। यह आग भारतवर्ष के एक योगी दयानन्द के हृदय में प्रकाशमान हुई थी।" एण्ड्रो जैकसन डैविस का अनुभवी मस्तिष्क इस प्रचंड अग्नि का दृश्य ही नहीं देखता। उसके दिव्य चक्षु उसे यह भी दिखाते हैं कि "हिन्दू मुसलमान इस प्रचंड आग को बुझाने के लिये तेज़ी से दौड़े परन्तु यह ऐसी तीव्रता से बढ़ती गई कि जिसका उसके प्रकाशक दयानन्द को भी ध्यान नहीं था। ईसाइयों ने भी एशिया के इस नए-प्रकाश को बुझाने के लिये हिन्दू मुसलमानों का साथ दिया परन्तु यह दैवी (कुदरती) आग और भी भड़क उठी और सर्वत्र फैल गई।"

प्रिय पाठक वृन्द! क्या यह अग्नि विचित्र प्रकार की अग्नि नहीं? फिर क्या यही वह अग्नि नहीं जिसे पूर्वीय विचारक कामाग्नि अथवा विषय भोग की प्रज्वलित ज्वाला को बुझाने वाला शीतल जल और इससे भी बढ़कर सारे आत्माओं की प्यास बुझाने वाला अमृत जल कहते हैं। निस्सन्देह वेद के ही सत्य ज्ञान रूपी अमृत जल से विषय वासना रूपी नरक की आग बुझती और मनुष्य अमर वा मोक्षपद को प्राप्त करता है।

वेद के उपासक उपनिषद् ही दारा के लिये जीवन और मृत्यु दोनों में शान्तिदायक बने। तब क्या ऐंड्रो जैक्सन डेविस के लेख में वर्णित अग्नि और पूर्वीय ऋषियों से वर्णित शीतल व अमृत जल को अपने रूप में एक कर दिखाने वाले आर्य्य समाज से बढ़कर दुनिया में कोई और अजूबा हो सकता है ?

इसी प्रकार दुनिया योरुप और अमरीका के गुण गाती है और प्राकृतिक उन्नति से कल्याण मानती हुई, उन्हीं का अनुकरण करने की प्रेरणा करती है, परन्तु आर्य्य-समाज बड़े उच्च स्वर से मानव जाति को सावधान करता है, कि कोई इस माद्दापरस्ती में गिरकर अपनी बहुमूल्य शक्तियों को दुख का कारण बना अपने पाओं पर कुल्हाड़ी न मारे। प्राकृतिक उन्नति में आसक्त पाश्चात्य चिकित्सकों का दिमाग़ जहाँ रोग के कुछ बाह्य चिन्हों तक ही चक्कर खाता है, वहाँ पूर्वीय ऋषि रोग के मूल कारण को नष्ट करने का उपदेश देते हैं। वह कहते हैं, देश दुःख का कारण नहीं, ऐसा होता, तो सब देशवासी एक से दुखी होते। काल दुख का कारण नहीं; ऐसा होता, तो एक ही काल के सब लोग एक से दुःखी या सुखी होते। इसी प्रकार अवस्था वा कर्म भी मूल कारण नहीं, किन्तु अज्ञान दुःख और ज्ञान सुख का मूल कारण है, जिनसे बुरे या भले काम की प्रेरणा मनुष्य के हृदय में होती है। इसी प्रकार सहस्रशः उपाय जो प्रकृति के उपासकों की ओर से मानव जाति के दुःख दूर करने को हो रहे हैं, आर्य्य-समाज को सर्वथा तुच्छ एवं दुःख की वृद्धि का कारण प्रतीत होते हैं, और वह सच्ची उन्नति के सारे साधन अर्थात् ज्ञान, आचार, धैर्य्य, शौर्य्य, निर्भयता, सत्यपरायणतादि देने वाले सच्चे धर्म के प्रचार में ही मनुष्य मात्र का यथार्थ कल्याण मानता है। और इसी मिशन की सफलता का वह श्रेष्ठ फल हो सकता है जिसका वर्णन ऐंड्रो जैक्सन डैविस इन शब्दों में करता है, कि सारे दोष समष्टि रूप से सदा की शुद्ध करने वाली भट्ठी में पड़कर भस्म हो जायेंगे, यहाँ तक कि रोग की जगह स्वास्थ्य, अन्ध विश्वास की जगह तर्क, पाप की जगह पुण्य, मृत्यु की जगह जीवन, द्वेष की जगह प्रेम, नरक की जगह स्वर्ग, भूत प्रेत की जगह परमेश्वर और प्रकृति का राज्य होगा। अपने भावों को और भी स्पष्ट करने के लिये गागर में सागर की भाँति पाताल का ऋषि कहता है।

"मैं इस आग को मङ्गलकारी समझता हूँ"

"जब यह आग सुन्दर पृथ्वी को नया जीवन देगी, तो सर्वत्र सुख, उन्नति और आनन्द का प्रकाश होगा।"

आर्य्य-समाज का इतिहास इस फ़िलासफ़र के वचनों की सत्यता का ज्वलन्त प्रमाण है। पौराणिकों ने इसका विरोध किया, ईंट, पत्थर, गाली-गलौज, मार-पीट बिरादरी से ख़ारजा, वाणी लेख से विरोध तथा मुक़द्मे सब कुछ मुट्ठी भर आर्य्यों को सत्य-मार्ग से विचलित करने के लिये प्रयुक्त हुआ, पर सत्य की ज्वाला न बुझी, पर न बुझी। अभियोग चलता है, पौराणिक पंडित गोपीनाथ परन्तु फ़ाज़िल मजिस्ट्रेट कैल्वर्ट का फ़ैसला चमकाता है, मुलज़िम महात्मा मुन्शीराम या आर्य्य-समाज को और एक दुनिया में ज़लील करता है, मुस्तग़ीस या पौराणिक दल को। यही नहीं स्वामी दयानन्द को विष देना, वीर

रामचन्द्र और तुलसीराम की हत्या विरोध-भाव के और भी भयंकर रूप प्रगट करते हैं। परन्तु आर्य्य-समाज इसका विचित्र ही उत्तर देता है, वह सांख्यकार कपिल महाराज के आदेशानुसार सत्योपदेश से आत्माओं को पलटने का यत्न ही नहीं करता, प्रत्येक आपत्ति में उन्हीं पौराणिकों के लिये अपने जान माल की बाज़ी लगाता है।

कांगड़ा के भूकम्प में, गढ़वाल तथा मध्य प्रदेश के दुर्भिक्ष में, मालाबार की अंधेर गरदी में, जम्मू कश्मीर के अत्याचारों में, महामरी आदि के अवसर पर अधिक क्या कहीं कोई कष्ट क्यों न हो आर्य्य समाज उसे निवारण करने को तन मन धन लगा देता है। मुसलमान भाई हैं तो हिन्दुओं से भी इसे मुख़ालिफ़त में बाज़ी ले जाते हैं। यहां तक कि उनके इनहीं विरोध पूर्ण भावों की आड़ में उनका निर्विवाद रूप से दीन इसलाम का शत्रु माना गया। मिरज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अनुचित लाभ उठाता और पं० लेखरांम जैसे विद्वान वैदिक मिशनरी के कतल की दुर्घटना होती है। अदालतों में आर्य्यों पर मुक़द्में चलते, पुस्तकें ज़ब्त होतीं और कैद जुर्माना तक के दंड मिलते हैं। गवर्नमेंट बरतानिया जैसी शक्तिशाली सरकार के राज्य में और उसकी राजधानी देहली में दिन दिहाड़े स्वामी श्रद्धानन्द जैसे प्रसिद्ध नेता को मौत के घाट उतारा जाता है। पंजाब की राजधानी लाहौर में म० राजपाल पर २-३ बार निर्दयता पूर्ण आक्रमण होते हैं। स्वामी सत्यानन्द जैसा संन्यासी ज़ख़मी होता और अन्त में म० राजपाल भी ठीक उनके अपने ही मकान पर सरे बाज़ार क़तल किया जाता है। परन्तु क्या आर्य्य समाज ने कभी इस घोर अत्याचार एवं शत्रुता का उन्हीं शस्त्रों से मुकाबला किया अथवा बदला लिया ? नहीं, आर्य्य समाज का उत्तर सदा एक ही रहा और एक ही रहेगा और वह यह है।

"सत्य का प्रकाश और वैदिक सच्चाइयों का प्रचार"

आर्य्य समाज का यह व्यवहार सिद्ध करता है कि उसमें मनुष्य मात्र के लिये सच्चे प्रेम और साथ ही आदर्श तप और सहन शीलता का भाव मौजूद है। यही कारण है कि यद्यपि मत मतान्तर आर्य्य समाज का विरोध करते दिखाई देते हैं, उनमें आर्य्य समाज के लिये विशेष विश्वास और आकर्षण भी मौजूद हैं। किरानी, कुरानी, पुराणी, राधा स्वामी आदि प्रत्येक मत वा सम्प्रदाय के लोग आर्य्य समाज में व्याख्यान वा शास्त्रार्थ आदि सुनने को अधिक से अधिक संख्या में पहुँचते हैं। ईसाई पादरी, सनातन धर्म सभा या राधा स्वामियों के हां तो कहां मुसलमानों के जलसे में भी कम ही खड़े होते हैं। मुसलमान विद्वान हैं तो उनका भी किसी और सोसाइटी से मेल नहीं होता हां प्रत्येक मत वाले शास्त्रार्थ, सम्मेलनादि के अवसर पर आर्य्य समाज में पूरे विश्वास से पहुँचते हैं। न केवल इनका सम्मिलित होना उत्साह जनक है, सत्य को क्रियात्मिक रूप में स्वीकार किये जाना भी आर्य्य समाज की विचित्र सफलता का चमत्कार दिखाता है। वह लोग जो मानते थे कि सूर्य्य कीचड़ के चश्मे में डूबता है। आज समझते हैं कि पहाड़ की ओट में दलदल थी अतः सूर्य्य अस्त होने के समय पहाड़ की दूसरी ओर के लोग कहते थे कि सूर्य्य कीचड़ के चश्में में डूब गया। जो लोग छतकी तरह भिन्न भिन्न घातों के ७ आसमान मानते थे अब आसमान को केवल तबका मानते हैं। वेद में जो भिन्न २ वायुओं

के नाम पर प्रत्येक लोक के गिर्द ७ परिधि कही थीं वही ७ तवकों का नाम पा रही हैं और आसमानों के सम्बन्ध में पहिले विचार दूर हो चुके हैं। जिस अर्श की कुरसी पर खुदा ने करार पकड़ा था वह विस्तृत संसार बन गई है जिसमें ख़ुदा सर्वत्र व्यापक है। बाल से भी बारीक पुले सिरात जिससे पापी लोग कट कट कर दोज़ख में गिरते हैं अब धर्म की तीक्ष्ण धार माना जा रहा है अर्थात् वह मार्ग जिस पर जाना पापी के लिये अति दुस्तर है। जिन फ़िरिश्तों ने आदम को सिजदा किया उनकी जीवित प्राणियों के रूप में कोई स्थिति नहीं रही अब उनको प्राकृतिक वस्तुएं माना जा रहा है, जो परमात्मा ने मनुष्यों के उपयोग के लिये बनाई हैं। यही फ़िरिश्ते मनुष्य की इच्छा के आधीन हैं परन्तु शैतान अर्थात् नफ़्से इम्मारा पर निर्धारित उपयोग उसके यथार्थ लाभ के प्रतिकूल है। बहिश्त जिसमें हूरें गिलमान और शराब आदि मिलते थे अब केवल सुख आनन्द की प्राप्ति का नाम पा रहा है। कलमा में जो मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह वाला भाग ला इलाह इल्लिल्ला से भी अधिक आवश्यक बन चुका था अब खुदा की सारे मनुष्य नबी आदि पर बड़ाई होने का प्रमाण है। इसका उद्देश्य ही यह माना जाने लगा है कि कभी भी रसूल को ख़ुदा न माना जा सके-अर्थात् मुहम्मद साहिब रसूल हैं ख़ुदा नहीं। इसी प्रकार परदा, जहाद, "कयामत, मुनकिर नकीर, याजूज माजूज, कुन फ़ैयकून आदि की वर्तमान व्याख्यायें उस उत्साह वर्धक फल का प्रमाण हैं जो सत्य के प्रचार का अनिवार्य परिणाम हैं। कहां तक लिखा जाए आर्य्य समाज का दृष्टि कोण ही विलक्षण है औरों को जो शत्रुता प्रतीत होती है आर्य्य-समाज को उसमें परोक्ष प्रेम और अनुकूलता दीख पड़ती हैं। और लोग कहते हैं मज़हबी आलोचना आदि से द्वेष बढ़ता है। आर्य्य-समाज कहता है ऐक्य हां, मनुष्य मात्र के सार्व भौम ऐक्य के लिये मिथ्या एवं अयथार्थ मन्तव्यों का पूरे बल से निषेध होना चाहिये। मनों से मत भेद को हटाकर उनमें सच्चा प्रेम पैदा करने का एक मात्र यही सच्चा साधन है। और लोग कहते हैं सरकार ने तौहीन मज़हब का कानून बनाकर द्वेष बुद्धि की सम्भावना को रोक दिया है। आर्य-समाज मानता है सरकार ने मुसलमानों की अनुचित दिलजोई करके प्रजा की उन्नति तथा विचार स्वातंत्र्य को रोका है। और लोग कहते हैं मज़हबी तरक्की के लिये यवन आदि की भांति सांसारिक प्रलोभनों से काम लेना चाहिये इसीलिये रिश्ते नाते और हुक्के पानी पर बल दिया जाता है परन्तु आर्य्य-समाज का बाबा आदम ही निराला है इसका यथार्थ मन्तव्य यह है कि खुले तौर पर युक्ति प्रमाण द्वारा आर्य्य-समाज के मुक़ाबले पर सत्यासत्य का निर्णय किया और सत्य को ग्रहण तथा असत्य के त्याग पर बल दिया जावे। इस अवस्था में अछूतों के जाने की चिन्ता कहाँ उनके बहकाने वाले मौलवी और पादरी आप वैदिक धर्म की शरण में आयेंगे। इसी प्रकार कांग्रेस के लोग समझते हैं कि हमारा दृष्टिकोन अधिक विशाल है आर्य्य-समाज अपने हलके में बंद है परन्तु कांग्रेस समाज, सभा, अंजुमन सब पर हावी है। परन्तु आर्य्य-समाज कहता है यह केवल भ्रान्ति है, कांग्रेस केवल एक देश सम्बन्धी एक विषय स्वराज्य में दिलचस्पी रखती है परन्तु आर्य्य-समाज भूगोल के सब देशों और जातियों के सुख और कल्याण से सम्बन्ध रखने वाले सारे विषयों से सम्बन्ध रखता है। कांग्रेस माने बैठी है कि स्वराज्य मिलने पर उन्नति होगी

आर्य्य-समाज मानता है सत्य धर्म से ही यथार्थ कल्याण होगा यहां तक कि सच्चा स्वराज्य भी सत्य धर्म के बिना असम्भव है। कांग्रेस असहयोग से स्वतंत्रता की आशा रखती है आर्य्य-समाज आदर्श सदाचार, योग्यता और सच्चे सहयोग से ही सफलता समझता है) कांग्रेस राज सभा हो सकती है आर्य्य-समाज धर्म सभा है। कांग्रेस का मैम्बर एक नास्तिक भी हो सकता है परन्तु आर्य्य-समाज नास्तिक तो कहां ईश्वरीय ज्ञान वेद को माने बिना किसी को मैम्बर नहीं बना सकता। कांग्रेस प्रापेगैंडा करने वा शोर मचाया जाने से स्वराज्य की आशा रखती है आर्य्य-समाज योग्यता और ईश्वरीय न्याय पर ही और भोगों की तरह स्वराज्य को भी निर्धरित मानता है जैसा कि फ़ारसी का कवि कहता है कि :—

ईं सआ़दत बज़ोरे बाज़ नेस्त—ता न बख़शद ख़ुदाये बख़शिन्दा

(यह सौभाग्य बाहुबल से प्राप्तव्य नहीं हां उस परमेश्वरदाता का ही दान है) कांग्रेस स्वराज्य को जन्म सिद्ध अधिकार मानती है, आर्य्य समाज गुण कर्म से अधिकार देता है। कांग्रेस हिंदुस्तान के लिये, आर्य्य समाज संसार के लिये। आर्य समाज की देश सेवा का अर्थ देश वासियों का सुधार और यथार्थ साधनों द्वारा उनका Character बनाना है कांग्रेस की देश सेवा स्वराज्य के लिये प्रोपेगेंडा करना है। आर्य समाज वेद को ईश्वरीय ज्ञान और स्वराज्य में भी इसे परम प्रमाण मानता है परन्तु कांग्रेस मज़हबी फ़ुतवे मुक़द्दसा तथा धर्म पुस्तक वेद को भी एक गौण तथा भूलने की वस्तु ठहराती और बिना किसी आदर्श प्रमाण के दूसरे देशों की देखा देखी हाथ पैर मारती है। आर्य्य समाज का आदर्श ज्ञान और मोक्ष है कांग्रेस का केवल अपने देश सम्बन्धी कुछ अधिकार। आर्य्य समाज को सत्य तथा प्रीति पूर्वक व्यवहार लक्ष्य है कांग्रेस को देश का पक्ष। आर्य्य समाज देश देशान्तर में पहुँच धर्मानुकूल व्यापार करना वैश्य का धर्म बताता है कांग्रेस विदेशों का बायकाट सिखाता है। कांग्रेस हिन्दुस्तान का भला इंग्लैंड के नीचा देखने में समझती है आर्य्य समाज सबकी भलाई में अपनी भलाई समझता है। सारांश यह कि आर्य समाज वर्तमान सब सोसाइटियों से निराला है पर यह किसी से जुदा भी नहीं जैसा कि कवि कहता है।

वह सब में है सबसे जुदा-न्यारा भी है और मिल रहा

यही कारण है कि ज्यों ही सरकार की ओर से पक्षपात पूर्ण वर्ताव कांग्रेस से होता मालूम होता है आर्य्य लोग उससे सहानु भूति प्रगट करते हैं। गवर्नमेंट बदज़न होती है समाज को संकीर्ण हृदय विचारक पोलिटिकल बाडी कहने लगते हैं आर्य्यों पर अनेक आपत्तियां आती हैं पर वह कांग्रेसी देश सेवकों का साथ देने से बाज़ नहीं आते। १९०७ ई० (लाला लाजपतराय जी की जलावतनी का साल) में नौ आबादी के कानून और नहर के आबियाना की बढ़ौती के विरुद्ध आन्दोलन हुआ तो कई आर्य्य पुरुष किसी पोलिटिकल विचार से नहीं ग़रीब किसानों को मज़लूम समझ कर जलती आग में कूद पड़े। जलावतनी, मुकदमे, कैद सब कुछ भोगा, साधारण पुरुषों ने नहीं रावलपिण्डी के लाला हंसराज जी वकील आदि कितने ही बड़े २ लोगों ने हवालात में दुख पाया। रावलपिण्डी अभियोग पर नियुक्त स्पेशल मजिस्टेट मि० मार्टीनियू निष्पक्ष न्याय से काम

लेकर उन्हें निरपराध सिद्ध न करते और लाल मुहम्मद आदि पोलिस कर्मचारियों को बनावटी गवाही का भांडा न फोड़ते तो न जाने आर्य समाज के सम्बन्ध में कितनी भ्रान्ति फैलती। इसी प्रकार वर्तमान राजनैतिक आन्दोलन में भी अनेक आर्य्यों ने कांग्रेसी लोगों का साथ दिया है। कुछ वर्ष पहिले इसी प्रकार का सहयोग ख़िलाफ़त कमेटी को मिला था। हमारी आशा यह है कि ग़लती हो सकती है किसी लहर में विवश होकर किसी स्वार्थ या द्वेष भाव से नहीं न्याय और कर्तव्य के भाव से प्रेरित होकर आर्य्य पुरुष अन्य आन्दोलनों का साथ देते हैं परन्तु सत्य यही है कि न हिन्दू संगठन की पुष्टि करने से आर्य्य-समाज हिन्दू सभा है न ख़िलाफ़त की मदद से मुसलमान, न मन्दिरों पर अत्याचार होने की अवस्था में पौराणिकों का साथ देने से मूर्ती पूजक, न हरीजनों के मन्दिर प्रवेश का हामी होने से पौराणिक है और न कांग्रेस की सहायता के कारण पोलिटिकल बाडी।

मालाबार जैसे दूर के प्रान्त में आर्य समाज मुसलमानों के मुकाबले पर छाती ठोक कर खड़ा होता है तो मोपलाओं के पक्षपात अथवा मुसलमानों के विरोध के कारण नहीं किन्तु अन्याय और अत्याचार को रोकने के लिये। ख़्वाजा हसन निज़ामी के गुप्त षड्यन्त्र का भांडा फोड़ा जाता है तो निज़ामी साहिब के प्रतिद्वेष का भाव होने से नहीं किन्तु तबलीग के उस कमीना तरीके के विरुद्ध प्रोटेस्ट के तौर पर है जो धर्म या मजहब के माथे पर कलङ्क का टीका लगाने वाला है। खुले मैदान में पब्लिक तौर पर आर्य्य समाज के सामने विद्वत्ता, सभ्यता एवं गम्भीरता पूर्ण रीति से बहस करके अपने सत्य का सिक्का जमाये बिना टट्टी की आड़ में शिकार करना धर्म वा मजहब के सर्वथा विरुद्ध है। गुप्त केन्द्र बनाना, बेकस. बेबस अनाथों वा अबलाओं को बहकाकर उनमें पहुँचाना, काम-वासना की पूर्ती अथवा अन्य प्रलोभनों से किसी को इसलाम में लाना दीन इसलाम की आन्तरिक त्रुटियों का ही प्रमाण है। दक्षिण के एक दस हज़ार की आबादी वाले पोनाभी नगर में केवल २०० ग़रीब हिन्दू रहते हैं जिन्हें वर्त्तमान मज़हबी प्रापेगेंडा का कुछ ज्ञान नहीं। वहाँ की एक अंजुमन का सैक्रेटरी अपने वार्षिकोत्सव पर बड़े गर्व से घोषणा करता है कि हमने गत वर्ष में १२७४ हिन्दुओं को इसलाम में प्रविष्ट किया और इस से कई गुणा अधिक को पूर्व वर्षों में। ७० हज़ार का सरमाया इस अंजुमन के पास उस समय बताया गया, उसके पीछे अपीलों से न जाने और कितना धन मिल चुका हो। यह भी नहीं कहा जा सकता कि ऐसे कितने और केन्द्र हैं और कहाँ कहाँ, तथापि सिद्धान्त रूप से आर्य-समाज इस प्रकार के मज़हबी काम को इन कर्मचारियों की अविद्या और उनके पतन आदि का हेतु समझता है। बुद्धि शून्य आपत्ति ग्रसित अबला स्त्री को बहकाया, दूर देश में पहुंचाया, रूपवती हुई तो उसका किसी से विवाह कराया अन्यथा कुछ दिन पीछे उसे भिखारी बनाया जाता है तो इससे धार्मिक दृष्टि से सुधार या उपकार क्या हुआ? सम्भव है आर्य-समाज को इन केन्द्रों का पता न लगे अथवा वह इनके विषय में कोई आन्दोलन न करे तथापि सिद्धान्त रूप से इन सब की अधर्म मूलक सत्ता को तिरस्कृत करने से इसे कोई रोक नहीं सकता। कुदरत का ग़ैबी इन्साफ़ हज़ार तरीक से यथार्थ नियम विरुद्ध व्यवहारों के लिये दण्ड देता है। स्वार्थी और पक्षपाती लोग कितने भी गुप्त स्कीम चलावें

हमारा पक्का विश्वास है कि एक ही विद्वत्तापूर्ण शास्त्रार्थ उनके किये धरे को अकार्थ कर सकता है। सारांश यह कि सत्य और विद्या बल के बिना अन्य प्रकार के मज़हबी प्रापेगेण्डों को समाज घृणा की दृष्टि से देखता है। साथ ही समाज उन वैदिक धर्मियों को भी कोसता है जिनका दुर्व्यवहार तथा प्रमाद इन गुप्त तरीकों के लिये साहस बढ़ाता है। पंजाब और यू० पी० के बिछुड़े हुए या अछूतों का उद्धार ही इसे लक्ष्य नहीं मद्रास के मोपला तक का यही सहायक है। ट्रावन्कोर, कोचीन आदि के ईडवा, उडया, पुलया, परया आदि दलित जातियों के दुःख को भी यही अनुभव करने वाला है। क्या यह शोक का स्थान नहीं कि दक्षिण में लाखों ही पढ़े लिखे, सभ्य, सज्जन, जज और बैरिष्टर तक हिन्दुओं के अनुचित व्यवहार के कारण वैदिक धर्म के स्थान में ईसाइयत से प्रेम करने पर वाधित हैं। लाखों हैं जिनके गले में यज्ञोपवीत है, सिर पर चोटी है। वह हिन्दू हैं हिन्दुओं के हैं, रीति नीति हिन्दुआना, नाम और काम हिन्दुओं के, मांस का सेवन तक नहीं करते परन्तु जातीय अभिमान में चूर हिन्दुओं के भय से उन्हें ३०, ६०, और ९० फ़ीट तक दूर रहना पड़ता है कि कहीं उच्च जाति पर साया पड़ने से वह पापी और दण्डनीय न हों जावें। और जब वह स्पर्श करने वा पास बैठने तक के रवादार नहीं तो सहयोग कैसा और उन्नति कहाँ ?

निस्सन्देह आर्य्य-समाज के लिये कार्य्य-क्षेत्र अति विस्तृत है और मानव जाति के लिये यथार्थ हितकर कार्य्य इसके बिना न कोई कर रहा है, न कर सकता है। छोटी-सी सोसाइटी धन का अभाव, काम करने वालों की कमी, हिन्दुओं की फूट और लापरवाही, मुसलमानों की मज़हबी जनून, ईसाइयों की हिकमत अमलियाँ, गवर्नमेण्ट की बदज़नी सब कुछ है, पर यह दृढ़ता से अपना कर्तव्य पाले जाता है। सबका सेवक है। सबसे इसका सहयोग है, परन्तु सत्य और न्याय की दृष्टि से और सबसे इसका विरोध है, अधर्म और असत्य को निर्मूल करने के लिये। एक ईसाई सम्प्रदाय रोमन कैथोलिक के ८ हज़ार मिशन, ५० हज़ार पादरी, ३० हज़ार स्त्री और एक लाख पुरुष काम करने वाले हैं, और सब मत-मतान्तरों के प्रचारक न जाने कितने लाख होंगे, उन सब मतों और प्रचारकों का मुक़ाबिला मुट्ठी भर आर्य्य उपदेशक करते आरहे हैं और केवल ५०, ६० वर्ष में आर्य्य-समाज ने जो कुछ कर दिखाया है, उससे सिद्ध होता है, कि उसकी सफलता में सबसे महान-शक्ति का गैबी हाथ काम कर रहा है। हम बड़े हर्ष से आर्य्य-समाज के काम का चित्र जनता के सामने रखते हैं और आशा करते हैं, कि इस डाइरेक्टरी से आर्य्य-समाज-रूपी कल्पवृक्ष की शाखा, उपशाखा तथा उत्तम फल, पुष्प आदि का दृश्य सारे सत्य प्रिय सज्जनों के आनन्द और उत्साह को बढ़ायेगा। और वह पूर्व की अपेक्षा अधिक पुरुषार्थ से वेद के ईश्वरीय कल्याणकारी धर्म को संसार के कोने कोने में फैलाकर यश, कीर्ती तथा सच्चे सुख के भागी होंगे ॥ ओ३म् शम् ॥

१—आर्य्य प्रतिनिधि सभा ।

१—सार्वदेशिक आ० प्र० नि० सभा देहली (१९०८ में स्थापित)

उद्देश्यः—(१) वैदिक धर्म के योग्य, उपदेशक बनाने के लिये एक महाविद्यालय स्थापन करना। (२) आर्यावर्त्त तथा अन्य देश-देशान्तरों में आवश्यकतानुसार वैदिक धर्मके प्रचार का प्रबन्ध करना। (३)प्रान्तिक आर्य प्रतिनिधि सभाओंके पुरुषार्थको संयुक्त करना तथा उनके पारस्परिक विवादों और उनके विरुद्ध पुनर्निवेदनों (अपीलों) का अन्तिम निर्धारण करना। (४) ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों की वास्तविक लिपि के अनुसार उनकी याथातथ्य रक्षा करना और इस बात पर दृष्टि रखना कि उनमें कोई भाग प्रक्षिप्त तो प्रवेश नहीं किया गया। (५) धर्म सम्बन्धी पुस्तकों का एक बृहत्पुस्तकालय सर्व साधारण के लाभार्थ स्थापन करना। (६) वैदिक धर्म की उन्नति तथा वृद्धि और रक्षा के उपायों का प्रयोग में लाना।

संगठनः—(१) दशांश (आय) देने वाली प्रान्तिक प्र० नि० सभाओं के नियत संख्या के प्रतिनिधि (२) दूसरे देशों की सम्बधित सभाओं के प्र० नि०, (३) १०० या अधिक सभासदों और दशांश देने वाली समाजों का १-१ प्र० नि० और (४) ५००) रु० इकमुश्त दान देने वाले लाइफ मेम्बरों का समुदाय यह सभा है।

साधारण मेम्बरः—४५ [पंजाब ७, सं० प्रा० ७, बिहार बंगाल ५, बम्बई ५, राजस्थान ३, मध्य प्र० २, सिंध २, नैटाल १, फिजी २, बिहार ५, मारीशस ०, आ० स० ग़ाज़ियाबा खुर्जा, विहारीपुर बरेली तीनों का एक एक प्र० नि०, लाइफ़ मेम्बर ३।

अन्तरंग सभासदः—२१ जिन में ६ अधिकारी हैं।

अधिकारीः—श्री महा० नारायण स्वामी जी प्रधान, श्री प्रो० रामदेव जी, श्री पं० गङ्गाप्रसादजी चीफ़ जज टीढ़ी (गढ़वाल) उपप्रधान, श्री प्रो० सुधाकरजी एम० ए० मंत्री, श्री० ला० नारायणदत्तजी कोषाध्यक्ष, श्री० ला० ज्ञानचन्दजी पुस्तकाध्यक्ष।

कार्यः—(१) मद्रास प्रचार, (२) विदेश प्रचार, (३) स्वदेश प्रचार, (४) श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा देहली, (५) सा० देशिक मासिक, (६) सा० दे० पुस्तकालय, (७) बिकाऊ पुस्तकालय, (८) धर्म आर्य सभा, (९) आर्य रक्षा समिति।

सम्पत्तः—(१)बलिदान भवन, (२) सा० दे० भवन, (३) ग़ाज़ियाबाद वाली ४३ बीघे १८ बिस्वे भूमि मालियती ४८०००) रु० पाटौदी हाउस ट्रस्ट २००००) रु० बैंकादि में, ६८०००) सर्व योग १३६०००) रु०।

मिश्रितः—आर्य-समाज के उपनियमों का संशोधन तथा अनुसन्धान कार्य भी सभा के विचाराधीन है। (२) सार्वदेशिक

भवन का १००) मासिक किराया आता है। (३) कार्य्यालय में २ क्लर्क १ चपड़ासी काम करते हैं। (४) सभा की ओर से ४ उपदेशक मद्रास प्रचार के लिये नियुक्त हैं।

२—आ० प्र० नि० सभा पंजाब लाहौर सितम्बर १८८५ असौज (संवत् १९४२ विक्रमी में स्थापित)

उद्देश्यः—(१) वेद तथा प्राचीन आर्य ग्रन्थों की पढ़ाई तथा आर्योपदेशकों की तैयारी के लिये एक विद्यालय क़ायम करना। (२) धर्म तथा विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों का एक पुस्तकालय स्थापित करना (३) वैदिक शिक्षा को पुनर्जीवित करने के लिये लेख तथा पुस्तक प्रकाशित करना। (४) पंजाब तथा अन्य प्रान्तों में वैदिक धर्म के प्रचार का प्रबन्ध करना। (५) वैदिक धर्म के प्रचार के लिये साधन निरूपन करना तथा उपाय ढंढना।

संगठनः—पंजाब के आर्य-समाजों के पहिले १० सभासदों के लिये १ और अगले प्रत्येक २० सभासदों के पीछे १ प्र० नि० लिया जाता है।

साधारण सभाः—२२२ मैम्बर अन्तरङ्ग सभासद, २५ (अधिकारी ७, प्रतिष्ठित १२, प्रतिनिधि ६)।

अधिकारीः—दीवान बहादुर बद्रीदास जी प्रधान, पं० विशम्भरनाथ जी, रा० ब० मक्खनलाल जी, मा० शिवदयालजी एम० ए० उपप्रधान। म० कृष्णजी मालिक प्रताप लाहौर मन्त्री। ला० नूतनदास जी कोषाध्यक्ष। पं० प्रियव्रतजी वेद वाचस्पति पुस्तकाध्यक्ष।

कार्यः—(१) पंजाब तथा सीमा प्रान्त में प्रचार, (२) लेखराम मिशन आर्य्य मुसाफिर पत्र, (३) दयानन्द दलितोद्धार सभा, (४) आर्य्य [हिन्दी] मासिक, (५) वैदिक पुस्तकालय गुरुदत्त भवन लाहौर, (६) आर्य विद्यार्थी आश्रमगुरुदत्त भवन, (७) दयानन्द उपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन, (८) गुरुकुल कांगड़ी, (९) दयानन्द सेवा सदन (१०) गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, (११) कन्या गुरुकुल देहरादून, (१२) दयानन्द मथुरादास कालिज मोगा, (१३) पंजाब तथा सीमा प्रान्त की समाजों के मन्दिर सम्पत्ति तथा समाज से सम्बन्धित संस्थाओं की सम्पत्ति आदि की देख रेख, रक्षा, प्रबन्ध आदि।

सम्पत्तिः—२३९०६३३) (वेद प्रचार में १४४६२०), लेखराम स्मार्कनिधि ३२४७६), विदेश प्रचार ४६४८९), अन्य स्मार्क फण्ड १९४६३), उपदेशक विद्यालय १२८३८४), मोगा कालिज ५७७६६), विद्यार्थी आश्रम ८२८३७), विविध संस्था ६६०४९), वसीयतें ९७४२५), दलित उद्धार २२३८, गुरुकुल वैटमोहनी ५०००), अमानत ७३०७५), अज्ञात २६४६, प्रावीडैंड २९०११), बोनस ७७९४७ गुरुकुल १६१११५४)।

मिश्रितः—[१] आगामी साल का बजट वेद प्रचार ३२०००), उ० वि० ५७०५), धर्मार्थ चिकित्सा २०००), लेखराम स्मार्क १९००), शुद्धि प्रचार ५००, विदेश प्रचार १०२००), आर्य मासिक ३०००), वैदिक अनुसन्धान ११००), वैदिक पुस्तकालय २५००), आ० विधवा आश्रम ४५९०)। [२] जम्मू, कश्मीर, मीरपुर पीड़ितों की सहायता के लिये १०२१५) रुपया पूर्व शेष था इस वर्ष १११०) की आय और ३२५६) व्यय होकर ८०६९) शेष रहा। [३] मुख्य कार्यालय के इञ्चार्ज ला० नन्दलाल जी हैं,

हिसाब किताब, पत्र व्यवहार, प्रचार, देख भाल आदि सारे कामों के लिये वहुत योग्य कर्मचारी तथा क्लर्क आदि हैं। [४] १४६५१ पत्र गए अनुमान इतने ही आये । [५] हिसार प्रान्त के दुर्भिक्ष पीड़ितों की सहायता के लिये २२१९) रु० समाजों से और १०००) अपने कोष से सहायता की।

३—आ० प्रा० प्र० नि० सभा पंजाब लाहौर (स्था० २४ नवम्बर १९१७ ई०)

उद्देश्यः—(१) धर्म सम्बन्धी पुस्तकों के पुस्तकायलकी स्थापना।(२)वैदिक धर्म प्रचार काप्रबन्ध। (३) ट्रैक्ट तथा पुस्तक प्रकाशन। (४) आर्य समाज की भलाई के साधन सोचना और उन पर आचरण करना। (५) विधवा, दीन, अनाथादि की सहायता।

अन्तरंग सभाः—२२ मेम्बर (७ अधिकारी, १५ मेम्बर)।

अधिकारीः—श्री महात्मा हंसराज जी प्रधान, श्री बा० रामानन्द तथा चौ० गणेशदास जी उपप्रधान, लाला खुशहालचन्दजी खुरसन्द मंत्री, लाला केशोरामजी तथा लाला बृजलाल जी (Inspector of Schools) सहायक मंत्री, वाचस्पति जी एम० ए० पुस्तकाध्यक्ष।

कार्यः—पंजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान की समाजों का नियंत्रण, [२] बङ्गाल और मद्रास में प्रचार, [३] विविध पाठशाला व स्कूल, [४] आर्य्य गजट लाहौर, [५] आर्य अनाथालय मुलतान, [६] अनाथालय कटक [७] दलित उद्धार मण्डल होशियारपुर, [८] आर्यसाहित्य विभाग।

कोषः—कुल फण्डोंका अढ़ाई लाख रु०।

मिश्रितः—गत वर्ष में १११४, समाजों से दशांश मिला, [२] वेद प्रचारमें ११०२०) तथा अन्य दान मिलाकर १८१०५) प्राप्त हुआ और १७५२) कुल व्यय हुआ।

४—आ०प्र०नि० सभा इन्द्रप्रस्थ देहली (स्था० १९१२ अप्रैल)

उद्देश्यः—देहली प्रान्त तथा आवश्यकता अनुसार अन्य स्थानों में प्रचार करना।

मेम्बरः—अनुमान १००

अधिकारीः—पं० जानकीनाथ जी प्रधान, चौ० गोरखासिंह जी उपप्रधान, मु० रामप्रसाद जी मंत्री, चौ० प्रतापसिंह जी उपमंत्री, चौ० मुक्तराम जी कोषाध्यक्ष, ला० अमीरचन्द जी खोसला आडीटर।

कामः—देहली नगर के २ और देहली प्रान्त के ५० समाज सभा के आधीन हैं। (२) अनाथ सुधारक आश्रम चावड़ी बाज़ार देहली (३) विविध पाठशाला।

आय व्ययः—गत वर्ष में २०९८) रु० आया और इतना ही व्यय हुआ।

मिश्रितः—(१) सरकार के देहली का पृथक प्रान्त नियत करने पर रा० स० गिरधारी लाल जी के प्रधानत्व में स्थापित हुई। (२) एक उपदेशक और आठ भजन मंडलियां हैं। (३) देहली के अतिरिक्त मेरठ, मुजफ्फर नगर, रोहतक गुड़गावां तथा जींद रियासत में २०० समाज, इस सभा ने कायम किये। (४) गतवर्ष में सभा ने १०० विवाह संस्कार, ५०० यज्ञोपवीत, ६ वार्षिकोत्सव और कई स्थानों पर शास्त्रार्थ तथा कथा कराई।

५—आ० प्र० नि० स० संयुक्त प्रान्त (स्था० ४८ वर्ष-रजिष्टरी ५ जनवरी १८९७ को)

उद्देश्यः—(१) क-वेद, वेदांग, प्राचीन संस्कृत साहित्य, विज्ञान, कला कौशल

के लिये गुरुकुल तथा अन्य वेदानुकुल संस्था खोलना तथा इन उद्देश्यों वाली संस्थाओं की रक्षादि । ख—वैदिक धर्म के प्रचारक तय्यार करना (२) धर्म तथा विज्ञानादि सम्बन्धी पुस्तकालय की स्थापना (३) वैदिक शिक्षा सम्बन्धी पुस्तक रचना (४) सन्युक्त प्रान्तादि में वैदिक धर्म प्रचार करना कराना। (५) आर्य समाजों तथा सामाजिक संस्थाओं की अवस्था तथा उनके प्रबन्ध और सम्पत्ति आदि की देख रेख। (६) आर्य समाजों को सङ्गठित रखना। (७) आम तौर पर वैदिक धर्म के प्रचार के लिये उपरोक्त साधनों को काम में लाना।

मेम्बर:—साधारण सभाके २८२ मेंबर हैं।

अन्तरंग सभा:—३१ सदस्य (८ अधिकारी २३ मेम्बर)

अधिकारी:—श्री बाबू पूर्णचंदजी ऐडवोकेट आगरा प्रधान, कुंवर दुर्गपालसिंह जी स० म० मथुरा तथा पंडित रास बिहारी जी लखनऊ उप प्रधान, बाबू उमाशंकर जी वकील फ़तहपुर मन्त्री। बाबू परमानन्द जी ऐडवोकेट इलाहाबाद उपमन्त्री। लाला हरस्वरूप जी रईस मुवाना कलां कोषाध्यक्ष। पंडित बृहस्पति जी शास्त्री पुस्तकाध्यक्ष । बाबू गजाधर प्रसाद जी प्रयाग आडिटर, बाबू शोभाराम जी आगरा अधिष्ठाता भू सम्पत्ती विभाग । पंडित महेन्द्र प्रसाद जी शास्त्री एम. ए. डी. ए. बी. कालिज देरादून अधिष्ठाता जात-पात तोड़क मण्डल। पंडित घासीराम जी अधिष्ठाता ट्रैक्ट विभाग। पंडित सूर्य्यदेव जी कानपुर सहायक अधिष्ठाता ”

काम:—१-वेद प्रचार २-गुरुकुल वृन्दावन ३-गौशाला गोविन्द नगर ४-अनाथालय गोविन्द नगर ५-ट्रैक्ट विभाग ६-जात पात तोड़क विभाग ७-महिला विभाग ८-आर्य्य नगर सैटलमैंट लखनऊ ९-आर्य्य मित्र आगरा १०-आर्य्य भास्कर प्रेस आगरा ११-सभा, समाज तथा इसकी संस्था आदि की सम्पत्ती आदि की रक्षा, देख रेख प्रबन्ध इत्यादि।

सम्पत्ती:—२५५८८७ गुरुकुल वृन्दावन १६८३४५ स्टाक २६८७० विविध फंड ८७०० वेद प्रचार २९००४ इमारत २३७८ ट्रस्ट १६२३० आ० भा० प्रेस ३२१७ आर्य्य मित्र ११४१)

मिश्रित:—५१८ समाज सभा के आधीन हैं। (२) १८९१३ पत्र भेजे ३१७४ आये (३) गतवर्ष की आय १२२२३३) रु० और व्यय १२१९०२) रु० हुआ।

६—आ० प्र० नि० सभा राजस्थान अजमेर (स्था० १८९६)।

उद्देश्य:—राजस्थान में वैदिक धर्म प्रचार।

अन्तरंग सभा:—(अधिकारी ९, मेंबर २१)

अधिकारी:—कुंवर जालिमसिंह जी कोषाध्यक्ष प्रधान, मास्टर कन्हैयालाल जी बी. ए., प्रोफेसर सुधाकर जी एम. ए. उप प्रधान, महाशय जगरूप जी मन्त्री, महाशय ब्रह्मदत्त तथा पंडित रामसहाय जी उपमन्त्री महाशय धर्मचन्द जी मैनेजर सैं० कोपरेटिव बैंक कोषाध्यक्ष, महाशय घोसूलाल जी एम. ए. एडवोकेट अधिष्ठाता आर्य मार्तंड।

काम:—१-प्रचार २-सभा तथा समाजों की सम्पत्ती आदि की रक्षा ३-सूर्य्य पुस्तकालय ४-नागरी पाठशाला अजमेर ५-गुलाब देवी आ० क० पाठशाला अजमेर ६-गोदावरी आ० क० पा० ब्यावर ७-

साधु आश्रम अजमेर ८-आर्य्य मार्तण्ड अजमेर।

मिश्रित-(१) २१० समाज सभा के आधीन हैं। (२) गतवर्ष की आय ४७८० व्यय ५४३३ (३) आगामी वर्ष का वजट ५९५०।

७—आ०प्र०नि० सभा मध्यप्रदेश व वरार नरसिंहपुर (३ दिसम्बर २६ मार्च १९१२ ई० रजिष्टरी)

उद्देश्यः-प्रान्त की समाजों तथा तत्सम्बन्धी संस्थाओं की रक्षा नियन्त्रण तथा प्रान्त में वैदिक धर्म प्रचार।

अधिकारीः-प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त वी० एस० सी० एल० एल० बी०।

उपप्रधानः-पं० श्रीधरजी शर्मा, आर० सी० मथानिया।

मंत्रीः-रामेश्वरराय जी गायकवाड़ा।

उपमंत्रीः-श्री ईश्वरी प्रसाद जी सल्तनत बहादुर।

कोषाध्यक्षः-श्री जयनारायण जी।

पुस्तकाध्यक्षः-श्री० मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल होशंगावाद।

कामः-आर्य्य सेवक पत्र (२) अनाथालय (३) गुरुकुल होशंगाबाद (४) समाजों तथा सामाजिक संस्थाओं की निगरानी तथा (५) धर्म प्रचार।

८—आ०प्र०नि० सभा बम्बई आनंद (स्था० ३० दिसम्बर १९०२)

उद्देश्यः-बम्बई प्रान्त में वैदिक धर्म प्रचार।

संगठनः-प्रान्तीय समाजों के प्र० नि०

मेम्बरः-५५ साधारण सभा के और १५ अन्तरंग के (अधिकारी ९ मेंबर ६)

कामः-१-वेद प्रचार २-आर्य्य प्रकाश पत्र ३-आर्य प्रकाश प्रेस ४-पुस्तकालय ५-गुरुकुल शुक्ल तीर्थ।

कोषः-१९३३५) [वेद प्रचार (स्थिर) ११५८७), (चलित) ३०५) बालकृष्ण स्मार्क १०) पुस्तक प्रचार स्थिर कोष ११३) चलित ३१८२ वेद विद्योतक फंड १२१३) भजनानन्द ट्रैक्टमाला १४४,८९५ पुस्तकविभाग ११३७)

९—आ० प्र० नि० सभा बिहार तथा उड़ीसा बांकीपुर (२६ वर्ष बंगाल से सम्मिलित रही ६ वर्ष से पृथक् हैं)

उद्देश्यः—(१) धर्म प्रचार (२) बिहार प्रान्त में आर्य्य समाजें, आर्य्य प्रकाशक मंडल, बड़ा पुस्तकालय गुरुकुल महा विद्यालय, उपदेशक विद्यालय, धर्म सभा, विद्या सभा, राज सभा, विधवा सहायक मण्डल क़ायम करना, ट्रैक्ट तथा पुस्तक प्रकाशित करना, औषधि आदि तथा अनाथ रक्षा, अछूतोद्धार आदि से देश व जाति सेवा करना, सभा समाज संस्थादि की सम्पत्ती आदि की रक्षा देख रेख इत्यादि।

मेम्बरः—साधारण सभा के ९० अन्तरङ्ग के ३३ (अधिकारी १० मेम्बर २३)।

अधिकारी :—

श्रीमान् साधु रामानन्दजी बानप्रस्थ, प्रधान, श्रीमान् बा०वैद्यनाथ प्रसाद जी B.A. सीवान, उप-प्रधान, श्रीमान् बा० लालधर प्रसाद जी पटना, B. A. B. L. पटना, उप-प्रधान, श्रीमान पं० सत्यव्रत जी प्र० मन्त्री, श्रीमान् बा० महादेव शरण जी. दानापुर, मन्त्री, श्रीमान् बा० जगन्नाथ प्रसाद चौधरी मोतिहारी, मन्त्री, श्रीमान् बा० सिपाही भक्तजी दानपुर, कोषाध्यक्ष, श्रीमान् पं०केवलपति जी शर्मा पटना सिठी, लेखानिरीक्षक।

श्रीमान् पं० ईश्वर दयालु जी शर्मा, पाटन। सिटी, पुस्तकाध्यक्ष।

काम:–१—गुरुकुल वैद्यनाथ धाम २—गुरुकुल हरपुर जान (सारन) ३—संस्कृत विद्यालय मुस्तफ़ाबाद (पटना) ४–कन्या पाठ-शाला ५–अछूत पाठशाला ६–अनाथालय ७–११३ समाजों की सम्पत्ति आदि की रक्षा ८–३ हाई और १ मिडिल स्कूल।

मिश्रित:—गत वर्ष में १९३६ पत्र भेजे ७८५ प्राप्त, ३ बुलेटीन प्रकाशित हुए (२) गतवर्ष में १९०६) आय, १९४३) व्यय हुआ।

१०—आ० प्र० नि० सभा बंगाल।

अधिकारी—श्री०पं० रोमेशचन्द्र बैनर्जी एम० ए० प्रिन्सीपल विक्टोरिया कालिज नरेल, प्रधान। डाक्टर हर गोविन्द जी गुप्त मन्त्री।

मिश्रित १:—४५ समाज सभा के आधीन हैं २–३ उपदेशक और २ भजन मंडलियां काम करती हैं ३–समाजों के आधीन अनेक स्थानों पर पाठशाला, स्कूल, कुमार तथा नवयुवक सभा जारी हैं ४–कई स्थानों में आर्य्य समाज मन्दिर तामीर हो रहे हैं।

११—आ० प्र० नि० सभा मद्रास

(१) ३० समाज सभा के आधीन हैं। (२) चार उपदेशक सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रचार-कार्य करते हैं। (३) शुद्धि शास्त्रार्थादि काम होरहे हैं। (४) तामिलादि भाषाओं में आर्य्य-समाज का साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है।

१२—आ० प्र० नि० सभा निज़ाम स्टेट उद्‌गीर (बीदर)

अन्तरङ्ग सभा के मेम्बर १७:—(११ मेम्बर और ६ अधिकारी हैं)

अधिकारी:—प्रधान पं विनायकराव जी विद्यालंकार बैरिष्टर हैदराबाद। मन्त्री विद्यामित्र जी वकील उद्‌गीर। उपप्रधान:– धर्मप्रकाश जी वकील हेली खेडा। उपमंत्री– चन्द्रपाल जी आर्य्य हैदराबाद। कोषाध्यक्ष: गजाननमल जी आर्य्य, पुस्तकाध्यक्ष:—दत्तात्रेय जी।

१३—आ०प्र०नि० सभा बर्मा (मांडले)

(स्थापित १९१४। रजिष्ट्री २६ जून १९१७)

अधिकारी:—बा० वधावाराम जी प्रधान, श्रीरामचन्द्र जी भारती मन्त्री।

मिश्रित:—३० समाज सभा के आधीन हैं। (२) रंगून और मांडले में शानदार समाज मन्दिर बन चुके हैं। स्कूल पाठ-शालादि संस्थायें भी खुल रही हैं।

१४—आ० प्र० नि० सभा सिंध

(१) २५ समाज सभा के आधीन हैं। (२) पं० लोकनाथ जी आदि उपदेशक तथा कई भजनीक प्रचार कार्य्य कर रहे हैं।

मुख्य कार्यालय करांची। १९१७ ई० से पूर्व यह प्रांत पंजाब प्रतिनिधि सभा में सम्मिलित रहा।

२—आर्य उप-प्रतिनिधि सभा

(१) रोहतकः--म० रामनारायण जी बी० ए० सञ्चालक हैं। रोहतक प्रांत के ग्रामों में प्रचार उत्सव संस्कारादि कराये जाते हैं।

(२) वेद-प्रचारिणी सभा सिंध (करांची)--मन्त्री गुरुदत्त शर्मा जी। प्रिंसिपल रामसहाय जी तथा उनके साथियों ने सिंध प्रांत में प्रचार करने को यह सभा क़ायम की है। योग्य आर्य्य-पुरुष आनरेरी तौर पर प्रचार करते हैं।

(३) वेद-प्रचार मण्डल हरियाना—प्रकाशचन्द्र जी वकील हिसार इसके सञ्चालक हैं।

(४) अ० उ० प्र० नि० सभा बदायूं:--प्रधान भगवान स्वरूप जी एडवोकेट। मन्त्री—अनन्तराम जी। २७ अक्टूबर सन् १९३२ को क़ायम हुई। ३७ मेम्बर अन्तरङ्ग मेम्बर १९ हैं १८ समाज सम्मिलित हैं गत वर्ष ३५० आय २९६ व्यय।

(५) आ० उ० प्र० नि० स० पीलीभीतः—डाक्टर कुन्दनलाल जी एम० डी० डी० एस० इत्यादि प्रधान हैं जो स्वयं प्रचार के लिये समय देते हैं

(६) आ० उ० प्र० नि० स० बिजनौर गढ़वाल।

प्रधान ला० जगन्नाथ शरण जी वकील बिजनौर। मन्त्री गुमानीसिंह जी, अधिष्ठाता ला० ठाकुरदास जी, हलदौर। सन् १९१९ ई० में क़ायम हुई। अन्तरङ्ग सभा के १२ मेम्बर हैं ४२ समाज सम्मिलित हैं।

(७) अ० उ० प्र० नि० सभा आगराः--बा० शोभाराम जी मैनेजर डी० ए० वी० हाई स्कूल प्रधान। म० प्रेमशरण जी मन्त्री। २ उपदेशक और भजनीक तथा म० प्रेमशरण जी मन्त्री प्रचार कार्य्य करते हैं।

(८) अ० प्र० नि० सभा अलीगढ़—प्रधान ठा० सरनामसिंह जी, मन्त्री म० विशम्भर सहाय जी।

(९) वेद-प्रचार मण्डल गोरखपुरः—प्रधान ठाकुर जंगबहादुर लाल जी, मन्त्री मिश्रीलाल जी।

(१०) हरदोई—बा० सरदारसिंह जी बी० ए० प्रधान। रामस्वरूप जी शर्मा मन्त्री। २२ फ़रवरी सन १९३१ को क़ायम। अन्तरङ्ग मेम्बर २० हैं। २० समाज सम्मिलित हैं।

(११) बरेली ज़िला प्रचार विभाग—रामस्वरूप जी मन्त्री हैं। संस्कार, शुद्धि, उत्सव, मेला प्रचार होता है।

(१२) मथुरा ज़िला प्रचार-सभा—गोपालसहाय जी मन्त्री हैं।

(१३) नागपुर आ० सि० प्र० स०:--स्वामी ब्रह्मानन्द जी प्रधान एल० बी० शर्मा जी मन्त्री।

[१४] प्रयाग—प्रो० बाबूराम जी एम० ए० प्रधान।

[१५] मेरठ वैदिक-धर्म प्रचार सभा—कालीचरण जी मन्त्री।

[१६] मुजफ्फ़रनगर—राव बहादुर चौ० मामराजसिंह जी प्रधान हैं १९११ में क़ायम हुई।

[१७] सहारनपुर— जैमलसिंह जी प्रधान, भोज राजेश्वर जी मन्त्री। ३१ अक्टूबर सन् १९०९ को क़ायम। ३४ मेम्बर। अन्तरङ्ग मेम्बर १३ हैं। ६१ समाज हैं। गत वर्ष की आय ७४३ व्यय ८४२।

[१८] मैनपुरी—बा० प्रेमविहारीलाल जी एडवोकेट प्रधान। ठाकुर फुलनसिंह जी मन्त्री। २४ अगस्त सन् १९२४ को क़ायम। मेम्बर २०। अन्तरङ्ग सदस्य ९ हैं। १७ समाज।

[१९] बलिया—आर्य उ० प्र० नि सभा

[२०] बम्बई अन्धेरी वैदिक धर्म-प्रचार मण्डल—पं० सभाजित शर्मा जी प्रधान। ठा० महेश्वरसिंह जी मन्त्री। ९० सभासद। गत वर्ष में २९ अधिवेशन हुए। अन्तरङ्ग मेम्बर २०।
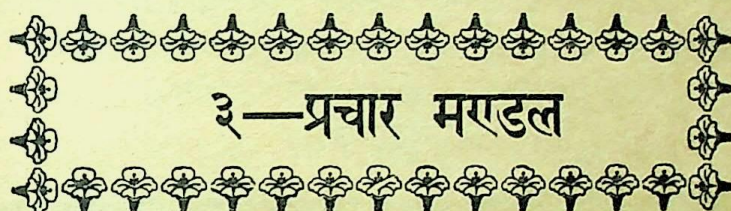
३—प्रचार मण्डल

पंजाब की सभा की ओर से

[१] अम्बाला—
मण्डलाधीश डाक्टर लालचन्द जी।

[२] रोहतक, हिसार, देहली—
पं० सुमेरसिंह जी, (रोहतक)

[३] फुलकियां रियासतें—
पं० रामस्वरूप जी (नाभा)

[४] फीरोज़पुर, लुधियाना—
पं० पूर्णचन्द जी सिद्धांत भूषण (फ़ीरोज़पुर छावनी)

[५] जालन्धर, होशियारपुर—
रामस्वरूप जी (जालन्धर छावनी)।

[६] गुरदासपुर—
पं० धर्मदत्त जी (सि० भू० बटाला)।

[७] कुल्लू कांगड़ा—
पं० महेन्द्रप्रताप जी।

[८] माझा—
पं० रामचन्द्र जी अमृतसर।

[९] सियालकोट—पं० दलपति जी

[१०] गुजरांवाला शेखूपुरा—
पं० जगन्नाथ जी (गुजरांवाला)।

[११] लायलपुर—गुरुदत्तजी स्नातक

[१२] सरगोधा झंग—
मुनीश्वरदेव जी (सरगोधा)।

(१३) रावलपिंडी कैमलपुर—
इन्द्र जी स्नातक (कैमलपुर)।

[१४] पेशावरादि—पं० विष्णुनाथजी।

[१५] डेरा ग़ाज़ीखां—शांतिप्रकाशजी

[१६] मुलतान बहावलपुर—
पं० हरदयालु जी (मुलतान छावनी)

[१७] मंटगुमरी—पं० धर्मेन्द्र जी।

संयुक्त प्रान्त के मंडल

१—मेरठ-मंडला० पं० शिवदयाल जी तिलक पार्क, मेरठ।

२—आगरा-बा० शोभाराम कौशल मु० आगरा।

३—रुहेलखंड—विश्वनाथ जी त्यागी वकील मुरादाबाद।

४—अलाहाबाद—बा० अवध बिहारी लाल जी म्यूनिसिपल कमिश्नर फ़तहपुर।

५—बनारस—पं० अखिलानन्द जी।

६—गोरखपुर फैज़ाबाद—म० मिश्रीलाल जी गोरखपुर।

७—लखनऊ—बा० जयनारायण जी हसनगंज पार लखनऊ।

८—झांसी—बा० फगूमल जी।

९—गढ़वाल—मन्त्री उपसभा बिजनौर।

१०—सहारनपुर—मंत्री आ०स०सहारनपुर

बिहार प्रान्त के मंडल

१—आरा, राय सा० जय नारायण सहाय जी।

२—पटना, गया, पलाम्त पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण।

३—मुज़फ्फ़रपुर, पं० सत्यव्रत जी।

४—दरभंगा, रामशरण रामजी।

५—चंपारन, जगन्नाथ प्रसादजी चौधरी

६—सारन, बा० वैद्यनाथ प्रसाद जी बी० ए०।

७—मुंगेर, भागलपुर बा० अवधबिहारी लाल M. A. पूर्णियां-छोटा नागपुर आदि ज़िलों के लिये अधिकारी वर्ग तथा गु० कुल वैद्यनाथ धाम के कार्य्य कर्ता।

४—विविध सभाएं

१—श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर

स्थापना:—फाल्गुण शु० मंगल १९३९ वि० को स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा हुई।

उद्देश्य:—श्री स्वामी जी की सम्पत्ति (१) वेद और वेदांग आदि शास्त्रों के प्रचार अर्थात उनकी व्याख्या करने कराने पढ़ने पढ़ाने, छापने छपाने आदि में। (२) वेदोक्त धर्म के उपदेश व शिक्षा अर्थात् उपदेशक मण्डली द्वारा देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में पहुँच कर सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग आदि में। (३) आर्य्यावर्त के निस्सहाय बालकों की शिक्षा आदि में खर्च करें।

संगठन—आर्य्य जगत में से चुने हुए, विशेष योग्यता के २३ पुरुषों की सभा स्वामी जी ने क़ायम करके उसे अपने प्रेस पुस्तकालय आदि पर पूर्ण अधिकार दिया।

अधिकारी:—प्रधान श्रीमान् महाराजाधिराज श्री सियाजी राव बहादुर जी० सी० एस० आदि बड़ौदा। गायकवाड़ उपप्रधान श्रीमान् राव बहादुर ला० मूलराज जी एम. ए. रिटायर्ड डि. ज. लाहौर। मन्त्री His Highness श्री महाराजाधिराज साहिब शाहपुराधीश।

कामः—(१) वैदिक यन्त्रालय (२) वैदिक पुस्तकालय (३) सभा की सम्पत्ति (मकान बाग़ आदि) का प्रबन्ध।

सम्पत्तिः—दयानन्द आश्रम भवन ३०००० वैदिक यन्त्रालय भवन ४००००, स्वामी जी का बाग़ ३०००० दुकान १५०००, आराज़ी ८००० नक़द ५०१३४ पुस्तकालय व यन्त्रालय ३१८०६। सर्वयोग २०४९४०

मिश्रित—वर्तमान साल का बजट आय ८४३०, व्यय ८३१५। (२) गत वर्ष की आय ५४३५ व्यय १४५०।

२—आर्य कुमार महासभा बड़ौदा

अधिकारी—श्री राज्य रत्न मा० आत्माराम जी अमृतसरी के पथ प्रदर्शन में सारा काम होरहा है। पं० आनन्दप्रिय जी बी० ए० मन्त्री हैं।

काम—(१) गुरुकुल सोनगढ़ (२) भील क्षत्रिय आश्रम (३) आर्य्य कुमार आश्रम (४) अबला आश्रम (५) आर्य्य कन्या महा विद्यालय बड़ौदा (६) आर्य्य संन्यास आश्रम (७) आर्य्य कुमार प्रेस (८) आर्य्य पाठशाला (९) हिन्दू मिशन (१०) धर्म प्रचार।

मिश्रित—(१) गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ इस के कार्य्य क्षेत्र हैं (२) २८८ कार्य्यकर्त्ता हैं। पं० आनन्द प्रिय जी के परिश्रम का ही यह सब फल है।

३—आर्य्य न्याय सभा संयुक्तप्रांत

निम्नलिखित सज्जन प्र० नि० सभा की ओर से इसके मेम्बर हैं। (१) पं० रास विहारी जी तिवारी लखनऊ (२) ला० श्रीराम जी आगरा (३) बा० उमाशंकर जी फ़तेहपुर (४) धर्मेन्द्र जी शास्त्री (५) पं० शिवनारायण जी।

४—ज़ात पात तोड़क मण्डल लाहौर

अधिकारी—श्री भाई परमानन्द जी एम० ए०, मन्त्री म० चुन्नीलाल जी उप० प्र० गोविन्दराम जी बी० ए० एल० एल० बी०, उप० म० म० इन्द्रसिंह जी। कोषाध्यक्ष ला० नन्दलाल जी।

मिश्रितः—(१) नवम्बर १९२२ में काइम हुआ (२) सभासद संख्या ६०० (३) २ पत्र (मासिक) निकलते हैं युगान्तर (हिन्दी) क्रान्ति (उर्दू) (४) ट्रैक्ट और हैंडविल मुफ्त वित्तीर्ण किये जाते हैं (५) अब तक ३० सम्मेलन हुये हैं। (६) १५० से अधिक विवाह कराए गए। (७) गत वर्ष में ८७०० आय हुई और ९१६२ व्यय।

५—कष्ट निवारक समिति सब्ज़ी मंडी आगरा

रामस्वरूप जी शर्मा मंत्री हैं।

६—बाल विवाह विरोधिनी सभा हरदोई

राधेश्याम जी मंत्री हैं। शारदा ऐक्ट की पाबंदी कराना इसका उद्देश्य है।

७—राज्य कमेटी कोटला (रियासत)

इस कमेटी में सरकारी मेम्बरों के अतिरिक्त ५ मेम्बर पञ्चायत की तरफ से लिये गए हैं। श्रीयुत राजा किशनपाल सिंह जी कोटला नरेश ने यह सभा काइम की है।

८—पंचायत कोटला

अधिकारीः -प्रधान चौ० जैनीलालजी, मंत्री पं० बाबूराम जी। पंचायत के २२ मेम्बर हैं। कोटला नरेश ने प्रबंध सम्बन्धी अपने अधिकार पंचायत को दे दिये हैं।

९—आर्य्य कौमी सुधार सभा ओरंव (दीना नगर)

पं० गुरुदत्त जी प्रधान। पं० सत्यपाल जी मंत्री।

१०—आ० कष्ट नि० स० इलाहाबाद

शीलानाथ मुकरजी ऐडवोकेट मंत्री हैं।

११:—भारतीय औपनिवेशक संघ अजीतमल (इटावा)

प्रधानः—श्री पं० तोताराम जी, उ० प्र० श्रीकृष्णजी आर्य्य मिशनरी। प्र० मं० श्री प्रेम नारायण जी अग्रवाल, स० म० रत्नाकर देवरतन जी आयुर्वेद शिरोमणी। कार्य्यालय मं०रामगोपाल शर्मा आज़ाद, प्रकाशन मंत्री दयाकृष्णजी, दीक्षित शास्त्री। स०प्रकाशन मंत्री योगेन्द्रनाथ जी बी०एस०सी०। प्रचार मं० ज्योतिशंकर जी दीक्षित। कोषाध्यक्ष रामसेवक जी बजाज।

१२:—राजपूत सभा नया मुहल्ला जबलपुर

श्रीयुत सुन्दरलाल जी इसके मंत्री हैं।

१३—व्यायाम-प्रचारक मण्डल कछ

आर्यकुमार महा सभा बड़ोदा की तरफ से। अनुमान ३० तक व्यायाम शाला काइम हैं।

१४—आर्य्य न्याय सभा पंजाब गुरुदत्त भवन लाहौर

(१) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी (२) पं० विशम्भरनाथ जी मेम्बर हैं और (३) ला० नन्दलाल जी मंत्री। इस सभा के द्वारा कतिपय स्थानों के आर्य पुरुषों के झगड़े निपटाए जा चुके हैं।

१५—आर्य्य स्वराज्य सभा लाहौर

वेदोक्त राजनीति का प्रचार, शुद्धि, अछूतोद्धार, हिन्दू अनाथों विधवाओं की रक्षा, अन्य सेवा सम्बन्धी काम जैसे गुम हुओं की तलाश और रक्षादि का काम यह सभा करती है। यह सभा प्रायः उत्सवों पर कान्फ्रेस, लैक्चर, मैजिक लैन्टर्न, आदि के द्वारा प्रचार करती है। कई सहभोज हुए और अनेक साधनों से सुधारादि में सहयोग दिया गया। पं० रामगोपाल जी शास्त्री वर्षों ही योग्यता पूर्वक सेवा करते रहे आज कल सत्यार्थी जी अच्छी दिल चस्पी लेते हैं।

५—उपदेशक विद्यालय आदि

(१) द० उ० वि० गुरुदत्त भवन लाहौर

विद्यार्थी:—३५ (मारीशस १, मद्रास ३, सी० पी० २, यू० पी० ७, गढ़वाल १, गुजरात १, कच्छ १, पंजाब ११, बम्बई १, हैदराबाद दक्षिण २।

प्रबन्धः—श्रीमती आ० प्र० नि० सभा पंजाब की ओर से श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी इसके इन्चार्ज हैं।

शिक्षा:—सिद्धान्त शिरोमणि, सिद्धांत भूषण, सिद्धान्त विशारद आदि की परीक्षाओं का प्रबन्ध है। ईश्वरचन्द्र जी दर्शन वेद अध्यापक। नरदेवजी सिद्धान्त शिरोमणि साहित्य व्याकरण अध्यापक, शिवदत्त जी साहित्य अरबी अध्यापक।

आर्थिक अवस्था:—गत वर्ष ६२९६) आय हुई और ५३११) व्यय। (मकान सरमाया के लिये हिसाब देखो आ० प्र० नि० सभा पंजाब)

मिश्रितः—१—परीक्षायें निम्न लिखित सैंट्रों में हुई।

हैदराबाद द०, बिजनौर, मुलतान, गुरुकुल भैंसवाल, अमृतसर, लाहौर २० विद्यार्थी विद्यालय के और ४१ बाहर के सम्मिलित हुए।

२—यह विद्यालय २५ उपदेशक समाज को दे चुका है २—८ वर्ष से जारी है।

(२) द० ब्र० म० वि० लाहौर

प्रबन्धः—डी० ए० बी० कालिज सोसाइटी के आधीन है। रामानन्द जी अधिष्ठाता हैं। संख्याः—६२ विद्यार्थी प्रविष्ट हैं।

शिक्षा:—३ वर्ष का कोर्स है। विद्यारत्न, विद्यानिधि, विद्या वाचस्पति की परीक्षा का प्रबन्ध है। पं० विश्वबन्धु, जी एम० ए० बी० ओ० एल प्रिन्सिपल, कुल ९ अध्यापक हैं। आर्थिक अवस्था के लिये देखो डी० ए० बी० कालिज ट्रस्ट सोसाइटी। गतवर्ष में ५८२७) रु० चन्दा से प्राप्त हुआ।

मिश्रितः—(१) विद्यालय ४४ उपदेशक दे चुका है, (२) प्रत्येक विद्यार्थी का कुल १२) रु० मासिक व्यय होता है, (२) १४ वर्ष से न्यून आयु वाले को नहीं लेते, (४) १८ को सारे खर्च की १२ को एक विशेष भाग की और ३ को १२ बाहर से सहायता मिलती है, (५) वैदिक कोष तैयार हो रहा है (६) १२ वर्ष से जारी है।

(३) द० सा० आश्रम पुल कालीनदी हरदुआगंज

स्वामी परमानन्द जी इसके संचालक हैं, रामस्वरूप जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य प्रधान सं० पाठशाला, ठाकुर स्वर्णसिंह जी मन्त्री।

प्रबन्धः—कमेटी के आधीन है। मकानः—प्रत्येक आवश्यकता के लिये बना हुआ है। सहायता अनाज तथा नक़दी के रूप में काफ़ी मिल जाती है।

मिश्रितः--श्री स्वामी सर्वदानन्द जी इसके संस्थापक हैं, कई वर्ष आप ही इसे चलाते रहे हैं। बड़े बड़े योग्य विद्वान यह आश्रम समाज को दे चुके हैं। ५) रु० मासिक व्यय है।

(४) द० भा० वि० कानपुर

प्रबन्धः--पं० सूर्य्यदेव शर्मा जी मैनेजर।

शिक्षाः—(१) उत्तमा, मध्यमा, प्रथमा (२) मैट्रिक अँग्रेज़ी की परीक्षा तथा (३) शिल्प शिक्षा का प्रबन्ध है। विशारद परीक्षा सबके लिये लाज़मी है।

मिश्रितः—फ़ीस नहीं ली जाती। निर्धनों को भोजन भी दिया जाता है। दूसरों से ५) रु० मासिक लिया जाता है। प्रविष्ट होने वाले १४ से ऊपर आयु वाले तथा चौथा दर्जा पास होने चाहियें। हिन्दी अँग्रेज़ी मिडिल पास को तरजीह दी जाती है। १७ वर्ष से क़ायम है।

(५) डी० ए० वी० संस्कृत म० वि० अमृतसर

अधिकारीः—सन्तराम जी प्रधान, ज्ञानी पिण्डीदास जी मन्त्री हैं। गतवर्ष में ५४४०) रु० व्यय हुआ।

६—संस्कृत विद्यालय चिन्त पुरनी

७—हिन्दी विश्व विद्यालय प्रयाग

गोरख प्रसाद जी डी० एस० सी परीक्षा मन्त्री हैं।

शिक्षा—गुरु नारायण जी पांडे साहित्य रत्न प्रधान अध्यापक हैं हिन्दी साहित्य परीक्षाओं का प्रबन्ध है।

मिश्रितः—४ घंटे खेती, गोपालन, कताई, बुनाई, आदि काम हर विद्यार्थी से उजरत देकर लिया जाता है। मकान पढ़ाई पुस्तक सब मुफ़्त।

८—सं० वि० मोखरा रोहतक—१८ विद्यार्थी हैं। विशारद तक पढ़ाई, पं० गुरुदास राम जी अध्यापक।

९—आर्य्य विद्यालय किरठल (मेरठ)—पंजाब की संस्कृत परीक्षाओं का अच्छा प्रबन्ध है। मकान काफ़ी बन चुके हैं।

१०—आर्य्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर—श्री नारायण स्वामीजी द्वारा स्थापित।

शिक्षाः—पुस्तकालय मौजूद है नित्य प्रति सतसंग, स्वाध्याय, यज्ञ, वेद उपनिषद की कथा आदि होने का प्रबन्ध है।

मकानः—परिवार सहित तथा दूसरे वानप्रस्थियों के लिये मकान काफी और पृथक २ बन गए हैं। दर्शकों के लिए जुदा धर्मशाला है। हाल में १७-१८ एकड़ भूमि और ली गई है। टीढ़ी (गढ़वाल) के जज प्रसिद्ध पं० गंगाप्रसाद जी तथा आप के भ्राता प्यारेलाल जी रईस मेरठ भी यहीं मकान गनवा रहे हैं।

मिश्रितः—बहुत से वानप्रस्थी संन्यास ले चुके हैं। भोजन पर दूध घी सहित ८-१० रु० मासिक व्यय होता है। प्रायः बड़े २ यज्ञ होते हैं।

६—आ० स० के उपदेशक आदि

१—संन्यासी महात्मा

(१) श्री नारायण स्वामी जी (२) स्वामी सर्वदानन्द जी (३) स्वामी अच्युतानन्द जी (४) स्वामी सत्यानन्द जी (५) स्वामी स्वतन्त्रानन्द जीं (६) स्वामी वेदानन्द जी (७) स्वामी गंगागिरी जी (८) स्वामी ब्रह्मानन्द जी (९) स्वामी परमानन्द जी (१०) स्वामी परमानन्दजी झज्जर (११)स्वा० ब्रह्मानन्दजी म० वि० ज्वालापुर (१२) स्वा० आनन्दभिक्षुजी (१३) स्वामी लक्ष्मणानन्द जी (१४) स्वामी व्रतानन्द जी चित्तौड़ (१५) स्वामी सेवकानन्द जी (१६) स्वामी मुनीश्वरानन्द जी (१७) स्वामी धर्मानन्द जी (१८) स्वामी विचारानन्द जी (१९) स्वा० विद्यानन्द जी (२०) स्वा० सदानन्द जी (२१) स्वा० प्रणवानन्द जी (२२) स्वा० भौभानन्द जी एम० ए० (२३) स्वामी नित्यानन्द जी (२४) स्वामी विज्ञानानन्द जी (२५) स्वामी धीरानन्द जी (२६) स्वामी रामानन्द जी (२७) स्वामी कृपानन्द जी (२८) स्वामी सच्चिदानन्द जीं (२९) स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी (३०) स्वामो सोमानन्द जी (३१) स्वा० सोमेश्वरानन्द जी (३२) स्वा० मंगलानन्द जी (३३) स्वामी विवेकानन्द जी (३४) स्वामी देवानन्द जी (३५) स्वामी केवलानन्द जी (३६) स्वामी सन्तोषानन्द जी (३७) स्वामी अनन्तानन्द जी (३८) स्वामी यथार्थानन्द जी (३९) स्वामी अमृतानन्द जी (४०) स्वामी चिदानन्द जी (४१) स्वामी विशुद्धानन्द जी (४२) स्वामी अनुभवानन्द जी ४३ स्वामी स्वरूपानन्द जी (४४) स्वामी ईश्वरानन्द जी (४५) स्वामी शान्तानन्द जी (४६) वेदतीर्थ जी (४७) स्वामी आनन्द स्वामी जी (४८) स्वामी भवानीदयालु जी (४९) स्वामी त्यागानन्द जी (५०) स्वामी मयस्करानन्द जी (५१) स्वामी शिवानन्द जी (५२) स्वामी करुणानन्द जी .(५३) स्वामी प्रकाशानन्द जी (५४) स्वामी कर्मानन्द जी।

२—सा० देशिक सभा के उपदेशक

१—पं० धर्मदेव जी २—केशवदेव जी ज्ञानी ३—लक्ष्मण देव जी ४—विद्यावती देवी जी। सब मद्रास प्रांत में प्रचार करते हैं।

३—आ० प्र० नि० सभा पंजाब

१—पं० बुद्धदेव जी सनातक २—पं० ज्ञानचंद जी बी० ए० ३—पं० यशपाल जी सनातक ४—पं० बनवारीलाल जी बी० ए० ५—हरदयालू जी ६—पूर्णचन्द जी ७—पं० रामस्वरूप जी ८—विश्वनाथ जी ९—पं० मन्साराम जी १०—पं० माथुर शर्मा जी ११—पं० सुमेरसिंह जी १२—पं० इन्द्र जी १३—पं० रामचन्द्र जी १४—पं० गुरुदत्तजी

१५—पं० भूपेन्द्र जी १६—पं० दलपती जी १७—धर्मदत्त जी १८—पं० पूर्णचन्द जी १९—बालमुकन्द जी २०—पं० दीवानचन्द जी २१—सत्यदेव जी २२—पं० सोमदेव जी २३—मुनीश्वर देव जी २४—पं० लोकनाथ जी २५—रामदयाल जी २६—पं० जगन्नाथ जी २७—प्रभूदत्त जी २८—पं० भीमसेन जी २९—पं० व्रतपाल जी ३०—पं० शान्ति-प्रकाश जी ३१—पं० तीर्थराम जी ३२—पं० सत्यपाल जी ३३—म० रामचन्द जी ३४—पं० रामस्वरूप जी ३५—पं० हरपाल जी, ३६—म० चिरंजीलाल जी प्रेम ३७—खेमचन्द्र जी ३८—म० मोहनलाल जी ३९—महेन्द्र प्रताप जी ४०—श्रीमती द्रोपदी देवी जी ४१—पं० चन्द्रभानु जी।

भजनोपदेशकः १—म० सालिगराम जी, २—सन्तराम जी ३—बिहारीलाल जी ठा० उदयसिंह जी ५—म० केसरचन्द जी ६—म० आत्मदेव जी ७—बालकृष्ण जी ८—गुलशनराय जी ९—फ़कीरचन्द जी १०—बलदेव जी ११—अमरनाथ थी १२—शमशेरसिंह जी १३—हरिश्चन्द्र जी १४—जगदीशचन्द्र जी १५—भगतराम जी १६—मिट्ठनलाल जी १७—सन्तसिंह जी १८—भद्रपाल जी १९—धर्मपाल जी २०—देशराजजी २१—मेहरचन्द जी २२—विष्णुराम जी।

आनरेरी उपदेशकः—१—म० कृष्ण जी लाहौर २—पं० ठाकुरदत्त जी अ० धा० लाहौर ३—पं० मुक्तीराम जी गु० कु० चोहा भक्तां ४—मा० रामलाल जी लुधियाना ५—म० सत्यपाल जी ६—पं० बिशम्भरनाथ जी लाहौर ७—पं० भगतराम जी डिंगा ८—पं० विष्णुदत्त जी फ़ीरोज़पुर ९—पं० चन्द्रकान्त जी १०—पं० सत्यदेव जी ११—ईश्वरचन्द्र जी १२—शिवदत्त जी १३—विश्वानन्द जी १४—ला० नन्दलाल जी लाहौर १५—पं० नरदेव जी १६—ला० वज़ीरचन्द जी रावलपिंडी १७—पं० चमूपति जी गु० कु० कांगड़ी १८—पं० देव शर्मा जी गु० कु० कांगड़ी १९—प्रो० रामदेव जी क० गु० कु० डेरादून २०—पं० जगन्नाथ जी नि० र० अमृतसर २१—डा० भगतराम जी लाहौर २२—पं० भीमसैन जी लाहौर २३—पं० इन्द्र जी वि० वा० देहली २४—पं० रामचन्द्र जी महोपदेशक देहली २५—पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु, देहली २६—ला० देवराज जी जालंधर २७—ला० हरदयालु जी जालंधर २८—म० मदनमोहन जी मुलतान।

आर्य्य प्रादेशिक प्र० नि० सभा पंजाब के उपदेशकः—१—मैहता रामचन्द्र जी शास्त्री २—पं० अमरनाथ जी ३—म० सावनमल जी ४—पं० बुद्धदेव जी मीरपुरी ५—ठा० अमरसिंह जी आ० मु० ६—पं० भूदेव जी शास्त्री ७—विशम्भरदत्त जी ८—सुखानन्द जी ९—विश्वधर्मा जी १०—म० सत्यपाल जी ११—पं० गंगासहाय जी १२—रामचन्द्र जी शर्मा १३—शिवचरण जी १४—ऋषि राम जी रोहतक। प्रांत के लियेः— १५—पं० रामचन्द्र जी १६—पं० बालमुकन्द जी। बङ्गाल के लियेः—श्री सुजित कुमार जी मु० उपाध्याय (२) ब्र० लक्ष्मण जी विद्यानिधि। मद्रास प्रांत के लियेः—प्रो० के० एल० मुदमल।

भजनोपदेशकः—१—ला० हरीचन्द जी २—पं० गंगासहाय जी ३—ला० मोहन लाल जी ४—बा० ठाकुरसिंह जी ५—सत्यपाल जी ६—हरिदेव जी ७—रामगोपाल जी

८—कर्मचन्द जी ९—ज्ञानचन्द जी १०—सोहनलाल जी नं० १ ११—सोहनलाल जी नं० २। १२—बालमुकन्द जी १३—विद्याधर जी।

आनरेरी उपदेशक:—१—श्री महात्मा हंसराज जी २—श्री० ला० खुशहालचन्द जी ३—प्रो० चारुदेव जी एम० ए० ४—श्री ला० दीवानचन्द जी एम० ए० प्रिंसिपल ५—ला० देवीचन्द जी एम० ए० ६—ला० भगवतदत्त जी बी० ए० ७—ला० दौलतराम जी अमृतसर ८—प्रो० श्रीराम जी ९—पं० मेलाराम जी जालन्धर १०—पं० रामचन्द्र जी बी० ए० अम्बाला ११—पं० विश्वबन्धु जी एम० ए० १२—पं० मस्तानचन्द जी बी० ए० १३—पं० रामप्रताप जी १४—ज्ञानी पिंडीदास जी १५—देवप्रकाश जी १६—पं० भूदेव जी शास्त्री १७—पं० वाचस्पती जी एम० ए० १८—पं० राजाराम जी १९—पं० सोमदेव जी लायलपुर २०—पं० फ़क़ीरचन्द जी २१—प्रो० रामचन्द्र जी जालन्धर २२—पं० ज्ञानचन्द जी एम० ए० २३—प्रो० रलाराम जी होशियारपुर २४—ला० दीनानाथ जी है० म० हाफिज़ाबाद २५—म० बेलीराम जी एम० ए० होशियार पुर २६—पं० तुलसीराम जी शास्त्री २७—ला० चिमनलाल जी बी० ए० २८—ला० शामलाल जी २९—ला० बनारसीदास जी ३०—पं० रामानन्द जी ३१—ला० कुन्दनलाल जी ३२—सङ्गरामसिंह जी ३३—रामनारायण जी बी० ए० ३४—राजेन्द्रपाल जी सम्पादक आ० ग० लाहौर ३५—गुरुदत्त जी शास्त्री बटाला ३६—ला० किशोरीलाल जी अम्बाला ३७—पं० जमनालाल जी वकील सियालकोट ३८—मा० मेलाराम जी शाहपुर।

५—आ० प्र० नि० स० संयुक्त प्रांत

१—पं० शिव शर्मा जी २—निरंजनदेव जी ३—रुद्रदत्त जी ४—धर्मराजसिंह जी ५—पं० होरीलाल जी ६—राजेन्द्रदेव जी ७—पं० श्रीकृष्ण जी ८—पं० शेरसिंह जी ९—पं० काशीनाथ जी १०—रूपनारायण जी ११—पं० देवानन्द जी १२—रघुवीरदत्त जी १३—पं० द्वारकादत्त जी १४—पं० गोविन्दराम जी शर्मा १५—नत्थासिंह जी १६—रामचन्द्र जी १७—पं० मुकन्दराम जी १८—खूबसिंह जी १९—कुं० मानसिंह जी २०—धर्मसिंह जी २१—मननसिंह जी।

आनरेरी उपदेशक:—१—श्री पं० पूर्णचन्द जी प्रधान सभा २—श्री उमाशंकर जी मन्त्री ३—पं० सूर्य्यदेव जी शर्मा एम० ए० ४—पं० हरिशंकर जी बी० एस० सी० एल० टी० ५—ला० देवीचन्दजी टैम्प्रन्स प्रचारक ६—पं० धर्मेन्द्र जी शास्त्री ७—पं० इन्द्रवर्मा जी ८—श्री डा० श्यामस्वरूप जी रा० सा० ९—पं० कालीचरण जी १०—पं० बन्सीधर जी पाठक ११—पं० देवेन्द्र जी शास्त्री १२—पं० ज्वालाप्रसाद जी बानप्रस्थी १३—पं० घासीराम जी एम० ए० मेरठ १४—र० गु० पं० धर्मेन्द्र जी १५—श्री देशबन्धु जी १६—पं० शान्तिस्वरूप जी १७—नारायणप्रसाद जी १८—पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय इलाहाबाद १९—प्रि० दीवानचन्द जी एम० ए० कानपुर २०—पं० बृहस्पति जी गु० कु० वृ० २१—पं० बिहारीलाल जी शास्त्री एम० ए० कानपुर २२—महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम० ए० देहरादून २३—रास बिहारी जी तिवारी गणेशगंज लखनऊ २४—चन्द्रशेखर जी वाचस्पति मुजफ़्फ़रनगर २५—पं० रामचन्द्र जी एम० ए० बाराबंकी २६—प्रो० कृष्णकुमार एम०

ए० कानपुर २७—पंडिता लक्ष्मीदेवी जी हाथरस २८—प्रेमकली देवी जी इलाहाबाद २९—रा० ब० मशअलसिंह जी रईस हरदोई इत्यादि कुल ९२ आनरेरी उपदेशक हैं।

६—बम्बई प्रान्त के उपदेशक और लैक्चरार

१—श्री मणिशङ्कर जी शास्त्री २—स्वामी शिवानन्द जी ३—स्वामी नारायणानन्द जी ४—आशाभाई जी ५—ब्रह्मानन्द जी ६—पं० जीवाराम जी ७—पं० धीरजलाल जी शर्मा ८—प्रभातसिंह जी वर्मा ९—चम्पालाल जी शर्मा १०—माया शंकर जी ११—नागरदास जी बानप्रस्थी १२—हरिदेव जी १३—के० जी० शाह १४—शान्तिदेवी जी १५—शान्ताराम जी १६—जानगाकर जी १७—श्री महाराणी शंकर जी १८—पं० लक्ष्मण राव जी १९—द्विजेन्द्रनाथ जी २०—भारती जी २१—प्रभूदत्त जी शर्मा भ० २२—दातार जी भाई २३—रामचन्द्र जी सिद्धान्तालंकार २४—बल्लभदास जी मैहता २५—श्याम राव जी ठाकुर २६—महादेवप्रसाद जी भ० २७—रघुवीरसिंह जी भ० २७—सत्यपाल जी भ०।

७—राजस्थान

१—पं० रामसहाय जी २—प्रकाशचन्द्र जी ३—कुं० चाँदकरण जी शारदा ४—पं० परमानन्द जी बी० ए० ५—ईश्वरदत्त जी सिद्धार्थी उदयपुर ६—पं० जयदेव जी विद्यालंकार ७—पं० नर्मदाप्रसाद जी नसीराबाद ८—पं० भूरालाल जी कथा व्यास ९—भगवान स्वरूप जी न्यायभूषण शाहपुरा १०—स्वामी नरसिंह देवजी सरस्वती जयपुर।

८—बंगाल

१—पं० अयोध्या प्रसाद जी २—पं० सुरेन्द्र शर्मा जी ३—पं० शिवनन्दन जी ४—स्वा० भद्रानन्द जी ५—दीनबन्धु जी आचार्य्य सम्पादक आर्य्य गौरव ६—शान्ति स्वरूप जी ७—वेद नारायण जी।

९—बिहार

१—साधु वेदव्रत जी २—विद्यानन्द जी ३—विश्वनाथ जी ४—सत्यव्रत जी

१०—उपसभादि के उपदेशक

१—बिजनौर गढ़वाल:—पं० रामचन्द्र जी आ० प० ख्यालीराम जी, रेवानन्द जी, ऋषिराम जी गुमानीसिंह जी, रणवीर शास्त्री जी, छज्जूसिंह जी, कान्तिचन्द्र जी जयराम जी। २—सहारनपुर में:—पं० गेंदाराम जी भ०, म० तिलक जी, छज्जूसिंह जी, म० बारूमल जी, म० मंधा जी, सुमेरचन्द जी। ३—बदायूं:—पं० लक्ष्मीनारायण जी शर्मा पं० ज्ञानीराम शर्मा, विहारीलाल शर्मा भ० ४—हरदोई—पं० लल्लूराम जी मिश्र ५—बर्मा—अयोध्या प्रसाद जी, लालचन्द जी भ० ६—आगरा—शामलाल जी, लालाराम जी भ० ७—मेरठदयाराम जी ८—गोरखपुर वे० प्र० मं० रघुनन्दन जी शर्मा ९—बरेली भूपराम जी देवदत्त जी १०—रुड़की—नरसिंह शर्मा जी ११—गंज मुरादाबाद—रामशरण जी १२—साहसपुर (बिजनौर) गंगादत्त जी १३—पूर्णपुर (पीलीभीत) भजन मंडली १४—मोती कटड़ा आगरा—मुन्शीसिंह जी आजाद १५—नई देहली—वेदव्रत जी १६—अजीतमल—

श्रीकृष्ण जी शर्मा १७—जालंधर:—भगत मंगतराम जी गायनाचार्य (मंडली) १८—काशी:—ब्र० अखिलानन्द जी, शिवचरणलाल जी, ब्र० परमानन्द जी, नत्थूसिंह जी भ० १९—देहली (चावड़ी समाज):—पं० रामचन्द्र जी २०—देहली नयाबांस:—पं० चन्द्रभानु जी, २१—प्रयाग:—स्त्री उ० प्रेमकली देवी जी २२—कटड़ा प्रयाग:—प्रभुदयाल जी पं० अमीचन्द जी भ० २३—एटा:—मदनमोहन शर्मा जी २४—रामा मंडी:—जनकराम जी भ० २५—जींद जं० १:—निहालचन्द जी वर्मा २६—फ़ीरोज़पुर शहर:—पं० हरिश्चन्द्र जी २७—मुलतान:—अर्जुनदेव जी भ० २८—नवां शहर:—लक्ष्मीदत्त जी २९—खानेवाल:—संसारसिंह जी ३०—चांदा वे० प्र० सभा—तोलाराम जी, ब्रह्मदत्त जी ३१—लायलपुर:—पं० सोमदेव जी ३२—टोबा टेकसिंह:—पं० मेहरचन्द जी ३३—फ़ीरोज़पुर अनाथालय:—प्रेमलाल जी, धर्मवीर जी, दयावन्ती जी, भाई काहनसिंह जी, पं० आत्माराम जी, रामरखा मल जी आ० ३४—देहली श्रद्धानन्द ट्रस्ट:—धर्मवीर जी, रामलाल जी ३५—गु० कु० वैद्यनाथ धाम:—हरीलाल जी, सहदेव जी शर्मा ३६—शुद्धि सभा देहली:—पं० लक्ष्मीनारायण जी ३७—शुद्धि सभा मुरादाबाद:—पं० भद्रदत्त जी ३८—शुद्धि सभा आगरा:—काशीनाथ जी ३९—जात पात तोड़क मण्डल लाहौर—भूमानन्द जी ४०—बलिया:—गंगासिंह जी ४१—द० दलितोद्धार सभा गु० द० भ० लाहौर:—रामदत्त जी, ज्ञानी प्रतापसिंह जी, धर्मदास जी, मा० विश्वानन्द जी, स्वा० चेतनानन्द जी, म० रत्नपालसिंह जी, कशमीरी लाल जी, लक्ष्मीचन्द जी, लब्भूराम जी, वसावाराम जी, देवेन्द्रनाथ जी, देवराज जी, मेहरचन्द जी, अमोलकराम जी तथा १० अन्य प्रचारक।

द० दलितोद्धार सभा होशियारपुर:—पं० देवराज जी, लक्ष्मणदास जी, गुरुदत्त जी, सन्तसिंह जी, रामदेव जी, बलराज जी, सन्तराम जी, धनीराम जी, हरसिंह जी, बूटाराम जी, नन्दलाल जी, शूद्रानन्द जी, चूनीलाल जी, म० बालमुकन्द जी, अछरचन्द जी, मुकन्दीलाल जी, राजाराम जी, बा० सुरजनदास जी, विमलानन्द जी, राम रखामल जी, कृपाराम जी, नन्दलाल जी।

आर्य्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

१—ठा० प्रवीणसिंह जी बढ़ापुर (बिजनौर) २—कुं० सुखलाल जी आ० मु० ३—ठा० तेजसिंह जी ४—म० डोरीलाल जी बरेली ५—म० ज्ञानेन्द्र जी ६—ठा० नत्थासिंह जी ७—प्रकाशचन्द्र जी अजमेर ८—ठा० आत्माराम जी ९—प्रेमी जी १०—प्रदेसी जी इत्यादि।

७—विद्या प्रचार सम्बन्धी सभाएँ

१—डी० ए० वी० कालिज मैनेजिंग सोसाइटी लाहौर।

संगठन—विशेष नियमों के आधीन आर्य्य-समाजों के प्रतिनिधि और विशेष दान तथा योग्यता के कारण स्वीकृत मेम्बर सम्मिलित हैं।

मेम्बर—कुल ९१ (आर्य समाज लाहौर के २६ अन्य समाजों के ५८ प्रतिनिधि, लाइफ़ मेम्बर ४, इंजिरिङ्ग मेम्बर १, कालिज यूनियन १) । प्रिन्सीपल X. O.

अधिकारी—प्रधान मि० मुकन्दलाल जी पुरी M.L.C. Bar-at-law, उपप्रधान मेहरचन्द जी B.A. LL. B. मैहता अमीचन्द जी B.A. LL.B, C.L. आनन्द जी M.A. LL.B. Bar-at-law, Principal Law College Lahore., प्रधानमन्त्री ला० हरगोपाल जी M.A.LL.B. Advocate. मन्त्री मि० देवराज साहनी B.A. LL. B. Barat-law, ला० विश्वेश्वरनाथ जी सेठी B.A. LL.B. ला० दीनदयाल जी खन्ना B.A. LL.B. ला० रञ्जीतराय B.A. LL.B., एकौंटैंट हरनरायणदास जी, बलराजी जी सोहनलाल जी ।

काम—(१) डी० ए० वी० कालिज लाहौर (२) डी० ए० वी० कालिज बोर्डिङ्ग हाउस लाहौर (३) अनुसंधान कार्य (४) डी० ए० वी० हाई स्कूल लाहौर (५) डी०ए०वी० कालिज जालन्धर (६) गोविन्द सहाय ए० एस० स्कूल हाफ़िज़ाबाद (७) २६ स्कूल (हाई मिडिल, प्राइमरी) ।

सम्पत्ति—मकान, भूमि, नकदी सब मिलाकर तीस लाख उनसठ हज़ार नौ सौ चव्वन (३०५९९५४) ।

स्थापना—३१ मार्च १९३३ ई० को इसे क़ायम हुए ४६ वर्ष व्यतीत हुए ।

२—पंजाब आर्य शिक्षा समिति गुरुदत्त भवन लाहौर (७ वर्ष से जारी)

संगठन—समिति से सम्बद्ध प्रत्येक प्राइमरी स्कूल का १—मिडिल, २—हाई, ३—और कालिज, ४—ऐसे प्र० नि० भेज सकता है जो आ० प्र० नि० सभा पंजाब से सम्बन्ध रखने वाले समाज के मेम्बर हों (२) आ० प्र० नि० सभा पंजाब की अन्तरङ्ग सभा से नियत ७ मेम्बर (३) ५०) रुपये या अधिक दान देने वाले (४) इन तीनों प्रकार के मेम्बरों का दसवां भाग प्र० नि० ।

अन्तरङ्ग सभा—कुल मेम्बरों में से ७ अधिकारी और ८ मेम्बर अन्तरङ्ग सभा के चुने जाते हैं ।

अधिकारी—राय बहादुर मक्खमलाल जी प्रधान, मा० मूलराज जी B.A,B.T. मन्त्री, प्रो० शिवदयाल जी एम० ए०, बाबा बलवन्तसिंह जी, पं० विश्वम्भरनाथ जी उपप्रधान, पं० बनवारीलाल जी उपमन्त्री, स स० अमरसिंह जी कोषाध्यक्ष ।

संस्थाएँ—१ कालिज, ७ हाई स्कूल, ६ मिडिल स्कूल, ३ संस्कृत विद्यालय, ७ प्राइमरी स्कूल, ३१ मिडिल क० पा०, ५० प्राइमरी क० पा०, अर्थात् १०५ संस्थाओं का इस समिति से सम्बन्ध है ।

३—आ० वि० सभा डेरा इस्माईल खां ।

राय ठाकुरदत्त जी धवन प्रधान, तरुतराम जी मन्त्री ।

४—वि० प्रचारिणी सभा चिन्तपुर्णी (होशियारपुर)

संस्कृत महाविद्यालय चिन्तपुर्णी जारी है ।

५—आर्य वि० स० बम्बई प्रदेश ।

प्रधान नगीनदास जी बी० टी० मास्टर, मन्त्री डा० कल्याणदास जी देसाई L.M.S., कुल ४० मेम्बर हैं ।

६—शिक्षा विभाग आ० प्र० नि० सभा यू० पी० ।

मन्त्री पं० चन्द्रशेखर जी । १९ क० पा०, ३ डी० ए० वी० हाई स्कूल और १ संस्कृत पाठशाला इसके आधीन है । पं० गङ्गाप्रसाद जी ने सभा को तीन हज़ार हज़ार रुपया दिया कि इसका सूद शिक्षा में ख़र्च हो, अतः उससे कन्याओं को वज़ीफ़े दिये जाते हैं ।
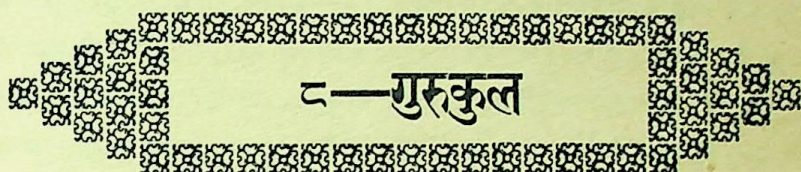
८—गुरुकुल

१—गुरुकुल कांगड़ी ज्वालापुर ।

स्था०—१० मार्च १९०२ ई०, इस से पूर्व २ वर्ष गुजराँवाला में जारी रहा फिर कांगड़ी (बिजनौर) में बदला और अब कुछ वर्ष से ज्वालापुर में नए भवन में आगया है।

संख्या—२९५ ब्रह्मचारी हैं।

प्रबन्ध—श्रीमती आ० प्र० नि० सभा पंजाब की अन्तरङ्ग सभा के हाथ में है । जिस की ओर से एक मुख्याधिष्ठाता इञ्चार्ज है। पठन पाठन का प्रबन्ध एक आचार्य के आधीन रहता है । १९७५ वि० तक महा० मुन्शीराम जी इञ्चार्ज रहे तत्पश्चात् प्रो० रामदेव जी और आजकल प्रो० चमुपति जी एम० ए० इञ्चार्ज हैं।

शिक्षा—४ श्रेणियों से शुरू हुआ, सं० १९६८ वि० में महाविद्यालय बना। अब वेद म० वि०, अर्थ म० वि० और आयुर्वेद म० वि० भी हैं। प्रो० देवशर्माजी प्रिंसिपल हैं । २० बड़ी २ योग्यता के प्रोफेसरादि सारे आवश्यक विषयों की शिक्षा देते हैं। विद्या-प्रचार की दृष्टि से यह संस्था भारतवर्ष में आदर्श और उच्च पोज़ीशन रखती है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है। संस्कृत तथा प्राचीन आदर्श इसकी विशेषता है। अङ्गरेज़ी शिक्षा भी दी जाती है। अनेक शाखायें भी खोली गई हैं और प्राचीन शिक्षा-प्रणाली सर्व प्रिय बनती जा रही है।

आर्थिक विवरणः—आ० प्र० नि० सभा पंजाब के निश्चय के अनुसार पहिले महा० मुन्शीराम जी ने व्रत धार कर सारे देश में भ्रमण किया और ३० हज़ार रुपया इकट्ठा कर दिया । पीछे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रभाव तथा आर्य्य समाज के सङ्गठित पुरुषार्थ से देश भर के दान का एक विशेष भाग इस संस्था के अर्पण होने लगा। वार्षिक उत्सव पर किसी २ वर्ष लाख-दो-लाख तक भी दान मिला है। गत वार्षिकोत्सव पर भी ६३ हज़ार चन्दा हुआ । स्थान सम्बन्धी उलझन को सर्व प्रथम मुं० अमनसिंह जी ने अपना कांगड़ी ग्राम दान देकर दूर कर दिया। उस भूमि पर बड़ी शानदार इमारत बनी। परन्तु

गंगा की बाढ़ से अपने चार्ज में लिये देश और जाति के बच्चों को सुरक्षित रखने के लिये सभा ने अब ज्वालापुर में लाखों रुपया लगाकर नये मकान में बनवा दिए हैं, जिस से दर्शकों के लिये भी अनेक प्रकार का आराम होगया है।

सम्पत्ति:—कुल सरमाया मकान तथा भूमि सहित १६ लाख रुपया से ऊपर है। कांगड़ी की भूमि १२०० बीघा है। अन्य अनेक स्थानों में भी भू सम्पत्ति है।

मिश्रित—१—लाइब्रेरी बड़ी शानदार है। रीडिङ्ग रूम में उर्दू, हिन्दी, अँग्रेज़ी आदि के बहुत से पत्र तथा रिसाले आते हैं। २—गौशाला भी बड़ीभारी है। ३—साहित्य परिषद, बागबर्धणी संस्कृत उत्साहिणी, ज्ञान परिषद, वेद परिषद, कालिज यूनियन, हिन्दी साहित्य मण्डल नाम से अनेक सभायें स्थापित हैं। ४—वार्षिक व्यय अनुमान डेढ लाख रुपया होता है। ५—वैदिक मेगज़ीन और गुरुकुल समाचार इस वर्ष से बन्द होगया है। अलंकार (हिन्दी मासिक) प्रकाशित होता है। ६—२०० से अधिक ब्रह्मचारी स्नातक की डिग्री पाकर गुरुकुल से विदा हो चुके हैं, और अनेक प्रकार से समाज सेवा के कामों में भाग ले रहे हैं।

२—शाखा गु० कु० कुरुक्षेत्र

स्था०—ला० ज्योतीप्रसाद जी रईस थानेसर ने १० हज़ार रुपया और १०४८ बीघा भूमि आ० प्र० नि० सभा पंजाब को दान देकर १ वैशाख सं० १९६९ वि० को इसे जारी कराया।

प्रबन्ध—मुख्याधिष्ठाता गु० कु० कांगड़ी इसके इञ्चार्ज हैं। स्थानीय सहायक मुख्याधिष्ठाता और निकटवर्तीय प्रान्तों के आर्य्य पुरुषों की प्रबन्ध कर्तृ सभा के द्वारा इसका सञ्चालन होता है। ला० बनवारीलाल जी अधिष्ठाता हैं और हल्दौर (बिजनौर) के प्रसिद्ध रईस ला० ठाकुरदास जी भूमि तथा बाग़ का प्रबन्ध कर रहे हैं।

शिक्षा—८ श्रेणी हैं। पं० सोमदत्त जी आचार्य्य हैं, १० योग्य अध्यापक शिक्षा सम्बन्धी कार्य्य को सन्तोषजनक रीति से कर रहे हैं।

सम्पत्ति—डेढ़ लाख की पक्की इमारत और २२०० बीघे भूमि है। भूमि तथा बाग़ की आय को इस प्रकार उन्नति करने का यत्न हो रहा है, कि गुरुकुल Self Supporting हो जाय, गत वार्षिकोत्सव पर २५०० रुपया दान आया।

मिश्रित—(१) कुरुक्षेत्र अति प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। गुरुकुल के चारों तरफ़ कोई न कोई तीर्थ-स्थान अथवा प्रसिद्धि ऐतिहासिक इमारत है। कुरुक्षेत्र का तालाब, करण का खेड़ा, बानगंगा, भीष्मसर, ज्योतिसर इत्यादि। (२) गौशाला, भोजनशाला, बाग़, चिकित्सालय, विद्यालय, आश्रम सब आवश्यक मकान पक्के बन चुके हैं। (३) जलवायु अति उत्तम है और ब्रह्मचारी स्वस्थ्य रहते हैं।

३—शाखा गु० कु० भटिंडू

स्था०—१९७२ वि० में चौ० पीरूसिंह जी आदि के उद्योग से जारी हुआ।

प्रबन्ध—एक कमेटी है, १०० रुपया इकमुश्त दान देने वाला मेम्बर होता है। मुख्याधिष्ठाता आश्रम तथा विद्यालय का इञ्चार्ज है।

आर्थिक विवरण—वार्षिक व्यय १० हज़ार रुपया है, २० हज़ार रुपया के क़रीब की सम्पत्ति है। उत्सव पर दो अढ़ाई हज़ार दान आता है, शेष फ़सल के मौक़ा पर जिन्स के दान से पूरा हो जाता है। ५५ बीघा भूमि ५०००) रु० की, मकान और कुंआ ६००० रुपया का है।

मिश्रित—(१) ८ श्रेणी हैं। (२) निःशुल्क शिक्षा दी जाती है (३) गौशाला भी है। (४) ८० ब्रह्मचारी हैं।

४—शाखा गु० कु० भैंसवाल

स्था०—२३ मार्च १९२० को स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर कमलों से इसकी बुनियाद रखी गई।

प्रबन्ध—श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी मुख्याधिष्ठाता, विश्वनाथ जी आचार्य्य, मलिक घासीराम जी प्रधान, फूलसिंहजी मन्त्री हैं। ५ और अधिकारी और ४२ अन्तरङ्ग मेम्बर हैं।

शिक्षा—१० श्रेणी हैं। व्याकरण साहित्य दर्शन, उपनिषदादि की शिक्षा तथा पंजाब बनारस और उपदेशक विद्यालय की परीक्षाओं का प्रबन्ध है।

आर्थिक विवरण—वार्षिकोत्सव पर ३००० चंदा हुआ, ४० बीघे भूमि तथा ७० हज़ार की इमारत आदि की सम्पत्ति है।

मिश्रित—(१) ३ ब्रह्मचारियों ने विद्या प्रभाकर की डिग्री पाई (२) भगत फूलसिंह जी आरम्भ से ही इस गुरुकुल की सेवा में समर्पित हैं (३) कई भजन मण्डलियां प्रचार कर रही हैं।

५—गुरुकुल रायकोट

स्थापना:—१९७६ ई० में स्वा० गंगागिरी जी के उद्योग से स्वा० श्रद्धानन्द जी के द्वारा पाठशाला के रूप में स्थापना हुई। सं० १९७९ से गुरुकुल बना।

प्रबन्ध—गु० कु० कांगड़ी के आधीन है। श्री स्वामी गंगागिरी जी मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य्य इस का संचालन करते हैं।

शिक्षा—८श्रेणि, ९ अध्यापक हैं। पंजाब तथा बनारस की संस्कृत परीक्षाओं का प्रबन्ध है। पं० निरंजन देव जी विद्यालंकार मुख्याध्यापक हैं।

आर्थिक विवरण—भूमि मकानादि की खासी सम्पत्ति है। १२००) मासिक व्यय है। वार्षिकोत्सव के दान तथा स्वा० गंगागिरी जी के उद्योग से पूरा होता है। इसकी सर्व सम्पत्ति आ० प्र० नि० सभा पंजाब के नाम रजिष्टरी हो चुकी है।

मिश्रित—(१) ५० ब्रह्मचारी हैं। (२) औषधालय तथा गोशाला भी है। ४० गौ हैं (३) पुस्तकालय में संस्कृत अंग्रेजी उर्दू के डेढ़ हज़ार पुस्तक हैं।

६—शाखा गु० कु० इन्द्रप्रस्थ

स्था०—१९१९ दिसम्बर देहली से १२ मील तुग़लकाबाद से २ मील दूर पहाड़ी पर स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा स्थापना हुई।

प्रबन्ध—गुरुकुल कांगड़ी के आधीन है। प्रो० गोपाल जी बी० ए० जैसे योग्य अनुभवी पुरुष अधिष्ठाता इसके इञ्चार्ज हैं।

शिक्षा—सर्व प्रकार से सन्तोष जनक है। १० श्रेणि, ११ योग्य प्रो० तथा अध्यापक हैं।

आ० वि०—स्वर्गीय सेठ रग्घूमल जी देहली के एक लाख के दान से जारी हुआ। ११०० बीघे भूमि है। इमारत बड़ी शानदार बन चुकी है। और बन रही है गत वार्षिकोत्सव पर ३५००) रु० दान आया।

मिश्रित—(१) १४० ब्रह्मचारी हैं (२) लाइब्रेरी में २ हज़ार से अधिक पुस्तक हैं। (३) वाचनालय में १५ अखबार व रिसाले आते हैं। (४) कुआं बन चुका है (५) वाटिका भी उन्नत दशा में है। (६) खेल का मैदान खुला है। (७) धर्म शिक्षा, व्यायाम आदि सब का उत्तम प्रबन्ध है।

७—गु० कु० मुलतान

स्था०—१० फ़र्वरी १९०९ ई० को

प्रबन्ध—उप सभा के प्रधान मलिक परमान्द जी हैं, मन्त्री म० रंजीत राय जी, मुख्याधिष्ठाता ला० मोती रामजी हैं।

शिक्षा—८ श्रेणी० मा० प्रेम सागर जी० बी० ए० हैड मास्टर और ८ अध्यापक हैं।

सम्पत्ति—४५ बीघे भूमि है। तारा कुण्ड पर अपने मकान बन गए हैं।

मिश्रित—(१) पुस्तकालय में १६०० पुस्तक हैं (२) गौशाला, धर्मशाला भी है (३) पहिले डेरा बंधु में जारी हुआ, फिर श्री परमानन्द जी की कोठी में मुलतान में और अब ताराकुण्ड पर है।

८—गु० कु० पोठोहार चोहा भक्तां

२४ वर्ष पूर्व स्वा० दर्शनानन्दजी ने काइम किया पं० मुक्तिरामजी जैसे योग्य विद्वान सज्जन इसके इञ्चार्ज हैं। १६० बीघे भूमि हैं। १५००० के मकान। गत वार्षिकोत्सव पर २४००) रु० दान प्राप्त हुआ।

९—गु० कु० गुजरांवाला

स्था०—१९०० में जारी होकर यहां से सभा का गु० कु० कांगड़ी चला गया तो ला० रलाराम जी आदि ने यहां भी गुरुकुल जारी रखना आवश्यक जाना।

प्रबंधः—गु० कु० गुजरांवाला ट्रस्ट सोसाइटी के आधीन हैं। ला० जुगुलकिशोर जी एडवोकेट प्रधान, ला० हाकिमराय जी एडवोकेट उ० प्र०, बख़शी दीनानाथ जी वैद्य रावलपिंडी मंत्री, ला० गोविन्दराम जी आन० मैनेजर (५ अधिकारी ११ अन्तरंग मेम्बर)

शिक्षा—यूनीवर्सिटी से सम्बन्ध है। मैट्रिक परीक्षा, संस्कृत और धर्म शिक्षा का विशेष प्रबंध है। माध्यम हिन्दी है।

आर्थिक वि०—२५ हज़ार के मकान हैं। ३० हज़ार का वार्षिक व्यय फ़ीस और दान से पूरा होता है। गौ शाला और धर्म शाला भी हैं।

मिश्रितः—(१) पुस्तकालय भी है। स्वर्गीय ला० रलाराम जी प्रसिद्ध आर्य्य पुरुष इसे

मृत्यु पर्यन्त पूरे यत्न से चलाते रहे। राय ठाकुरदत्त जी धवन ने आपके साथ पूरा सहयोग जारी रखा। अब यह दोनों महानुभाव इस संसार में नहीं तथापि उनका लगाया हुआ यह पोदा फल फूल रहा है।

१०—गु० कु० शिल्प वि० भटिंडा

१२ नवम्बर, १९२७, को भटिंडा से १ मील पर जारी हुआ। शिल्प शिक्षा की उन्नति इस का उद्देश्य है। आ० प्र० नि० स० पञ्जाब के नाम रजिष्ट्री है। आर्य्य समाज भटिंडा और रामा मण्डी की विशेष सहायता है।

११—गु० कु० कमालिया

१ वैशाख सं० १९८४ वि० को स्थापित, आ० स० कमालिया के आधीन, म० सुखदयाल जी मुख्याधिष्ठाता हैं। ८ श्रेणि हैं ७ अध्यापक हैं १५ हज़ार की लागत के मकान हैं। ५ वीं श्रेणि तक १० रु०, शेष में से १२) रु० मासिक लिया जाता है। ४० ब्रह्मचारी हैं।

१२—शाखा गु० कु० जेहलम

२५ मार्च ३२ को जेहलम से डेढ़ मील दूर ला० हरीचन्द के बाग़ में जारी हुआ। २९ ब्रह्मचारी हैं। रामदेव जी भिक्षु अधिष्ठाता हैं हरीराम जी वानप्रस्थी विशेष सहायक, फ़ीस ५) रु० मासिक। यह गु० कु० पोठोहार की शाखा है।

१३—गु० कु० झज्जर (रोहतक)

भैंसवाल और भटिंडु गुरुकुलों की तरह इसे भी हरियाना प्रान्त से ही सहायता मिलती है। स्वा० ब्रह्मानन्द जी का इसकी देख रेख में विशेष हाथ है। स्वा० परमानन्द जी मुख्याधिष्ठाता हैं।

१४—गु० कु० बैट मोहनी (मु० ग०)

कार्तिक १९८६ दीप मालका के दिन स्थापना हुई। आ० प्र० नि० सभा पंजाब के आधीन है कमेटी के प्रधान उत्तमचन्द जी, मुख्याधिष्ठाता धर्मदेव जी। ४६ ब्रह्मचारी, ३ अध्यापक, बस्ती गुजरात निवासी स्वर्गीय सेठचन्दू लाल जी ने स्व० पं० गंगाराम जी के उपदेश के प्रभाव से अपनी सम्पत्ति इस संस्था के लिये दे दी।

१५—गु० कु० म० वि० वृन्दावन

स्थापना—स्वा० दर्शनानन्द जी ने १८९८ ई० में सिकन्दराबाद में खोला, १ दिसम्बर सं० १९०५ से आ० प्र० नि० स० सं० प्रां० ने अपने अधिकार में लिया। १९०७ में फ़रुख़ाबाद में बदला गया, १६ दिसम्बर १९१२ से वृन्दावन में जारी है।

प्रबंध:—सभा की ओर से १२ सज्जनों की मैनेजिंग कमेटी है। प्र० श्रीनारायण स्वामी जी। उ० प्र० श्री० पं० गंगाप्रशाद, बाबूराम जी, मंत्री पं० महेन्द्रप्रसाद जी शास्त्री एम० ए०; मुख्याधिष्ठाता श्री वृहस्पति जी।

शिक्षा:—१४ श्रेणि, १५ प्रोफ़ेसर तथा अध्यापक, आचार्य्य पं० बृहस्पति जी आर्थिक वि०; १६८३४५ की कुल सम्पत्ति है। गत वर्ष में ३४८८३ आय और ३५२८२ व्यय हुआ।

प्रबन्ध—गुरुकुल कांगड़ी के आधीन है। प्रो० गोपाल जी बी० ए० जैसे योग्य अनुभवी पुरुष अधिष्ठाता इसके इञ्चार्ज हैं।

शिक्षा—सर्व प्रकार से सन्तोष जनक है। १० श्रेणि,११ योग्य प्रो० तथा अध्यापक हैं।

आ० वि०—स्वर्गीय सेठ रग्घूमल जी देहली के एक लाख के दान से जारी हुआ। ११०० बीघे भूमि है। इमारत बड़ी शानदार बन चुकी है। और बन रही है गत वार्षिकोत्सव पर ३५००) रु० दान आया।

मिश्रित—(१) १४० ब्रह्मचारी हैं (२) लाइब्रेरी में २ हज़ार से अधिक पुस्तक हैं। (३) वाचनालय में १५ अखबार व रिसाले आते हैं। (४) कुआं बन चुका है (५) वाटिका भी उन्नत दशा में है। (६) खेल का मैदान खुला है। (७) धर्म शिक्षा, व्यायाम आदि सब का उत्तम प्रबन्ध है।

७—गु० कु० मुलतान

स्था०—१० फ़र्वरी १९०९ ई० को

प्रबन्ध—उप सभा के प्रधान मलिक परमान्द जी हैं, मन्त्री म० रंजीत राय जी, मुख्याधिष्ठाता ला० मोती रामजी हैं।

शिक्षा—८ श्रेणी० मा० प्रेम सागर जी० बी० ए० हैड मास्टर और ८ अध्यापक हैं।

सम्पत्ति—४५ बीघे भूमि है। तारा कुण्ड पर अपने मकान बन गए हैं।

मिश्रित—(१) पुस्तकालय में १६०० पुस्तक हैं (२) गौशाला, धर्मशाला भी है (३) पहिले डेरा बंधु में जारी हुआ, फिर श्री परमानन्द जी की कोठी में मुलतान में और अब ताराकुण्ड पर है।

८—गु० कु० पोठोहार चोहा भक्तां

२४ वर्ष पूर्व स्वा० दर्शनानन्दजी ने काइम किया पं० मुक्तिरामजी जैसे योग्य विद्वान सज्जन इसके इञ्चार्ज हैं। १६० वीघे भूमि हैं। १५००० के मकान। गत वार्षिकोत्सव पर २४००) रु० दान प्राप्त हुआ।

९—गु० कु० गुजरांवाला

स्था०—१९०० में जारी होकर यहां से सभा का गु० कु० कांगड़ी चला गया तो ला० रलाराम जी आदि ने यहां भी गुरुकुल जारी रखना आवश्यक जाना।

प्रबंधः—गु० कु० गुजरांवाला ट्रस्ट सोसाइटी के आधीन हैं। ला० जुगुलकिशोर जी एडवोकेट प्रधान, ला० हाकिमराय जी एडवोकेट उ० प्र०, बख़शी दीनानाथ जी वैद्य रावलपिंडी मंत्री, ला० गोविन्दराम जी आन० मैनेजर (५ अधिकारी ११ अन्तरंग मेम्बर)

शिक्षा—यूनीवर्सिटी से सम्बन्ध है। मैट्रिक परीक्षा, संस्कृत और धर्म शिक्षा का विशेष प्रबंध है। माध्यम हिन्दी है।

आर्थिक वि०—२५ हज़ार के मकान हैं। ३० हज़ार का वार्षिक व्यय फ़ीस और दान से पूरा होता है। गौ शाला और धर्म शाला भी हैं।

मिश्रितः—(१) पुस्तकालय भी है। स्वर्गीय ला० रलाराम जी प्रसिद्ध आर्य्य पुरुष इसे

मृत्यु पर्यन्त पूरे यत्न से चलाते रहे। राय ठाकुरदत्त जी धवन ने आपके साथ पूरा सहयोग जारी रखा। अब यह दोनों महानुभाव इस संसार में नहीं तथापि उनका लगाया हुआ यह पोदा फल फूल रहा है।

१०—गु० कु० शिल्प वि० भटिंडा

१२ नवम्बर, १९२७,को भटिंडा से १ मील पर जारी हुआ। शिल्प शिक्षा की उन्नति इस का उद्देश्य है। आ० प्र० नि० स० पञ्जाब के नाम रजिष्ट्री है। आर्य्य समाज भटिंडा और रामा मण्डी की विशेष सहायता है।

११—गु० कु० कमालिया

१ वैशाख सं० १९८४ वि० को स्थापित, आ० स० कमालिया के आधीन, म० सुखदयाल जी मुख्याधिष्ठाता हैं। ८ श्रेणि हैं ७ अध्यापक हैं १५ हज़ार की लागत के मकान हैं। ५ वीं श्रेणि तक १० रु०, शेष में से १२) रु० मासिक लिया जाता है। ४० ब्रह्मचारी हैं।

१२—शाखा गु० कु० जेहलम

२५ मार्च ३२ को जेहलम से डेढ़ मील दूर ला० हरीचन्द के बाग़ में जारी हुआ। २९ ब्रह्मचारी हैं। रामदेव जी भिक्षु अधिष्ठाता हैं हरीराम जी वानप्रस्थी विशेष सहायक, फ़ीस ५) रु० मासिक। यह गु० कु० पोठोहार की शाखा है।

१३—गु० कु० झज्जर (रोहतक)

भैंसवाल और भटिंडु गुरुकुलों की तरह इसे भी हरियाना प्रान्त से ही सहायता मिलती है। स्वा० ब्रह्मानन्द जी का इसकी देख रेख में विशेष हाथ है। स्वा० परमानन्द जी मुख्याधिष्ठाता हैं।

१४—गु० कु० बैट मोहनी (मु० ग०)

कार्तिक १९८६ दीप मालका के दिन स्थापना हुई। आ० प्र० नि० सभा पंजाब के आधीन है कमेटी के प्रधान उत्तमचन्द जी, मुख्याधिष्ठाता धर्मदेव जी। ४६ ब्रह्मचारी, ३ अध्यापक, बस्ती गुजरात निवासी स्वर्गीय सेठचन्दू लाल जी ने स्व० पं० गंगाराम जी के उपदेश के प्रभाव से अपनी सम्पत्ति इस संस्था के लिये दे दी।

१५—गु० कु० म० वि० बृन्दावन

स्थापना—स्वा० दर्शनानन्द जी ने १८९८ ई० में सिकन्दराबाद में खोला, १ दिसम्बर सं० १९०५ से आ० प्र० नि० स० सं० प्रां० ने अपने अधिकार में लिया। १९०७ में फ़रुख़ाबाद में बदला गया, १६ दिसम्बर १९१२ से बृन्दावन में जारी है।

प्रबंधः—सभा की ओर से १२ सज्जनों की मैनेजिंग कमेटी है। प्र० श्रीनारायण स्वामी जी। उ० प्र० श्री० पं० गंगाप्रशाद, बाबूराम जी, मंत्री पं० महेन्द्रप्रसाद जी शास्त्री एम० ए०; मुख्याधिष्ठाता श्री बृहस्पति जी।

शिक्षाः—१४ श्रेणि, १५ प्रोफ़ेसर तथा अध्यापक, आचार्य्य पं० बृहस्पति जी आर्थिक वि०; १६८३४५ की कुल सम्पत्ति है। गत वर्ष में ३४८८३ आय और ३५२८२ व्यय हुआ।

१६—गु० कु० सिकन्दराबाद

स्था०:—१८९८ में जारी होकर १९०५ में सभा से फ़र्रुखाबाद में बदला गया तो पं० मुरारीलाल जी ने अपने पुरुषार्थ से यहां भी जारी रखा। देहली से ३५ मील दनकौर रेलवे स्टेशन पर है। साधारण सभा के ६५ अन्तरंग के २१ मेम्बर हैं। प्रधान ठा० गंगा-सहाय जी, मंत्री महेन्द्रसिंह जी एम० ए० वकील बुलन्दशहर, मुख्याधिष्ठाता श्री० देवेन्द्र जी शास्त्री। अध्यापक पं० भगवत सहाय जी शास्त्री, पं० दीनदयालु जी शास्त्री, व मा० हरिवंश सिंह जी, स्थिर राशि कुछ नहीं। उत्सव पर प्राप्त हुए तथा निकटवर्तीय स्थानों के दान से चल रहा है। वार्षिकोत्सव २३ से २६ फर्वरी को हुआ। ६० ब्रह्मचारी हैं। ३ उपदेशक विद्यालय की ओर से प्रचार करते हैं।

१७—गु० कु० सूर्य्य कुं० (बदायूं)

१९०३ में स्वा० दर्शनानन्द जी ने काइम किया। ८० महा वि० में और ३० वि० में कुल ११० ब्रह्मचारी हैं। वेदीदत्त जी मिश्र गवर्नर हैं। बनारस की संस्कृत परीक्षाओं तथा आयुर्वेद परीक्षा का प्रबंध है। आचार्य से प्रथमा तक की परीक्षा में कुल ४४ भेजे गए २९ पास हुए।

१८—गुरुकुल डोरली (मेरठ)

१५ श्रावण सं० १९८१ वि० को स्थापित । ५३ ब्रह्मचारी । प्रधान श्रीकृष्ण जी शास्त्री आनन्द कुलपति, मन्त्री शिवदयालु जी, मुलखराम जी शास्त्री मुख्याधिष्ठाता। ९ श्रेणी हैं। बनारस विश्वविद्यालय की परीक्षा का प्रबन्ध है । गणित और भूगोल का एंट्रेन्स का कोर्स, धर्म शिक्षा में सिद्धान्त शिरोमणि, संस्कृत में मध्यमा का कोर्स। ४०००) वार्षिक का व्यय। गत वार्षिकोत्सव पर ५००) रु० दान आया।

१९—गु० कु० महा० वि० ज्वालापुर

स्वामी दर्शनानन्द जी ने ३० वर्ष पूर्व जारी किया ८० ब्रह्मचारी हैं। पं० विश्वनाथ जी शास्त्री न्याय व्याकरण तीर्थ (विद्या भास्कर) मुख्याधिष्ठाता, शंकरदत्त शर्मा जी मन्त्री सभा। आचार्य श्री पं० विद्या भास्कर हरीदत्त शास्त्री जी पंचतीर्थ । कुलपति शुद्धबुद्धतीर्थ जी । गु० कु० कांगड़ी भी अब इस महा वि० के पास ही है। उत्सव भी दोनों संस्थाओं के एक ही तिथियों पर होते हैं। जहां गु० कु० कांगड़ी के मकान शानदार हैं वहां महा० वि० के लिये भी विद्यालय, कार्यालय, आश्रमादि सब आवश्यकताओं के लिये काफी और सुन्दर भवन बन रहे हैं।

२०—गुरुकुल झाल सलावा (मेरठ)

रंजीतसिंह जी इसके मन्त्री हैं।

२१—गुरुकुल गोरखनाथ (गोरखपुर)

१० ब्रह्मचारी। प्रबन्ध कर्त्ता सभा के प्रधान भवानी प्रसाद जी, निःशुल्क शिक्षा। पाठ विधि स्वामी दयानन्द की। अढ़ाई वर्ष से जारी, दाखले की आयु १० वर्ष के अन्दर। इमारत बन गई है।

२२--सरस्वती आश्रम अहरौला (बरेली)

स्वामी दयानन्द जी की पाठ विधि के अनुसार शिक्षा दी जाती है। खेती की शिक्षा इसकी विशेषता है।

२३--गुरुकुल काशी योग मण्डल।

सं० १९८३ वि० से क़ायम है। प्रबन्ध कर्त्ता सभा के संरक्षक श्रीमान् राजा बेणी माधवसिंह जी प्रधान, स्वामी अभ्यानन्द जी मन्त्री हैं। तथा आप ही योग की शिक्षा देते हैं। योग प्रचार मासिक पत्र निकलता है। योग साधन माला की २२ पुस्तक प्रकाशित हुए हैं।

२४--गुरुकुल सूपा।

१३३ ब्र... स्थानीय कमेटी के आधीन है। अ... ...कड़ भूमि है।

१७ अप्रै... ...सभा मध्यप्रदेश के आधीन है। ज... ...गुरुकुल कांगड़ी की पाठ विधि के अ... ...ई सनातक निकल चुके हैं, आर्थिक... ...हो रहा है।

स्वामी ... ...मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य्य स्वामी... ...ी दयानन्दजी की, मकान १८००० ... ...के उद्योग से अन्य प्रान्तों से भी हो... ...ड़े होकर महाराज सज्जनसिंह जी ... ...को अपने अध्ययन काल में गुरुकुल... ...स कार्य्य के लिये प्रेरणा हुई थी ...

फरवरी ... ...न्ध के लिये कमेटी बनी हुई है। वि... ...य बना हुआ है। पुस्तकालय में ...

सं० १९८८ वि० बैशाख बदी त्रयोदशी को स्थापना हुई। यह गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर की शाखा है। उसी की पाठ विधि के अनुसार पढ़ाई होती है। पं० कांचीदत्त जी मुख्याधिष्ठाता, विद्याभास्कर सहदेवजी शर्म्मा मुख्याध्यापक हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से प्रभावित होकर श्री सेठ लक्ष्मी नारायण जी ने अपना विशाल भवन

१६—गु० कु० सिकन्दराबाद

स्था०:—१८९८ में जारी होकर १९०५ में सभा से फ़रु खाबाद में बदला गया तो पं० मुरारीलाल जी ने अपने पुरुषार्थ से यहां भी जारी रखा। देहली से ३५ मील दनकौर रेलवे स्टेशन पर है। साधारण सभा के ६५ अन्तरंग के २१ मेम्बर हैं। प्रधान ठा० गंगा-सहाय जी, मंत्री महेन्द्रसिंह जी एम० ए० वकील बुलन्दशहर, मुख्याधिष्ठाता श्री० देवेन्द्र जी शास्त्री। अध्यापक पं० भगवत सहाय जी शास्त्री, पं० दीनदयालु जी शास्त्री, व मा० हरिवंश सिंह जी, स्थिर राशि कुछ नहीं। उत्सव पर प्राप्त हुए तथा निकटवर्तीय स्थानों के ... को हुआ। ६० ब्रह्मचारी हैं। ३ उ...

१९... वि० में और ३० वि० में कुल ११० ... संस्कृत परीक्षाओं तथा आयुर्वेद प... क्षा में कुल ४४ भेजे गए २९ पास ...

१९... । प्रधान श्रीकृष्ण जी शास्त्री अ... शास्त्री मुख्याधिष्ठाता। ९ श्रेणी है... गणित और भूगोल का एंट्रेन्स का ... में मध्यमा का कोर्स। ४०००) वा... ाया।

स्वा... ारी हैं। पं० विश्वनाथ जी शास्त्री ... , शंकरदत्त शर्मा जी मन्त्री सभा ... पंचतीर्थ। कुलपति शुद्धबुद्धतीर्थ ... ास ही है। उत्सव भी दोनों संस्था... ड़ी के मकान शानदार हैं वहां महा... सब आवश्यकताओं के लिये काफी ...

२०—गुरुकुल झाल सलावा (मेरठ)

रंजीतसिंह जी इसके मन्त्री हैं।

२१—गुरुकुल गोरखनाथ (गोरखपुर)

१० ब्रह्मचारी। प्रबन्ध कर्त्ता सभा के प्रधान भवानी प्रसाद जी, निःशुल्क शिक्षा। पाठ विधि स्वामी दयानन्द की। अढ़ाई वर्ष से जारी, दाखले की आयु १० वर्ष के अन्दर। इमारत बन गई है।

२२--सरस्वती आश्रम अहरौला (बरेली)

स्वामी दयानन्द जी की पाठ विधि के अनुसार शिक्षा दी जाती है। खेती की शिक्षा इसकी विशेषता है।

२३--गुरुकुल काशी योग मण्डल।

सं० १९८३ वि० से क़ायम है। प्रबन्ध कर्त्ता सभा के संरक्षक श्रीमान् राजा बेणी माधवसिंह जी प्रधान, स्वामी अभ्यानन्द जी मन्त्री हैं। तथा आप ही योग की शिक्षा देते हैं। योग प्रचार मासिक पत्र निकलता है। योग साधन माला की २२ पुस्तक प्रकाशित हुए हैं।

२४--गुरुकुल सूपा।

१३३ ब्रह्मचारी हैं। गुरुकुल कांगड़ी की शाखा है। प्रबन्ध स्थानीय कमेटी के आधीन है। आचार्य्य पं० प्रियव्रत जी, ९ श्रेणी, ११ अध्यापक, १९ एकड़ भूमि है।

२५--गुरुकुल विद्यालय होशंगाबाद।

१७ अप्रैल १९३३ को स्थापना हुई। श्रीमती आ० प्र० नि० सभा मध्यप्रदेश के आधीन है। जगदीश नारायण जी वानप्रस्थी अधिष्ठाता हैं। शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी की पाठ विधि के अनुसार है निर्धन विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा पाते हैं। कई सनातक निकल चुके हैं, आर्थिक दशा अच्छी न होने पर भी शिक्षा कार्य्य उत्तमता से हो रहा है।

२६--गुरुकुल चित्तौड़ [राजस्थान]।

स्वामी व्रतानन्द जी द्वारा स्थापित, प्रधान श्रीशाहपुराधीश, मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य्य स्वामी व्रतानन्द जी, ५ श्रेणी, ४ अध्यापक, पाठ विधि स्वामी दयानन्दजी की, मकान १८००० को बना है आर्थिक सहायता राजस्थान तथा स्वामी जी के उद्योग से अन्य प्रान्तों से भी होती है। स्वामी दयानन्द जी ने चित्तौड़ के क़िले पर खड़े होकर महाराज सज्जनसिंह जी को कहा था कि यहां गुरुकुल बनाना चाहिये। इसी घटना को अपने अध्ययन काल में गुरुकुल कांगड़ी में सुनकर स्वामी व्रतानन्द जी के मन में इस कार्य्य के लिये प्रेरणा हुई थी।

२७--गुरुकुल मंडावर (जोधपुर)

फरवरी १९१२ तदनुसार कार्तिक १९६९ को स्थापित हुआ। प्रबन्ध के लिये कमेटी बनी हुई है। विद्यालय, आश्रम, अध्यापकों के कार्टर, बाग़, औषधालय बना हुआ है। पुस्तकालय में ३००० से अधिक पुस्तक हैं।

२८--गुरुकुल सुजानगढ़ (बीकानेर)

सं० १९८८ वि० बैशाख बदी त्रयोदशी को स्थापना हुई। यह गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर की शाखा है। उसी की पाठ विधि के अनुसार पढ़ाई होती है। पं० कांचीदत्त जी मुख्याधिष्ठाता, विद्याभास्कर सहदेवजी शर्म्मा मुख्याध्यापक हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से प्रभावित होकर श्री सेठ लक्ष्मी नारायण जी ने अपना विशाल भवन

१०००० का तथा १०००० नक़द देकर इसे जारी कराया। आचार्य्य पं० हरदत्त जी शास्त्री। स्वामी शुद्ध बुद्ध तीर्थ जी के कर कमलों से इसकी बुनियाद रक्खी गई।

२९—गु० कु० आंवला (बरेली)

धर्म शिक्षा तथा आर्ष प्रणाली मुख्य है। सेठ लक्ष्मीचन्द जी ने १२५ बीघे भूमि दी है। योग की शिक्षा तथा खेती का काम भी होता है।

३०—गु० कु० महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम (सं० परगना)

सं० १९७६ वि० में स्थापना हुई। ७० ब्रह्मचारी हैं। बंगाल बिहार प्रान्त के ४० मेम्बरों की कमेटी के आधीन है। प्रधान सेठ दीपचन्द जी, मन्त्री बा० रणछोड़ दास जी, देव व्रत जी बानप्रस्थी मुख्याधिष्ठाता, रामानन्द जी विशेष सहायता काम में देते हैं। ६ श्रेणी हैं। ७० ब्रह्मचारी, ६ अध्यापक। स्थिर कोष २५०००) भूमि ६० बीघे, विद्यालय और आश्रम के मकान, गौशाला, बाग़, हस्पताल आदि २५ हजार के, वार्षिक व्यय १२०००, गत उत्सव पर १५००) रु० दान हुआ।

३१—गुरुकुल जालपानाला (अयोध्या)

३२ ब्रह्मचारी हैं, कुल पति स्वामी त्यागानन्द जी, ८ अध्यापक तथा १० अन्य कर्मचारी हैं।

३२—गुरुकुल शान्ता करूर—पाठ विधि गुरकुल काङ्गड़ी।

३३—गुरुकुल हरपुर जान (राज पट्टी) जिला सारन

सं० १९७३ वि० विजय दशमी को जारी हुआ, कृष्ण बहादुर सिंह जी मुख्याधिष्ठाता। महेन्द्रप्रसाद जी प्रधान, हरिहरनाथ जी वर्मा वकील मन्त्री, पं० राम औतार जी आचार्य्य, स्वामी दयानन्द जी की पाठ विधि। १३ कर्मचारी, जिनमें ६ अध्यापक हैं और १३ उपदेशक। १८२६) रु० वार्षिक आय। व्यय २८०५। १० श्रेणि विद्यालय में, ५ महा विद्यालय में। परीक्षा प्रबन्ध विद्वत समितिके आधीन। व्यायामका विशेष प्रबन्ध। १६ बीघे भूमि। ३०००) गुरुकुल पर ऋण है। मकान पक्के और काफ़ी बने हुए हैं।

३४—गुरुकुल बरालसी

सन् १९०६ ई० में स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा इसकी स्थापना हुई ४० ब्रह्मचारी हैं। गुरकुल वृन्दाबन की शाखा है। प्रधान पं० राम प्रसाद जी, मन्त्री श्री रतनलाल जी श्री सुमेर सिंह जी काली कमली वाले संचालक। श्री जीवन जी मुख्याधिष्ठाता, पं० ओ३म् प्रकाश जी व्याकरण साहित्य शास्त्री आचार्य। ५ अध्यापक, पाठ विधि स्वामी दयानन्दजी की इमारत ६० हजार की, गौशाला में ५० गौ, निः शुल्क शिक्षा।

३५—गुरुकुल सोनगढ़ (भाव नगर)

सं० १९८८ वि० शिवरात्री के दिन स्वामी शंकरानन्द जी के द्वारा स्थापना हुई। २०० ब्रह्मचारी, प्रधान राज्य रत्न मा० आत्मा राम जी अमृत सरी, मंत्री पं० आनन्दप्रिय जी, बी० ए० एल० एल० बी, मुख्याधिष्ठाता चतुर भाई जी। आचार्य देव राज जी विद्या वाचस्पति, व्यायाम, संगीत, चित्रकला, आयुर्वेद, तथा खेती की शिक्षा का प्रबन्ध है। ८ श्रेणी हैं २५ अध्यापक, १०० बीघे भूमि, २ लाख की स्थिर सम्पत्ति। काठियावाड़ का यही एकमात्र गु०कु० है। निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। स्वर्गीय सेठ मनसुख ला० छगनलाल

ने सब के सब मकान दान दिये। पुस्तकालय में २००० पुस्तक, रीडिंग रूम में ७० से अधिक पत्र तथा रिसाले आते हैं।

३६—गुरुकुल शुक्ल तीर्थ

बहराइच से १० मील दूर नरवदा तट पर काइम है। २०० ब्रह्मचारी हैं। विद्या सभा के आधीन है।

३७—गुरुकुल कंगेरी

३८—गुरुकुल फतेहआबाद [दक्षिण भारत]

गुरुकुल बन्द है। मकान बने हुए हैं।

३९—गुरुकुल कोल्हापुर १९१८ ई० से राजपति शाहुजी महाराज द्वारा स्थापित। स्थावर सम्पत्ति १ लाख ३० वि० २ अध्यापक १२००० व्यय।

१—कन्या गु० कु० देहरादून

सं० १९८० वि० को दिवाली के दिन देहली में जारी हुआ। ४ वर्ष पश्चात् देहरादून में बदला गया। १५० कन्यायें प्रविष्ट हैं। आर्य्य प्र० नि० सभा पंजाब की तरफ से श्री प्रो० रामदेव जी मुख्याधिष्ठाता हैं। श्रीमती सेठ विद्यावती जी बी० ए० आचार्य्या तथा १२ अध्यापिका हैं। कन्याओं की शिक्षा के लिए सर्व प्रकार का उत्तम प्रबन्ध है। अध्यापिकाओं के अतिरिक्त अन्य स्त्री सेविकायें तथा आश्रम भी पर्याप्त संख्या में हैं। सेठ रग्घूमल जी के १ लाख के दान पर जारी हुआ। श्री सेठ जी ५०० रु० मासिक सूद के देते रहे।

२—क० गु० कु० हाथरस [अलीगढ़]

अढ़ाई वर्ष से जारी है। ५० कन्यायें प्रविष्ट हैं। आ० प्र० नि० सभा संयुक्तप्रांत की ओर से कमेटी प्रबन्ध के लिए बनी है। लक्ष्मी देवी जी मुख्याधिष्ठाता हैं। ६ श्रेणी हैं। ५० हजार के मकान, फ़ीस ११ रु० मासिक।

३—क० गु० कु० काशी

१५ आषाढ़ १९७० वि० को स्थापना हुई। गुरुकुल सभा काशी के आधीन है।

४—क० गु० कु० महाविद्यालय बड़ौदा

आर्य्य कुमार महासभा बड़ौदा की ओर से जारी है। कन्याओं को व्यायाम आदि भी अनेक प्रकार के सिखाए जाते हैं। इस संस्था की कन्याओं की विलक्षण योग्यता के कारण इसकी अच्छी प्रसिद्धि होती जा रही है।

१०—आर्य्य कालिज

१—डी० ए० वी० कालिज लाहौर

विद्यार्थी संख्या:—११८० (M. A. M. S. C. २६ B. A. B. S. C. ४०० F. A. F. S. C. ६८४)

प्रबन्ध:—डी० ए० वी० कालिज ट्रस्ट तथा मैनेजिंग सोसाइटी के आधीन है।

शिक्षा:— आर्ट्स ७६१, साइन्स, ४१९, संस्कृत ३२५, हिन्दी ७९७, अमला योग्यता पूर्ण तथा बहुत काफ़ी है। ५० प्रोफ़ेसर महोदय शिक्षा देने वाले हैं बखशी रामरत्न जी बी० ए० बी० टी० प्रिंसिपल, ला० मेहरचन्द जी M. S. C. वाइस प्रिंसिपल हैं। ४० अन्य कर्मचारी हैं।

आर्थिक विवरण:—गत वर्ष फ़ीस तथा सूद से १०२००० आय हुई और व्यय १०२६४२ हुआ। कैपिटल फंड २०१७२०। मकानादि सब मैनेजिंग कमेटी के सरमाया में शामिल दिखाये गये हैं।

मिश्रित:—लाइब्रेरी में १४४५० पुस्तकें हैं। परिक्षा परिणाम बहुत शानदार रहते हैं। पारितोषिक तथा वज़ीफ़े सब से अधिक इसी कालिज के विद्यार्थी पाते हैं।

२—डी० ए०वी० कालिज जालंधर

वि० सं०—७५२ (१ वर्ष २२६-२-२२१-३-१२०-४-१२९· जे० ए० वी० ५५)

प्रबन्ध:—डी० ए० वी० कालिज सोसाइटी के आधीन है।

शिक्षा—२०० संस्कृत पढ़ने वाले और ५४८ हिन्दी पढ़ने वाले हैं। गत वर्ष में ८२४७१ की आय हुई और ५५५६५ व्यय सरमाया २२१०००।

मिश्रित:—लाइब्रेरी में ३७५३ पुस्तकें हैं। १९१८ में जारी हुआ।

३--द० आयुर्वेदिक कालिज लाहौर

वि० सं०:—१४० (१ वर्ष ६५, २—५०३—१२, ४—१३)

प्रबन्ध:—डी० ए० बी० कालिज मैनेजिंग सोसाइटी के आधीन है।

अमला:—१२ प्रोफ़ेसर हैं। सुरेन्द्र मोहन जी बी० ए० आयुर्वेदाचार्य्य वेद विद्या नि० प्रिन्सिपल हैं।

मिश्रित:—गत वर्ष में मकान में बहुत वृद्धि की गई। लाइब्रेरी में ६१५ पुस्तकें हैं।

४--द० मथरादास कालिज मोगा

वि० सं०:—३१३ (१ वर्ष—७२, २—१०८, १० श्रेणी ५३,—९ श्रेणी८०)

प्रबन्ध:—श्रीमती आ० प्र० नि० सभा पञ्जाब के आधीन है।

अमला:—१५ प्रोफ़ेसर महोदय योग्यता पूर्ण शिक्षा कार्य्य करते हैं, जिनमें से ८ एम० ए०, ३—बी० टी०, शेष ट्रेण्ड।

आ० वि०:—फ़ीस तथा ग्राण्ट से आय २१६०६), व्यय २१०३२) सरमाया ५७७६६) इमारत कालिज तथा बोर्डिङ्गहौस के लिये खुली तथा शानदार बन चुकी है।

मिश्रित:—लाइब्रेरी में ४२०० पुस्तकें हैं:—भारत में विख्यात डा० मथुरादास जी के पुरुषार्थ से यह कालिज जारी हुआ, और सफलतापूर्वक चला। पश्चात् डाक्टर साहब ने श्रीमती सभा के आधीन कर दिया।

५--डी० ए० वी० कालिज होशियारपुर

८ फ़रवरी १८९८ को होशियारपुर में डी० ए० वी० हाई स्कूल जारी हुआ, १९०५ तक इसकी अवस्था बहुत उन्नत होगई। तत्पश्चात लाला देवीचन्द जी एम० ए० इञ्चार्ज हुए। आपके योग्यतापूर्ण परिश्रम तथा मिशनरी स्पिरिट से सारे ज़िले में हाई और मिडिल स्कूल जारी होगए और कालिज की आवश्यकता का अनुभव होने लगा, यहाँ तक कि १२ जून १९२६ को यह स्कूल इण्टरमीडिएट कालिज वन गया, प्रोफ़ेसर महोदयों के परिश्रम से दिन प्रतिदिन विद्यार्थी संख्या में वृद्धि होती जारही है। परीक्षा परिणाम बहुत संतोषजनक निकल रहे हैं। यूनीवर्सिटी तथा गवर्नमेण्ट के वज़ीफ़े विद्यार्थियों को मिलते हैं, खेलों में इस कालिज के नव युवक विशेष रूप से कई पुराने कालिजों से प्रतिवर्ष बाज़ी ले जाते हैं।

६--राजाराम कालिज कोल्हापुर

कोल्हापुर नरेश निस्संदेह धन्यवाद के अधिकारी हैं, जिन्हें अपने राज्य के नवयुवकों की उन्नति के लिये न केवल कालिज जारी करने का ख़याल आया, उनकी धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध भी उन्हें आवश्यक प्रतीत हुआ। यही कारण था, कि आपने पहिले संयुक्तप्रान्त की आर्य्य प्रतिनिधि सभा के आधीन इसका प्रबन्ध रक्खा। पश्चात श्री बालकृष्ण जी एम० ए० इसके प्रिन्सिपल बने, जो सारे देश में अपनी योग्यता के तथा गुरुकुल कांगड़ी में काम कर चुकने के कारण प्रसिद्ध हैं। इमारत अमला प्रबन्ध शिक्षा प्रत्येक दृष्टि से सन्तोषजनक कार्य्य हो रहा है। सं० १९८६ वि० तक यह र० र० कालिज तथा हाई स्कूल समाज के आधीन थे और उस काल में कालिज इण्टरमीडिएट से M. A. बना। वि० सं० बढ़ते बढ़ते १७० से ५५० होगई।

७-- डी० ए० वी० कालिज कानपुर

स्थापना:—१९१९ ई० में स्व० बा० आनन्द स्वरूप जी तथा बा० ज्वालाप्रसाद जी के उद्योग से जारी हुआ।

प्रबन्ध:—एक मैनेजिंग कमेटी के आधीन है।

दर्जा:—M. A. B. S. C., B. A. L. L. B. तक की तालीम दी जाती है।

सम्बन्ध :—इस कालिज का प्रबन्ध आगरा यूनीवर्सिटी से है जिसके Vice-Chancellor स्वयं प्रो० दीवानचन्द जी M.A. इस कालिज के प्रिंसिपल हैं।

संख्या:—३० प्रोफ़ेसर तथा लेक्चरार, ६५० विद्यार्थी, ३०० बोर्डर।
वज़ीफे:—अनुमान ४००) रु० मासिक के वज़ीफे विद्यार्थियों को दिये जाते हैं।
आय व्यय:—९५ हज़ार के करीब है। इसमें ४५ हज़ार रुपया सरकारी ग्राँट है।
इमारत:—कालिज की इमारत साढ़े तीन लाख की और बोर्डिङ्ग की २लाख की है।

८--डी० ए० वी० कालिज देहरादून।

१९०२ ई० में मेरठ में स्कूल के रूप में जारी हुआ १९०४ में देहरादून आया। मि० जी० पी० सिंह M.A. (वर्तमान बैरिस्टर) तथा मि०कान्तीप्रसाद जैसे योग्य हेड मास्टरों तथा ठा० पूर्णसिंह जी के महत्व पूर्ण दान से इसे उन्नति तथा पुष्टि प्राप्त हुई। १९११ में बा० लक्ष्मणप्रसादजी हेड मास्टर हुए। आपके समय में इसकी वह प्रसिद्धि तथा उन्नति हुई कि १९२२ में कमेटी को इसे कालिज बनाने का साहस हुआ। अब इसकी ख्याति का यह हाल है कि नीपाल, बर्मा क्या फ़िजी तक के विद्यार्थी इसमें प्रविष्ट हैं। कुल संख्या ९०० है। सवा दो लाख की इमारत, ४०० एकड़ भूमि, ३००० का साइन्स का सामान है। अमला अति योग्यता पूर्ण है। २२ M.A.M.S.C. और B.A.B.S.C. हैं। ४० कमरे तथा हाल हैं। २ बोर्डिंग हाऊस हैं जिनमें २०० बोर्डर हैं। लाइब्रेरी में ११००० पुस्तकें हैं पत्र तथा रिसाले वाचनालय में बड़ी भारी संख्या में आते हैं।

९--डी० ए० वी० कालिज रावलपिंडी।

१०--आर्य्य भ्रातृ कालिज डेरा इस्माईलखाँ।

११—आर्य हाई स्कूलादि

१—डी० ए० वी० कालिज के आधीन।

१—लाहौर डी० ए० वी० हाई स्कूल:—३१०१ विद्यार्थी, ला० सूरजभान जी M.A. हैड मास्टर हैं। हिन्दी पढ़ने वाले १९३४, संस्कृत वाले १७५१ मैट्रिक में ३६५ में से २७४पास हुए। हाई स्कूल पुस्तकालय में ५५३६ (अंग्रेज़ी ३१७२ हिन्दी २३६४) पुस्तकें हैं। मिडिल लाइब्रेरी में ३४०५, (अंग्रेज़ी १२६७, हिन्दी १४७२, उर्दू ६१६, टीचर बुक्स ५०) इस स्कूल की ९ ब्रांचें हैं। (२—परीमहल ८७ वि०। ३—बच्छोवाली १९२। ४—कृष्णनगर २८। ५—अनारकली ८५। ६—सूतर मण्डी ७८। ७—ग्वाल मण्डी १४१। ८—धर्मपुरा १३५। ९—रामगली ३५।) १०—हाफ़िज़ाबाद:—गोविन्दसहाय ए० एस० हाई स्कूल ६१० वि०, श्री ला० दीनानाथ जी हैडमास्टर, १९ अध्यापक, मैट्रिक परीक्षा में ४२ में से ३८ पास हुए। गत वर्ष में १७१९४ आय हुई और १५७६७) व्यय। ११—पेशावर:—नेशनल हाई स्कूल ४०० वि०। १२—मुलतान डी० ए० वी० हाई स्कूल १३ डी० ए०वी०हाई स्कूल देहली, १५० वि० ला० ईश्वरदास जी M.A. हैड मास्टर। १४—अमृतसर डी० ए० वी० हाई स्कूल ३५० वि० १५ अध्यापक। १५—क़ादियाँ डी० ए० वी०

हाई स्कूल। १६—कंजरूर हाई स्कूल इस स्कूल के लिये गत वर्ष में बख़शी रामदास जी छब्बर भेरा निवासी ने १५०० का कमरा बनवा दिया तथा ५०० रुपया नक़द दिया। १७—पट्टी डी० ए० वी०:—मैट्रिक में ३८ में से ३१ पास। १८—बटाला डी० ए० वी० हाई स्कूल। १९—शाहपुर डी० ए० वी० हाई स्कूल:—मैट्रिक परीक्षा परिणाम ८४ प्रतिशत रहा। श्री धनपतराय जी हैड मास्टर।

२०—शुजाआबाद:—एच० वी० ए० एम० हाई स्कूल। २१—कोटा:—डी० ए० वी० हाई स्कूल। २२—लायलपुर:—डी० एम० ए० एस० हाई स्कूल। २३—एबटाबाद:—ए० वि० ए० एस हाई स्कूल। २४—कांगड़ा:—गुरुदत्त ए० एस० हाई स्कूल, हैडमास्टर लुड़ीदा राम जी। २५—हिसार:—गुरुदत्त ए० बो स्कूल। २६—अम्बाला:—ए० एस० हाई स्कूल ४०० वि०। २७—पुण्डरी:—ए० एस० हाई स्कूल०। २८—बहरामपुर:—डी० ए० वी० मिडिल। २९—चूहड़मंडा:—एम० आर० आर्य्य मि०। ३०—ख़ानेवाल:—डी० ए० वी० मि०। ३१—मुबारकपुर:—डी० ए० वी० मि०। ३२—कोटगढ़:—ए० एस० मि०। ३३—अहमदपुर:—जी० ए० एस० मि०। ३४—सलियाना:—जी० ए० एस० मिडिल। ३५—तरनतारन:—डी० ए० वी० प्राइमरी।

पंजाब आर्य्य शिक्षा सिमिनि से सम्बन्ध रखने वाले स्कूल

३६—जालंधर छावनी:—डी० ए० वी० हाई स्कूल। ३७—लुधियाना आर्य्य हाई स्कूल, श्री रामलाल जी० वी० ए० हैडमास्टर की योग्यता तथा हार्दिक लग्न से काम करने के परिणाम रूप में यह स्कूल चोटी की पोजीशन रखता है। ३० मई १८८९ में यह आर्य्य समाज के चार्ज में आया, महा० मुंशीराम के कर कमलों से इस का बुनियादी पत्थर रखा गया। दूर दूर से आये हुए २५० तक विद्यार्थी बोर्डिङ्ग हाउस में रहते हैं। स्कूल और बोडिंग दोनों का प्रबन्ध मा० राम लाल जी के द्वारा बहुत संतोषजनक रहता है। परीक्षा का परिणाम हाई और मिडिल का प्रतिवर्ष पंजाब भर में अति उत्तम रहता है। ४४ अध्यापक हैं। मकान और बोर्डिङ्ग पर १३४००० ख़र्च हुआ। आ० प्र० नि० सभा के नाम इसकी रजिस्टरी हुई है। स्कूल के मैनेजर ला० शिव प्रशाद जी रईस और कोषाध्यक्ष ला० बाबू राम जी गुप्ता हैं।

३८—देहली डी० एन० हाई स्कूल:—ला० अमरनाथ जी हैडमास्टर, वि० संख्या १००, प्रबन्ध आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार ट्रस्ट सोसायटी के आधीन है। यह स्कूल बहुत उन्नत अवस्था में था इस वर्ष से परस्पर के वैमनस्य के कारण झगड़े होकर इसकी अवस्था शिथिल हो गई है। ला० बालमुकन्द जी आहूजा मैनेजर हैं। ३९—जालन्धर:—लम्भूराम दोआबा आर्य्य हाई स्कूल, हैडमास्टर ला० कृपा राम जी एम० ए० हैं।

अर्य्य समाज जालंधर की तरफ़ से प्रबन्ध कर्तृ सभा नियत है। आर्य्य समाज का प्रधान उसका प्रधान है। ला० वृन्दावन जी मैनेजर हैं। बस्ती गुज़ां में इस स्कूल के आधीन एक लोअर मिडिल है और जालन्धर नगर में भी इसकी शाखा है। स्कूल की अपनी शानदार इमारत है। ४०—आर्य्य हाई स्कूल नवां शहर जयदेवजी शर्मा हेड मास्टर। ४१—भेरा:—डी० ए० वी० हाई स्कूल, ४२—मिन्टगुमरी:—डी० ए० वी० हाई स्कूल। ४३—नौशहरा पुन्नुआं, मिडिल स्कूल, ४४—गरली, मिडल। ४५—मोगा, मिडल स्कूल। ४६—तौंसा, मिडल

स्कूल । ४७—करनाल, मिडिल स्कूल । ४८—रामां मंडी, आर्य्य हाई स्कूल, सन्त ज्वालादास जी ने १ वर्ष और ख़िदमात दी है मकान बन गया है । हाल में ही हाई हुआ है। ४९—अबोहर, प्राइमरी स्कूल । ५०—दाजल, प्रा० स्कूल ५१—जामपुर प्रा० स्कूल ५२—अम्बाला छावनी । ५३—मथुरा, प्रा० स्कूल । ५४—मेरठ, प्रा० स्कूल । ५५—करौल बाग़ देहली ।

५६—देहली, माडल हाई स्कूल, ला० मेलाराम जी बी० ए० बी० टी० प्रिन्सिपल हैं । ३५० विद्यार्थी हैं, अमला में प्राया सब Trained अध्यापक हैं । ५७—नई देहली डी० ए० वी हाई स्कूल । ५८—भवन आर्य्य स्कूल । ५९—बस्ती गुज़ां:—सर्वदानन्द मि० स्कूल, सालिग्राम जी बी० ए० हेडमास्टर । ६०—गुरुदत्त हाई स्कूल धर्मशाला । ६१—अमृतसर:—डी० ए० वी० हाई स्कूल लोहगढ़, पं० मूलचन्द जी मैनेजर, अनन्तराम जी हेड मास्टर । ६२—खानखानां डी० ए० वी० मिडिल स्कूल । ६३—एल० के० एम० लोअर मिडिल स्कूल, अमरनाथजी हेड मास्टर । ६४—धारीवाल:—डी० ए० वी० हाई स्कूल, लाला दीनानाथ जी मैनेजर, ४०० विद्यार्थी, १५ अध्यापक, २२ में से १९ मैट्रिक में पास हुये । ६६—माहलपुर:—डी० ए० वी० हाई स्कूल, हरबन्सलाल जी हेड मास्टर । ६७—असांदा—डी० ए० वी० हाई स्कूल । ६८ फ़ीरोज़पुर, हरभगवान, मैमोरियल हाई स्कूल, ला० सदानन्द जी हे० मा०, ३८ में से ३१ मैट्रिक परीक्षा में पास हुए । ६९—बसोहली:—नाइट स्कूल हरिजनों के लिये । ७०—थियोग आर्य्य स्कूल । ७१—कराची:—लखपतराय डी० ए० वी० हाई स्कूल, लाला गणपतराय जी मैनेजर, डा० जसवन्तराय जी एम० ए० प्रधान, लाला हरबन्सलाल जी मन्त्री, लाला रामसहाय जी प्रिन्सिपल । इस वर्ष ८ एकड़ भूमि का ग्राउण्ड बना है, दर्ज़ी क्लास तथा शिल्प का भी प्रबन्ध है । ७२—रुड़का कलां, आर्य्य स्कूल । ७३—जाडला डी० ए० वी० मिडिल स्कूल । ७४—बंगा:—आर्य्य स्कूल । ७५—करोड़:—डी० ए० वी० हाई स्कूल । ७६—करनाल:—आर्य रामेश्वर स्कूल । ७७—स्यालकोट:—आर्य हाई स्कूल—१०० वि०, मेघ उद्धार सभा स्यालकोट की तरफ़ से जारी है । ७८—चिन्तपुर्णी:—डी० ए० वी० मिडिल स्कूल । ७९—लाहौर दयानन्द इण्डस्ट्रियल स्कूल । ११५ वि० । डी ए० वी० कालिज कमेटी के आधीन । शिक्षा:—निःशुल्क, अधिकारियों को वज़ीफ़ा मिलता है, बढ़ई, साइकिल, दर्ज़ी, जिल्दसाज़ी की शिक्षा दो जाती है । ९ अध्यापक हैं । १२ बर्ष से जारी है । दर्ज़ी क्लास से ८ साइकिल से ४, बढ़ई में ५ पास हुये । गतवर्ष में १६८३५) रुपया मकानों की वृद्धि में लगा । बढ़ई क्लास से ६५९५) दर्ज़ी से ६९३), दफ़्तरी के ६८४) आय हुई । १५४५) रुपया का लाभ रहा । ८०—जालन्धर:—साईंदास एम०एस०हाई स्कूल । ८१—मैलसी:—स्कूल, इन्द्रजीत जी बी० ए० हे० मा० । ८२—डेरा गोपीपुर:—डी० ए० वी० हाई स्कूल, ला० रामचन्द्र जी हे० मा० । ८३—हरियाना:—डी० ए० वी० हाई स्कूल ५०० विद्यार्थी पब्लिक हाई लाला बरकतराम जी हे० मा० १० अध्यापक ।

८४—दीनानगर-आर्य्य हाई स्कूल १५० वि० मा० बख़शीशसिंह जी संचालक

हैं। ८५—फगवाड़ा आर्य्य हाई स्कूल, चन्दूलाल जी हे० मा० । ८६—खेड़ा गढ़ी, आर्य्य हाई स्कूल। ८७—जतोई आर्य्य मिडिल स्कूल खुशहालचन्द जी हे० मा० ८८—गरली (कांगड़ा) सूद ए० एस० मिडिल। ८९—रिवाड़ी आर्य्य वीर विद्यालय, १० वर्ष से जारी है। अमला योग्यता तथा अनुभव पूर्ण है जिसमें अंगरेज भी हैं। मिडिल और मैट्रिक केवल अंगरेज़ी पास कराने का अति उत्तम प्रबन्ध है केवल दो वर्ष में शरतिया कामयाबी होस्टल व्यय ४) रु० मासिक, फीस प्रथम वर्ष ३) रुपया द्वितीय वर्ष ४) रु०। ९०—जगरांव राधाकिशन हाई स्कूल। ९१—दौलतपुर डी० ए० वी० हाई स्कूल। ९२—कलाशवाला परसराम आर्य्य हाई स्कूल। ९३—तेवड़ी (होशियारपुर) डी० ए० वी० मिडिल स्कूल। ला० फकीरचन्द जी हे० मा०। ९४—पछाद आर्य्य स्कूल। ९५—मुंडेकी आर्य्य स्कूल। ९६—भूपालवाला:—आर्य्य हाई स्कूल ४०० वि०। ९७—घड़तल:—आर्य्य हाई स्कूल। ९८—कोहाट:—भ्रातृ हाई स्कूल । ९९—भेरा:—कृपाराम ए० एस० हाई स्कूल। श्री जगन्नाथ प्रसाद जी हे० मा० १००—डेरा इसमाइल खां—आर्य्य हाई स्कूल। १०१—गुजरां वाला । १०२—जलालपुर जट्टां । १०३—चारा मङ्गा । १०४—ऊना। १०५—मुकेरियां। १०६—ढोलवाबा। १०७—बलाचोर । १०८—अलावलपुर । १०९—नकोदर। ११०—शाहाबाद। १११—लय्या। ११२—रावलपिंटी। ११३—देहली रामजस हाई स्कूल नं० १। ११४--रामजस हाई स्कूल नं० २ इन स्कूलों की कई शाखा भी हैं। ११५—धार (जबलपुर) आर्य स्कूल ११६—रंगून:—डी० ए० वी० हाई स्कूल । ११७—रंगून:—आर्य्य कु० दयानन्द नाइट स्कूल । ११८—मचीना (वर्मा) डी० ए० वी० हाई कूल । लम्भूराम जी शर्मा मन्त्री श्यामसिंह जी हेड मास्टर ११९—बड़ोदा:—इन्डस्ट्रियल स्कूल । १२०—पुरी (गढ़वाल) आर्य स्कूल, १९२५ विद्यार्थी ८ श्रेणी १० अध्यापक, मकान १५००० का, फ़ीस ३४६) रुपया खर्च ४००) रु० मासिक । १२१—दोगड्डा:—आर्य स्कूल ४७ वि० ४ श्रेणि, २ ट्रेन्ड टीचर, मकान ३५००) का, सं० १९२५ ई० में जारी हुआ, तेजराम जी H. M.। १२२—बेरूँखाल:—आर्य्य स्कूल २५ वि० ४ श्रेणि से ८ श्रेणि तक, २ ट्रेड अध्यापक, मकान प्रादेशिक सभा लाहौर के नाम रजिस्ट्री है। १२३—प० से० (गढ़वाल) ३० वि० १ अध्यापक, लोअर प्राइमरी। नोट—१२० से १२३ तक के स्कूल आ० प्रा० प्र० नि० सभा पंजाब के आधीन हैं। १२४—आगरा:—डी० ए० वी० हाई स्कूल। १२५—डी० ए० वी० हाई स्कूल काशी । १२६—डी० ए० वी० हाई स्कूल महेन्द्र नगर, यह तीन स्कूल आर्य प्रतिनिधि संयुक्त प्रान्त से सम्बन्ध रखते हैं । १२७—महरौली, मिडिल स्कूल । १२८—खड:—दयानन्द हाई स्कूल । १२९—अजमेर। १३०—कांठ:—डी० एस० एम० हाई स्कूल। १३१—झरिया:—डी० ए० वी० हाई स्कूल। १३२—इलाहाबाद:—डी० ए० वी० हाई स्कूल । १३३—अनूपशहर:—ए० वी० हाई स्कूल, दुर्गाप्रसाद जी मैनेजर, होतीलाल जी हेड मास्टर।

१३४—मसूरी:—कृष्ण विद्यालय। १३५—दक्षिण भारतीय विद्यालय कानपुर:—पं० मुन्शीराम जी मैनेजर, ला० बद्री प्रसाद जी प्रधान, पं० सूर्य्य देव शर्मा जी मंत्री

संरक्षक डा० फकीरेराम जी १९१५ में डाक्टर फ़कीरे राम जी के पुरुषार्थ से जारी हुआ संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, शिल्प, धार्मिक शिक्षा सबका प्रबन्ध है। ९० विद्या की मुख्याध्यापक पं० रामचन्द्र शर्मा जी विशारद हैं डाक्टर फ़कीरेराम जी ने इस संस्था के लिये अपना एक मकान १५०००) रु० का दिया हुआ है।

१३६—रुड़की:—डी० ए० वी हाई स्कूल। १३७—सुलतानपुर:—डी० ए० वी० हाई स्कूल, राजकिशोर जी मैनेजर, मित्रसैन जी वर्मा, मंत्री। १३८—सौंगरा:—दयानन्द सूर्य्य विद्यालय—कई वर्ष से प्राचीन प्रणाली पर शिक्षा दे रहा है। १३९—सासेल—डी० ए० वी० हाई स्कूल। १४०—लखनऊ:—दयानन्द हाई स्कूल, बैजनाथ प्रशाद जी H. M. १४१—सीवां (छपरा) डी० ए० वी० हाई स्कूल। १४२—भवानीपुर (कलकत्ता) संडे स्कूल ४० वि०। १४३—अजमेर—वैदिक शिशु शाला:—४० वि० परमानन्द जी बी० ए० मन्त्री शिक्षा, स्वास्थ्यादि की दृष्टि से कई विशेषताऐं रक्खी गई हैं। १४४—पनपनापुर:—डी०ए० वी० हाई स्कूल। धनराजसिंह जी H. M. १४५—खानपुर आर्य्य मिडिल स्कूल। १४६—अलीगढ़:— वैदिक स्कूल। १४७—कानपुर:—डी० ए० वी० हाई स्कूल १९०७ ई० में खुला। १९१९ में हाई बना। कानपुर का सबसे बड़ा हाई स्कूल है। ७०० विद्यार्थी हैं। ३२ अध्यापक। बा० विष्णु स्वरूप जी एम० ए० हेडमास्टर वार्षिक व्यय लगभग ३००००) इमारत ८००००) की। धर्म शिक्षा का भी विशेष प्रबन्ध है। धार्मिक परीक्षाऐं भी हुआ करती हैं। १४८—कानपुर:—वेदपुरी विद्यालय दयानन्द भारती भवन कानपुर की शाखा। ७० छात्र, ७ अध्यापक, वार्षिक व्यय ३५००)। १४९—बुलन्द शहर। १५०—शिकोहाबाद १५१—मवानाकला:—१५२—जालौन:—१५३—दानापुर:—डी० ए० वी० हाई स्कूल। २५१ विद्यार्थी आय ९१५६ व्यय, ९४१२) अध्यापक १२। १५४—गोपालगंज:—मिडिल स्कूल। १३८ विद्यार्थी ६ अध्यापक १३४७ आय १३५७ व्यय। १५५—दयानन्द वैदिक विद्यालय सदर बाज़ार देहली:—मैनेजर भीमसिंह जी यादव, प्रधान, लाला घासीराम जी मन्त्री जीवन लाल जी, विद्यार्थी ५०, प्राइमरी। १५६—डी० ए० वी० हाई स्कूल बन्नू, १५७—उरई:— डी० ए० वी० हाई स्कूल १५८—आज़मगढ़:—एंगलो वैदिक स्कूल। १५९—आर्य्य स्कूल बरेली। १६०—सहसवान। १६१—गाज़ीपुर आर्य्य स्कूल १६२—सिकन्दरपुर आर्य्य स्कूल। १६३—गोरखपुर आर्य्य स्कूल। १६४—फैज़ाबाद आर्य्य स्कूल। १६५—फ़ीरोजपुर:—आर्य्य अनाथालय स्कूल ७२ विद्यार्थी। १६६—वैदिक विद्यालय (मिडल स्कूल) थड़ी महब्बत, ८० विद्यार्थी १६७—दयानन्द आ० वि० घोटकी (सिंध) ७५ वि० ४०००) कुल सम्पत्ति। १६८—कोल्हापुर श्री शाहू दयानन्द फ्री हाई स्कूल संस्थापक श्री छत्रपति कोल्हापुर राज़ा रामजी महाराज, २००० सम्पत्ति, १५० वि० ६००० व्यय १२ अध्यापक। १६९—श्री लाजपतराय इंगलिश स्कूल संकेश्वर १९२८ ई० में डा० बालकृष्णजी ने इसकी स्थापना की। ५०० सम्पत्ति ५० विद्यार्थी ३००० व्यय ६ अध्यापक नाइट स्कूल हेले—स्था० आर्य्य समाज ने १९२६ में जारी किया २५ विद्यार्थी २०० व्यय १ अध्यापक।

संसार में हलचल मचा देने वाले

ऐतिहासिक तथा धार्मिक नाटक

राजपूत महिला पद्मिनी—यह ऐतिहासिक ड्रामा स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बालक सबके लिये मनोरञ्जन के साथ शिक्षा का एक अमूल्य कोष है, इसके पढ़ने से पुरुषों के हृदय में साहस वीरता तथा आत्म सम्मान का संचार होता है, स्त्रियों को पतिव्रत धर्म की उत्तम शिक्षा मिलती है मूल्य ।||)

वीर दुर्गादास—इसमें लेखक ने वीर रस कूट २ कर भर दिया है मुर्दा से मुर्दा दिल भी इसके पढ़ने से फड़क उठता है दिलेरखां का हिन्दुओं के प्रति पक्षपात शून्य बर्ताव, औरङ्गजेब का अत्याचार, राजपूत ललनाओं व मुग़ल स्त्रियों के चरित्र का ख़ाका बड़ी ही बारीकी के साथ खींचा गया है मूल्य ।||)

रण बांकुरा अमरसिंह—इस ड्रामे में राठौर वीर अमरसिंह जिसकी वीरता पर आज भी राजपूत गर्व करते हैं, और शाहजहां के दरम्यान जो लड़ाई हुई थी उसका पूरा विवरण निहायत ओजस्वी भाषा में किया गया है, ऐसी जोशीली पुस्तक शायद ही आपकी नज़र से गुज़री हो अवश्य पढ़ें मूल्य ।|)

शाही लकड़हारा—प्रसिद्ध शिक्षाप्रद कथा नवीन रूप में; मनुष्य जीवन के उतार चढ़ाव, पतिव्रत धर्म की महिमा, अत्याचारियों का भीषण परिणाम आदि के शिक्षाप्रद तथा मनोभावन दृश्य देखने हों तो इस नाटक को एक बार अवश्य पढ़िये। कवर पर एक सुन्दर रङ्गीन चित्र है। यह भी तीसरी बार सुन्दर चिकने काग़ज़ पर छपा है। मूल्य केवल ।|) उर्दू ।|)

बालभक्त प्रह्लाद—इसमें वीर सत्याग्रही बालभक्त प्रह्लाद का आदर्श जीवन नाटक रूप में दर्शाकर प्रत्यक्ष प्रमाणित किया है। इसमें दिखलाया गया है कि किस तरह नम्रता के हथियार से पापी और अन्याई पिता हिरण्याकश्यप के नास्तिकतापूर्ण अभिमानको तोड़ा गया। यह धार्मिक और राष्ट्रीय ड्रामा प्रत्येक भारतीय को पढ़ना चाहिए। मूल्य ।||)

ज़ख्मी हिन्दू—आज हिन्दू जाति की दशा कितनी खेदजनक कितनी करुणाजनक है, उसकी दुर्दशा की कोई सीमा नहीं, आज वीर शिरोमणि आर्य-वंशजों की कायरता और कर्म-हीनता, उनकी बेबसी अधोगति देख कर रोना आता है। इन सब का कारण क्या ? केवल एकता का न होना, आपस में संगठन शक्ति का न होना। हिन्दू संगठन की आज देश में कितनी आवश्यकता है, और इसी संगठन शक्ति के न होने से मुलतान, सहारनपुर, कोहाट आदि में हिन्दुओं को क्या कुछ आपदायें न उठानी पड़ीं ? इत्यादि, इन्हीं सब घटनाओं को योग्य लेखक ने बडे अच्छे ढङ्ग से दर्शाया है। कवर पर तीन रङ्ग का सुन्दर चित्र मूल्य ।|) उर्दू ।|)

इसके अतिरिक्त हर तरह के जो भी नाटक आप को चाहियें हमारी दुकान से ख़रीदें।

पताः—नेशनल बुकडिपो नई सड़क, देहली।

१२—आर्य्य पाठशाला

शिक्षा सम्बन्धी छोटी छोटी संस्थायें इस प्रकार हैं:—

१—जामपुर:—वैदिक पाठशाला:—१०५ वि० मूलचन्दजी संचालक। १८ वर्षसे जारी, स्कीम आर्य्य शिक्षा समिति वाला। २—आर्य्य पाठशाला भवन। ३—खरैंटी (रोहतक) आर्य्य पा० ३४ वि० आय ३९३ व्यय २००। ४—नान्दली:—२८ वि० ३२८ आय ३१० व्यय। ५—चड़ी:—आ० पा०, ३५ वि० ३४६ आय ३०० व्यय। ६—भगवतीपुर:—४१ वि० ५३७ आय, ४०० व्यय, मैनेजर सेठ रामनारायण जी म्यूनिसिपल कमिश्नर, पलेसिंह जी मन्त्री। १००२) रु० जमा है। ७—मोखरा:—आ० पा० २८ वि० आय ३९३, व्यय २००। ८—मिरजापुर—आ० पा० ३५ वि० ५३ आय, २५२ व्यय, ९—ईसापुर:—२६ वि० २६५ आय, २०० व्यय। १०—हरपाल (पटियाला) हरिजनों के लिये। ११—मीरपुर:—मैनेजर देवी दित्तामल जी। १२—रंगून:—रात्रि पाठशाला। १३—छमाल (गुरदासपुर)। १४—आर्य्य मुसाफ़िर पाठशाला मोचीवाली, प्रमदास जी सञ्चालक। १५—नारग:—सत्य धर्म पाठशाला, मैनेजर दुर्गादास जी। १६—बटहरा (जम्मू) रामचन्द्र आर्य्य पाठशाला आ० प्र० स० पञ्जाब के आधीन है। १७—लाहौर रात्रि पाठशाला ग्वाल मण्डी १०० विद्यार्थी ५० ग्वाले बागड़िये भी हिन्दी सीखते हैं। १८—अछूत रात्रि पाठशाला मैलसी:—मा० कन्हैयालाल जी इसके सञ्चालक हैं। १९—उदयपुर:—श्रद्धानन्द शिशु शाला, ईश्वरदत्त जी मेधार्थी वेद उपदेशक मन्त्री, श्रीमती सुशीला देवी जी धर्म विशारदा आचार्य्या। २०—देहली:—नयाबांस आ० पा०, आ० स० नयाबांस के आधीन है १२५ विद्यार्थी हैं। २१—आ० पा० बहादुराबाद। २२—आर्य्य पाठशाला रहीमाबाद, ४ वर्ष से यह प्राइमरी हिन्दी पब्लिक स्कूल जारी है। ३३—कैथल आर्य पाठशाला, आर्य कुमार सभा कैथल की ओर से जारी है। २४—धामड़:—आ० पा० २५—बुढाना (मुज़फ्फ़रनगर):—संस्कृत पाठशाला। २६—रणखंडी:—आ० पा०, पण्डित देवेन्द्रनाथ जी अ० हैं। २७—अछूत पाठ शाला कोटला। २८—सौंगरा (एटा) आ० पा०। २९—कांगड़ी:—श्रद्धानन्द पाठशाला, २५ वर्ष से जारी है। ३०—आ० वि० भूपुरा। २१—कलठी:—वैदिक पाठशाला अछूतों के लिये। ३२—राजकरण वैदिक पाठशाला फ़ैज़ाबाद। ३३—करुणाश्रम पा० शा० विहारीपुर (मुरादाबाद)। ३४—विलासपुर (रामपुर) आर्य संस्कृत पाठशाला। ३५—मीरपुर:—आर्य पाठशाला, ७० विद्यार्थी, प्रादेशिक सभा द्वारा जारी है। ३६—आदमवाल आ० पा०, दलित उद्धार मण्डल होशियारपुर की ओर से। ३७—डडियाल:—आ० पा०। ३८—भेरा आ० पा०। ३९—शिशु पाठशाला दमदम। ४०—कुमारहट्टी:—वैदिक धर्म पाठशाला, मौजूराम जी मन्त्री। ४१—रंगून:—

हरिजन पाठशाला, प्रान्तीय अछूत उद्धार सभा के आधीन है । ४२—कैमाड़ी:—वदिक धर्म पाठशाला । ४३—लखनऊ हसन गंज पार:—आर्य कुमार पाठशाला, रामेश्वरदयालु जी प्रधान । ४४—देहरादून:—हरिजन रात्रि पाठशाला । ४५—गोपामऊ (हरदोई) शिवदीन जी प्रधान अछूत संघ मैनेजर, सोहनलाल जी अध्यापक । ४६—रात्रि पाठशाला इसलाम नगर (बदायूँ) । ४७—मालावार:—नाइट स्कूल, ४० वि०, ३० वि० हिन्दी सीख कर निकल चुके हैं । ४८—पोगा कोनम मद्रास, आर्य्य प्रा० स्कूल १९५ विद्यार्थी, ३ श्रेणि, ज्ञानचन्द जी मैनेजर । ४९—एलीक्यूटम आ० प्रा० स्कूल, १३८ वि०, ३ श्रेणि, ज्ञानचन्द जी मैनेजर । ५०—क्यूटम प्रा० स्कूल । नं० १

५१—क्यूटम प्राइमरी स्कूल नं० २, यह दोनों क्यूटम से २२ मील दूर उत्तर की ओर पहाड़ी इलाके में हैं । ५२—उदयपुर:—श्रद्धानन्द शिशुशाला उदयपुर:—ईश्दरदत्त जी आचार्य, डाक्टर बख़्तावर लाल जी शर्मा मन्त्री । ५३—वैदिक पाठशाला फ़तहाबाद (अमृतसर) । ५४—खेड़ी छछरानाः—आ० पा० । ५५—कोकेना (पालमपुर):—रात्रि पाठशाला, २० वि० । ५६—रग्घुमल वैदिक पाठशाला देहली, दयानन्द दलितोद्धार मण्डल देहली के आधीन, ५७ से ६५ तक ९ अन्य पाठशाला इस मंडल के आधीन है । ६६—मुरादाबाद:—सिविल लाइन रात्रि पा० ३५ वि० । ६७—मवोनाकलां:—आ० पा० । ६८—संस्कृत पाठशाला कांट । ६९—सीतापुर:—आ० समाज पा० । ७०—आ० पा० तीतना (मेरठ) ६० वि० । ७१—अहमदपुर लम्मां आ० पा० । ७२—बहावलपुर आ० पा० । ७३—दयानन्द संस्कृत पाठशाला टंकारा । ७४—मुलतान:—आ० नगरी पाठशाला १२ वि० जीवनराम वर्मा जी मैनेजर । ७५—श्रीमती मीठा भाई संस्कृत पाठशाला ओसरी गेट अजमेर २५ वि० । आ० साहित्य तथा कर्म कांड की शिक्षा । ७६—रात्रि पाठशाला बम्बई, १०० वि० । ७७—ए० एस० स्कूल शाखा नं० १ । ७८—ए० एस० नं० २ । ७९—खरड़, खारों, मुस्तफ़ाबाद, अम्बाला छावनी कबाड़ी बाज़ार, साढौरा, झवालकलां, (अमृतसर) नुशैहरा पुन्नुवां, मैलसी, होमा, कटड़ा सफ़ेद अमृतसर कटड़ा सोहियां ए० एस० स्कूल आहलू बालिया ए० एस० स्कूल दूलो, रात्रि पाठशाला नमक मंडी, ए० एस० स्कूल, कोट छुट्टा, डेरा इस्माइलखाँ फ़ीरोज़पुर छावनी, रानी का तालाब फ़ीरोज़पुर, फ़ाज़लका (गुजरात) मान सरदारां, भिवानी, पट्टी, काठगढ़, जाडला, ब्रह्मपुर, तलवाड़ा, रोड मजरा, जोजों, तेओड़ी, झालां धीवाल, महरोली, कालकट, शाम चौरासी, नन्दपुर, लोदी चक, उड़मुड़, शेरगढ़, पिंडी सैदपुर, डेरा, कालका, हापड़, महतपुर, बहजोई, चरथावल, पूर्णपुर, सहारनपुर, तिलहर, गाज़ीपुर, सीतम्पुर, रायपुर, नादौन, सुजानपुर, सालवन, रादौर, बाग़वान पुरा, झुग्गी-वाला, अलीपुर, मुजफ्फ़रगढ़, भोपिया, भापरून, जफ़रवाल, गोन्दल, नचवाल, बडाला, मित्रावाली, बद्दौमल्ली, डगशाई, कोटरी, सब्ज़ीमंडी, हरनोट, हरदुआगंज, बमनोई, नऊनाथ, स्कीट, इटावा, बसी, अचीनी, इसलामनगर, सोनीखेड़ा, (बिहार) खागोल प्राइमरी, अलीसराय, खुसरोपुर, प्रतापकोठ, मुहम्मदपुर, (बिजनौर) बदायूं, पीलीभीत, भूड़ बरेली, बिहारीपुर, मलूकपुर, चन्दनमान, पीर, शहदरा, गंज, बस्ती, गढ़ी, क़िला,

लसधारन, रत्ना, भेदननगर, सखरनगर, गहराई, कालीबाड़ी, नानकपुर, चान्दनी, हल्दौर, बिजनौर, शमसाबाद, गोंडा, गोला, गोकरननाथ, मैनपुरी, बलोडा, लालकुरती, कपसाढ़, परीक्षितगढ़, सीवां प्राइमरी स्कूल, अछूत पाठशाला, बांकीपुर, भागलपुर, नगरनौसा, सेंदूबार, इन सब स्थानों की पाठशालायें मिलकर २०२ पाठशाला हुईं।

१३—स्त्री शिक्षा सम्बन्धी संस्था

१—कन्या महाविद्यालय जालन्धर

अधिकारी:—श्री ला० कर्मचन्द जी वकील जालंधर प्रधान, श्रीमती चौधरानी मालनदेवी जी तथा ला० अछरूरामजी उप-प्रधान, ला० खैरातीराम जी वकील जालंधर मन्त्री, ला० प्यारेलाल जी बी० ए० सहायक मन्त्री, श्री कृपारामजी एम० ए० कोषाध्यक्ष, लाला जगन्नाथ जी बी० ए० वकील एकौंटेंट, श्री लाला देवराज जी आचार्य, श्रीमती शन्नोदेवी जी सहायक आचार्या। श्रीमती नारायण देवी जी मुख्याधिष्ठात्री, श्रीमती लज्जावती जी सहायक अधिष्ठात्री। श्रीमती भगवती जी होशियारपुर स्नातिका भवन अधिष्ठात्री।

संख्या:—५०० छात्रा। मिश्रित:—भारतवर्ष में सब से पहिली और सब से शानदार आर्य स्त्री संस्था है। २—भोजन, संगीत, व्यायाम, स्कौटिंग, ड्रिल, चरखा, धर्म शिक्षा सब का प्रबन्ध है। ३—आश्रम में मासिक व्यय १६) रुपये है। ४—विवाहित देवियाँ प्रविष्ट नहीं हो सकतीं। ५—भारतवर्ष के समस्त प्रान्तों (यू० पी०, सी० पी०, बर्मा, बङ्गाल, बिहार के अतिरिक्त पूर्वीय अफ्रीका और फ़िजी आदि) की २०० कन्यायें आश्रम में निवास करती हैं। ६—बोर्डिङ्ग पर डेढ़ लाख व्यय हुआ है। ७—३५ एकड़ भूमि, बाग़ और खेल का मैदान है। ८—१२ श्रेणियाँ, इन्टर मीडीएट स्टैंडर्ड तक है। ९—विधवा आश्रम पण्डिता सावित्री देवी की पुण्य स्मृति में ५० हज़ार का बना है। १०—स्त्री शिक्षा सम्बन्धी बहुत सी पुस्तक छपी हैं। ११—कन्या महाविद्यालय का अपना बुकडिपो भी है। ला० देवराज जी धन्य हैं जो व्रत को पालते हुए आरम्भ से अब तक इस कार्य को चलाते आ रहे हैं।

२—आर्य्य महिला विद्यालय जामपुर

मैनेजर दीवान झाँगीराम जी। १८ छात्रा। ८ वर्ष से जारी है। कन्या गुरुकुल की पाठ विधि है। सिद्धान्त विदुषी डिग्री दी जाती है।

३—आर्य्य महिला विद्यालय

श्रीमती चन्द्रवती जी इसका सञ्चालन करती हैं। ८ श्रेणी तक केवल धार्मिक शिक्षा दी जाती है।

४—आर्य कन्या महाविद्यालय गुजरात।

प्रभुदयाल जी मैनेजर, हिन्दी रत्न, हिन्दी भूषण, हिन्दी प्रभाकर की परीक्षा के लिये प्रबन्ध है। फ़ीस रत्न २) रु०, भूषण ३) रु०, प्रभाकर ४) रु० है। मिडिल पास रत्न में ली जाती हैं। मिडिल और हाई क्लास भी हैं। F. A. तक अंग्रेजी का प्रबन्ध है।

५—कन्या महाविद्यालय हरिद्वार

श्री मूलचन्द जी शास्त्री एम० ए० मुख्याधिष्ठाता। श्रीमती शकुन्तला देवी जी आचार्या। २५ मई १९२३ को स्थापित हुआ। ५) रुपये मासिक फ़ीस ली जाती है। प्रथमा मध्यमा तथा उत्तमा का प्रबन्ध है। २० बीघे भूमि मिल चुकी है। ख़ास बड़े बड़े वायदे भी मिल चुके हैं।

६—कोटला अछूत स्त्री शिक्षणालय

कोटला नरेश राजा बहादुर किशनपालसिंह जी ने २३ अप्रैल को इस का उद्घाटन किया।

७—आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा

कुलपति श्री राज्यरत्न मा० आत्माराम जी अमृतसरी। आनन्दप्रिय जी मन्त्री। २८६ कन्यायें शिक्षा पाती हैं। स्थिर कोष डेढ़ लाख रुपया, आर्य कुमार महासभा बड़ोदा की तरफ़ से जारी है। ५० से अधिक उपनिवेशों से आई हुई कन्यायें १४ विषयों की तालीम पाती हैं। ३० अध्यापिका हैं।

१४—आर्य्य पुत्री पाठशाला

१—जामपुरः—हरि कन्या पाठशाला, १४३ कन्या, डा० जीवनलाल जी मैनेजर ५ श्रेणि हैं, ३० वर्ष से जारी है। २—भूपालः—कन्या विद्यालय मित्र सभा, १०० कन्या, जुगलकिशोर जी मैनेजर, ११४ सभासद् हैं, वार्षिक आय ४००) रुपये, रियासत से २५) रुपये मासिक मिलते हैं, ५ श्रेणि हैं, १६ अक्टूबर १९१३ से काइम है। ३—शाहपुर सदर वैदिक कन्या पाठशाला, चौ० रूपचन्द जी मैनेजर, उत्सव पर ५०००) रुपये नक़द तथा वायदा हुआ। ४—कुलाची आर्य्य कन्या पाठशाला, २५२ क०, ला० चोखानन्द जी मैनेजर, खीमो देवी जी मुख्याध्यापिका, १६ अध्यापक तथा अध्यापिका, ११ में से ११ कन्यायें परीक्षा में पास हुईं, सब से प्रथम रहने वाली रेवती देवी ने ५१५ नं० पाये, म० दरबारीलाल जी तनेजा कमेटी के सेक्रेटरी हैं। ५—आर्य कन्या पाठशाला अल्मोड़ा, धर्म शिक्षा का विशेष प्रबन्ध है। ६—लुधियाना, गणेशीलाल आर्य कन्या पाठशाला, ३१ अगस्त सन् १९०२ से आर्य समाज लुधियाना के आधीन चल रही है। ४२५ छात्रा हैं। परीक्षा परिणाम अति उत्तम निकलते रहे हैं। मा० श्रीकृष्ण जी मुख्य अध्यापक हैं, ला० ऊधोराम जी मैनेजर, ला० लब्भूराम जी खज़ाञ्ची।

७—आ० पु० पा० टोनी देवी, प्राइमरी दर्जा, मकान पर ११००) रुपया लगा है। ८—नुशहराछावनी:-वै० पु० पा०, ४ की ४ कन्यायें मिडिल में पास हुईं। ९—डेरा ग़ाज़ीख़ाँ वैदिक पुत्री पाठशाला, ९ की ९ कन्या परीक्षा में पास हुईं। १०—जगराँवाँ:—राधाकृष्ण गर्ल्ज़ हाई स्कूल, स्वर्गीय ला० लाजपतराय जी के पूज्य पिता की पुण्य स्मृति में स्थापित। ११—होशियारपुर:—आ० क० पा०, दर्जा मिडल, बाहर की कन्याओं के लिये आश्रम भी है। १२—कमालिया:—आ० क० पा०, मास्टर लछमनदास जी मैनेजर हैं। १३—मोरिंडा आ० पु० पा०। १४—अमृतसर:—वैदिक पुत्री पाठशाला, ४५० कन्या, केशवचन्द्र जी मैनेजर, ७०००) रुपये वार्षिक व्यय, मेट्रिक परीक्षा केवल अंग्रेज़ी का प्रबन्ध है तथा हिन्दी रत्न, हिन्दी भूषण, हिन्दी प्रभाकर का भी, वार्षिकोत्सव जस्टिस जयलाल जी के प्रधानत्व में हुआ। १५—मीरपुर, ला० रामभेजा आ० क० पा०, २२० कन्या, १३ कन्या गत परीक्षा में पास हुईं। १६—जम्मू:—आर्य पुत्री पाठशाला। १७—कैमलपुर:—आर्य पुत्री पाठशाला, बद्रीनाथ जी मैनेजर। १८—झज्जर:—वैदिक क० पा०, ९० कन्या, ८ वर्ष से जारी है, प्राइमरी दर्जा, नियादरसिंह जी वकील मन्त्री। १९—हरियाना:—आ० क० पा०। २०—गोजरा:—आर्य क० पा०, १४५ कन्या, ५ अध्यापिका। २१—मुलतान छावनी:—आ० क० पा०। २२—डेरा इस्माईल खाँ:—आ० क० पा०। २३—भलवाल:—आ० क० पा०, इमारत बन रही है। २४—दूधीचक:—धर्मपाल जी मैनेजर। २५—रांगोह आ० क० पा०। २६—पासला (जालन्धर):—आ० क० पा०, लशकरीमल जी मैनेजर। २७—ओड:—आ० क० पा०। २८—दयानन्द पुत्री पाठशाला बहरामपुर। २९—रजूआ भय्यादास आ०पु० पा० मैनेजिंग कमेटी के प्रधान गोविन्दराम जी, मन्त्री जीवनमल जी। ३०—मैलसी आ० पु० पा०। ३१—गुजरात आ० पु० पा०। ३२—मन्सादेवी क० पा० रकरा (कांगड़ा) किशनचन्द जी मैनेजर। ३३—वान भुचरां:—आ० क० पा०, किशनचन्द जी मैनेजर। ३४—मियाँवाली आ० क० पा०, बा० रामलाल जी मैनेजर। ३५—लाहौर बच्छोवाली:—आ० क० पा०, प्रो० शिवदयाल जी M. A. मैनेजर, दर्जा मिडिल, हिन्दी रत्न का भी प्रबन्ध है। ३६—देहली चावड़ी बाज़ार:—आ० क० पा०, श्रीमती विद्यावती जी आर्य समाज की तरफ़ से मैनेजर हैं। ३७—नई देहली:—आ० क० पा०, २०० कन्या पढ़ती हैं। ३८—क़मरमशानी—आ० क० पा०, हकीम चाँदीराम जी मैनेजर हैं, श्री ला० कन्हैयालाल जी मन्त्री, अढ़ाई वर्ष से जारी है। ३९—आदमपुर (लुधियाना):—आ० क० पा०, अढ़ाई वर्ष से जारी है। ४०—मख़दूमपुर:—आ० क० पा०। ४१—गुजरात:—आ० क० पा०। ४२—मांडले:—आ० क० पा०। ४३—स्यालकोट:—आ० क० पा०। ४४—झङ्गमघियाना—आ० क० पा०, जोधाराम जी मन्त्री हैं। ४५—जम्मू:—वैदिक पु० पा० ४६—फ़ाजलका—वैदिक पु० पा०, मिट्ठनलाल जी मनेजर। ४७—अजमेर:—गुलाब देवी कन्या पाठशाला, २३५ छात्रा, श्यामसुन्दरलाल जो मन्त्री, सम्वत् १९८५ वि० में क़ाइम, ८ श्रेणि, ८ अध्यापिका। ४८—डंडी:—आ० क० पा०। ४९—कोट सबजल:—आ० क० पा०। ५०—तियुड़ी (होशियारपुर):—आ० क० पा०। ५१—रुड़की:—आ० क० पा०, मथरादास जी प्रधान, रामलाल जी मन्त्री, आय ४८५९), व्यय २७८७), अध्यापिका ८।

५१—मुज़फ्फ़रनगरः—आ० पु० पा० नई मण्डी, २५० छात्रा, पं० बूटाराम जी मैनेजर, श्रीमती मोंगादेवी जी मुख्याध्यापिका, दर्जा मिडल। ५२—नजीबाबादः—आ० पु० पा०, १५६ छात्रा, साहु भगवतीप्रसाद जी मैनेजर, ६ श्रेणि, आय १३४८, व्यय १०१५, अध्यापिका ६। ५३—अरनियाँ—आ० क० पा०, बनारसीदास जी प्रधान, अयोध्याप्रसाद जी मन्त्री। ५४—ग़ाज़ीपुरः—स्वामी विवेकानन्द जी मैनेजर, सीतलप्रसाद जी प्रधान, प्रभुदयाल जी मन्त्री। ५५—सहारनपुरः—आ० क० पा० इमलीखेड़ा। ५६—फर्रुखाबाद आ० क० पा०, विद्याधर जी चतुर्वेदी मन्त्री, ९ में से ८ कन्या मिडिल की परीक्षा में पास हुईं। ५७—सुलतानपुरः—आ० क० पा०। ५८—मेरठः—आ० क० पा०, २३९ कन्या, जयराम शर्मा जी प्रधान, लक्ष्मीप्रसाद जी मन्त्री, रामस्वरूप जी मैनेजर, ११ श्रेणि, ११ अध्यापिका, आय ८२४६, व्यय ५१४६, इस की दो शाखा हैं। ५९—लखीमपुरः—आ० क० पा०, राजा युवराजसिंह जी मैनेजर, राजा साहिब १५०) रु० मासिक इस संस्था को सहायता देते हैं। ६०—मुज़फ्फ़रनगरः—आ० क० पा०, १२८ छात्रा, किशोरीलाल जी प्रधान, महताबसिंह जी मन्त्री, लोअर मिडिल, आय १८१५, व्यय १६२०, १० अध्यापिका। ६१—अलीगढ़ः—एस० एम० वी० क० पा०, दुर्गाप्रसाद जी पाठक मैनेजर, भूपसिंह जी वर्मा मन्त्री। ६२—भूड़ बरेलीः—आ० क० पा०, महाराजकुमार माथुर जी मैनेजर। ६३—हापुड़ः—आ० क० पा०, रघुनाथसहाय जी मैनेजर, लाला दाऊदयाल जी पेन्शनर प्रधान। ६४—फ़ीरोज़ाबादः—आ० क० पा०, आर्य्य समाज के आधीन। ६५—वीरपुर—आ० क० पा०। ६६—अलमोड़ाः—पूर्णदेवी क० पा०। ६७—चांदपुरः—वैदिक क० पा०, राय साहिब मक्खनलाल जी मैनेजर। ६८—फलावदाः—शन्नोदेवी कन्या पाठशाला, एक कमेटी के आधीन है। ६९—नगीनाः—वैदिक कन्या पाठशाला, रामस्वरूप जी मन्त्री, ७०—अहमदगढ़ः—तोताराम कन्या पाठशाला। ७१—इलाहाबादः—आर्य कन्या पाठशाला, ३१० कन्या, श्री गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० मैनेजर, जसवन्तराय जी प्रधान, आय व्यय १३६०६, श्रेणि ८, अध्यापिका १६। ७२—वैदिक पुत्री पाठशाला हाफ़िज़ाबाद। ७३—वैदिक पुत्री पाठशाला भलवाल, मकान ३१००) रुपये का बना है। ७४—आर्य पुत्री पाठशाला जामकी। ७५—आर्य पुत्री पाठशाला आगरा, मथुराप्रसाद जी मन्त्री। ७६—आर्य पुत्री पाठशाला भवाना कलाँ। ७७—आर्य पुत्री पाठशाला चन्दोसी। ७८—आर्य पुत्री पाठशाला अबोहर (फ़िरोज़पुर), १५० कन्या, इमारत १००००) की, ५०००) का एक और मकान दान में मिला है, ४ अध्यापिका, मिडिल, प्रथमा, मध्यमादि परीक्षा का प्रबन्ध है। ७९—आर्य पुत्री पाठशाला खानपुर। ८०—आर्य पुत्री पाठशाला अनाथालय फ़ीरोज़पुर, १४९ कन्या, अनाथालय कमेटी प्रबन्ध करती है, १० अध्यापिका, बीबी ज्ञानदेवी जी सुपरिन्टैंडैंट, मुख्य अधिष्ठात्रि।

८१—आर्य्य महिला विद्यालय पेशावरः—मा० भगतराम जी मैनेजर, बिन्ध्यदेवी जी मुख्याध्यापिका ४ अन्य अध्यापिका, मकान ३०००० का। ८२—आ० क० पा० पेशावर छावनीः—दर्जा मिडिल, मकान ६०००० का। ८३—गोदावरी आ० क० पा० ब्यावरः—

४२ कन्या, कालूराम जी मन्त्री, २ अध्यापक, मकान अपना। ८४—भूपिया कन्या पाठशाला रोहतकः—३५ कन्या, चौ० जयदयालसिंह जी मैनेजर। ८५—क० पा० पानीपतः—बा० मोतीसागर जी वकील मैनेजर। ८६—क० पा० डेरावसीः—(अम्बाला)। ८७—क० पा० अम्बाला शहरः—लाला रामचन्द्र जी वकील मन्त्री, ४० कन्या। ८८—क० पा० डगशाई छावनीः—चौ० खैरातीराम जी मैनेजर। ८९—क० पा० शिमलाः—दर्जा मिडिल आर्य्य समाज के आधीन है। ९०—क० पा० भोगाः—२५० कन्या, डा० मथुरादास जी प्रधान। ९१—क० पा० फ़ीरोज़पुर छावनीः—२५० कन्या, ३५०) रुपया मासिक व्यय। ९२—क० पा० महतपुर (जालन्धर):—मा० नानकचन्द जी मैनेजर। ९३—क० पा० मुकेरियांः—७२ कन्या, लाला हंसराज जी बी० ए० प्रधान। ९४—क० पा० भियानीः—लाला जीवनमल जी मैनेजर। ९५—क० पा० सदर लाहौर छावनीः—१०० कन्या, लाला भगवानदास जी मैनेजर। ९६—क० पा० वज़ीराबादः—दर्जा मिडिल, २०० कन्या। ९७—लालबाई क० पा० रावल पिंडी। ९८—आर्य्य पु० पा० कोहमरीः—दर्जा मिडिल, १०० कन्या। ९९-क० पा० स्यालकोट सदर बाज़ारः–१५० कन्या, लाला रलाराम जी मैनेजर। १००—क० पा० बन्नूंः–२०० कन्या, सुन्दरसिंह जी मैनेजर। १०१-क० पा० क्वेटाः–(मिडिल), नत्थूराम जी मैनेजर। १०२—क० पा० सक्खरः—१०० कन्या। १०३—क० पा० सरगोधाः—२५० कन्या, प्राइमरी। १०४—क० पा० खुरजाः—२०५ क० पा०, श्यामलाल जी प्रधान, लक्ष्मीनारायण जी मैनेजर, ६ श्रेणी, ८ अध्यापिका, ४५५० आय, ४५४९ व्यय। १०५—अनूपशहरः—आ० क० पा० ९० कन्या, दुर्गाप्रसाद जी प्रधान, रघुवीरशरण जी मन्त्री, लोअर मिडिल, आय १८०३, व्यय १७८१ अध्यापिका ४। १०६—क० पा० मथुराः—३४२ कन्या, लक्ष्मीप्रसाद जी मैनेजर, ८ श्रेणी, ५२४६ आय, ५५३१ व्यय १५ अध्यापिका। १०७—क० पा० गोरखपुरः—२७१ कन्या, ६ श्रेणी, १० अध्यापिका, ६१३६ आय, ५४४८ व्यय। १०८—प्रयागः—आर्य्य आदर्श क० पा०, १८८ कन्या, भगवानप्रसाद जी प्रधान, रामकुंवर जी मैनेजर, लोअर मिडिल, ९ अध्यापिका, आय व्यय २७३९। १०९—लखीमपुरः—भगवानदास आ० क० पा० सीताराम जी प्रधान, लक्ष्मीनारायणजी मन्त्री, ८ श्रेणी, ३६३६ आय, ४०२९ व्यय, १२ अध्यापिका। ११०—बेचन आ० वैदिक विद्यालय मेहदाविल। १११—बेचनसाह जी मैनेजर, १० कन्या, २२५ आय, १८५ व्यय, १ अध्यापिका। ११२—मुजफ्फ़रनगर आ० क० पाठशाला, ३०० कन्या पं० चन्द्रशेखर जी मैनेजर, मिडिल दर्जा, श्रीमती रामकलीदेवी जी मुख्याध्यापिका। ११३—कराचीः—धनपतमल पु० पा० आ० स० के आधीन, ३०० कन्या, १ लाख सर्व सम्पत्ति। ११४—आ० क० पा० खैरपुर नाथनशाह, आ० समाज के आधीन है, २००० सम्पत्ति, ७५ कन्या,। ११५—आ० क० पा० शिकारपुरः—आर्य्य समाज के आधीन, २००० सपत्ति, ७५ कन्या, ११६—आ० पु० पा० सक्खरः—आ० समाज के आधीन, २००० सम्पत्ति, ८० कन्या। ११७—आ० पु० पा० सांधरः—आर्य्य समाज के आधीन, ५००० सम्पत्ति, ३० कन्या, (मिश्रित पंजाब) मण्डी मलोट, गरली, प्रागपुर, डेरा गोपीपुर, सदर डैलहौज़ी, नूरकोट, शामनगर, पत्तोकी, बाग़बानपुरा,

तलागंज, टोवा टेकसिंह, मोचीवाली, चोटी, अलीपुर, बरनाला, सफीदों, कोटली, अहमदपुर, शरकिया, भवन। (११८ से १३६) (मिश्रित संयुक्तप्रान्त में) इटावा, बहादुर गंज, दिलावरगंज, हरदोई, इसलामनगर, मेरठ शहर, महादेवी कन्या पाठशाला देहरादून, आ० क० पा० मन्सूरी, तीतरों, सहारनपुर, भगवानपुर, नगलाखतौली, मेरठ, लालकुरती, सदर मेरठ, फलावदा, सरधना, मुरादनगर, दूधली, आगरा, बरेली, बढ़ापुर, भोजपुर, मुहम्मदपुर, देवमल, गजरौला, बालमीक क० पा० धामपुर, बदायूं, बसौली, शाहजहानपुर, पीलीभीत, बिन्दगी, चौक प्रयाग, झाँसी, हमीरपुर, बनारस, मिरजापुर, हलद्वानी, रामनगर, लखनऊ, (१३७ से १७७) (बिहार प्रान्त में) बांकीपुर, आरा, सीवां, मोकामा, नौबतपुर, मुज़फ्फरपुर, नगरनौसा, हाथीटोला, खुसरोपुर, गोपालगंज, मुंगेर, (१७८ से १८८) १८९, कन्या विद्यालय कार्नवालिज़ स्ट्रीट कलकत्ता, आ० स० के आधीन, १९० आ० क० पाठशाला भवानीपुर, १५० कन्या, ५ अध्यापिका, कौशल्यादेवी जी मुख्याध्यापिका।

१५—विधवा रक्षा सम्बन्धी संस्था

१—नाभा विधवा सहायक सभा, पं० शम्भुनाथ जी सुपरिन्टैंडैंट प्रधान, पण्डित बालमुकन्द जी मंत्री, मेम्बर ११, सर गङ्गाराम ट्रस्ट सोसाइटी की शाखा, आर्य्य समाज नाभा के आधीन काम करती है।

२—जालन्धर विधवा सहायक सभा, मूलचन्द जी शर्मा प्रधान, सुनामराय जी एम० ए० मन्त्री।

३—सरगोधा हिन्दू विधवा आश्रम।

४—कोट सबज़ल (बहावलपुर) विधवा सहायक सभा, शुगनचन्दजी मन्त्री।

५—बम्बई विधवा सहायक सभा, सर गङ्गाराम ट्रस्ट सोसाइटी की शाखा है।

६—देहली वनिता आश्रम–लाला नारायण दत्त जी प्रधान, लाला अमोलकरामजी मन्त्री आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार ट्रस्ट के आधीन उपसभा इसकी इञ्चार्ज है। सरमाया १४००० रुपये।

७—भिवानी विधवा आश्रम लाला मुकन्दीलाल जी बी० ए० एल० एल० बी ने जल्से पर ४०००) रु० दान दिया।

८—हसन गञ्ज पार लखनऊ–अनाथ अबला सहायक सभा।

९—बिहार बिधवा सहायक सभा–पण्डित वेद प्रकाश जी वेद अलङ्कार स्नातक गुरुकुल कांगड़ी इसके उपदेशक हैं।

१०—माईथान आगरा—हिन्दू विधवा आश्रम, बृजमोहन जी झा प्रधान, तारादत्त जी मन्त्री, श्रीमती सरस्वती देवी जी अधिष्ठात्री।

११—देहरादून—अनाथ बनिता आश्रम, आर्य्य किशोर गुप्त मनेजर।

१२—देहली—विधवा आश्रम म० ज्वालाप्रशाद जी इस के अधिष्ठाता हैं। बहुत वर्षों से जारी है।

१३—रतलाम वि० स० स०—आर्य्य समाज रतलाम के आधीन है।

१४—कांधला वि० वि० सहायक सभा:—चौधरी रामसिंह जी प्रधान, शमानन्द जी मन्त्री।

१५—हिन्दू अनाथ महिला सहायक आश्रम:—

१६—खंडवा मातृ मण्डल:—अबला स्त्रियों और विधवाओं की रक्षा तथा बाल वृद्ध विवाह की रोक थाम इसका उद्देश्य है।

१७—सौथरा (उन्नाव) विधवा सहायक सभा:—ठाकुर भूपसिंह जी प्रधान, मुकटसिंह जी मन्त्री।

१८—मथुरा विधवा आश्रम:—लभूराम जी मैनेजर।

१९—मुंगेर हिन्दू वनिता आश्रमः—इसके द्वारा ३१ विवाह गत वर्ष में हुए।

२०—फ़ीरोज़पुर विधवा आश्रम:—अनाथालय फ़ीरोज़पुर के आधीन १९०१ ई० से जारी है। श्रीमती किशनदेवी जी ध० म० स्वर्गीय लाला दुनीचन्द ने १९५०० की सम्पत्ति इसके लिये दान दी।

२१—बड़ौदा:—विधवा आश्रम आर्य्य कु० महासभा बड़ौदा की तरफ़ से विधवाओं को अन्य मतवादियों के पंजे से बचाया जाता है। १२ विधवाओं की शादी हो चुकी है।

२२—विधवा आश्रम कानपुर:—एक मैनेजिङ्ग कमेटी द्वारा इसका संचालन होता है, मैनेजर रामबिहारीलाल जी शास्त्री एम० ए० प्रो० डी० ए० वी० कालिज कानपुर हैं।

१६—आर्य अनाथालय

१—पंजाब केन्द्रीय अनाथालय रावी रोड लाहौर

प्रबन्ध—पंजाब अनाथ संरक्षणी सभा के आधीन है, जिसकी रजिष्ट्री होचुकी है। प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी मन्त्री श्री पं० हीरानन्दजी मैनेजर अमृतधारा भिन्न भिन्न उपसभाओं में काम बटा हुआ है। जैसे बिल्डिङ्ग उपसभा शिक्षा उपसभा इत्यादि। कुल ६७ मेम्बर हैं।

संख्या:- लड़के १७, लड़कियाँ ७३ कुल ९०।

शिक्षा:—अनाथालय का अपना लोअर मिडिल स्कूल है, सिलाई, हारमोनियम, ब्लाक, जिल्द और साबुन बनाना भी सिखाया जाता है।

आर्थिक विवरण:—१० हज़ार रुपया शेष है। गतवर्ष का बजट आय २५ हज़ार और खर्च २२ हज़ार मकान सहित था। १३३४०) रुपया गतवर्ष में आया और १०७९०) कुल रुपया र्च हुआ। गौशाला भी है।

२—आर्य्य अनाथालय पाटौदी हौस देहली

प्रबन्ध—आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार ट्रस्ट के आधीन उपसभा प्रबन्ध करती है। लाला ज्ञानचन्द जी उसके प्रधान, लाला बालमुकन्दजी आहूजा मन्त्री और लाला नारायण दत्त जी अनाथालय के गवरनर हैं।

संख्या:—लड़के ८०, लड़कियाँ ३० कुल ११०।

शिक्षा:—अनाथालय के बालक डी० एन० हाई स्कूल में पढ़ते हैं और बालिकायें आर्य्य पुत्री पाठशाला में। कपड़ा बुनने तथा सिलाई का काम भी सिखाया जाता है।

सम्पत्ति:—मकान पर ५५०००) रुपया खर्च हो चुका है। कमेटी से सहायता मिलती है, दान के अतिरिक्त ३) रु० प्रतिमास, प्रति अनाथ के हिसाब से।

३—वैदिक अनाथ सुधारक आश्रम देहली

प्रबन्ध:—इन्द्रप्रस्थ आ० प्र० नि० स० देहली की तरफ़ से। जानकीनाथ जी गवरनर, पं० दौलतराम जी मैनेजर विधवा विभाग, पं० मनोहरलाल जी मैनेजर।

सम्पत्ति:—महल्ला कंदलाकशां में एक मकान ३०००) रुपया का दान में मिला है, जिसका किराया १६) रुपया मासिक है।

संख्या:—५० लड़के, १२ लड़कियाँ, कुल ६२।

शिक्षा:—बेत, दरी, ग़ालीचा, खाती, दरज़ी, मोटर, बिजली का काम सिखाया जाता है। भजन मंडली और बैंड बाजा भी है।

मिकित:—८०) रुपया मासिक किराया पर मकान ले रक्खा है। दयानन्द जन्म शताब्दी के मौक़ा पर फ़रवरी १९२५ में जारी हुआ।

४—आर्य अनाथालय करनाल।

लाला मक्खनलाल जी वकील प्रधान, लाला कुन्दनलाल जी मन्त्री। ७० अनाथ पल रहे हैं। ५ वर्ष से जारी है। भजन मण्डली और बैंड बाजा है। दरज़ी का काम सिखाया जाता है।

५—आर्य अनाथालय मुजफ्फ़रगढ़।

६० अनाथ हैं। १९०४ ई० में पं० गङ्गाराम जी ने जारी किया। १९२९ ई० से आर्य समाज मुज़फ्फ़र गढ़ के आधीन है।

६—आर्य अनाथालय मुलतान।

प्रबन्ध—लोकुराम जी ख़ास काम करने वाले हैं। १९१८ में जारी हुआ, जनवरी १९२९ से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के आधीन हुआ जिसकी ओर से स्थानीय सभा प्रबन्ध करती है। संख्या ६० अनाथ। शिक्षा:—साधारण शिक्षा के अतिरिक्त दस्तकारी सिखाने का भी प्रबन्ध है

सम्पत्ति—मकान २२५००) रुपये का, एक मकान मुलतान छावनी में और कुछ भूमि चक नं० ९४ मियां चन्नू में है। इस की भजन मण्डली प्रचार के लिये बाहर भी जाती है।

७—आर्य अनाथालय जम्मूं।

अधिकारी—ला० दीवानचन्द जी प्रधान, दीवान विशनचन्द जी रक्षक, स्वामी परमानन्द जी अधिष्ठाता। आर्य समाज पुरानी मण्डी के आधीन है। १५ माघ सम्वत् १९८९ विक्रमी को काइम हुआ।

८—आर्य अनाथालय लायलपुर।

लाला नारायणदास जी कमेटी के मन्त्री हैं। मकान शहर के बाहर खुली हवा में अनाथालय का अपना बना है। उत्सव ४ से ८ जुलाई १९३३ तक हुआ।

९—आर्य अनाथालय अजमेर।

प्रधान राय साहब मिट्ठनलाल जी एडवोकेट, मन्त्री डा० सत्यानन्द जी। शिक्षा—पढ़ाई और दूसरे काम सिखाने का अच्छा प्रबन्ध है। एक बालक एम०ए० एल०एल० बी० में और एक बी० ए० में पढ़ता है।

१०—आर्य अनाथालय गोविन्दनगर।

आर्य प्रतिनिधि सभ संयुक्त प्रान्त के आधीन है। चन्दूलाल जी मैनेजर हैं।

११—गणपतिसहाय आर्य अनाथालय सुलतानपुर।

बाबू गणपतिसहाय जी एडवोकेट ने इमारत व सरमाया के लिये १० हज़ार दान दिया ५ जनवरी को इसका उद्घाटन हुआ।

१२—आर्य अनाथालय छावनी फ़िरोज़पुर।

अधिकारी—राय साहब लाला कोदूराम जी आनरेरी सेक्रेटरी, लाला मुकन्दलाल जी प्रधान, मिष्टर अनन्तराय जी वैरिस्टर उपप्रधान, मि० किशनचन्द भण्डारी मन्त्री, लाला आसाराम जी सहायक मन्त्री, भूलचन्द जी एकौंटेन्ट। कुल २४ मेम्बर अन्तरङ्ग सभा के हैं।

संख्या—बालक ९७, कन्या १२४, विधवा ३ कुल २२४।

शिक्षा:—७२ लड़के यतीमख़ाना स्कूल में पढ़ते हैं। दरजी और बढ़ई का काम भी सिखाया जाता है। मनोहरलाल मैमोरियल हाई स्कूल छावनी फ़ीरोजपुर, गवर्नमेंट इन्डस्टियल स्कूल, डी० ए० वी० कालिज लाहौर, हिन्दू यूनीवर्सिटी बनारस, म्यू स्कूल आफ़ आर्टस लाहौर, इञ्जिनियरिंग कालिज और अनाथालय के इन्डस्ट्रियल स्कूल में भी तालीम पाते हैं। कन्याओं का स्कूल पृथक् है और उन्हें सिलाई और दस्तकारी का काम सिखाया जाता है।

आर्थिक विवरण—गत वर्ष में ३७९२२ आय हुई और ३६३०१ व्यय। कुल सम्पत्ति २१५४१५ की है (जायदाद ग़ैरमनकूला १४१०७५, सामान तथा मवेशी १८०००, जायदाद मन्कूला ५६३४०)।

मिश्रितः—१-आर्य समाज का सर्व प्रथम तथा स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा १८७७ में काइम हुआ यह अनाथालय है। २-स्वामी जी के उपदेश के प्रभाव से लाला मथरादास सुपरवाइज़र (राय साहिब मथरादास सब रजिस्टरार) ने अपना एक मकान दान देकर इस की बुनियाद रक्खी। ३-चौ० विशनसहाय साहब ने भी अपना बहुमूल्य समय तथा पुरुषार्थ इस के अर्पण किया। पीछे मैनेजिङ्ग कमेटी बन गई। ४-गौशाला में १४ गौ हैं।

१३—अनाथालय आर्य समाज भिवानी।

श्री वै [illegible] है। सहायता अच्छी मिलती है। [illegible]

लाला [illegible] रहते हैं। सामान्य शिक्षा दस्तक[illegible] का अपना है। ३० वर्ष पूर्व ला० [illegible]

धर्मदे[illegible] सोहनी में है। आर्य प्रतिनिधि सभ[illegible]

[illegible])

किदा[illegible] था। पहाड़ी प्रान्त में इस अनाथाल[illegible]

यू० प[illegible] स्वरूप जी इसके सञ्चालक हैं। ५० [illegible] इसके द्वारा उपकार हो चुका है। [illegible] अतिरिक्त दस्तकारी धर्म शिक्षा क[illegible] भारतवर्ष के सब से बड़े अनाथालयों [illegible]

यह प्रसिद्ध आर्य पुरुषों तथा हिन्दू भाइयों के परस्पर के सहयोग से चल रहा है। मकान अपना है। प्रबन्ध अच्छे पमाने पर है।

१९—झांसी अनाथालय।

दीन हितकारी सभा झाँसी के आधीन है।

२०—आर्य अनाथालय ट्रैविन्डरम मद्रास।

१९१८ ई० में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब ने जारी किया अब आर० सी० दास के आधीन है।

२१—आर्य अनाथालय कटक।

प्रादेशिक सभा के आधीन। प्रबन्ध कर्तृ सभा इस का सञ्चालन करती है।

२२—श्री मद्दयानन्द अनाथालय आगरा

म० ज्वालाप्रशाद जी मन्त्री, २०० अनाथ, वार्षिक व्यय ३० हज़ार रु० । सामान्य शिक्षा के अतिरिक्त धर्म शिक्षा तथा दस्तकारी का प्रबन्ध है। ३२ वर्ष से जारी है। १९२८ में इसकी रजिस्टरी हुई।

२३—श्रीमद्दयानन्द अनाथालय गोलागञ्ज लखनऊ।

२४—मुंघेर आर्य्य अनाथालय

२५—दानापुर आर्य अनाथालय

आर्य प्रति नि० सभा विहार प्रान्त के आधीन है।

२६—कर्नल बुई हौस अनाथालय कोल्हापुर

१९१८ ई० में श्री राजपति शाह जी महाराज द्वारा स्थापित, २५००० सम्पत्ति, ४० अनाथ, ३००० व्यय, २ अध्यापक।

१७—आर्य्य औषधालय

१—दयानन्द आयुर्वैदिक औषधालय चक भुमरी।

२—विशनदास किशनदास धर्मार्थ औषधालय श्री गोविन्द पुर।

३—आर्य्य धर्मार्थ औषधालय छमाल (गु० पुर) १००० से अधिक रोगियों को नित्य प्रति औषधि मिलती है।

४—आ० औ० आर्य्य समाज केमाड़ी बाहर से आय रोगियों का मुफ़् इलाज होता है। औसत हाज़िरी ७० तक होती है।

५—दयानन्द अस्पताल दारसी।

६—आर्य्य धर्मार्थ औषधालय कानपुर-१९१२ ई० से जारी है। ३५०० रु० वार्षिक व्यय है। वर्ष भर में अनुमान १ लाख रोगियों को औषधि मिलती है।

७—रामचन्द्र औषधालय बटहरा (जम्मू) श्रीमती आ० प्र० नि० सभा पञ्जाब की ओर से जारी है। २४९ रोगियों की चिकित्सा हुई।

८—कल्याण औषधालय डेरा (मेरठ) स्वामी करुणानन्द जी के उद्योग से जारी हुआ।

९—लूई कोनी आश्रम विजनौर—प्रो० रामकुमार जी० बी० ए० तथा रामगोपाल जी दोनों इलाज करते हैं। विजनौर से १ मील दूर खुली हवा तथा रमणीक स्थान में जारी है, चिकित्सा शैली कामयाब तथा जनता की विश्वास पात्र बन रही है।

१०—मैहता लालचन्द हस्पताल मद्रास।

११—दयानन्द आयुर्वैदिक औषधालय लाहौर (In-door) दयानन्द आ० वै० कालिज लाहौर की तरफ़ से जारी है ३२२ रोगी प्रविष्ट हुए, जिनमें से १८१ अच्छे हुए, ७ मरे और शेष Dis charge किये गये।

१२—दयानन्द आयुर्वैदिक औषधालय लाहौर (Out-door) यह भी आ० वै० का० लाहौर की तरफ़ से जारीहै। गतवर्ष में १६७९७ रोगियों को औषधी मिली।

१३—द० आ० वै० औ० सूतर मण्डी लाहौर। डी० ए० वी० कालिज की तरफ़ से जारी है गत वर्ष में २४०१७ रोगियों को औषधि मिली।

१४—लखनऊ आर्य्य नगर सैटलमैंट औ० अंग्रेज़ी तथा आयुर्वैदिक औषधियां मिलती हैं पं० वैणी प्रसाद जी पांडे आयुर्वेद आचार्य इञ्चार्ज हैं।

१५—दयानन्द आयुर्वैदिक औषधालय सैंसी (लखनौ)

१६—आ० धमार्थ औ० रावलपिंडी आ० स० गुरुकुल की तरफ़ से और उसी के मन्दिर में जारी है। म० मुकन्दराम जी शास्त्री वैद्य हैं।

१७—तीतरों (सहारनपुर) १८—वोरना (अलीगढ़) १९—धनौरा (मुरादाबाद) २० शाहजहांपुर, २१ कानपुर, २२ बलिहौर (मुरादा बाद) २३ कटड़ा प्रयाग २४ लखनऊ २५ वरमपुर (बिजनौर)

इनके अतिरिक्त गुरुकुलों तथा बड़ी २ संस्थाओं में जो विद्यार्थियों के लिये औषधालय खुले हैं उन के द्वारा भी हर कहीं सर्वसाधारण रोगियों को दवाई मिलती है। गु० कु० कांगड़ी, वृन्दावन तथा डी० ए० वी० कालिज आदि अनेक संस्थाओं ने आयुर्वैदिक फार्मैसी खोली है। जनता को अच्छी और सस्ती आयुर्वैदिक औषधियां मिलती हैं और संस्था को आर्थिक लाभ होता है।

१—बड़ौदा भील क्षत्रिय आश्रम

आर्य्य कुमार महासभा बड़ौदा की ओर से जारी है। ६० वि० हैं। १६ अध्यापक तथा प्रचारक। सं० १९८३ वि० से जारी है। २० हज़ार भीलों का सम्बन्ध आर्य्य समाज से है उनमें वैदिक मिशन फैलाने का यह मुख्य साधन है।

२—बड़ौदा आर्य्य कुमार आश्रम

आ० कु० महासभा बड़ौदा की ओर से। ४५ वि० निःशुल्क पढ़ते हैं, भोजनादि आश्रम से मिलता है, सं० १९८० वि० से जारी है।

३—बड़ौदा अबला आश्रम

११ स्त्री तथा बच्चे हैं। सेठ मंगलदासजी ने ५० हज़ार दिया है १५ हज़ार मकान और ३५ हजार सरमाया के लिये।

४—लाहौर आर्य विद्यार्थी आ० (गु० द० भवन)

श्रीमती आ० प्र० नि० सभा पञ्जाब की ओर से, प्रबन्धकर्तृ सभा द्वारा संचालन होता है। ६६ वि० हैं, लाहौर के कालिजों में पढ़ने वाले विद्यार्थी इसमें रहते हैं।

५—लाहौर डी० ए० वी० कालिज बोर्डिंग हाउस

प्रसिद्ध विद्या प्रेमी प्रो० देवीदयाल जी सुपरिण्टेण्डैण्ट हैं। ५६१ बोर्डर देश के सारे प्रान्तों से यहाँ निवास करते हैं। सन्ध्या में अवश्य सम्मिलित होना होता है। हवन प्रातःकाल होता है। मकान सारी आवश्यकताओं के लिये काफ़ी और उत्तम है। ३ मोटर आव रसानी के लिये हैं।

६—अमृतपुरा भील आश्रम

कालिदास जी आर्य्य मुख्याधिष्ठाता। इसके लिये भूमि ख़रीदने को सेठ जुगलकिशोर जी बिडला ने १५००) रुपया दिया है।

७—टांडा (फ़ैज़ाबाद) बान प्रस्थाश्रम

म० बच्चूमलजी आर्य्य संचालक, २० वि०। लाला बच्चूमल जी १०० रुपया मासिक स्वयं व्यय कर रहे हैं। सरजू नदी के क़रीब टांडा से ५ मील दूर यह आश्रम है। परन्तु बान प्रस्थी कोई जमकर नहीं रहता। विद्यार्थियों के लिये ४०) रुपया मासिक पर अध्यापक रक्खा हुआ है।

८—जैतवारा (रींवां) आनन्द आश्रम

९—बिहारीपुर करुणाश्रम, पो० पोरारा (मुरादाबाद)

१०—अलीगढ़ वैदिक आश्रम

११—लाहौर डी० ए० वी० स्कूल बोर्डिंग हाउस

जिसका प्रबन्ध कालिज कमेटी की तरफ़ से सुपरिन्टेंडेंट करता है।

१२—लाहौर आयुर्वैदिक कालिज बोर्डिंग हाउस

डी० ए० वी० कालिज मैनेजिंग कमेटी के आधीन है। ३० विद्यार्थी हैं।

१३—आ० कन्या आश्रम श्रीगोबिन्दपुर

१४—अजमेर दयानन्द आश्रम

परोपकारिणी सभा की सम्पत्ति, इसमें स्वामी दयानन्द जी के हस्त-लिखित लेख तथा पुस्तक रक्खे हैं।

१५—अजमेर दयानन्द साधु आश्रम

स्वामी लक्ष्मणानन्द जी अधिष्ठाता। गतवर्ष में ८८२) आय और ८२८) रुपया व्यय। श्रीमती गट्टूबाई जी व सिद्धकुंवर बाई जी ने सेठ चाँदमल जी अत्तार की स्मृति में ५३७) रुपया का एक कमरा बनवा दिया।

१६—सिद्धपुरी योग आश्रम

स्वामी अभ्यानन्द जी आचार्य। ११ विद्यार्थी। योग मंडल गुरुकुल काशी की

ओर से जारी है। ३० वि० योग विद्या की शिक्षा पाकर निकल चुके हैं। योग प्रचार के लिये स्वामी जी २ मास बाहर जाते हैं।

इनके अतिरिक्त सारे आर्य कालिजों तथा हाई स्कूलों के साथ बोर्डिङ्ग हाउस व आश्रम हैं, गुरुकुलों के साथ तो आश्रम लाज़मी तौर पर हर कहीं हैं। जिन सबका हाल अपनी २ जगह पर दिया गया है। इन आश्रमों में कहीं प्रबन्ध की कमी से त्रुटि हो तो हो अन्यथा उद्देश्य सबका यह है, और प्रायः काम होता भी इस तरह है कि विद्यार्थियों को धर्म शिक्षा मिल सके और उनमें संध्या, अग्नि होत्रादि, यज्ञों के अतिरिक्त सदाचार के भाव उन्नत हों, गुरुकुलों तथा अनेक आश्रमों में नियत समय पर सारे आवश्यक काम कराये जाते हैं।

१—इन्द्रप्रस्थ वैदिक लाइब्रेरी देहली

मैनेजिंग कमेटी:—प्रधान ला० हरिश्चन्द्र जी, उपप्रधान ला० हंसराज जी, एम० ए० एल० एल० बी० तथा लाला घासीराम जी। आ० सेक्रेटरी, श्री देवेन्द्रकिशोर जी कोषाध्यक्ष, लाला नियादरमल जी बी० ए० मेम्बर लाला रामशंकर जी गुप्त, पं० निरंजन लाल जी भार्गव, मि० के० के० रायज़ादा बी० ए० एल० एल० बी० लीडर, तथा मि० चिरञ्जीलाल गुप्त।

पुस्तक:—७६१४पुस्तक हैं वर्ष में ४३०७ जारी हुईं।

पत्र संख्या:—१३ दैनिक, १७ साप्ताहिक, ३० मासिक अर्थात् कुल ६० पत्र आते हैं।

आर्थिक विवरण:--गत वर्ष में २९११) रुपया आय हुई और २२८८) रुपया व्यय मुस्तकिल सरमाया करीब ९०००, मकान अपना नहीं ४१।) मासिक किराया दिया जाता है।

मिश्रित १:—२३० दर्शकों की रोज़ाना औसत है।

२--बोर्ड आफ़ ट्रस्टीज़ रजिष्ट्रीशुदा १९२०, इस प्रकार है

प्रेज़ीडेंट लाला दीनानाथ जी लोहिया देहली, आ० सेक्रेटरी श्री देवेन्द्रकिशोर जी एसिसटेंट जनरल आफिस P. W. D. कोषाध्यक्ष ला० हरिश्चन्द्र जी (फ़र्म मेसर्स कल्लूमल हरिश्चन्द्र बैंकर्स) ज़मींदार देहली, मेम्बर लाला शामलाल जी लोहिया, लाला बनवारीलाल जी लोहिया, लाला गोवरधनदास जी लोहिया, राय साहब लाला नानकचन्द जी लोहिया, रईस तथा आन० मै०। लाला घासीराम जी लोहिया, राय साहब गंगाराम जी, लाला कन्हैयालाल जी, पं० मनमोहन दास जी, लाला गञ्जूमल जी, मि० निरंजनलाल जी, लाला बंगालीमल जी, म० लछमनदास जी लोहिया देहली। म० देवेन्द्रकिशोर जी

आनरेरी सेक्रेटरी इसके बानी मवानी हैं। और अपने ही पुरुषार्थ से अब तक शानदार लाइब्रेरी चला रहे हैं।

३—वैदिक पुस्तकालय गु० भ० लाहौर

प्रबन्धः—श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से जारी है। सभा के वार्षिक अधिवेशन में चुनाव के साथ इसके लिये पुस्तकाध्यक्ष भी चुना जाता है। इस समय पं० प्रियव्रत जी पुस्तकाध्यक्ष हैं। म० मदनलाल जी मैनेजर, चिरकाल से इस काम को करते रहने से अनुभवपूर्ण रीति से इसका सञ्चालन करते हैं।

पुस्तक संख्या, कुल १४६७५ पुस्तकें अनेक भाषाओं की हैं। कलमी नुसखे इनके अतिरिक्त हैं। पत्र संख्या—दैनिक ६, साप्ताहिक २०, मासिक १४, अर्थात् कुल ४० पत्र आते हैं।

दर्शकः—औसत हाज़िरी ६० की नित्य प्रति है। १९३२ के अन्तिम छः मास में रीडिंग रूम से ७००० और पुस्तकालय से १४००० ने लाभ उठाया।

मिश्रितः—११ से सात बजे तक नित्यप्रति खुला रहता है। रीडिंग रूम प्रातःकाल भी दो घंटे खुलता है। स्थायी ग्राहक ४७। साधारण मेम्बर २३। गुरुदत्त भवन की दूसरी मनज़िल पर बहुत विशाल तथा हवादार कमरों में लाइब्रेरी और रीडिंग रूम है।

४—रा० ब० जस्टिस लालचन्द रिसर्च लाइब्रेरी डी० ए० वी० कालिज लाहौर

१९१७ से जारी है।

प्रबन्धः—डी० ए० वी० कालिज मैनेजिंग कमेटी के आधीन है। श्री पं० भगवत दत्त बी० ए० रीसर्च स्कालर सुपरिंटेंडेंड हैं और पं० हंसराज जी लाइब्रेरियन हैं। पुस्तक संख्याः—६४१७ पुस्तकें हैं और हस्तलिखित पुस्तकें ५००० से अधिक।

आर्थिक विवरणः—कालिज सोसाइटी से २५००) रुपया वार्षिक सहायता मिलती है। विशाल हाल १८००० को बना है नई पुस्तक छपवाने को सोसाइटी ने ३०००) रुपया उधार दे रखा है।

मिश्रित —इस लायब्रेरी में हस्तलिखित पुस्तकें (कलमी नुसखे) पंजाब, कशमीर, यू० पी०, राजपूताना आदि प्रान्तों से बड़े परिश्रम से प्राप्त किये गए हैं और बड़ी सावधानी से सुरक्षित रक्खे जाते हैं। लाहौर तथा बाहर के अन्वेशकों को यह नुसख़े विशेष नियमों के आधीन भेजे जाते हैं। यूरुप और अमरीका के चोटी के विद्वानों ने इन लिखित नुसख़ों (Manuscirpts) तथा रीसर्च लाइब्रेरी के काम से बहुत लाभ उठाया तथा इस काम के विषय में बड़े प्रवल शब्दों में अपनी सम्मति का प्रकाश किया है। प्रकाशन कार्य जारी है और इसके विस्तार की आवश्यकता को बल पूर्वक अनुभव किया जा रहा है।

४—जामपुर आर्य समाज पुस्तकालय तथा वाचनालयः—पं० विश्वम्भरदत्त जी मैनेजर, ९०० पुस्तक, १५ दैनिक, साप्ताहिकादि पत्र आते हैं।

५—गंगोह (सहारनपुर) आर्य पुस्तकालयः—५६० पुस्तक हैं। १२ पत्र आते हैं। पुस्तकों का मूल्य ५६६) रुपये है।

६—नाभा आर्य समाज पुस्तकालय:—समाज का पुस्तकाध्यक्ष इस का सञ्चालक है; २५०) रु० मूल्य के २८० पुस्तक हैं ।

७—धर्मशाला,बृजलाल आर्य समाज लाइब्रेरी:—वैदिक साहित्य सम्बन्धी पुस्तकों का एक बड़ा भारी स्टाक इकट्ठा किया जा रहा है।

८—वैदिक पुस्तकालय हरियाना:—लाला अमरनाथ जी ने अपने स्वर्गीय पिता लाला भोलानाथ जी की स्मृति में काइम किया है। आवश्यक वैदिक साहित्य सब रखा गया है ।

९—लाइब्रेरी आर्य्य समाज चावडी बाजार देहली:—म० विशम्भर नाथ जी पुस्तकाध्यक्ष के चार्ज में शास्त्रार्थों में काम आने वाली तथा आर्य्यों के स्वाध्याय के लिये आवश्यक पुस्तक सब रखी जाती हैं।

१०—सूर्य्य पुस्तकालय अजमेर:—कुं० चांदकरण जी शारदा इसके मैनेजर हैं। कुं० सूर्य्यकरणजी शारदा की पुण्य स्मृति में काइम हुआ है।यह चलता फिरता पुस्तकालय अनेक स्थानों के समाजों को लाभ पहुँचाता है ।

११—श्री मद्यानन्द वाचनालय व पुस्तकालय बम्बई:—आर्य्य समाज बम्बई की ओर से जारी है। हजारों पुस्तक हैं और दैनिक साप्ताहिकादि ४० पत्र आते हैं प्रातः ४ और सायं २ घण्टे खुलता है।

१२—देहली नयाबांस:—आर्य्य समाज नयाबांस ने अपने मन्दिर में पुस्तकालय तथा वाचनालय खोला हुआ है।

१३—गोजरा आर्य्य समाज पुस्तकालय:—१०० पुस्तक।

२५—गोजरा आ० कु० पुस्तकालय:—३०० पुस्तक ।

१५—कोटला निहंग:—दयानन्द रीडिङ्ग रूम ।

१६—कोट मूलचन्द (झंग) वैदिक लाइब्रेरी ।

१७—क्वेटा (बिलोचिस्तान):—नागरी रीडिंग रूम, गढ़वाली भाइयों ने जारी कर रखा है ।

१८—तिरवा (फ़रुखाबाद):—बहुत से प्रसिद्ध पत्र आते हैं।

१९—उदयपुर:—पुस्तकालय तथा वाचनालय है ।

२०—साहित्य पुस्तकालय भुरावां (उन्नाव)

२१—विश्वेश्वर पुस्तकालय राजामौ:—२० जून को इसका उत्सव हुआ।

२२—वीर वाचनालय तथा वीर पुस्तकालय लोहा मण्डी। २० मई को इसका उद्घाटन हुआ।

२३—नरेश आ० पु० कौड़िया बाजार आज़म गढ़:—प्रधान नरेश सिंह जी, मन्त्री मर्यादसिंह जी।

२४—महायज्ञ पुस्तकालय अजमेर:—उद्यान आश्रम में यज्ञशाला के पास जारी है।

२५—पाठकपुर (उन्नाव) आर्य्य पुस्तकालय ।

२६—श्रीमती रानी चतुरकँवर पुस्तकालय कोटला:—श्रीमती महारानी शिवपुर (बड़ौदा) के प्रयत्न का फल है। २३ अप्रैल १९३३ को राजा बहादुर किशनपालसिंह द्वारा इसका उद्घाटन हुआ।

२७—पुनपुन बाज़ार पटना, आर्य कुमार पुस्तकालय।

२८—थरपार्कर:—आर्य वाचनालय।

२९—पुस्तकालय दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, लाहौर:—२३५० पुस्तक।

३०—आर्य पुस्तकालय कांठ:—१४१२ पुस्तक।

३१—दौलतपुर (सुलतानपुर) आर्य पुस्तकालय।

३२—धामपुर:—हिन्दी नवयुवक पुस्तकालय।

३३—आर्य रीडिंग रूम मालाबार:—३० औसत हाज़री, हिन्दी अंग्रेजी मल्यालम भाषाओं के पत्र आते हैं।

३४—आर्य पुस्तकालय ट्रैवैंड्रम धर्मपत्नी प्रो० के० एल०, मुदगल ने जारी किया है।

३५—पुस्तकालय आर्य्य समाज जालन्धर:—४०० पुस्तक। १५ पत्र आते हैं।

३६—कानपुर आर्य समाज पुस्तकालय:—१२००) रुपये के पुस्तक है। रीडिंग रूम का ख़र्च ६००) रुपये वार्षिक है।

इन के अतिरिक्त गुरुकुल कांगड़ी आदि सब संस्थाओं तथा छोटे बड़े समाजों में पुस्तकालय मौजूद हैं पर पब्लिक तौर पर तथा नियम पूर्वक पुस्तकालय से पुस्तकें देने आदि का प्रबन्ध कम ही समाजों में है।

२०—आर्य्य पुस्तक विक्रेता

१—दयानन्द वैदिक पुस्तकालय अजमेर:—परोपकारिणी सभा इसकी मालिक है। उपसभा के मेम्बर दीवान बहादुर हरबिलास जी शारदा, श्रीयुत कन्हैयालाल जी तथा गौरीशंकर जी, सरमाया ७४३२०) रुपया, गतवर्ष में ९२९) रु० बचा। इस वर्ष का बजट आय १२७५०) व्यय १२२७०) रुपया।

२—आर्य्य साहित्य मण्डल अजमेर:—इस पुस्तकालय से वेदों के भाव्य तथा अन्य पुस्तक प्रकाशित होते हैं। म० मथुराप्रसाद जी मैनेजिंग डाइरेक्टर ने इस पुस्तकालय को बहुत उन्नत किया है।

३—पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी ज्वालापुर:—गुरुकुल तथा गुरुकुल के प्रोफ़ेसर महोदयों द्वारा प्रकाशित पुस्तक विकते हैं।

४—बुकडिपो रीसर्चडिपार्टमैण्ट डी० ए० वी० कालिज लाहौर:—पं० भगवतदत्त जी रीसर्च स्कालर द्वारा तय्यार हुई ग्रन्थमाला इसके द्वारा बिकती है। वैदिक वाङ्मय का इतिहास (आर्य्य भाषा) इस ग्रन्थमाला का अति उत्तम ग्रन्थ है।

५—आ० सा० विभाग आ० प्रा० प्र० नि० सभा लाहौरः—वाचस्पति जी एम० ए० इञ्चार्ज हैं, कुछ सस्ते और उत्तम ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं।

६—आर्य्य पुस्तकालय सरस्वती आश्रम लाहौरः—मालिक राजपाल एण्ड सन्स, आर्य्य पुस्तकों का सबसे बड़ा भंडार है। उर्दू, हिन्दी, अँग्रेज़ी में सैकड़ों पुस्तक इस पुस्तकालय ने छपवाए हैं, कई पुस्तकों के ५-१० बल्कि २० तक संस्करण निकले हैं।

७—वैदिक पुस्तकालय मोहनलाल रोड लाहौरः—मालिक पं० वज़ीरचन्द जी शर्मा, मुख्य तौरपर सामाजिक और विशेष रूप से स्वामी दर्शनानन्द कृत ग्रन्थ प्रकाशित करने के लिये यह पुस्तकालय मशहूर है।

८—शिरोमणि पुस्तकालय मोहनलाल रोड लाहौरः—सामाजिक पुस्तकों के साथ अब हवन सामग्री और धूप का काम बढ़ाया जारहा है।

९—नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़ लोहारी गेट लाहौरः—ला० नारायण दत्तजी भूत पूर्व मैनेजर आर्य्य ट्रेडिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी इसके मालिक हैं धर्म पुस्तकों के साथ नावलों का काम बढ़ा दिया है।।

१०—लाजपत राय एण्ड सन्ज़ लोहारी गेट लाहौरः—धर्म पुस्तकों के साथ पोलिटिकल पुस्तक भी छपाते व बेचते हैं।

११—आर्य ग्रन्थावली लाहौरः—पं० राजा राम कृत ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं।

१२—सार्वदेशिक आ० पु० देहलीः—श्रीमती सा० दे० आ० प्र० नि० द्वारा प्रकाशित पुस्तक तथा दयानन्द ग्रन्थमाला आदि बिकते हैं।

१३—आर्य्य साहित्य पुस्तकालय (आर्य्य होटल लाहौर):—मा० लक्ष्मण आर्य्योपदेशक प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए० द्वारा रचित तथा स्टार प्रेस इलाहाबाद के, और अन्य सामाजिक पुस्तक बिकते हैं।

१४—आर्य साहित्य पुस्तकालय नई सड़क देहलीः—लक्ष्मण आर्योपदेशक, प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए० आदि द्वारा प्रकाशित पुस्तक बिकते हैं।

१५—आर्य पुस्तकालय नई सड़क देहलीः—म० चतुरबिहारी जी सकसेना मालिक हैं।

१६—नेशनल बुकडिपो नई सड़क देहलीः—सामाजिक पुस्तकों के अतिरिक्त स० जसवन्त सिंह टुहाना निवासी के पुस्तक विशेष रूप से मिलते हैं। स० जयदियाल सिंह जी इसके संचालक हैं।

१७—स्वामी पुस्तकालय मेरठः—श्री पं० तुलसीराम जी कृत पुस्तक यहाँ मिलते हैं।

१८—आर्य पुस्तक भण्डार नई सड़क देहलीः—संचालक म० दीनदयाल जी।

१९—कन्या महाविद्यालय बुकडिपो जालन्धरः—श्री लाला देवराज जी कृत तथा क० म० वि० द्वारा प्रकाशित पुस्तक बिकते हैं।

२०—आर्य्य भास्कर पुस्तकालय आगराः—आर्य्य प्र० नि० स० संयुक्तप्रान्त द्वारा प्रकाशित पुस्तकें मिलती हैं।

२१—आ० पुस्त० कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता:—मालिक गोविन्दराम हासानन्द कई, अच्छी २ पुस्तक प्रकाशित हुई हैं।

२२—वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद:—पं० शङ्करदत्त जी मालिक हैं।

२३—वैदिक पुस्तकालय बरेली:—म० श्यामलाल जी मालिक बहुत सी पुस्तकों के प्रकाशक हैं।

२४—आर्य्य पुस्तक भंडार लाहौरी गेट लाहौर:—म० सन्तराम जी मालिक हैं।

२५—ट्रैक्टविभाग गुरुदत्त भवन लाहौर।

२६—भारत बुक एजन्सी नई सड़क देहली।

२७—पथिक पुस्तकालय नई सड़क देहली।

२८—प्रेम पुस्तकालय आगरा।

२९—हिन्दी पुस्तक भंडार लाहौर।

३०—मथुराप्रसाद चिरंजीलाल बरेली।

३१—आर्य्य पुस्तकालय अमृतसर।

३२—आर्य्य पुस्तकालय बम्बई गिरगाम काकड़बाड़ी समाज मन्दिर।

३३—आर्य्य प्रतिनिधि सभा सिंध प्रकाशन विभाग करांची, अधिष्ठाता गणपत रायजी।

३४—हरी सुन्दर साहित्य मन्दिर शिकारपुर:—प्रोफेसर, ताराचन्द जी मालिक हैं।

३५—वैदिक ट्रैक्ट सोसाइटी मीरपुर खास:—म० गुरडिनोमल जी संचालक हैं।

३६—मैसर्ज हरीसिंह एन्ड सन्स सक्खर:—म० मूलचन्द जी संचालक हैं।

(नं० ३३ से ३६ तक पब्लिशर हैं, सिंध प्रान्त में पुस्तक विक्रेता निम्न लिखित हैं)

३७—सरस्वती स्टोर्ज शिकारपुर:—प्रो० ताराचन्द जी।

३८—सरस्वती पुस्तकालय हैदराबाद।

३९—आर्य्य समाज धनपतमल पुत्री पाठशाला करांची।

४०—आर्य्य बुकडिपो कोल्हापुर:—आर्य्य समाज मालिक है, ३०००) रुपया की सम्पत्ति है।

२१—आर्य्य समाचार पत्रादि

१—आर्य्य प्रकाश आनन्द, गुजराती साप्ताहिक, आर्य्य प्र० नि० सभा बम्बई का मुख पत्र।

२—प्रचारक बड़ोदा (हिन्दी) आर्य्य।

३—सुधारक बड़ौदा।

४—हिन्दू पत्रिका बड़ौदा यह तीनों पत्र आ० कु० म० सभा बड़ौदा की ओर से छपते हैं।

५—सार्वदेशिक (हिन्दी) देहली, मासिक २) रु० वार्षिक सार्व देशिक सभा का पत्र, श्री सुधाकर जी एम० ए० सम्पादक।

६—आर्य्य मार्तंड अजमेर (हिन्दी साप्ताहिक) २) रु० वार्षिक। आ० प्र० नि० राजस्थान का पत्र।

७—आर्य्य मित्र आगरा (हिन्दी साप्ताहिक) सम्पादक श्री पं हरिशङ्कर जी शर्मा ३॥) वार्षिक (यू० पी० सभा का मुख पत्र)

८—आर्य्य लाहौर (हिन्दी मासिक) २) रु० वार्षिक। आ० प्र० नि० स० पञ्जाब का मुख पत्र, पं० प्रियव्रत जी स्नातक सम्पादक,पं० भीमसैन जी अधिष्ठाता।

९—आर्य्य मुसाफिर लाहौर (उर्दू) २) रु० वार्षिक, म० चिरञ्जीलाल जी प्रेम सम्पादक। (आ० प्र० नि० सभा पञ्जाब का पत्र)

१०—प्रकाश लाहौर (उर्दू साप्ताहिक) ३) रु० वार्षिक। सम्पादक नाथजी जलालपुरी।

११—आर्य्य गज़ट लाहौर (उर्दू साप्ताहिक) ३) रु० विदेशों से ५) रु० वार्षिक। आ० प्रा० दे० प्रतिनिधि का आर्गन सम्पादक म० राजेन्द्र पाल जी प्रेमी।

१२—डी० ए० वी० कालिज मेगजीन (अङ्गरेजी) २) रु० वार्षिक।

१३—वैदिक धर्म औंध (सितारा) हिन्दी मासिक, ४) रु० वार्षिक

१४—रिफार्मर लाहौर (उर्दू साप्ताहिक) ४) रु० सम्पादक म० सन्तलाल जी।

१५—क्रान्ति लाहौर (उर्दू मासिक) ३) रु० सन्तराम जी बी० ए० सम्पादक।

१६—युगान्तर लाहौर (हिन्दी मासिक), २) रु० सम्पादक सन्तराम जी।

१७—वेदोदय, इलाहाबाद, सम्पादक पं० गंगा प्रसाद जी एम० ए० उपाध्याय (हिन्दी मासिक)

१८—आर्य वीर लाहौर (उर्दू साप्ताहिक) सम्पादक पं० मेहर चन्द जी। ३) रु०

१९—वैदिक बिज्ञान अजमेर (हिन्दी मासिक) ४) रु०

२०—योग प्रचारक काशी (हिन्दी मासिक) स्वामी अभयानन्द जी सम्पादक ३) रु०

२१—आर्य पत्र बरेली (उर्दू साप्ताहिक) आर्य्य अनाथालय बरेली का पत्र।

२२—श्रद्धानन्द लाहौर (उर्दू साप्ताहिक) सम्पादक पं० भगतरामजी वैदिकमिशनरी

२३—सत्यवादी शिकारपुर, (अङ्गरेजी) २) रु०

२४—सत्यवादी शिकारपुर (सिन्धी) २) रु० मासिक।

नं० २३, २४ दोनों का मूल्य ३॥) रु०

२५—आर्य्यवीर हैदराबाद मासिक सिन्धी १॥) रु०

२६—मीरपुर खास गजट, मीरपुर खास (सिन्धी साप्ताहिक) मूल्य ४) रु०

२७—सत्य समाचार टांडा आदम, साप्ताहिक सिन्धी, ३) रु०

२८—फ़तह हैदराबाद, साप्ताहिक, सिन्धी २) रु०

२२—अखिल भारतवर्षीय हिंदू शुद्धि सभा

मुख्य कार्य्यालय देहली

उद्देश्य:—वैदिक धर्म से पतित या हिन्दू जाति के बिछुड़े भाइयों को फिर से वैदिक धर्म में लाना।

संगठन:—स्वीकृत शाखाओं के प्रतिनिधि उपनियमों के अनुसार जनरल सभा में सम्मिलित होते हैं। लाइफ़ मेम्बर भी हो सकते हैं।

मेम्बर संख्या—साधारण सभा के ९४ प्रतिनिधि तथा ३८ लाइफ़ मेम्बर कुल १३२ हैं और अन्तरङ्ग सभा के २८।

अधिकारी:—श्री शाहपुराधीश जी प्रधान, श्री आनन्द भिक्षु जी कार्य्य कर्ता प्रधान, रा० सा० लाला गंगाराम जी जनरल सेक्रेटरी।

नोट:—१—१९३२ ई० में ला० मेहरचन्द जी पुरी ने शुद्धि सभा के नए निर्वाचन के विरुद्ध अदालत में अभियोग चलाया। बैंक से रुपया लेने के विषय में अदालत से हुक्म इम्तनाई जारी होगया। मुक़दमाबाज़ी में समय और धन का बहुत अपव्यय हुआ। इस वर्ष प्रसिद्ध दानवीर सेठ ज़ुगलकिशोर जी बिड़ला ने पञ्च बनकर झगड़े को निपटाना चाहा, कि हिन्दू जाति फूट और बदनामी से बचे। सेठ जी ने दोनों पक्षों से प्रतिज्ञा-पत्र लेकर फैसला दे दिया। वक़ीलों ने वह फैसला अदालत में दाख़िल करके उसे अदालती फैसला करार करा दिया। पर इस पर अमल नहीं हुआ, अदालत से मुक़दमा हट जाने का लाभ अवश्य हुआ है।

२—इस गड़बड़ के समय शुद्धि सभा आगरा के कर्मचारी पुरुषार्थ से काम करते रहे हैं। अर्थात् शुद्धि आन्दोलन को उन्होंने इस आपत्ति में मरने नहीं दिया।

३—शाखा शुद्धि सभा मुरादाबाद में पं० भद्रदत्त जी के पुरुषार्थ से शुद्धि सम्मेलन हुआ। तथा एक उपदेशक के द्वारा और काम भी हुआ।

४—शुद्धि सभा की ओर से पं० लक्ष्मीनारायण जी कुछ दौरा करते रहे हैं और भी हर कहीं थोड़ा बहुत काम होता रहा है। तथापि अवस्था बहुत शिथिल तथा निराशाजनक हो रही है।

५—शुद्धि सभा की शाखा निम्नलिखित स्थानों पर हैं:—

आगरा, कासगंज, कानपुर, कटड़ा प्रयाग, सलेमसराय, अम्बाला, बरेली, नज़ीबाबाद, मथुरा, झांसी, मवानाकलां, पीलीभीत, बाराबंकी, अलवर, मुरादाबाद, छीन्दवाड़ा, फ़ीरोज़पुर, सरगोधा, हापुड़, भागलपुर।

६—इनमें से १४ शाखाओं के ९४ प्रतिनिधि सभा में सम्मिलत हैं।

७—सेठ जुगलकिशोर जी वाले फ़ैसले में जो २८ पुरुष अन्तरङ्ग के मेम्बर लिखे गये हैं, उनमें से बहुत से मौजूदा अन्तरङ्ग सभा के मेम्बर नहीं। उस में लाला ठाकुरदास जी प्रधान तथा गौरीशंकर जी मन्त्री हैं। परन्तु अभी तक इन्हें चार्ज नहीं दिया गया।

८—शुद्धि का काम साधारणता जैसा पहिले आर्य्य समाजों में होता था, अब भी हो रहा है।

२३—दलित तथा अछूतोद्धार सभा

१—अमृतसर अछूतोद्धार सभाः—गीताराम जी मन्त्री।

२—होशियारपुर दयानन्द दलितोद्धार मंडलः—मा० देवीचन्द जी एम० ए० प्रधान, लाला रामदास जी प्रिन्सिपल मन्त्री, गत वर्ष की आय १५७३६), व्यय ९४७८), इस मण्डल ने गतवर्षों में ५६५६३ की शुद्धि की (१९२६ से ३३ तक क्रमशः ८७६२, ९६०२, ७५२०, ६२०२, ९६९४, ७४५०, ६०२९ १९३३ के प्रथम दो मास १८७४)।

३—दीनानगरः—आर्य दलित सभा, गुरुदत्त जी प्रधान।

४—लाहौरः—दयानन्द दलित प्रतिनिधि पंजाब, प्रधान सत्यपाल जी, मन्त्री वीरभान जी।

५—लाहौर मेघ सभा पंजाब, कांशीराम जी प्रधान, सोहनलाल जी मन्त्री।

६—मोरिंडाः—डिस्ट्रिक्ट दलित उद्धार सभा, रामप्रताप जी मन्त्री।

७—सियालकोटः—मेघ उद्धार सभा, लाला गङ्गाराम जी एडवोकेट प्रधान, वृजलाल जी रीटायर्ड सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मन्त्री, लाला गणेशदास तथा लाला चरणदास जी उपप्रधान, ला० बनारसीदास जी हेड मास्टर उग्गोकी उपमन्त्री, ला० शिवराम जी मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक कोषाध्यक्ष, हरीरामजी बी० ए० हेड मास्टर पुस्तकाध्यक्ष, ८ मेम्बर अन्तरङ्ग सभा के। ३० वर्ष से जारी है।

८—लखीमपुरः—अछूत उद्धार सभा, रामचन्द्र जी वकील। मुख्य कार्य्य कर्ता हैं

९—लाहौर सेवा सङ्घ गवाल मंडी, म० नन्दलाल जी आर्य प्रधान, सरदारचन्द जी मन्त्री।

१०—दलित उद्धार सभा आ० प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन लाहौर, ला० रौशनलाल जी प्रधान, ज्ञानचन्द जी मन्त्री। अन्तरङ्ग सभासद् २१। १० मण्डल बनाए गए हैं, जम्मू, किश्तवार, भद्रवाह, हिसार, गुरदासपुर, कठूआ, चम्बा, सियाल कोट, लाहौर, लुधियाना, अम्बाला, शिमला, मुलतान। २४ प्रचारक हैं। ११४६ स्थानों में प्रचार हुआ, २९ उत्सव हुए। १० पाठशाला जारी हैं जिन में ३७७ विद्यार्थी हैं। २२ वज़ीफे दिये जाते हैं २) रुपये से १०) रुपये तक।

११—इलाहाबादः—अस्पृश्यता निवारक समिति, परमानन्द जी सिनहा एडवोकेट मंत्री।

१२—मेरठः—अछूत उद्धार समिति, शिवदयाल जी मन्त्री।

१३—बिहारः—अस्पृश्यता निवारक संघ, विंधेश्वरी प्रसाद जी मन्त्री।

१४—हरदोई अछूत सेवक मण्डल, रामस्वरूप शर्मा मन्त्री।

१५—पाठकपुरः—हरिजन सेवा संघ।

१६—फैज़ाबादः—दलितोद्धार सेवा समिति।

१७—फैज़ाबादः—सेवा संघ श्री भगवान जी मन्त्री।

१८—कानपुर अछूत सेवक मण्डल। जवाहरलाल जी प्रधान। प्यारेलालजी मंत्री।

१९—बनारसः—दलित उद्धार समिति, अवध बिहारीलाल जी मन्त्री।

२०—जागर (बिजनौर)ः—जिला अछूत सेवा संघ।

२१—काँगड़ाः—दलित उद्धार सभा, दुर्गादास जी प्रधान, हेमराज जी मन्त्री।

२२—मियाँवालीः—ओड उद्धार सभा।

२३—लाहौरः—बालमीक अछूत मण्डल, बालमुकन्द जी मन्त्री।

२४—देहलीः—अखिल भारतीय दलित उद्धार मण्डल।

२५—अखिल भारतवर्षीय सेवा संघ, ए० वी० ठुक्कर जी मन्त्री।

२६—मैसूर—अस्पृश्यता निवारक संघ।

२७—अस्पृश्यता निवारक समिति आ० प्र० नि० सभा यू० पी०, परमानन्द जी सिंहा ऐडवोकेट अधिष्ठाता।

२८—असावर, अछूत उद्धार सभा।

२४—आर्य प्रेस

१—आनन्द आर्य्य प्रेस, आ० प्र० नि० सभा बम्बई।

२—बड़ौदा आर्य्य कु० प्रेस, आ० कु० म० सभा बड़ौदा।

३—आगरा आर्य्य भास्कर प्रेस, श्रीमती आ० प्र० नि० सभा संयुक्त प्रान्त।

४—अजमेर वैदिक यन्त्रालय, महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित, परोपकारिणी सभा की ओर से उपसभा इञ्चार्ज है जिसके निम्न ५ मेम्बर हैं।

कन्हैयालाल जी, मानकरण जी, चुन्नीलाल जी, घीसू लाल जी, धर्मचन्द जी।

५—मेरठ स्वामी प्रेसः—स्वर्गीय श्री पं० तुलसी राम जी ने जारी किया। अब आपके भ्राता छुट्टनलाल जी इञ्चार्ज हैं।

६—गुरुकुल प्रेस काङ्गड़ीः—आ० प्र० नि० सभा पञ्जाब की तरफ़ से जारी है।

७—लाहौर नवयुग प्रेसः—श्री पं० भीमसैन जी ने जारी किया है।

८—बाम्बे प्रेस लाहौर:—पं० राजा राम जी मालिक हैं।

९—वृजानन्द प्रेस लाहौर:—श्री जगतराम जी मालिक व संचालक हैं।

१०—प्रकाश स्टीम प्रेस लाहौर:—मा० कृष्ण जी मालिक हैं।

११—विद्या प्रकाश प्रेस लाहौर:—साहित्य सम्बन्धी, सामाजिक पुस्तक छपते हैं।

१२—सद्धर्म प्रचारक प्रेस देहली:—पं० अनन्त राम जी संचालक हैं।

१३ श्रद्धानन्द इलैक्ट्रिक प्रेस देहली:—अखिल भारतवर्षीय हिंदू शद्धि सभा देहली।

१४—तेज प्रेस देहली:—उर्दू, देश बन्धु जी गुप्ता डाइरेक्टर हैं।

१५—अर्जुन प्रेस देहली:—हिन्दी, इन्द्र जी विद्या वाचस्पति।

१६—चन्द्रगुप्त प्रेस देहली:—ला० देवीदयाल जी गुप्ता मालिक हैं।

१७—अजमेर आर्य्य साहित्य मण्डल प्रेस:—साहित्य मण्डल की सम्पत्ति।

१८—रावी फ़ाइन आर्ट प्रिंटिङ्ग प्रेस लाहौर:—

२५—कान्फ्रेंस

१—गंगोह:—आर्य्य समाज की ओर से १२-१४ दिसम्बर तक अछूत सम्मेलन हुआ। २० ग्राम के चमार सम्मिलित हुये। सारा काम बहुत प्रभावोत्पादक तथा निर्विघ्न रूप से स्माप्त हुआ।

२—त्रेरूखाल गढ़वाल:—१४-१५ अप्रैल को दलितोद्धार सम्मेलन हुआ, श्री रामप्रसाद जी स्वागताध्यक्ष थे।

३—छगरावली:—(बुलन्दशहर) हरिजन सेवा संघ सम्मेलन।

४—ज्वालापुर:—जात पात तोड़क सम्मेलन।

५—२५-२६ मार्च को जागर (बिजनौर) में दलितोद्धार सम्मेलन हुआ।

६—लाहौर ग्वालमंडी अछूतोद्धार सम्मेलन।

७—होशियारपुर:—विधवा कान्फ्रेन्स, मूलचन्द जी के पुरुषार्थ से।

८—कपूरथला:—विधवा कान्फ्रेन्स, पं० मूलचन्द के पुरुषार्थ से।

९—धर्मगढ़:—विधवा कान्फ्रेन्स विधवा सहायक सभा जालन्धर के प्रबन्ध से १ जुलाई १९३३ को हुई।

१०—लाहौर सर्वदलित कान्फ्रेन्स:—श्री रामदास जी प्रिन्सिपल के प्रधानत्व में १०-जून को हुई, स्वागत कारिणी के मन्त्री मोहनलाल जी थे।

११—करांची:—७-८ जुलाई को सिन्ध आर्य्य सम्मेलन म० कृष्ण जी प्रधान थे।

१२—आर्य्य विद्वत सम्मेलन देहली:—१९ से २२ अक्टूबर १९३३ तक श्री नारायण स्वामी जी के प्रधानत्व में हुआ।

१३—आर्य्य सम्मेलन मीरपुर:—२९ अप्रैल से १ मई तक रायबहादुर दीवान बद्रीदास जी के सभापतित्व में हुआ। कशमीरी मुसलमानों के अत्याचार तथा हिन्दुओं के भविष्य सम्बन्धी प्रस्ताव पास हुये।

१४—अलहदादपुर (अलीगढ़) १० मई को महिला सम्मेलन।

१५—सालनगर (मेरठ) में ४-५ मार्च को अछूत सम्मेलन हुआ।

१६—हिन्दी साहित्य सम्मेलन गवालियर, राय बहादुर श्रीशामबिहारी मिश्र एम० ए० के प्रधानत्व में हुआ।

१७—साहित्य परिषद् के सभापति श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी हुये।

१८—अखिल भारतीय महिला सम्मेलन लखनऊ। रमन बाई नीलकंठ जी के प्रधानत्व में २८-३० दिसम्बर ३२ तक।

१९—दलित उद्धार कान्फ्रेन्स कांगड़ा, ला० दुनीचन्द जी (अम्बाला) प्रधान थे।

२०—सिकन्दराबाद दलित उद्धार कान्फ्रेंस २६ फरवरी ३३ को।

२१—अमृतसर प्राविन्शल अछूत सम्मेलन २५-२७ दिसम्बर तक। प्रधान अनन्त राम जी बी०ए० हेड मास्टर डी०ए०बी० हाई स्कूल, सेक्रेटरी पं० कुन्दनलाल जी।

२२—दीनानगर आर्य्य कान्फ्रेंस, समाज के वार्षिकोत्सव पर।

२३—श्रीनगर काशमीर निर्वाण अर्द्ध शताब्दि मण्डल, चिरञ्जीलाल जी प्रधान, जानकीनाथ जी मन्त्री।

२४—कानपुर:—अछूत उद्धार सम्मेलन, सभापति श्री वृजेन्द्रस्वरूप जी।

२५—ऊना:—दलित उद्धार कान्फ्रेन्स, सभापति श्री ला० देवीचन्द जी एम० ए०।

२६—देहली श्रद्धानन्द नगरी:—प्रान्तीय हरिजन कान्फ्रेन्स, सभापति गयाप्रसाद सिंह जी एम० एल० सी०।

२७—मुरादाबाद दलित उद्धार कान्फ्रेंस, सभापति राय साहब गंगाराम जी।

२८—मंगलौर (मद्रास) दलित उद्धार कांफ्रेन्स, १२ दिसम्बर ३२ को।

२९—उजैन संन्यासी सम्मेलन, कुम्भ मेले के अवसर पर।

३०—मोरिंडा:—दलित उद्धार कान्फ्रेंस, ला० ज्ञानचन्द जी बी० ए० सभापति। २४ अप्रैल ३२ को। धर्म प्रचार भी भली भाँति हुआ।

३१—धर्मगढ़ हरिजन कान्फ्रेंस, सभापति वेदव्रत जी चौधरी, कार्य्य कर्त्ता आर्य स्वराज्य सभा लाहौर, २२ अप्रैल ३३ को

३२—लाहौर:—२५ मार्च दलित उद्धार कान्फ्रेंस, मेघ सभा लाहौर की तरफ़ से श्री ला० काशीराम जी वैद्य के सभापतित्व में। ५ मार्च ३३ को।

३३—बाँकीपुर:—आर्य सम्मेलन, बिहार प्रान्त २७ अगस्त ३३ को। स्वागताध्यक्ष बा० महेशलाल जी, मंत्री महादेवशरण जी।

३४—कानपुर:—आर्य कुमार परिषद्, विद्याधर जी मन्त्री।

३५—लखनऊ:—आर्य महिला सम्मेलन, श्रीमती गुलाबदेवी जी के प्रधानत्व में मन्त्री शान्तिदेवी जी।

३६—लखनऊः—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, स्वागताध्यक्ष पुन्नूलाल जी।

३७—आगराः—अछूतोद्धार सम्मेलन, ६ मई ३३ को। राजकिशनपालसिंह जी एम० ए० एल०एल० बी०, एम० बी० सी० कोटला नरेश के सभापतित्व में हुआ।

३८—आगराः—महिला सम्मेलन, श्री रामकिशनपालसिंह जी कोटलानरेश की सुपुत्री के सभापतित्व में ६ मई, सन् ३३ को हुआ।

२६—आर्य्य डिबेटिंग क्लब आदि

१—अमृतसर वाग वर्धनी सभा—पं० साधूराम जी प्रधान, धर्मेन्द्र जी मन्त्री, दयानन्द संस्कृत अरनी विद्यालय अमृतसर की तरफ़ से।

२—मेरठ आर्य्य डिबेटिंग क्लब—उत्सव, शास्त्रार्थ आदि के द्वारा प्रचार का काम करती है।

३—देहली आर्य्य तर्क शालिनी सभा—पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु, प्रधान, मा० बनवारीलाल जी मन्त्री, प्रति मङ्गल को बहस होती है। पूर्व सप्ताह में नियत विषय पर मुसलमान आदि अन्य मतवादियों से अथवा परस्पर में २ पक्ष बनकर।

४—देहली, सदर बाजार आर्य्य तर्क शालिनी सभा—प्रति सप्ताह नियत विषय पर मुसलमानादि से, अलावा परस्पर में वाद विवाद होता है।

५—बनिया आर्य्य डिबेटिङ्ग क्लब।

६—सिकन्दराबाद आर्य्य शास्त्रार्थ मण्डल—पं० रामचन्द्र जी महोपदेशक देहलवी प्रधान, पं० देवेन्द्र शास्त्री जी मन्त्री।

७—देहली सब्ज़ी मण्डी आर्य्य डिबेटिङ्ग क्लब—प्रति सप्ताह नियत दिन में नियत विषय पर परस्पर में दो पक्ष बनकर बहस की जाती है।

८—बहावलपुर आर्य्य डिबेटिङ्ग क्लब—९ कोट बम्बई वाद विवाद सभा, प्रति वृहस्पति वार को धार्मिक विषयों के सम्बन्ध में शङ्का समाधान होता है।

इनके अतिरिक्त बीसियों ही अन्य स्थानों में आर्य्य पुरुषों का सिद्धान्त ज्ञान बढ़ाने तथा शास्त्रार्थ करने के योग्य बनाने के लिये तर्क शक्ति की उन्नति का प्रबन्ध होता है परन्तु सामान्य तथा यह प्रबन्ध आरज़ी ही रहता है।

२७—शास्त्रार्थ
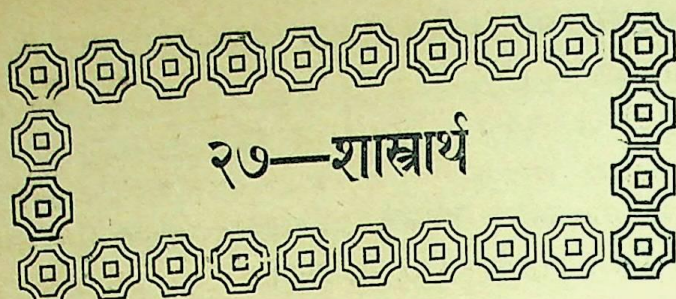
१—नवांशहर (जालन्धर)—मिरज़ाइयों से नियोग विषय पर, म० चिरञ्जीलालजी प्रेम समाज की तरफ़ से और मुहम्मद उमर जी मौलवी फ़ाज़िल दूसरी तरफ़ से थे।

२—चडोह (होशियारपुर)—राधा स्वामियों से।

३—दुर्गापुर (मुंगेर)—अंजमन अहमदिया से स्वामी मुनीश्वरानन्द जी गाजी महमूद धर्मपाल की शरारत फैलाने पर पहुँच गये। अंजुमन अहमदिया के उत्सव में ३ दिन गाज़ीसाहब ने आ० स० के विरुद्ध व्याख्यान दिए पर जब स्वामी जी उन्हीं के उत्सव में जा धमके तो आप ज्यों त्यों टाल मटोल कर अगले दो दिन फरार होगए।

४—हुरगाम (अलीगढ़)—ठाकुर आत्माराम जी ने ईसाई पादरियों से शास्त्रार्थ किया। प्रभाव यह पड़ा कि भंगी और चमार जो ईसाई हो गये थे, पुनः वैदिक धर्म में प्रविष्ट हो गए।

५—देवबन्द—पं० रामचन्द्र जी देहलवी का मुसलमानों से कई घंटे शास्त्रार्थ हुआ, निरुत्तर होने पर यहां के प्रसिद्ध इसलामियां संस्कृत, कालिज के विद्यार्थियों ने शोर मचाया और मेज़ पर खड़े होकर आर्य्य समाज बरबाद, इसलाम ज़िंदाबाद के नारे लगाये।

६—तेलनीपाड़ा (कलकत्ता):—आर्य समाज के उत्सव (२-३ जून) पर सनातन धर्म सभा से इस विषय पर शास्त्रार्थ हुआ कि "क्या पुराण वेदानुकूल हैं।" आर्य्य समाज की तरफ़ से पं० सुखदेव जी वेदालंकार विद्या वाचस्पति और सनातन धर्म सभा की तरफ़ से पं० जीवन जी एम० ए० न्यायतीर्थ थे। बाबू हरगोबिन्द जी गुप्त के सभापतित्व में शास्त्रार्थ अत्यन्त प्रेम पूर्वक हुआ। कई भाषण होने के पश्चात न्यायतीर्थ पं० जीवन जी ने स्पष्ट तौर पर कह दिया कि पुराण कई विषयों में वेदानुकूल हैं और कई विषयों में प्रतिकूल।

७—मेरठ—उत्सव आर्य डिबेटिंग क्लब:—(२ जून—९से ११ बजे तक) जैनियों से। विषय वेद ईश्वरीय ज्ञान है या नहीं। आ० स० की तरफ़ से स्वामी कर्मानन्द जी और दूसरी तरफ़ से पं० राजेन्द्रकुमार जी थे। न केवल युक्ति प्रमाण से सिद्ध हुआ, स्वामी कर्मानन्द जी ने जैन ग्रन्थों से वेद को ईश्वरीय ज्ञान होना दिखा दिया।

८—खातौली:—मंडी राजाराम में जैन मत से ईश्वर विषय पर १ मई सन् ३३ को हुआ जैन ग्रन्थों से प्रलय होने और उसके पीछे ईश्वर का सृष्टि रचना दिखाया गया, ४ दिन शास्त्रार्थ हुआ उपस्थिति संख्या ५-७ हज़ार तक होती रही।

९—खातौली—२ मई, पं० देवेन्द्र जी शास्त्री और पं० राजेन्द्रकुमार जी में विषय, जैन वेद ईश्वरीय ज्ञान नहीं।

१०—३ मई पं० रामचन्द्र जी और पं० धर्मचन्द जी में।

११—४ मई को स्वामी कर्मानन्द जी और पं० राजेन्द्रकुमार जी में आर्य विद्वानों की योग्यता ने सारे मतवादियों के मतों पर वैदिक धर्म की सत्यता का सिक्का बिठा दिया।

१२—सीहोड़:—(अलीगढ़) ९ मई को १ से ६ बजे तक ईसाई मत से वेद ईश्वरीय ज्ञान है, पर पं० शिवशर्मा जी ने पादरी अबदुलहक़ से शास्त्रार्थ किया, जिसका जनता पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। चमार जो ईसाई होने वाले थे, रुक गये और भंगी जो ईसाई हो चुके थे शुद्ध हो गए, उनके चोटियाँ रक्खी गईं।

१३—चन्दौसी (उत्सव आर्य कुमार सभा):—पौराणिकों से हरिजनों के अधिकार विषय पर, पं० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री ने पं० अखिलानन्द से शास्त्रार्थ किया। संस्कृत में लेखबद्ध शास्त्रार्थ हुआ, हिन्दी, अनुवाद पब्लिक को सुनाया जाता था। ४ घण्टे बहस हुई, अछूतोद्धार के काम की कामयाबी का मार्ग खुल गया और आर्य्यसमाज को यश मिला।

१४—मंगलौर (मद्रास)—ईसाई मत की मिस और पं० धर्मदेव जी में।

१५—लखनऊ:—पं० शिवशर्मा जी का पं० आत्मानन्द सत्यधर्म नाम पन्थ के बानी में। सारी जनता पर आत्मानन्द का पोल खुल गया कि संस्कृत से सर्वथा अनभिज्ञ है, केवल ग़लत फ़ैहमी फैलाने का यत्न करता है।

१६—कोडी (मेरठ):—महाविद्यालय किरठल के ब्रह्मचारी रघुवीर जी तर्कभूषण ने कई पौराणिक पंडितों को शास्त्रार्थ में निरुत्तर किया।

२८—आर्य-वीर दल

१—अमृतसर—संरक्षक लाला महाराजमल जी, प्रधान बनवारीलाल जी M. D., मन्त्री बा० अमरनाथ जी, सभापति भगवानदास जी।

२—आर्य युवक दल करांची—आर्य युवक दल करांची की ओर से हरिजनों की सफाई आदि की देख रेख के लिये।

३—धर्मकोट रंधावा—प्रधान पं० दीवानचन्दजी शर्मा, मन्त्री म० सरदारीलालजी।

४—देहली, म० हरिश्चन्द्र जी, मिश्रीलाल जी आदि इसके मुख्य कार्य कर्त्ता हैं।

५—आर्य नवयुवक दल मुजफ्फरपुर—प्रधान नारायणसिंहजी, मन्त्री रागरीझा जी, २ शुद्धियां कीं, ७ विधवाओं की रक्षा की।

६—आर्य युवक दल मुजफ्फरनगर।

७—राजपूत सभा नया टोला जबलपुर, सुन्दरलाल जी मन्त्री।

८—उदयपुर, प्रधान डा० बख़तावरलाल जी नायक, मन्त्री सोहनलाल जी, इत्यादि।

२६—मुतफर्रिक संस्था

१—गौशाला गोविन्दनगर नैनीलाल आ० प्र० वि० सभा यू० पी० के आधीन।

२—यज्ञशाला रूपधनी (एटा) श्री चौधरी जालिमसिंह जी रईस ने यह यज्ञशाला स्वामी जी की निगरानी में तैयार कराई थी और एक आधा ग्राम तथा ३२ बीघे भूमि की रजिस्ट्री। इसकी रक्षा के लिये करादी थी अनुमान ७०००) रु० इस में जमा हैं। भारतवर्ष में ऐसी यज्ञशाला कहीं नहीं।

३—बस्ती जरायम पेशा कचाखूह (मुलतान)—यह बस्ती सरकार से आ० प्रा० प्र०नि० सभा पंजाब को मिली है। सांसीभंडकुट आदि के जीवन में पलटा मिल रहा है।

४—आर्य्य नगर सैटलमेंट लखनऊ:—आ० प्र० नि० सभा संयुक्त प्रांत इसकी इंचार्ज है। जिस की तरफ़ से रासबिहारी जी तिवारी और ठा० बीरसिंह जी प्रबन्ध करते हैं, २२४ जन संख्या है। सुधार कार्य उन्नति पर है। खेती और दरी का काम होता है तथा मजदूरी का काम भी, स्कूल में २७ बालक तथा ३१ बालिका हैं, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की तरफ़ से २ ट्रेंड टीचर हैं। धर्म शिक्षा का विशेष प्रबन्ध है। २९ जुलाई, १९३२ से कोपरेटिव सोसाइटी की मदद से स्त्री पाठशाला भी जारी है।

५—सेवा समिति मोरिंडा:—प्रधान म० लब्भूराम जी मंत्री म० सत्यस्वरूप जी, बीमारी मेला आदि पर आवश्यक मेला सम्बन्धी काम करने के लिये यह समिति बनाई गई है। २ एम० बी० बी० एस० डाक्टर काम करते हैं।

६—अनुसन्धान कार्यालय लाहौर:—श्रीमती आ० प्र० निधि सभा पंजाब की तरफ़ से पं० बुद्धदेव जी पं० प्रियव्रत जी तथा म० चिरंजीलाल जी प्रेम की उपसभा है। कई उत्तम पुस्तक तयार हुए और हो रहे हैं।

७—हिन्दू मिशन अहमदाबाद:—आर्य कुमार सभा बड़ौदा की तरफ़ से हिन्दू विधवाओं तथा हिन्दू जाति को विधर्मियों से सुरक्षित रखना तथा हिन्दू संगठन का प्रचार करना उसका काम है।

८—व्यायामशाला गनेशगंज लखनऊ।

९—व्यायामशाला सिटी लखनऊ।

१०—व्यायामशाला शिमला।

११—व्यायामशाला फ़तहपुर।

१२—आर्य समाज टेलरिंग स्कूल लखनऊ।

१३—आर्य सेवक मंडल आगरा।

३०—भारतवर्ष के आर्य समाज

नोट—समाज की सूची पढ़ने से पहिले यह संकेत अच्छी तरह देख लें।
१=प्रधान, २=मन्त्री, ३=सदस्य संख्या, ४=मासिक चन्दा,
५=सम्पत्ति, ६=स्थापना, ७=डाकघर, ८=रेलवे स्टेशन।

देहली प्रान्त—कुल २० समाज

देहली चावड़ी बाजार १—बुलाकीदास जी, २—अमोलकराम जी, ३—७००, ४—२००) रु०, ५—डेढ़ लाख, ६—४६ वर्ष। देहली सीताराम बाजार, १—श्री० घासीरामजी, २—श्री रूपलाल जी बी० ए०, ३—२००, ४—६०) रु०, ५—१५०००, ६—१४ वर्ष। देहली, नयाबांस, १—सुन्दरलाल जी, २—रामचन्द्रजी, ३—१२५, ४—४०) रु०, ५—३५०००, ६—१० वर्ष। देहली फव्वारा, १—प्यारेलाल जी, २—मंगलराम जी, ३—५०, ४—१५) रु०, ५—६ वर्ष। देहली सब्जी मन्डी, १—रामप्रसाद जी, २—पन्नालाल जी, ३—४०। देहली सदर बाजार, १—चौ० भगवानदास जी, २—लखीराम जी, ३—१७६, ४—४०) रु०, ५—१००००। नई देहली, १—गोपीनाथ जी, २—सालिगराम जी, ५—५००००। तीमारपुर, १—राजेन्द्रदेव शास्त्री, २—सालिगराम जी, ३—२५, ४—१०) रु०, ५-८ वर्ष। शाहदरा, १—बाबूराम जी, ३—७५, ४-३२) रु०, ५—१००००, ६-१६ वर्ष। करौलबाग, १—रा० सा० गंगाराम, २—सत्यपाल जी। श्रद्धानन्द नगरी, ६—४ अप्रैल १९३३। नजफगढ़, ३—२०, ४—४) रु०, ५—२५००, ६—२६ वर्ष। महरौली। चिराग देहली। भोगल। नरेला। मसजिद मोठ। आनन्द पर्वत। गु० कु० इन्द्रप्रस्थ, १—श्री गोपाल जी, २- ईश्वरदत्त जी, ३—१४, ४—७) रु०, ५—१५०० नई देहली क०, १—श्री किदारनाथ जी।

पंजाब-प्रान्त

१—गुड़गावां कुल २५ समाज

१-गुड़गांवा छा०। फरीदाबाद, १—किशनचन्द जी, २—मदनलाल जी, ३—४०, ४—१०) रु०, ५—४०००। हसनपुर, १—हुकमचन्द जी, २—मूलचन्द जी, ३—२५, ४—७) रु०, ५-२०००, ६—१२ वर्ष। बल्लभगढ़, १—भीखमसिंह जी, २-चन्दनलाल जी, ३-१४, ४—४) रु०, ५—४१९०, ६—२३ वर्ष। भोड़ा कलां, —१८, ६—११ वर्ष। ताओडू. ३—१५, ४—८) रु०, ५—३०००। पलवल, ३—२५, ५—२५००, ६—३४ वर्ष। पूना हाना। रिवाड़ी। हतीन। फतेहपुर बलोच। अहरवान। शमसाबाद। सोहना। कासन। लीखी। बघाली। जटौली। पाटौदी। बसई। नूह। होडल। धारू हेड़ा। गढ़ी हरसरू। दूंदशा, ।

२—रोहतक, कुल २३ समाज

रोहतक, २—म० मामचन्द जी, ५—७००० । रोहतकमंडी, १—रामनरायन जी, २—बलवीरसिंह जी, ३—३६ । वेरी, २—छागाराम जी । खरैंटी, २—भालाराम जी। भगवतीपुर, २-विनयसिंह जी । खड़क कलाँ, १-सूबेदार लालसिंह जी । सोनीपत, २—सन्तलाल जी । बादली, २—जगन्नाथ जी, ३—२०, ५—२५००, ६—१९ वर्ष । बहादुरगढ़ । भोपिया, ३—२५, ५—६), ६—६६), ७—बहादुरगढ़ । मोखरा, ३—५५, ४—६) रुपये, ५—२०००), ६—२७ वर्ष । मुरादपुर, ३—१३, ६—२७ । कोसली, ३—४४, ४—१८) रु०, ६—७ वर्ष । खरखोदा, ५—४००० । झज्झर, ३—२५, ६—४४ वर्ष। रोहना, ३—२५, ६—२५ । भैंसवाल, गु० कु० । दुलैहडा । भैहम । काहनौर । भटिंडु, ७—खड़खौदा । जीतपुर, ७—सुबान । सलारिया । डीघल । ढाकलाँ, ७—सुबाना । गुजरखेड़ाँ । कड़ौल, ७—खड़खोदा । घिनौली । बोहना । गोरई । विधलान । मातनहेल । ईसापुर । गढ़ी । बटाना । चड़ी । चापा । गोहाना । सांघी । भापड़ोद । फ़रमाना ।

३—हिसार, कुल ३१ समाज

जाखल मंडी, २—मदनलाल जी गु०, ३—१५, ४—६) रु०, ५—१९ । बढ़लाडा मंडी, २—कुन्दनलाल जी गु० ३—२०, ४—१०, ६—७ वर्ष । मिरज़ापुर, १—चौधरी गोकलचन्द, ६—३००० । मिरजपुर, १—आर० टी० गुलाटी जी, २—लखीराम जी। रतिया, २—जगदीशचन्द्र जी । बाल सभन्द, २—छबीलदास जी । दिनोद, १—शिवदयाल जी, २-फूलचंद जी, ३-३०, ४—८) रु०, ५-९ वर्ष । टुहाना, १-जयसिंहजी, २—देवीदयाल जी, ३—३०, ४—५) रु०, ५—४२०० । हिसार । खांडा खेडी । रसालिया खेड़ा । फ़तहाबाद । सिरसा, ३—३१, ४—१०) रुपया, ५—३००० । ७-भिवानी, ३—६७, ४—२०) रुपया, ५—४०००, ६—३९ वर्ष । खुतरांवां । रुहिड़ावाली । हिसार रेलवार्ड, २—६०, ४—१०) रुपया, ५—४०००, ६—१४ वर्ष । हांसी, ३—१४, ४—६) रुपया, ५—४०००, ६—२५ वर्ष । शेरगढ़ । नारनौंद । डवाली मण्डी । हलवास । नाधड़ी। जाजवान । मुताना । बसौड़ी । जबला । काली खेड़ी । बेला । बादली । खड़खड़ी । जादड़ी ।

४—करनाल कुल ३३ समाज

पूण्डरी, १—भीखमचन्द जी, २—उमाचन्द जी । पूण्डरी क, १—गीताराम जी, २—नगीनामल जी । बयाना, १—बख़तावरसिंह जी, २—नवलचन्द जी । पानीपत, २—सोहनलाल जी, ३—४०, ४—२०, ५—५०००० । करनाल, १—गणपतराय जी, २—सिंहराम जी ३—६३, ४—११५, ५—२२००० । खेड़ा, २—दाताराम जी, ७—इन्द्री । शाहाबाद, २—परमानन्द जी । सालवन, १—सिंगारसिंह जी, २—सन्तराम जी, ७—असंध । रादौर, २—साकुम्बरीदास जी, ५—४०००, ६—३४ वर्ष । लाडवा, २—दलीपचन्द जी, ३—२०, ४—४) रुपया, ५, ५००० । कैथल, १—लाला गणपतराय जी, ३—२५, ४—८) रुपया, ५—१०००० । घड़ौंदा, १—गीताराम जी, २—मायाराम जी,

३—२२, ४—५) रुपया, ६—३४ वर्ष । हलाहर, ७—जठलाना । रामसरन मजरा करनाल, क० । ठौल, ६—२० वर्ष । ठसकामीरांजी । थानेसर । पाई । फतहपुर । लंडी कौल । सींक, ७—उरलाना कलां । सहीवा । भई । इस्माइलाबाद । रेनवा । बाहरी । भाला । गढ़ी बीरबल । डोला । मुकोकी, २—लद्धासिंह जी । इन्दरी ।

५—अम्बाला, कुल ३० समाज

अम्बाला, १—बद्रीप्रसाद जी, २—कुन्दनलाल जी, ३—६०, ४—१६) रु०, ५—११५, ६—१ वर्ष । घनौली, २—जीवाराम जी । अम्बाला क०, २—रामरिछपाल जी । रोपड़, १—वेदप्रकाश जी, २—लालचन्द जी, ३—२९, ४—१००) रु० । काईनपुर, १—जीवाराम जी, २—भुयशचन्द्र जी । जगाधरी, २—मा० नत्थनलाल जी । मुस्तफाबाद, १—बाबूमल जी, ५—२०००, ६—३६ वर्ष । सुहाना, १—डा० विश्वनाथ जी, २—चन्द्रचौड़ जी, ३—४०, ४—६) रु० । मनौली, १—गोहलोराम जी, २—डी० आर० रत्न आज़ाद । रायकोट, १—गुरुप्रसाद जी । मोरिंडा, १—हरद्वारीलाल जी, २—विद्याधर जी, ३—४५, ४—१९) रु० । अम्बाला छावनी, १—डा० लालचन्द जी, ३—१००, ४—४०) रु०, ५—१२००० । कोटला निहंग, १—भुयशचन्द्र जी, २—राधाकिशन जी, ४—५२ वर्ष । नारायणगढ़, १—रलाराम जी, २—रामचन्द्र जी । खिज़राबाद, १—छोटूराम जी । लालकुरती छावनी, २-सुन्दरसिंह जी । घनौरी कलाँ, १—अमरनाथ जी, —मुनिशरण जी

नालागढ़, २—भगतराम जी, मुलाना, ३—१३, ४—५, ५—१०० कनाल ज़मीन, ६—१८ वर्ष । डेराबसी, ३—१५, ४—१७, ५—२५००, ६-१८ वर्ष । रजमेंट बाज़ार अ० छा० ३—१८, ४—६, ५—८०००, ६—१४ वर्ष । कालका, ३-२६, ४—८) रु० ५—२००० । अम्बाला छा० क० ३—३४, ४—१२) रु० । खारवन, ३—१०, ४—६) रु०, ५—२००० । मनी मजरा, ३—१५, ४—१३, ५—१८००, ६—१६ वर्ष । छछरौली । नारंग । दामला । चमकौर । फतेहपुर । कामती मंडी । तीड़ाह ।

६—शिमला, कुल ११ समाज

शिमला, १—जैशीराम जी, २—टेकचन्द जी, ५—एक लाख । डगशाई, १—पं० गोविन्दराम जी, २—इन्द्रराजसिंह जी । परवाणु, १—मेलाराम जी, २—खडकाराम जी । कुमार हट्टी, २—मौजूराम जी । ठियोग, २—आनन्दप्रकाश जी । शिमला क, ३—२००, ४—१२) रु०, ५—८०००, ६—१६ वर्ष । कोट गढ़, ३—३६, ४—१२) रु० ६—५ वर्ष । जतोग । धर्मपुरा । कसौली, ३—१५, ४—१३) रु०, ५—सफ़ेद ज़मीन सोलन, ३—२५ । ४—१२) रु०, ५—८०००, ६—१६ वर्ष । सालन, १—घासी टूमल जी, २—पं० सोमदत्त जी शर्मा वै० शा०, ३—२५, ४—१०, ५—८०००

७—लुध्याना (पंजाब), कुल १६ समाज

लुध्याना, १—डा० बखतावरसिंह जी, २—बाबूरामजी गु०. ३—८२, ४—५५) ५—सवा तीन लाख, ६—४१ वर्ष । चौड़ा बाज़ार लुध्याना, १—रामसुखदासजी, २—लब्भूराम जी, ६—८ वर्ष । सान्हेवाल, २—द्वारकादास जी, ४—८) रु० । लुध्याना क०,

१—अछरूमल जी, २—मनिपाल जी, ३—७५। जंगरांव, २—बिहारीलाल जी। सरहाला, २—देवीदास जी शा०, ३—२८, ४—५) रु०, ६—११ वर्ष। समराला, ३—२५, ४—२०), ५—५०००, ६—२२ वर्ष। रायकोट, ३—३४, ४—१०) रु०, ५—१००००, ६—३८ वर्ष। माघोबाड़ा। बहलोलपुर। बागड़ियां। मैंधीखेड़ा। खन्ना। सिद्धवांवेट। पुखोवाल।

८—फीरोज़पुर, कुल २१ समाज

फीरोजपुर रानीतलाव, १—जगतराम जी, २—हरवन्सलाल जी, ३—९७, ४—९०) रु०, ५—५०००, ६—२० वर्ष। फीरोज़पुर, कं० २—महन्तराम जी, ५—२५०००। फाजलका, १—गौरीशंकर जी, २—बेनीराम जी, ५—२५०००। कनाल कालोनी फ़ी० २—गोपालदास जी। सलेना, २—रामरखा जी। फतेहगढ़, १—गोकलचन्द जी। मोगा, १—डा० मथुरादास जी, ३—१५०, ४—७०), ५—४०००, ६—३० वर्ष। अबोहर, १—रामनारायण जी, २—चांदीराम जी, ३—२०, ४—१०) रु० ५—२५०००, ६—३१ वर्ष। टैंकांवाली, १—नारायणदास जी, २—सालिगराम जी, ५—१५००, ६—४ वर्ष। मलोट मन्डी, १—मुन्शीराम जी, २—सत्यपाल जी, ३—२१, ४—७) रु० ६—५ वर्ष। फीरोजपुर छावनी, ३—३७, ४—१२) रु०। फीरोजपुर छा० क०। मुदकी, ३—१५, ४—३) रु० ६—६ वर्ष। ज़ीरा, ३—१०, ४—७) रु०, ५—१०००, ६—६ वर्ष। गिद्दड़बाहा। कोट ईसाखाँ। फतेहपुर। पंचतूड़। ममदौ। गुरुहरसहाय। मुक्तसर।

९—जालन्धर, कुल ३१ समाज

जालन्धर, १—हरदयाल जी एम० ए०, २—रामलाल जी, ३—१००, ५—८००००। नवाँशहर, १—डा० आसानन्द जी, २—भन्द्रसेन जी, ३—४२, ४—१५, ५—४००००। अलावलपुर, २—अमरनाथ जी, ३—७१, ४—१०) रु०, ५—४०००), ६—१६ वर्ष। रुड़का कलाँ, १—दयालचन्द जी, २—चावूराम जी। पासला, २—तीर्थराम जी। महतपुर, १—हरिचन्द जी, २—सत्यप्रकाश जी, ३—२०, ४—६) रु०, ५—२५०, ६—२१ वर्ष। बस्तीगुजां, १—वजीरचंद जी, २—मलावाराम जी, ३—२३, ४—६) रु०, ५—२८००, ६—३१ वर्ष। रोहूँ, २—हरदेवप्रसाद जी। अलखपुर, १—रामप्यारेलाल जी, २—पं० गंगाराम जी, ३—२०, ४—४) रु०, ५—४००, ६—१४ वर्ष। करतारपुर, १—बिहारीलाल जी, २—मा० चरणदास जी, ३—१००, ४—१००, ५—११०००। कोट बादल खाँ, १—भाममलजी, ३—१८, ४—५) रु० ६—५ वर्ष। खानखाना, ३—१५, ४—४) रु०, ६—१४ वर्ष। कलेर, ३—१८, ५—६०००, ४—३) रु०, ६—१२ वर्ष। अपेरा, ३—१०, ५—३६५०, ६—६ वर्ष। ४—५) रु०, सुल्तानपुर, ३—५०, ५—४८००। बंगा, १—छज्जूराम जी, २—फेरूराम जी, ३—२०, ४—५) रु०। नूरमहल, २—जगन्नाथ जी। आदमपुर। मलसियाँ। तलवन। मुकन्दपुर, बस्तीशेख। नकोदर। बैराम, पिण्डोरी। मतवाला। करनाना। रुड़की। तह० (फिल्लौर)। धनीपिण्ड। भराना। बलगा। पंजोड़। बागा।

१० होशियारपुर, कुल ३२ समाज

बस्ती कलां, २—आत्मस्वरूप जी। जेजों, ४—३०) रु०, ६—२४ वर्ष। दोसूहा, १—गंडाराम जी हकीम, २—पं० दौलतराम जी, ५—५०००। शामचौरासी, २—परमेश्वरीदास जी। होशियारपुर। होशियारपुर क०, १—डा० मोतीसिंह जी, २—लाला किशोरीलाल जी, ३—६२, ५—१०००० ६—३४ वर्ष। हरियाना, २—प्यारेलाल जी वकील। ऊना, २—वजीरचन्द जी। हरियाना का०, १—लाला अमरनाथ जी बी० ए०, २—लाला शिवरामदास, ४—१०००। सराय कुम्हारी, ३—४०, ४—९), ६—७ वर्ष। मुकेरियाँ, ३—४७, ४—१०) रु०, ५—३०००, ६—४४ वर्ष। चिन्तपुरनी। रामटटवाली, ७—जमौरी। बुडराबड़। गढ़शंकर। दातारपुर। हाजीपुर। खड़अच्छरुवाल। कोट-फतुई। भदसाली। बाजवाड़ा। दौलतपुर। पट्टी। ब्रह्म वन्ध लैंढ़ी। माहलपुर बाड़िया। रोड मजुरा। उड़मुड़-टाण्डा। काठगढ़। भीनगढ़कलां। आनन्दपुर। अम्ब। पजावर।

११ कांगड़ा कुल समाज

पालमपुर, १—लाला परमानन्द जी, २—जगदीश जी, ३—२०, ४—५) रु०, ५—१५००, ६—३९ वर्ष। नूरपुर, १—ज्ञानचन्द जी, २—महता रामचन्द्रजी, ३-३६, ४-१८) रु०, ५-१६०००, ६-२६ वर्ष। मतूर, १-चौ० मायादास जी, २-सन्तरामजी आलू वालिया। हमीरपुर, १—लाला माधोदास जी, ३-३१, ४—३) रु०। टीकानगरोटा, १-प्रभूदयाल शाहजी महाजन, २—रायजादा हरवन्सलाल जी। डेरागोपीपुर, १-पं० इच्छरराम जी, २-लाला रामचन्द्रदास जी, ३-३७, ४-९) रु०, ६-१३ साल। चौंतड़ा, १-लाला धनीराम जी बी० ए० २-लाला लाजपतराय जी। टोनीदेवी, १-ठा० रामसिंहजी, ५-इन्द्रसिंह जी हैड मास्टर। मनोरी, १-ठा० हरीरामजी बी० ए० नम्बरदार। प्रागपुर, ३-२०, ४-३०) रु०, ६-२८ वर्ष। खानगढ़, ५—३०००, ६—३४ वर्ष। इन्दौरा, ३-४०, ४—३२) रु०, ६—२५ वर्ष। कांगड़ा। पपरौला। कोटला। जवांवाला। धीरां। रुमाना। रक्कड़। लम्बागांव। धर्मशाला। धर्मशाला का०। कुल्लू। गर्ली। घण्डरा। सलियाना। नादौन। डण्डी। सुजानपुर। टीड़ाँ। शाहपुर। चम्पारी। नगर आर्य्या। घयारा।

१२—गुरदासपुर, कुल ४५ समाज

वसीटपुर, १—केसरसिंह, महेन्द्रपाल, २—चौधरी शेरसिंह जी। धारीवाल, प्रकाशदेवजी बी० ए०, २—देवीदास जी, ३—४०, ६—८ वर्ष। कंजरूड़, २—अमरनाथ जी, फतहगढ़, १—पं० जैचन्द जी, २—सन्तराम जी पांडे, ३—३५, ४—५ रु०, ५—५००। काला अफगानां, १—लाला नत्थामल जी, २—लाला चुन्नीलाल जी, ३—११, ४—१) रुपया, ५—१०) रुपया। बारीमंगा, २—मुन्शीराम जी गुप्ता। डलहौजी छावनी, १—लाला गिरधारीलाल जी, २—लाला लब्भामल जी, ३—१५, ४—११) रुपया, ५—३०००, ६—१९ वर्ष। डलहौजी, १—पूर्णचन्द जी, २—नानकचन्द जी, ३—२३, ४—३०, ५—१००००। इखलासपुर, २—मंगाराम जी। दूधोचक, १—बेलीराम जी, २—

संसारचन्द जी, ३—११, ४—३) रुपया, ५—५०००, ६—२६ वर्ष। कादियाँ, १—पं० चरनदास जी, २—जगदीशमित्र जी। धनिये की बांगर, १—लाला हीरानन्द जी, ६—२१ वर्ष। श्री गोविन्दपुर, १—लाला रोशनलाल जी, २—रामचन्द्र जी। नरोट जैमलसिंह, १—धनीराम जी, २—मुल्कराज जी। बटाला, १—दीवानचन्द जी। बटाला का०। गुरुदासपुर। गुरुदासपुर का०। सुजानपुर, २—१२, ४—७) रुपया, ५—६०००, ६–२८ साल। धर्म कोट रंधावा, २—ज्ञानचन्द जी शर्मा, ३—२०, ४—२ दुकान, ६—२० साल। बहरामपर—३—४५, ४—६) रुपया, ६—३९ साल। नूरकोट, ३—१४, ४—११) रुपया, ५—२०००, ६—३६ साल। पठानकोट, ३—३२, ४—३) रुपया, ५—१००००, ६—३१ वर्ष। डेरा बाबा नानक, ४—१०) रुपया, ५—५०००, ६—१४ साल। दीनानगर,। छीना। शंकरगढ़। घुमान। बुज़ुर्गवाल। सुक्खोचक्र। कोटनैनां। भगोवाल। भलाह। खानावाल। बड़ाला बांगर। दरियाल। दुरंगाला। लुपानियाँ। बाराह। मुहाली। वकलोह। मुराड़ा। दूबरमी। कलानौर, १—लाला आत्माराम जी रिटायर्ड ई० ए० सी०, २—म० मनोराम दीवाना जर्नलिस्ट, ३—१६, ४—४), ५—१०६५, ८—बटाला तथा डेरा बा० नानक। कदियाँ का०।

१३—मियाँवाली-कुल ८ समाज

बानभुचरां, २—वज़ीरचन्द जी। मियांवाली, १—म० दुनीचन्द जी, २—लाला देवीदित्तामल जी, ३—६०, ४—१५), ५—८०००, ६—३१ साल। कमरमशानी, १—चाँदीराम जी, २—लुड़ीन्दचन्द जी। भक्खर ३—३५, ४—११) ६—३५ साल। कुन्दियां, ३—५०, ४—१४), ५—१०००, ६—२३ साल। कालाबाग़, ३—२०, ४—८), ५—५०००, ६—११ वर्ष। दाऊदखेल। माड़ी।

१४—सरगोधा, कुल २३ समाज

सदरशाहपुर, १—गोपीचन्द जी, २—उत्तमचन्दजी। सरगोधा का०, १—चौ० हीरानन्द जी, २-मदनगोपाल जी, ३—७३, ४—३४, ५—६५००। खुशाब, १-मलक दयाराम जी, २—चांदराम जी, ३—३०, ४-९), ५—७६००। मिठ्ठा टिवाना, १-दुनींचन्द जी वकील २—रामकुंवर जी, ३-२८, ४-१०), ५—७०००, ६—१९ साल। भेरा, १-पिंडीदास जी, २-मथ्थादास जी मलका भलवाल, २—रामप्यारा जी, ३—८७, ४—१९ रु० ५—१५००, ६—३० साल। सरगोधा, ३—१००, ४—३० रु० ५—५०० शाहपुर। नहर कम्पाउण्ड सिविल लाइन सरगोधा, १—पं० रामरखा मलजी, २—मुलकराजजी, ३—२५। फुल्लरवाम, ३—१०, ४—५ रु०, ५—४०००, ६—११ साल। मियानी, ३—२०, ४—८ रु०, ५—४००००, ६-३४ साल। जहानाबाद, १—नन्दलाल जी, २—हेतरामजी, ३—३०, ४—४ रु०, ६—११ साल। तख्त हजारा। भदराड़, १—धनराजजी, २—जीवनमल जी, ३—२०, ४—५ रु०, ६—९ साल। झावरियां। सिलां वाली, १—समधन जी, २-राजेन्द्रनाथ जी, ३-११, ४-८, ५-५३००। जहानियां। गुञ्जयाल। नुरहरा। साहीवाल। मिडरांझा। रोड़ा।

१५—जेहलम कुल १६ समाज

पिण्डी सैदपुर, १—हकीम देवी दयालजी, २—नन्दकिशोर शर्मा। जलालपुर केकनां, १—ला० राजारामजी, २—देवीदास जी। चकवाल, २—रामसरन दासजी। सराय आलमगीर, १—डा० जैगोपाल जी, २—हन्सराज जी बाली। जेहलम, १—काशीरामजी, २—रामगोपाल जी। पिण्डदादनखाँ, १—सुखराम दासजी, २—ताराचन्द जी। भवन, १—शामदास जी, २—भगत बूटाराम जी, ३—१५, ४—६ रु०, ४—१०४९। किरयला, १—काशीरामजी, २—भगतरामजी, ३—२०, ४—३ रु०, ६—११ साल। डलवाल, १—गोकलचन्द जी, ६—३३ साल। दलवाल। कलेर। लिल्ला। रमदास। जेहलम क०। लन्वोली। दुमेली।

१६—गुजरात कुल २३ समाज

पिण्डी बहाउद्दीन, १—लालचन्दजी, २—बेलीरामजी, ३—५०, ४—१५ रु०, ५—२०००। मूल, १—ज्ञानचन्दजी, २—खुशवक्तरामजी। गुजरात, १—ला० मूलराज जी। डिगाँ, १—पं० भक्तराम जी, २—रलाराम जयदेव, ३—३५, ४—८ रु०, ५—२९०५०। हेलाँ, १—ला० सन्तरामजी। कड़ियां वाला, २—ला०सन्तरामजी। लाला मूसा, ३—६५, ४—१० रु०, जलालपुर जट्टाँ, ४—५०, ३—१५ रु०, ५—२००००, खारियां। दौलत नगर। भम्भर वाल। कुंजाँह। मुंगोवाल। टाण्डा। शादीवाल। फालिया। कादिराबाद। पीरोशाह। मैरोवाल। जौड़ा। गुजरात का०। फतहपुर। भाग नगर।

१७—रावलपिण्डी कुल १२ समाज

रावल पिण्डी, ३—११५, ५—६००००। रावल पिण्डी का०, २—अनन्तरामजी, ५—६००००। कोहमरी, २—खुशहालचन्दजी, ३—५०, ४—२० रु०, ५—१५००, ६—२४ साल। पिण्डी घेप। सदर रावल पिंडी, ३—९०, ४—३० रु०, ५—२००००, ६—५५ वर्ष। चोहा भक्तां, १—सुदर्शनजी, ५—१०००, ६—२० साल। गुजारखान, ३—२०, ४—६ रु०, ६—४५ साल। लाल कुरती, १—भगतरामजी, २—जगन्नाथ जी, ३—२२, ४—९ रु०, ५—१५०००। डेरा बख्शियां। चकलाला। कुहाला। कबडिया।

१८—अमृतसर कुल ४२ समाज

लोहगढ़ अमृतसर, १—ज्ञानी पिंडीदासजी, २—देवप्रकाश जी। अमृतसर बाजार पशमवाला, १—पं० जगन्नाथजी, २—महाराजमल जी, ४-५५, ५—१०००००। लछमनसर, १—तेलूरामजी, भगवानदास जी। ब्यास, १—ला० रामविलास जी, २—डा० रामधन जी। मजीठा, १—अमींचन्दजी, २—किशनचन्द जी, ५—१००००, ६—३७ साल। जण्डयाला गुरु, १—वीरुमलजी, २—मेहरचन्दजी, ३—२०, ४—३ रु०, ५—५०००, ६—४४ साल। नोरंदी, २—देवीदासजी। छापवेड़ी क०, २—महाराज कृष्णजी। वडाला, १—दीवानचन्द जी। झबल कलाँ, १—हुक्मचन्द जी, ३—३२, ४—११ रु०, ६—६ साल। शामनगर, ३—१०, ४—२ रु०, ५—१०००, ६—१६ साल। वैरोवाल,

३—३०, ४—५ रु०, ६—६ साल। महलाँ वाला, ३—१० ४—२ रु०, ५-३०००, ६ ३० साल। बल्हड़वाल, ३-१६, ४-३) ५-४०००, ६-१६ साल। रमदास क० १-छज्जूरामजी, २-हरिचन्द जी भण्डारी, ३-३२, ४-३), ५-४०००, ६-२९ साल। धोने वाल, १-बुआ दत्तजी, २-नन्दलाल जी, ३-६, ४-२)। फतहेआबाद, १-शामदास जी, २-भगतराम जी, ६-९ साल। नौशहरा पुन्नआँ। खलवियाँ। चविण्डादेवी। कास। सारंगदेव। भगोली। चम्पारी। सोहल। भडाला उशहरा ढाला। जलालाबाद। तरनतारन। माकोवाल। कत्थून-मल। वीरवाल। नमक मण्डी अमृतसर। पञ्चग्राहीं। अजनाला, १-सूरजमल जी वकील, २-पदम चन्दजी। राजा साँसी, २-गुरुदित्ता मलजी। दोटियां, २-ला० चाननमलजी। कामतापुर, १-कृपाराम जी रईस, बुताला, १—ला० काशीरामजी। मपेरवाल। गंगामहल आनन्दपुर गोमाला।

१६—लाहौर, कुल ३० समाज

चूनियाँ, १—कुन्दनलाल जी, २—विद्याभूषण जी, ५—५०००, ६—१५ वर्ष। बागवानपुरा, १—केशवराम जी, २—शिवदत्त जी, ५—६००००, ६—४४। भाई फेरू, १—डा० वे अन्तसिंह जी, २—लाला अर्जनदास जी। धर्मपुरा, १—लाला के० राम जी, २—हरभजनलाल जी। अनारकली लाहौर, १—पं० विश्वबन्धु जी, २—प्रो० ज्ञानचन्द जी एम० ए०, ५—५००००। रामगली लाहौर, म० शामलाल जी, २—ज्ञानीराम मङ्गल सैन जी। छावनी लाहौर, २—नन्दकिशोर जी। गुरुदत्त भवन लाहौर, १—श्रीमान् निरंजननाथ जी, २—मुन्शीराम जी। खुडियाँ, २—कृपाराम जी, ३—१६, ४—६)। बच्छोवाली लाहौर, १—मूलराज जी, बी० ए० बी० टी०, २—नारायण दास जी, ३—५००, ४—१२५), ५—२००००, ६-५५ वर्ष। सन्तनगर लाहौर। क़िला गूजरसिंह लाहौर, २-म० सरदारीलाल जी। ग्वाल मण्डी लाहौर, १-नन्दलाल जी २-सरदारचन्द जी, ३-४४, ४—३२), ६- ११ वर्ष। शाहदरा, १-लाला खैरातीराम जी, २-लाला ज्ञानचंद जी। छावनी लाहौर, १—दीनानाथ जी, दीवानचन्द जी, ३—४५, ४—४०), ५—२१०००, ६—३८ वर्ष। मुग़लपुरा, २—दुर्गादास जी। पत्तोकी, ३—४०, ४—१५)। खेमकरन, १—महता चुन्नीलाल जी। काहना काछा, २-बुआदित्ता जी, ३—१०, ४-३), पट्टी, ३-४०, ६-४० वर्ष। कसूर, १-लाला गोविन्दसहाय जी, २-बा० किशनदयाल जी, ३-५६, ४-१६), ५—१४०००। कोट राधाकिशन। चौबुरजी। कंगनपुर। कलाकीबाद। अच्छेरा। बाबकवाल। राइयाँ। भम्बाकलाँ। कोहरियाँ।

२०—शेखूपुरा, कुल १७ समाज

शेखूपुरा, २—रामरखामल जी, ३—३५, ५—७०००। भागियां, २—खुशीरामजी, शरकपुर, ३—४०, ४—४) रु०, ५—५०००। ननकाना साहब, १—लखमीदास जी, २—रौशनलाल जी, ३—४०, ४—३०) रु०। वारबटन, १—ला० हरकिशनदास जी, २—मा० सुखदेव जी। खानगाहे डोगराँ। मढ़बलोचाँ। चूहड़काना। साँगलाहिल। कालाखताई। जंडियाला कलसाँ। वीरोवाल। तारांडी। ढाबाँसिंहवाला। गोविन्दगढ़। कड़ियाल खुर्द। शाह कोट।

२१—गुजराँवाला, कुल २६ समाज

अकालगढ़, २—दीवानचन्द जी चोपड़ा, ३—४०, ४—७) रु०, ५—५००० । कामोंकी, १—कालूराम जी, २—धर्मवीर जी । गजराँवाला, १—इन्द्रदेव जी बी० ए० विद्यालङ्कार, २—देवीदित्तामल जी, ३—४०, ४—२०), ५—१००००, ६—५० वर्ष । मार्न, १—मोहनीलाल जी, २—निरंजनदास जी । जलालपुर भट्टियाँ, १—डा० विशनदास जी, २—लाला विशनदास जी । रामनगर, १—डा० जयगोपालजी, २—लाला राधाकिशन जी, ३—१०, ४—३, ५—२०००, ६—४३ वर्ष । एमनाबाद, २—ज्ञानचन्द जी । कालंकी, १—ला० शिवचरणदास जी, २—म० जीवनमल जी, ३—१०, ४—३) । कोट नक्का, १—लाला नारायणदास जी, २—लाला सन्तरामजी, ३—१२, ४—५) । पिंडी भट्टियां, १—तुलसीराम जी, २—बरकतराम जी, ३—१५, ५—४००० । हाफ़िज़ाबाद, २—हज़ारीलाल जी, ३-१५, ४-७) रु०, ५-८०००, ६-४० वर्ष । वज़ीराबाद, ३-३२, ४-२०), ५-१००००, ६-४९ वर्ष । क़िला दीदारसिंह, ३—१०, ४—३), ५—१८००, ५—१६ वर्ष । हाफ़िज़ाबाद क०, १—लाला दीनानाथ जी, ३—४६, ४—१२), ५—६०००, ६—१९ वर्ष । खानकी, १-सरदार बिशाखासिंह जी, २-जीवाराम जी, ६-३७ वर्ष । गुजराँ वाला गुरुकुल । कलियाँ वाला । फ़ीरोज़ वाला । जलालपुर नौ । माड़ी भेंडराँ । दिलावर । गुजराँवाला क० । वज़ीराबाद क० । गोंदनावाला । सोधरा । कलासकी ।

२२—स्यालकोट, कुल ५१ समाज

स्यालकोट, १-चरनदास जी, २-स्वरूपनारायण जी । जफ़रवाल, १-डा० महाराज कृष्ण जी, २-मास्टर गिरधारीलाल जी । कलासवाला, १—म० सन्तामल जी, २-भगतराम जी । उग्गोकी, २-राजाराम जी । साहोवाला, १—मुकन्दलाल जी, २-मूलराज जी । जस्सड़, १=पं० भूमाचन्द जी, २—शिवदयाल जी मोती । गोताफतेह गढ़, १—रौशनलाल जी । भूपाल वाला, १—प० मूलराज जी, २-पं० मेलाराम जी, ३—३२, ४—४) । रोडा, २—खुशहालचन्द जी । सनखतरा, १—नत्थूराम जी, २—कर्मचन्दजी । गोइंदकी, २—भीमसैन जी । जामकी, २—कुन्दनलाल जी । डस्का, २—लक्ष्मीसिंह जी । पसरूर, १--श्री चिरंजीतलाल जी वकील, ६—४० वर्ष । नारोवाल, ६—३६ वर्ष । क़िला सोभासिंह, ६—३५ वर्ष । स्यालकोट क० । मिरज़ा गुराया । बम्बवाला । चविंडा । सौकनविंड । रजमटंवाज़ार । जुधाला । रेधावा । भागोवाल । कोटली मोमन । मोलोमेह, ७—मण्डी अब्दुल शकूरपुर । नगरे, ७—कोटली बाब फ़कीरचन्द । धारोवाल । चूहड़ मुण्डा । रावल । नौनार । उद्दोतना । टौडा । तलवंडी भिंडराँ । आहलुवाल थपरूड़ । जमाल जाड़ । जौड़ेया कलाँ । नंगलसूतको । कोटली लुहारां । मीरीकपुर । जमालगढ़ । कालड़ा । तलवंडी काहनाँ । नरगा तरू । बद्दोमल्ली । सम्भड़याल । मुण्डेकी गुराया । मान ।

२३—केम्बलपुर, कुल १२ समाज

केम्बलपुर, १-पं० देवीदास जी, २—मुन्नसिंह जी, ३—१८, ४—५), ७—१२००० ६—२३ साल । खोड़, १—बिहारीलाल जी, २—हरनामसिंह जी । जन्ड, १ -लोकचन्द

जी, २—हीरानन्द जी, ३—१५, ४—६), ६—८ साल। तलागंग, १—मालकचन्द जी, २—ईशरदास जी, ३—२५, ४—७), ५—१००००, ६—१६ साल। कालाबाग़, २—गिरधारीलाल जी। हज़ारा, ६—१५ साल। पिण्डीघेप। गोरगशती। थुआ महरमखाँ। मर्दान। फतह जङ्ग। तराप।

२४—हज़ारा, कुल ४ समाज

कोट नजीबउल्ला, २—मक्खनलाल जी। ऐबटाबाद, २—सेवकराम जी। मानसहरा। हरीपुर।

२५ पेशावर कुल १० समाज

होती, २—चाननमल जी। रिसालपुर छावनी, १—चिरंजीवलाल जी, २-रामरिक्खामलजी, ३-३६, ४-१०) रु, ६-१६ साल। विकटगंज मर्दान, १-पं० ध्यानचन्दजी, २-बख्शीबृजलाल जी, ३-४३, ४-६) रु०, ५-७०००, ६-४६ साल। ढकीनाल बन्दी, १-डा० हरीचन्द जी, २-तारासिंह जी, ३-५०, ४-४५) रु०, ५-२५०००। पेशावर शहर क०, १-लाला बेनीराम जी, २-रामभेजा जी। पेशावर छावनी, ५-४००००। बटाखेल, १-मेघराज जी, २-पतवाली लाल जी। आसिया मुहल्ला, १—लछमनदास जी ठेकेदार, २- बशेश्वरनाथ जी। नोरहरा छावनी, ३-३५, ४-१०) रु०, ५-७०००, ६-२८ साल। हरीपुर हज़ारा, मरदान, रिसालपुर, पेशावर शहर।

२६ कोहाट, कुल ४ समाज

कोहाट, १-बा० मंगूलाल जी, २-ला० रामलाल जी, ३—१०, ४—४) रु०, टल्ल, १—अर्जुनदासजी, २-भगवानदास जी, ६-६ वर्ष। टेहरी। हेंगू।

२६ बन्नू कुल ६ समाज

बन्नू, ३-३७, ४-२०) रु०, ५-४००००, ६-४३ वर्ष। लकी मर्वत, १-नेताराम जी, २-लोटूराम जी, ३-३४, ४-७) रु०, ५-१२००। मनजई, १-मेलाराम जी, २-साहब दिता जी, ३-२०, ४-१०, ६-१३ वर्ष। बन्नू क०। रजानी। रज़मक।

२८—डेरा इस्माइल खाँ, कुल ४ समाज

डेरा इस्माईल खाँ, १—प्यारेलाल जी, २—दीवानचन्द जी, ३—७१, ४—३६), ५—४१०००, ६—४५ वर्ष। डेरा इस्माईलखाँ क०, २—जींदाराम जी। कुलाची, १—भेरीलाला जी, २—दरबारीलाल जी, ३—६६, ४—१०), ५—५०००, ६—३० साल। टान्क, ३—५०, ४—१०), ६—३४ साल।

२६—डेरा ग़ाज़ीखाँ, कुल २० समाज

जामपुर, १—गणेशदत्त जी, २—ईश्वरदत्त जी, ३—९०, ४—२२), ५—२३०००, ६—४२ साल। डेरा ग़ाज़ीखाँ, १--गणेशीचन्द जी, ३—५०, ४—४०), ५—२४०००, ६-४६ साल। कोट छुट्टा, १-चौ० मन्नूलाल जी, २-म० सुन्दरदास जी, ३-३०, ४-६) ५-२५०००,

६-३४ साल। झोक अतरा, १—नारायणदास जी, २—भगवानदास जी, ३-१२, ४—३)। चोटी, २-जोधाराम जी, ३-२०, ४-५), ५-१५०००, ६—७ साल। तौंसा, ३—२५, ४—१०), ५—७०००, ६—१२ साल। राजनपुर, ३—२५, ४—१०), ५—७०००, ६—३० साल। दार्जल, ३—८०, ४—१८)। बाडोर। अजरावर। ऋषिकुण्ड। यारू। माना अहमदाली। रीझाँ। कोट केसरानी। टिब्बी केसरान। सखी सखर। मन्गरोहटा। टिब्बी लुण्ड। फ़ाजलपुर।

३०—मुज़फ्फ़गढ़, कुल १६ समाज

मुज़फ्फरगढ़, १—राजेन्द्रप्रसाद जी एडवोकेट, २—पं० लालचन्द जी एल० एल० बी०, ३—३०, ४—१२), ५—५०००, ६—४८ साल। सीतपुर, २—धर्मवीरसिंह जी, ३—२८, ४—५), ५—डेढ़ एकड़ भूमि। मोची वाली, १—चौ० नूतनदास जी, ३—१३, ४—२), ५—७०००। ४-मुज़फ्फरगढ़, २—साहुरामजी। सनावाँ, १—राय मोहेन्द्रराम जी, २-हरबन्सलाल जी, ३-१५, ५-1000, ६—२९ साल। कोट अद्दू, २—जगदीशचन्द्र जी, ३—३०, ४—१०), ५—१५००। खनिगढ़, १—छबीलदास जी, २—खेमचन्दजी, ३—१७, ४—४), ५—३०००, ६—३६ वर्ष। दारादीन पनाह, २—साधुराम जी, ६—१४ साल। झुगगीवील, २—कविराज ज्ञानचन्द जी, ३—३१, ४—४), ६—३३ साल। खैरपुर, ३—३०, ४—४), ५—४०००, ६—३४ साल। जतोई, ३—३८, ४—५), ५—१०००, ६—४४ साल। अलीपुर, ३—५६, ४—१२), ५—१००००। लय्या। करोड़। शहर सुलतान, एहसानपुर। पंच नद। बस्ती गुजरात। रंगपुर।

३१—मुलतान, कुल २६ समाज

खानेवाल, २—हकीमचन्द जी। नवांशहर, १-इन्द्रजीत जी बी० ए०, २-सुन्दरदास जी गुप्ता। कैलासी, १—देवराजजी। उपल, २-बलदेवदत्त जी, ३-२०, ४—२०) रु०, ५-५०००, ६-३४ साल। धारीमन्डी, १-दीवानचन्द जी, २-खुशीराम जी। बोड़यूवाला, १—शिवरामदास जी, २-उचलाल जी। सरायसिद्ध, १—महरचन्द जी, २-डा० विश्वनाथ जी, ३-२५, ४-१०) रु०, ५-५०००। आर्यनगर, १-गनेशदत्त जी, ३-१४१, ५-५०००, ६-३१ साल। मुल्तान छावनी, १—मुन्शीराम जी, २—मनोहर लाल जी, ३-३५, ४-२) रु० ५-८०००। बोहड़दरवाजा मुल्तान, १—मल्क परमानन्द जी, २—लाला जमनादास जी। गुरुकुल, २-अर्जुनदेव जी। चक नं० ९१२ कच्चा खूह, १-महरचन्द जी, २-हुक्मचन्द जी। मियांचन्नू, ३—१६, ४-१२) रु०, ५-५०००, ६—८ साल। शुजाआबाद, ३-३५, ४-१०) रु०, ५-६०००, ६—३० साल। जलालपुर। पीरवाला। मखदूमपुर। तुलम्बा। खानेवाल। सरदारपुर। कहरोड़ पक्का। दुनियापुर। कबीरवाला। जोधपुर। हवानियाँ। गोविन्दपुर। हाजीपुर। मुलतान क०।

३२—मिन्ट गुमरी, कुल १५ समाज

उकाड़ा, १—सक्खूराम जी, २-परमानन्द जी, ३-४८, ४—१६) रु०, ५-१०६००, आरफ़वाला, २—मिलखीराम जी। दयालपुर, १—डा० जैदियाल जी, २—ला० निर्मल-

चन्द्र जी वकील। पाकपट्टन, १—रैमलचन्द जी वकील। चीचावतनी, १—वरकतराम जी, ३—२२, ४—१०) रु०, ५—६००० । मिन्टगुमरी, १—डाक्टर ध्यानसिंह जी, २—अर्जुनदेव जी। गुगीरा, २—मदनलाल जी। मिन्टगुमरी क०, १—राधाकिशन जी, २—हरिचन्द्र जी। सतघरा, २—ला० उछरूमल जी, ३—१०, ४—२) रु०। हीरासिंह। बूड़ेवाला। नूरशाह। चक नं०५४। रीनाला खुर्द। सोटी वाला। मिन्टगुमरी, १—राधाकृष्णजी M.A., २—हरिश्चन्द्र जी, ३—६७, ४—३०), ५—१२००० ।

३३ झंग कुल १२ समाज

रजोआ, २—डा० किशनगोपाल जी, ३—२०, ४—४) रु०, ६—७ साल। चेला, १—वजीरचन्द जी जरगर, ३—१०, ४—२) रु०, ६—३२ साल। झंग मघयाना का०, १—लाला रामदित्तामल जी, ३—२२, ४—१० रु०, ५—१०००० । गोजरा, १—रामरक्खा मल जी, २—रामदित्त जी, ३—६०, ४—२०) रु०, ५—६५०० । शोरकोट। १—मस्तानचन्द जी, २—कविराजदयाल जी, ३—२५, ४—८) रु०, ५—२०००, ६—३५ साल। झंग मघयाना, २—लाला रामदित्तोमल जी, ३—२२, ४—१०) रु०, ५—१००० । झंग शहर, ३—३५, ४—५) रु०, ५—२५०००, ६—३९ साल। अहमदपुर सियाल, ३—३५, ४—५) रु०, ५—२०००, पीरकोट। चनयूट। चक नं० ३१ हरयानागढ़। कोट मूलचन्द।

३४—लायलपुर कुल १६ समाज

गोजरा, १—रामरक्खामल जी, २—रामदत्तामल, ३—४७, ४—१६), ५—७०००, ६—२० साल। लायलपुर का०, १—चन्द्रभान जी एडवोकेट, २—हरिचन्द्र वर्मा वकील। चक नं० ९६/११२ । चक झुमरा, १—चोड़ीराम जी, २—खुशहालचन्द जी, ३—३२, ४—२५), ५—२५०००, ६—९ साल। ताम्दलियाँ वाला, २—शान्ती स्वरूप जी, ३—३५, ५—८००००, ६—१९ साल। डिचकोट, २—हन्सराज जी वेद, ३—२०, ४—६), ५—२८०० । लायलपुर, १—सेठ दीवानचन्द जी, २—नारायनदास जी। टोबाटेकसिंह, २—काशीराम जी, ३—८६, ४—१८), ५—११०००, ६—२३ साल। जड़ांवाला, ३—४५, ४—२०), ५—८०००, ६—२३ साल। समुन्दरी। कमालिया। डगलसपुर। (चक नं० ९४) खण्डयाल वाला। खड़तयां वाला। पीरमहल। चक नं० १९२।

३५—बिलोचिस्तान कुल सात समाज

कोयटा

लोरालाई, १—लाला कूड़ाराम जी, २—लक्ष्मीनारायण जी, ३—२०, ४—३२), ५—७०००, ६—३३ साल। कोयटा, १—भीष्मदेव जी, ३—३१२, ४—१५०), ५—१२००००, ६—३७ साल। कोयटा का०। फोरट सण्डेमन। फफराई। चमन। सिबी।

पंजाब की देसी रियासतें

३६—कपूरथला कुल ४ समाज

कपूरथला, १—लाला द्वारकादास जी, २—लाला रूपलाल जी, ३—२९, ४—१५), ५—८०००, ६—३३ साल। सुल्तानपुर, २—कृष्णकुमार जी, ३—६५, ४—१६), ५—७५००, ६—२२ साल। ~~कुमवाला~~, २—मथुरादास जी कपूर। टिब्बा।

फगवाड़ा

३७—फरीदकोट कुल ४ समाज

फरीदकोट, ३—२१, ४—८), । कोट कपूरा, २—लाला हरिराम जी, ३—३८, ४—२२) । अमरपुरा । चूहड़ीवाला कत्ता ।

३८—पटियाला कुल ३७ समाज

भटिण्डा, २—टहलरामजी, ३—७०, ४—४०), ५—२००००, ६—३५ साल । बरनाला, २—पृथ्वीचन्द जी वकील, ३—२६, ४—१५), ५—१००००, ६—३३ साल । रामामण्डी, १—डा० सोमनाथ जी, २—निहालचन्द जी, ३—१५, ४—५), ५—७०००, ६—२३ साल । शेरपुर, १—बिलायतीराम जी, २—सावनराम जी, ३—१२, ४—४), ६—१७ साल । अमरगढ़, २—दौलतराम जी । पटियाला, २—विद्यारत्न जी । धुरी, १—रामस्वरूप जी । मान्सा, १—हरिचन्द जी, २—जातीराम जी, ३—३०, ४—६), ५—५०००, ६—१८ साल । भवानीगढ़, ३—१५, ४-४), ५—१०००, तलवण्डी साल, ३—४१, ४—४), ५—1000 । सनोर, ३—२२, ४—६), ५—१५०००, ६—१७ साल । नरवाना, ३—३५, ४—८), ५—१००००, ६—२९ साल । माड़ली, ३—१०, ४—२), ५—८०००, ६—२५ साल । बसी, ३—१५, ४—८), ५—१०००, ६—१५ साल । बट्टरा, ३—१६, ४—८), ५—२०००, ६—१९ साल । संगरूर, १—बा० मुन्नाराम जी ओवरसियर, २—ज्योतिषी गुरप्रसाद जी, ३—५७, ४—१५), ५—४०००, ६—१० साल । सफीदों, ३—३०, ४—१०) । जींद जंक्सन, १—पं० दयाचन्द जी, २—लाला ज्ञानचन्द जी । सरहिन्द । बनूड । पाईल । सामाना । भदौड़ । बोहा । सुनाम । धमतान । ननौला । नारनौल । चनार थल । कुलरयाँ । चौंदा । मौड़मंडी । धनौरी । रावपुर । घड़दवा । सन्धील । कावरधा ।

३९—जींद कुल ८ समाज

जींद जंक्शन । जींद शहर । सफीदों । संगरूर । १—मनसाराम जी, २—रघुवरदयाल जी, ३—३०, ४—१०), ५—६४५० । बोंदखुर्द । चरखीदादरी । हाटा राजवाँ

४०—नाभा, कुल ७ समाज

नाभा, १—गूजरमल जी, २—मनोहरलाल जी, ३—४४, ४—१०), ५—२४००, ६—८ साल । फूलमण्डी, १—मुलखराज जी, २—बृजलाल जी, ३—१० । लोंकी, ३—१०, ४-२), ५-१००० । जैतों । रामपुर फूल । कोमी । केण्डू ।

४१—जम्मू (कश्मीर) कुल ३७ समाज

रामनगर, १—हेमराज जी, २—बलवन्तसिंह वर्मा जी । मीरपुर, १—बोधराजजी, २—देवीचन्द जी, ३—५०, ४—१७), ५—१५०००, ६—२६ साल । कोटली, १—रामनाथ जी वकील, २—बालमुकन्द जी, ३—४०, ४—८), ५—५०००, ६—१३ साल । राजोरी, २—मोतीराम जी । नौशहरा । भम्बर, २—जियालाल जी । हस्पताल रोड जम्मू, १—नानकचन्दजी, २—अनन्तरामजी, ३—६५, ४—७२) । रणबीरसिंहपुरा, १—मंगूरामजी । २—भगतराम जी, ३-३० । श्रीनगर, १—ला० चिरञ्जीलाल जी, २—अमरनाथ जी, ३—

२४, ४—१०), ५—८००० । जम्मू, १—रघुबीरचन्द जी । कठुआ, १—लाला बिशनदास जी वकील । भद्रवाह, ३—३९, ४—४), ६—६ साल । पून्छ, ३—१००, ४—७), ६—१० साल । गरक, ३—३९, ४—४), ६—१६ साल । मुजफ्फराबाद । श्रीनगर का० । रणबीर गंज श्रीनगर । धर्मशालपुर । करगल । उधमपुर । हीरानगर । हमीरपुर सिन्धड़ । कोटला Via जेहलम । बिशनाह । रियासी । बटोत । साम्बा । बसोहली । लनावर । जगान । सुईरहद्दा । किश्तवाड़ । अलियाँ । सहसा । सोवहना । बसोली । अखनौर । धर्मशाल मेंबड़ ।

४२—बहावलपुर, कुल १० समाज

खैरपुर टामेंवाली, २—आनन्दराम जी, ३—१५, ४—४), ६—९ साल । समासट्टा, १—गङ्गारामराम जी, २—विद्याधर जी, ३—२०, ४—१५), ५—२०००, ६—७ साल । बहावलपुर, २—सत्सङ्गराम । उच्च, १—मैनेजर साहब काटन फैक्टरी, ३—२०, ४—४), ६—३० साल । खानपुर, २—डा० गोविन्दराम जी, ३—२०, ४—६), ५—५००० । बहावल नगर । अहमदपुर लम्बा । अहमदपुर शर्किया । रहीमयारखाँ । संजरपुर ।

४३—मण्डी, कुल २ समाज

मण्डी, १—देवीराम जी सर्राफ़, २—जैदेवराम जी । जोगेन्द्रनगर ।

४४—सरमोर नाहन, कुल ३ समाज

पछाद, ३—३५, ४—१०), ६—२९ साल । नाहन, १—किदारनाथ जी, २—हरियाराम जी, ३—१६, ४-४), ५—५००० । नारग ।

४५—चम्बा, कुल २ समाज

चम्बा, २—दीवानचन्द जी । मालेर कोटला । रियासत छहूरौली (अम्बाला)

४६—सिन्ध प्रान्त कुल ४१ समाज

किरांची गाड़ी खाता, १—गुलराजमल जी, २—प्रकाशस्वरूप जी, ३—२००, ५—२०००० । कराची नानकवाड़ा, १—दयाल जी, २—जयपतिलाल जी, ३—५०, कराची बम्बई बाजार, १—हेमनदास जी, २—विहरीलाल जी, ३—६० । किरांची (c) । हसनअली रोड, १—रामसहाय जी, ३—५०, ५—५०००० । कीमाड़ी, १—बिहारीलाल जी, ३—५०, ५—६००० । ठट्टा, १—नरसिंहलाल जी, २—गोविन्दराम जी, ३—२०, ५—३००० । दादु, १—मोटुमल जी, २—तन्नूमल जी, ३—२०, ५—३००० । मंगवानी, १—मियनदास जी, ३—१०, ५—२००० । खैरपुर नाथनशाह, १—सौमराज जी, २—लालचन्द जी, ३—२०, ५—४०००, माहर, १—पमनदास जी, ३—१०, काज़ी आरिफ़, १—दल्लूमलजी ३—१० । थड़ी महब्बत, १—बोधाराम जी, २—झमटमल जी, ३—१२, ५—६००० । लड़काना, १—चरनदास जी, २—नेहड़ोंमल जी, ३—२०, ५—३००० । नूनखेरो, १—जीयामल जी, २—सत्यप्रकाशजी, ३-१५, रतोडेरो, १—टोपनदास जी, २—परचामल जी, ३-१५ । शिकारपुर, १—तेजमल जी, २—हून्दराज जी, ३—३०, ५—१०००० । शिकारपुर, (C. S.) ३—१५, सक्खर, १—मंगतरामजी, २—थारूलाल जी, ३—१५०, ५—

१५०००, सक्खर (C. S.) ,३—३० । घोटकी, ९—बलीराम जी, २—रीझूमल जी, ३—२०, ५—३००० । कादरपुर, ३-१०, ५—८००, उबावरो, ३—२०, दहिरकी, ३—१०, जैकबाबाद, ३—१०, नवाबशाह, १—भोजराज, ३—१० । सांभर, २—हैदरमल जी, ३—१५ । छाछरो, ३—२०, ५—४००० । मिठी, १—हेमराज जी, ३—२०, ५—२००० । अमरकोट, १—वधोमल जी, ३—१५ । शाहदादपुर, ३—१२ । टांडा आदम, ३—१० । हैदराबाद सिंध, १—तुलसीदास जी, २—ज्योतिराम जी, ३-५०, ५—३०००० । मीरपुरखास, १—गोविन्द रावजी, २—शिवस्वरूप जी, ३-२०, ५-३००० । शाहपुर थरपारकर, १-आसमल जी, ३-१० । बचाली वागड़ी, १—त्यंचालदास जी । सुलतान कोट ! नागन । कोट सबजल । बोदर हेड़ा । सीतारोड, डएडी ।

संयुक्त-प्रान्त

४७—देहरादून, कुल ६ समाज——

देहरादून, १—मुन्शीराम जी, २—कृष्णदेव जी शर्मा । कान्सी, १—ला० चन्दीप्रसाद जी, २—बाबू रामलाल जी, ६—१५ साल । देहरादून सचा मोहल्ला, १—ला० मेलाराम जी, २—मायाराम जी । मन्सूरी, १—अयोध्याप्रसाद जी वकील, ३—३०, ४—१५), ५—१४०००, ६—३८ साल । भवानी, १—बा० पूरनचन्द जी । डोईवाला, १-यशवन्तसिंह जी, २—ईश्वरचन्द जी, ३—८०, ४—१०), ५—५०००, ६—१८ साल । चूहड़पुर, ३—३०, ४—२०), ५—१००००, ६—३९ साल । चकरोता, ३—१५, ५—७०००, ६—३६ साल । सतान ।

४८—सहारनपुर, कुल ३५ समाज

गंगोह, १—लाला रत्थूमल जी, २—लाला सुमेरचन्द जी, ३—५३, ४—१०), ५—२०००, ६—४८साल । देवबन्द, २—श्रीराम जी कश्यप । बहादुराबाद, १—इन्द्रराज सिंह जी, २—रामलाल जी, ३—३०, ४—८) । रुड़की, १—मथुरादास जी, २—वाचस्पति जी, ३—६६, ४—१५), ५—१०००० । सहारनपुर क०, १—कृष्णलाल जी, २-विश्वमित्र प्रसाद जी । टीरी, २—नन्दराम जी । डोधला, १-चौ० सरदारसिंह जी, २—देवकीनन्दन जी, ५—१५००० । मुज़फ्फराबाद, १—मिश्रीलाल जी, २—दौलतराम जी । नारती कलाँ, २—दौलतरामजी, ३—३५ । पट्टेराहेड़ी, १—पं० उधोमल शर्मा, २- बलरामजी । उद्दीनागल, २-तेजसिंह जी । बहेड़ा, २-मूलराजजी । तेतरून, ३—१५, ४-२), ५-४२००, ६-४९वर्ष । खेड़ा अफगान, १-गेंदारामजी, २-गणेशीलालजी, ३-१२, ४-३) ५—२५०० । ज्वालापुर, ३—४०, ४—६), ५—१२००, ६—३२ साल । गढ़ी अब्दुल्ला, ३—२२, ४—१२) रु०, ५—३२ साल । अमेबटा, ३—२१, ४—११) रु० । चढ़ियाला, ३-३०, ४-११) । दाबकी खेड़ी, ३-३१, ४-७) रु० । मेहुड़ कलां, नगला खटोली, लिस्सब्बर हेड़ी, मंगलोर, रामपुर मनहारां, भगवानपुर, रुहालकी, ७-ज्वालापुर । रुहालकीदयालपुर, ७-भगवानपुर । सिधारनपुर । 'पुरानी मन्डी सहारनपुर । इमलीखेड़ा । दबला । बटेरी । जयरामपुर । बीदहपुर । बहेट । डिगाई । हरिद्वार ।

४९ मुजफ्फरनगर, कुल २९ समाज

चरतावल, ४-१०) रु०, ५-१५०००, ६-२९ साल। किराना, ३-२०, ४-५) रु०, ५-४००० । मुजफ्फरनगर, १—सुखदेवप्रसाद. २—ब्रह्मदेव प्रसाद जी । मुजफ्फरनगर न० नई मन्डी, १-बा० किशोरीलाल जी, २-बा० कुन्दनसिंह जी, ५-१०००० । बुढयाना, १-कुन्दनलाल जी, २-मूलचन्द जी शर्मा । थाना भवन, १-सुन्दरलाल जी, २-प्यारेलाल जी, ३—२५, ४—६) रु०, ५—१५००, ६—२४ साल। कांधला, २—मनुदेव जी शर्मा। दोघली, १—मोहनसिंह जी, २—सरदारसिंह जी, ३—२६, ४—३) रु०, ५-१५००, ६-९ साल। जानसठ, १-हरिकिशन जी, २—जैमलसिंह जी, ६—२१, ४—१०) रु०, ५—५०००, ६—३४ साल। बगड़ा, ३—४३, ४—६) रु०, ५—१0000, ६—२८ साल। बन्ट। डासौला, ७—खतौई। चौसाना। केराना। लुहारी, । एलम। मुबारकपुर। मुदहरा। जसोई। गढ़ीपुख्ता। पतियाना, ७—छपार। दूधाहेड़ी, ७—मशूरपर। मशूरपुर। खतौली। गोयला। पिपलापुरी। सथोंली। शामली। चन्द्रनगरी।

५० मेरठ, कुल ४४ समाज

मेरठ शहर, २—भैरोंप्रसाद जी वकील। खण्डोली, २—देवीसहाय जी। ढूलच्छा, २—बनारसीदास जी। वक्सर, १—साधु दामोदरदास, २—लक्ष्मीचन्द जी। सरधना, १—रघुवीरसिंह जी, २—ज्वालाप्रसाद जी, ३—४५, ४—८) रु0, ५—२५00। मेरठ सदर, २—पृथ्वीसिंह जी। फुलासदा, १—ईश्वरीप्रसाद जी, २—प्रद्युम्नसिंह जी, ३—४९, ४—९) रु0 ५—७५00। दराला फैक्टरी, १—रामसिंह जी। गलाधनी, १—सागरमल जी। हापुड़, १—हरकिशनलाल। मवाना कलां, २—शिवशर्मा जी, ६—६३, ४—३१), ५—१७0000, ६—४७ साल। डोरलीमण्डल, १—शिवदयाल जी, २—गणेशीचन्द जी। खानपुर, ३—४९, ५—२000, ६—२९ साल। फफूण्डा, ३—३0, ४—४) रु0, ५—१२000, ६—४७ साल। लाल कुड़ती ३—४७, ४—२१) रु0, ५—३000, ६ ४४ साल। गाजियाबाद, ३—१५४, ५—२0000। कपसाड, ३—२१, ६—३५ साल। बड़ौत, ३—२५, ४—८) ६—४१ साल। मुरादनगर, ३—६५, ४—१६)। सनौठ, ७—फुलावदा। परीक्षतगढ़। नगलाहरीक, ७—फुलावदा। बहूमा। करठल। पलखौआ। अनवरपुर, ७—पलखुआ। सलावा। कांबली, ७—किशनपुर बराल। सालहनगर। खेखड़ा। गढ़मुक्तेश्वर। भैसां, ७—मवानाकलां। खैरखौदा। फदौता, ७—भटियाना। चुगावां, ७—दाहा। दुराला। टटोहरी। छपरौली। पानी। तर्ताना। गुलदेवलटी। जलालाबाद। इन्द्रकोट मेरठ शहर। वागली।

५१—बुलन्दशहर कुल २६ समाज

बुलन्दशहर, २—रघुवीर सरन। पहासू, १—नारायणसिंहजी, २—रामप्रशादजी अरसिमां, १—सरदारसिंहजी, २—महावीरसिंरजी। हरदोई, २—राधेशामजी। अनूपशहर, १—दुरगाप्रशादजी, २—रघुबीरशरणजी. ३—३०, ४—९ रु०, ५—१२००० । सिकन्दराबाद, २—सुन्दरलालजी। खुरजा, बशेशर दयालजी। जेबर, १—भीखमसिंह जी। बेलूत,

३—२०, ४—१० रु०, ५—८०००, ६—३४ साल। जहांगीराबाद, ३—१८, ४—५ रु०, ५—४२०००, ६—५२ साल। निराला महीउद्दीन, ७ खुर्जा। साँखनी। साबित गढ़, ७—पहासू। भौन बहादुरनगर। धंघावली। नगलिया उदयभान, ७—अरनियाँ। लालगढ़ी, ७—छतारी। दीदा फ़ीरोज़पुर, ७—समाना। स्याना। डबाई। गोंहटी, जहाँगीरपुर। सैदपुर। ग्लावहटी। टिटोना। पुरगाँव, ७—जहाँगीराबाद। गंगागढ़, ७—पहासू। दनकौर।

५२—अलीगढ़ कुल ५६ समाज

अलीगढ़, १—पीतम लाल जी एम० एस० सी०, २—हरीशङ्कर जी नागर। अतरौली, २—राजेन्द्रजी, ६-४२ साल। इगलास, १—गौरीलाल जी, २-बनवारी लालजी, ३—४१, ४—७ रु०, ५—१२०००, ६—२२ साल। जलाली, १—टीकाराम जी, ३-३८, ४-१९ रु०, ५—२०००, ६—२० साल। महुआ, १--हेतसिंह, २—यादरामजी। मेंडू, १—रामप्रशाद जी, २—हरचरनलालजी, ३—४६, ४-१० रु०, ५—४०००, ६—२१ साल। बोरना, २—इन्द्रदत्तजी। हाथरस, १—डाक्टर किशनप्रशाद जी, २—बा० शङ्करलाल जी, ३—३५, ४-१५ रु०, ५-३०००० । विजयगढ़, १—जीवारामजी, २--रोशनलालजी, ३-५०, ४—८ रु०, ५—५०००, ६—४० साल। लोधा, २—किशनलाल मुख्त्यार। बरौठा, १—हरनामसिंहजी २—गोकलचन्दजी, ७—हरदुआगंज। सिकन्दराराउ, १--गंगाप्रशादजी, २—सुरेन्द्रनाथ जी, ३-२०, ४—१०), ५-१६०००, ६-२९ साल। मई, २—सरदार सिंह जी, ७—बुढ़ासी। मुरसान, १—मथुराप्रशादजी, २—भगवान प्रशादजी। नहौटी, २—छेदालालजी, ७—शाहपुर मुडराक। बमनोई, १—श्यामलालजी, २—चेत्रपालजी। धनोली, १—चाबूसिंह जी, २—शेरसिंहजी। सौथरा, १—लेखरामसिंह, २—नवाबसिंह। भसी, १—सुरनाथसिंह, २—प्रेमप्रकाश जी। नगौला, २—म० स्वर्ण सिंहजी। एहन, १—मंगलसैन जी, २--कश्यपदेवजी। गंगीरी, १—लालबहादुर जी, २—तोतारामजी। हन्सगिरी, १—ठा० गिरधरसिंहजी, २--श्रीपालसिंह जी। बादौ, १—रामप्रशाद जी, २—शिवचरनलाल जी। अलीगढ़, ३—५५, ४—८), ५—१५०००, ६—४२ साल। सासनी, ३—२९, ४—४)। हापुड़, ३—१६, ४—४), ५—५०००, ६—३५ साल। मथुरापुर, १—चौबसिंह जी, २—जीवनसिंह जी। वाजीतपुर, १—जगन्नाथ प्रशादजी, २—श्यामलालजी। लिहा, १—चिरञ्जीसिंह जी, २—सुखरामसिंह जी। शाहगढ़। कौड़ियागञ्ज। बरला। छत्तरपुर। सलेमपुर। पहाड़ीनगला ७—गौंड़ा काज़ियाबाद। खैर। नहौटी मुड़राक। शाहपुर। कचौर। माँडपुर, ७—दादों। हरनोट, ७—दादों। नगोला, ७—[illegible] नगर। सिकन्दर पुर, ७—बुढ़ासी। करौली। ७—हाथरस। हरदुआ गञ्ज। नगरिया। पहावटी। शमसाबाद। नगला दयाली। नगला सहरू। अलहदादपुर। हवेली गरगपुर। बरौठा। कटरा आलमपुर। बढ़ोना। बाँड। धुरी। नगली खटोली।

५३—नैनीताल, कुल ८ समाज

रामगढ़, १—हरीसिंह जी, २—दीवानसिंह जी। भिवाली, २—ला० मोहनलालजी। नैनीताल, १—अयोध्याप्रसाद जी वकील, ३—७२, ४—२४, । काशीपुर, १—शामसुन्दर

लाल जी, २—जिनेन्द्रनाथ जी मुख़्त्यार, ३—४८, ४—३०, ५—१४०००, ६—४७ वर्ष। जसपुर, १—रामचन्द्र जी, २—विष्णुदत्त जी, ३—६०, ४—१६। हलद्वानी। रामनगर। भंग बिलहौर, ७—क़िछा।

५४—अलमोड़ा, कुल २ समाज

अलमोड़ा। रानीखेत, १—बद्री प्रशाद जी, २—नन्दकिशोर जी।

५५—बिजनौर, कुल २५ समाज

चाँदपुर, १—श्रीराम जी, २—रामस्वरूप जी। नगीना, १—कस्तूरीलाल जी, २—आनन्दीप्रसाद जी। नजीबाबाद, १—बनारसीलाल जी, अयोध्याप्रसाद जी, ३—८६, ४—११, ५—१५०००, ६—४२ वर्ष। बरमपुर, २—हरगोपाल जी। बिजनौर, १—चौ० वज़ीरसिंह जी। धामपुर, १—पं० ऋषिराम जी, ३—७०, ४—१४, ५—११०००। गोहावर, २—दयाराम जी। हलदौर, १—ठाकुरदास जी, २—शिवराज जी सिद्धान्त विशारद, ३—३२, ४—७), ६—२३ वर्ष। नहटोर, १—बलवन्तसिंह जी। मुहम्मदपुर देवमल, १—सेठ नारायणसिंह जी, २—श्री घनश्यामसिंह जी। पुरैनी, १—गुमानीसिंह जी, ३—४०, ४—२६), ५—२०००, ६—२९ वर्ष। शेरकोट, १—बनवारीसिंह जी, २—परमानन्द जी। सीन्द्वार, १—कन्हैयासिंह जी, २—धीरजसिंह जी। दारानगरगंज, २—ध्यानसिंह जी फ़ोटोग्राफ़र। स्यौहारा, ३—२७, ४—३), ५—२०००, ६—२९ वर्ष। महमूदपुर, ३-४०, ४-५), ५-५,०० । बढ़ापुर, ३-२५, ४-५), ५-५५००। रेहड़। नोगल। अस्करीपुर, ७-नूरपुर। कीरतपुर। भागुवाला, ७-नांगल। गजरौला, ७-मुहम्मदपुर। जमापुर। जागीर। कांगड़ी।

५६—मुरादाबाद कुल २२ समाज

वहजोई, १—मिट्ठूलाल जी, २—आनन्द स्वरूपजी, ६—१७। गंज मुरादाबाद, १—हरीदत्त जी, २, शान्तिस्वरूप जी, ३—४८, ४—२३) ५—२००००। काँठ, १—तोताराम जी, २—फ़कीरचन्द जी। सराय तरीन हयातनगर, १—शिवचरण जी, २—मित्रानन्द ५—४००००। सिविल लाइन्स मुरादाबाद, २—मुकटविहारीलाल जी। अग्रवालपुर, २—रामस्वरूप जी, ३—२५, ४—४) ५—८००। संभल, १—वृजरत्नलाल जी, २—बनवारीलाल जी, ५—२००००। चन्दौसी, १—शामविहारीलाल जी, २—सुखानन्द जी, ३—२७, ४—४), ५—१०००। टांडा अफ़ज़ल, ३—३०, ४—११), ६—३४ वर्ष, ७—सूरजनगर। अमरोहा, ३—५७, ४—१५, ५—११०००, ६—१८ वर्ष। सरकड़ा, ७—विलारी। सिरसी। सहसपुर विलारी, ७— विलारी। हर्सनपुर। भटपुरा। ७—असमाली। सूरज नगर। मंडी धनौरा। ठाकुरद्वारा। अदलपुर। सालारपुर। रामनगर। आँवला।

५७—मथुरा, कुल १२ समाज

मथुरा, २—माताप्रसाद जी। अड़ींग, २—बद्रीप्रसाद जी। आँगई, ७—बलदेव। सुरेर। सौंख। देरी, ७—बरारी। वृन्दावन। राया। खायरा। दरवे, ७—माँठ। रामपुर। रसमै।

५८—बदायूं, कुल २० समाज

बदायूं, २—धर्मपाल जी वर्मा, ३—७०, ४—३५, ६—४७ वर्ष। नवादा मधुकर, २—उमरावसिंह जी ५—२५०० । इसलाम नगर, १-हेतसिंह जी, २-रामनारायण जी। बसोली, २—सेवाराम जी ५—५६। बिलसी, ६—३९ वर्ष। दहगावाँ । दातागंज। रोहरा। ७—सादुल्लागंज। उभियानी। हरफरी, ७—धनारी। रसौली, ७—सिरसौली। पिप्पला मुहसिमपुर, ७—हजरतपुर। मुढ़िया धुरेकी । सहसवान। सोरहा, ७—कयमहै। पूर्वी नगला। बराही, ७—सवलपुर। सिरौली, ७—इसलामनगर। लैंहढौरा। खरिया बाकरपुर।

५९—आगरा, कुल २९ समाज

आगरा, १—पृथिवीसहाय जी, २—मोहनलाल जी, ३—६००, ४—१५०, ५—८०००० । कोटला, १—राजा साहब किशनपालसिंह जी, २—रामनरायणलाल जी, ३—४० । फ़ीरोज़ाबाद, १—कुं० भान जी, २—श्री भगवान जी, ३—४०, ४—५) ५—५०००। नागलादयाली, १—रामप्रसाद जी, २—रामनाथ जी। पेंतखेड़ा, १—पं० रामप्रसाद जी, २—सन्तराम जी, ७—खदौली । केसरी, १—आलमसिंह जी, २—तोखासिंह जी। एतमादपुर, १--पं० लाखनसिंहजी। रजौरा, २—शान्तिवर्माजी। कोटला, १-मिट्ठनललाल जी, २—गुलाबचन्द जी। आर्य्य मित्र सभा आगरा, १—जगन्नाथप्रसाद जी, २—पूर्णमल जी। नामनेर आगरा सदर। फ़तहबाद। जरार, ७—बाह । टुंडला। बटेश्वर। शमसाबाद। किरावली। मजरा खांडा, ७—बरहन । कांगरौल। सवाई, ७—एतमादपुर । जगनेर। मिढ़ाखुर । बेलनगंज आगरा । धिमिनी। शमसाबाद । बाधन धैरपुरा । टोकरी। करारा। बसई।

६०—मैनपुरी, कुल २९ समाज

मैनपुरी, १—प्रेम बिहारीलाल जी, २—शम्भूदयाल जी। गढ़िया छिनकौरी, ७—बेवर। सिरसागंज, ३—५२, ४—२३, ५—१५०००, ६—३० वर्ष। भारौल, १—कामतासिंह जी, २—वनवारीलाल जी। उरावर, ७—मदनपुर। बेवर, २—साहबसिंह जी, ५-१५००, ६-१७ वर्ष। मक्खनपुर। शिकोहाबाद, ५-१७००० । भोगांव। कुसमरा। इलाबांस, ७-कुसमरा। घिरौर, १-रामगोपाल जी, १-श्रीराम जी। कोरारा, ७—तिलियानी। सौंथरा, ७—सिरसागंज। केशरी, १—महतावसिंह जी। कुसमरा सिटी (कटरा) १-मोतीलाल जी, २—जयदयाल जी। आर्य्यपुर खेड़ा। सौचई जसराना, १-महेशप्रसाद जी, २—रामसरन जी। प्राणपुर, १—बिहारीसिंहजी, २—चोखेसिंह जी। कटरा मैनपुरी।

६१—फ़र्रुखाबाद, कुल २६ समाज

फर्रुखाबाद, ३—७३, ४—१२) रु०, ५—१०००० । पिलखना। भालेपुर। कन्नौज। जलालाबाद, ३—५०, ५२०००, ६—५४ वर्ष । तेराजाकट । जसपुरापुर । रसीदाबाद, ७-सिकन्दरपुर। बिहारीपुर, ७—हसैरन। सीढ़े चकड़पुर, ७-अलीगंज । नीम करोड़ी।

लालग्राम। सिरौल, १—अनोखेलालजी, २—जयदेवजी। कमालगंज। गनौर, ७-जलालाबाद। कायमगंज, २-गोविन्दप्रसाद जी मुख्तार। फतेहगढ़, १—रामदुलारे जी, २—पुरुषोत्तमलाल जी, ६—८ साल। ज्योता, ७—खिमसेपुर। औसेर, ७—खैरनगर। रम्पुरा, २--सच्चिदानन्द जी। ७—फ़तेहगढ़। तिरखा, १-कुंवर बहादुर जी, २—जगदीशचन्द जी. ३—१६। मुहम्मदाबाद। दौलताबाद। सौरस, १—मङ्गलीप्रसाद जी, २-अटलविहारीलाल जी। शमसाबाद। मुरहटी, १—राजा धीरसिंह जी, २—बलवन्तसिंह जी।

६२—शाहजहानपुर, कुल ६ समाज

शाहजहानपुर, ३—८५, ४—१८) रु०, ५—१२०००, ६—३१ साल। पुआयां। तिलहर, ३—४२, ४—११) रु०, ५—६०००, ६—३१ साल। खुदागंज, ३—३०, ५—१०००। ढकिया बाराह, ७—ढकिया रथाह। जलालाबाद। बिलन्दपुर। गद्दीपुर, ७—सिधौली। मिर्जागंज, २-अयोध्याप्रसाद जी। बाचार, ३-३०, ४-३), ५-१०००।

६३—बरेली, कुल १७ समाज

बरेली, १—रायसाहब डा० श्यामस्वरूप जी। भूड़ बरेली, १—मुकुटविहारीलाल जी, २—प्रकाशस्वरूजी, ३—१५, ४—१५), ५—१०००, ६—२९ साल। अहमदाबाद, ७—सैंथल। आंवला। फरीदपुर, ३—३७, ४—७), ५-२८०००, ६-२८ साल। शिवपुरी, ७-टिसुवा। जकशन बरेली। अतर छड़ी, ७-आंवला। राजपुर कलां। अलीगंज। सरदार नगर, ७-भभौरा। रस्ना, ७-सैंथल। गुणगांवा। जगतपुर, ७-पुरानाशहर बरेली। नवाबगंज, २-रायविहारीलाल जी। जतौर। इटौआ शरीफ़ नगर। बिहारीपुर, ३-१०६, ४-२५), ५-३००००, ६-४९ साल।

६४—पीलीभीत, कुल ६ समाज

पीलीभीत, १-लालताप्रसाद जी। पूरनपुर, १-नत्थूमल २-पूरनमल जी, ३-३५, ४—१५), ५—९०००। बीसलपुर। घुन्घचिहाई। जहानाबाद। खाड़ेपुर, ७—बीसलपुर।

६५-इटावा, कुल ११ समाज

इटावा, १—ज्योतिस्वरूप जी, २—कान्तिस्वरूप जी। जसवन्तनगर। औरैय्या, १—गौरीशङ्कर जी, २—भजनलाल जी। लहरापुर, ७—सहामल। अजीतमल, १—लक्ष्मीदत्त जी, २—मुरलीधर जी, ३—५४, ४—१२), ५—४०००. ६—२६ साल। भरथना, १—मा० पहूपसिंह जी, २—जगदीशनारायण जी। बकेवर। बेला। पाली खुर्द। अहेरीपुर, २—श्रीराम जी। कचोर, १—सेठ छदामीलाल जी, २—कुन्दनलाल जी, ७—जसवन्तनगर।

६६—एटा, कुल २३ समाज

एटा, १—किशोरीलालजी, २—चन्द्रशेखर जी, ३—२३, ४-१०), ५—१००००, ६-३० साल। कासगंज, १—मिट्ठूलाल जी, २—हीरालाल जी, ३—७५, ४—१५), ५—४२००, ६—४९ साल। स्कीट, ३—२०, ४—५), ५—५०००, ६—३४ साल। नरदौली,

८—कादरगंज । तिरगवां, ७—जैथरा । सराय अगहत । विलसड़, ७—रायपुर । ऊँचागाँव । जलेसर । बुलकीनगर, ७—अलीगंज । निधौली कलां, १—ठा० कुलसिंह जी, २—भूदेवप्रसाद जी, ६—५० साल । जटौली, ७—पिलुवा । वेरी, ७—मारहर । सिंधावली, ७—मिरहची । मोलपुर । सिड़पुर । मोहनपुर, १—श्यामलालजी, २—अयोध्याप्रसाद जी । अलीगंज, ३-३२, ४—६), ६—३५ साल । रदौली । चौक बाजार, १—हरसुखलाल जी, २—भजनलाल जी । बरना, १—पं० हीरालाल जी, २—सूर्यदेव शर्मा । रूपधानी । घोलेश्वर ।

६७—कानपुर, कुल १७ समाज

कानपुर (मैस्टन रोड), १—बृजेन्द्रस्वरूप जी, २—कालकाप्रसाद जी, ३—१५२, ४-७५), ५-१००००० , ६-५३ साल । मूसानगर । बधनूं । सैद अलीपुर, ७—मुहम्मदपुर । सरय्यां, ७—चौबेपुर । अकबरपुर, १—लक्ष्मीनारायण जी, २-बृन्दावन जी । नवाब गंज, ३-३६, ४—५), ५—२०००, ६—१८ साल । रेल बाजार कानपुर । बलहौर, १—चतुरसैन जी, २—रामलाल जी एम० ए०, ३—१२, ४—१८), ६—१७ साल । भींभक । राम नगर । शोराजपुर । चौबेपुर । सदर बाजार कानपुर, २—विश्वम्भरनाथ जी । दिलवल, १—पं० बन्सीधर जी, २—करमचन्द जी ।

६८—जालौन, कुल ३ समाज

कालपी । कोंच, १—देबीदास जी, २—पूरनचन्दजी । उरई, २-केदारनाथजी गुप्ता, ३—२५, ४—१८), ५—११००, ६—२१ साल ।

६९—झांसी, कुल २६ समाज

झाँसी, १—फग्गूमल जी, २—गयाप्रसाद जी, ३—३८, ४—१५), ५—५०००, ६—१० साल । ललितपुर । सीपरी बाजार । नगर । मउरानीपुर । झझूनियाँ, २—गयाप्रसाद जी । धवाहकर, १—मुलायमसिंह जी, २—अच्छेलाल जी । सदर बाजार झांसी, १—जानकीप्रसाद जी, २—श्यामलाल जी । झांसी शहर, २—ओ३म्प्रकाश जी, ३—२९, ४—१४), ६—८ साल ।

७०—सीतापुर, कुल ३ समाज

सीतापुर, १—जैनारायन जी, २—धोकेलाल जी, ३—६७, ४—२२), ५—५०००, ६—३३ साल । बिसवां । पुराना सीतापुर ।

७१—इलाहाबाद, कुल १३ समाज

चौक इलाहाबाद, १—पन्नालाल जी, २—विश्वप्रकाशजी, ३—१८१, ४—६६) रु० । कटराप्रयाग, १—कामताप्रशाद जी, २—मातागुलाम सक्सेना, ३—१२५, ४—६०) रु० । रानीमण्डी प्रयाग, १रामेश्वरसिंह जी, ३—८८, ४—२२) । कीटगञ्ज प्रयाग, ५—मुन्नालाल

जी, २—चिन्तामणि जी, ६—२३ साल। फतहपुर कायस्थां, ७—मेंडारा। सादियाबाद। फूलपुर, १—सरनप्रसादजी, २—सीतारामजी, ३—२५। सिरसा। तेनी। मेजा। मसोरी। इस्माईलपुर। भरौली।

७२—बनारस, कुल ७ समाज

बनारस, १-विश्वनाथप्रसाद जी, २—रणधीरसिंह जी, ३—२००, ४—६५), ५—३००००, ६—३८ साल। शिवपुर। मुगलसराय। बनारस विश्वविद्यालय, १—बेनीमाधव-प्रसाद जी, २—विष्णु शास्त्री। भोजूवीर, २-राजेन्द्रनारायण जी, ३-३०- ४—५), ५-१०००, ६-९ साल। सुनारपुर। ७-शिवाला। मारूकपुर, १-बलवीरसिंह जी, २—भीमसिंह जी।

७३—प्रतापगढ़, कुल ४ समाज

प्रतापगढ़, १—सालिग्राम जी, २—श्रीराम जी, ३—४०, ४—६), ५—१०००, ६—४५ साल। पट्टी। कालाकाँकर। डेरवा बाज़ार।

७४—मिर्ज़ापुर, कुल ७ समाज

मिर्ज़ापुर, १—लक्ष्मीनारायण जी, २—योगेन्द्र जी, ३—४०, ४—३०), ५—२०००। रामगढ़ (सीखड़)। पञ्चराव, १—स्वामी अभयानन्द जी, २—सूर्यदत्त जी, ३—२५, ४—२२), ६-४९ साल। वर्गाही, ७-चुनार। भगरहाँ, २-रामदातारसिंह जी, ७-सीखड़ी। चुनार, १—रघुबीरराय भार्गव, २-बन्धुनाथ शर्मा। दीक्षितपुर। पूरन।

७५—आज़मगढ़, कुल ८ समाज

आज़मगढ़, २-भगवतीप्रसाद जी, ३-४०, ४-३०), ५-२०००, ६-३८ साल। मऊनाथभंजन, २-महताधृतराम जी, ३-२९, ४-३), ५-११०००, ६-२७ साल। कोपागंज, ३-२६, ४—५), ५—४०००, ६—७ साल। गोंठा, ७—दोहरीघाट। देवगाँव। घोसी बड़गाँव। भगवानपुर। नत्थूपुर।

७६—फ़तहपुर, कुल १४ समाज

फ़तहपुर, १—बा० हृदयनारायण जी, २—बा० दीनदयालू जी, ३—४१, ४—११), ५—३०००। बिन्दकी, १—जालिमसिंह, २—रामनाथ जी, ३—१५, ४—५), ५—२०००, ६—२३ साल। बहुआ, ३—२४, ४—४), ६—६ साल। अर्जुनपुर गंढ़ा, ७—किशनपुर। जहानाबाद, ३—१८, ४—३), ५—१३००। हस्वा। अमोली। असोथर, २—हृदयरायजी।

७७—लखनऊ, कुल १२ समाज

गणेशगंज लखनऊ, १—रामचन्द्र जी, २—रासविहारी जी। हसनगंज पार लखनऊ, १—विशम्भरदयाल जी, २—जयनारायण जी। सिटी लखनऊ, १—तेजनारायण जी, २—शिवप्यारा जी, ३—४३२, ४ ६०) ५—२३०००, ६ ३५ वर्ष। गोसाईगंज। महिलाबाद। सिविल लाइन्स। सैंट्रल आर्य समाज यहयागंज। निगोहां चौक लखनऊ। समेसी। नगराम। बादशाहपुर। नरही

७८—उन्नाव, कुल ८ समाज

उन्नाव, १—उमाशंकर जी १—लीलाधर जी। पुरवा। पावकपुर। असोहा। औरास। नसीरापुर, ७—बांगरमऊ। सोनेखेड़ा, ७—भरावलनगर। वैसवाड़ा, ७—विहार। भरावाँ।

७९—रायबरेली, कुल २ समाज

रायबरेली, १—नौहरयाराम जी, २—रामनारायण जी विद्यार्थी। ३—४४, ४—२५)। सलौन।

८०—बहड़ाइच, कुल ४ समाज

बहड़ायच, १—ठाकुरप्रसाद जी, २—किदारनाथ जी, ३—३६, ४—२५), ५—२०००। जुमलार्जनपुर, ७—केदारगंज। नानपारा। केसरगंज।

८१—हरदोई, कुल १७ समाज

हरदोई, २—राधेश्याम जी। शाहाबाद, १—बा० शिवनारायण जी, २—राधा किशन जी, ३—३८, ४—७) ५—५०००। वीर, ७—टड़मावा। माधोगंज। मल्लावां। ऊधरणपुर। खसौरा। पाली, १—भोजराजसिंह जी, ५—करणसिंह जी। चढ़ियां, ७—शाहाबाद। फ़तेहपुर, ७—गयन्द। कुमरियां, ७—इरयालपुर। लालपालपुर। ७—हरदोई। मौजी, ७—बहरौल साँडी, १—बा० बद्रीसिंह जी, २—बनवारीलाल जी। संडीला। चरका, १—शिवरत्न शर्मा जी, २—विक्रमसिंह जी। ७—अतरौली। बिलसरहलेर। ७—पाली।

८२—खीरी, कुल ८ समाज

गोला, १—शिवनारायण जी, २—पुरुषोत्तमदेव जी, ३—३४, ५—१००००, ६—३२ वर्ष। हसनपुर, १—द्वारकाप्रसाद जी, २—देवीरतन जी, ३—१४। लखीमपुर, २—लक्ष्मीनारायण जी। मुहम्मदी, ५—८०००, ६—२९ वर्ष। खीरी टाउन। पथेला। सर्वाङ्गपुर। बाज़ार लखीमपुर।

८३—फ़ैज़ाबाद, कुल ८ समाज

फ़ैज़ाबाद, ३—६५, ४—३३) ५—१४००००, ६—४४ वर्ष। टोडा, २—मिश्रीलाल जी, ३—१९, ४—६) ५—१००००, ६—४ वर्ष। बलरामपुर, १—परमेश्वरदयाल जी। कुम्भिया, ७—मया। भदरसा ७—भरतकुण्ड। सआदतगंज। मुबारिकपुर। कांधला।

८४—बलिया, कुल ११ समाज

बलिया, १—जगमोहनसिंह जी। २—जमनाप्रसाद जी, सीपरबिलथरा रोड, १—मुसाफरसिंह जी, २—कन्हैयालाल जी। डीह, २—बृजविहारी जी। सिसई, १—कुलदीपसिंह जी, २—भगवतराम जी। फैफना, १—शिवनारायण जी। खरसडां। सिकन्दरपुर। रतसंड। सीथर, ७—बिलथरा रोड। रेवती। गढ़वार।

८५—बाराबंकी, कुल २ समाज

रुदौली, १—ठाकुर भूपसिंह जी, २—रामचन्द्र जी । बाराबंकी ।

८६—सुलतानपुर, कुल ३ समाज

सुलतानपुर, १—देवकीप्रसाद जी, २—महादेवप्रसाद जी । कटावाँ, २—रामहर्ष सिंह जी । अमेठी राज्य ।

८७—गोंडा, कुल ४ समाज

गोंडा, २—ठाकुरप्रसादसिंह जी, ३—४०, ४—२०, ५—७०००, ६—३५ । प्रयागपुर, ७—वज़ीरगंज । बलरामपुर स्टेट ।

८७—गढ़वाल, कुल १० समाज

चाँदकोट, १—केसरसिंह जी, २—चन्दसिंह जी, ७—किमवाड़ी । दुगड्डा, ३-२९ । लैन्सडौन । बिदुलगाउँपट्टी । अजमीर पला, ७—दुगड्डा । गुणखिला, ७—लैन्सडौन । गोदी (दुगड्डा) । कोट द्वार । पौड़ी । बाखरी । भरखाल ।

८८—रामपुर, कुल २ समाज

रामपुर स्टेट, ३—२४, ४—३) रु० । रोरा कलां ।

८९—रियासत छतारी, कुल १ समाज

छतारी ।

९०—मध्य प्रदेश, कुल ५७ समाज

सागर, १—सागर, २—गोपालसिंह जी वर्मा, ३—२५, ४—१२, ५—३०००, ६—५२ साल । बीनों । जबलपुरः—जबलपुर, १—रामेश्वरराव जी । गायकवाड़, २—परमानन्द जी । गन कैरिज फैक्टरी, १—शंकरलाल जी, २—श्रीराम जी । कटनी । नरसिंहपुरः—नरसिंहपुर, ३—२३, ४—१०) रु०, ५—३०००, ५—४६ साल । पलोहार । मेचई । सिंहपुर । गाड़खाड़ा । होशंगाबादः—१—शिवराम चौधरी जी, २—विश्वशर्मा जी, ३—१४, ४—६) रु०, ५—१५०० । वर्धा । पंचमढ़ी । सुहागपुर । बछड़ा । सीगरी तुला । खरदवाः—खरदवा । नीमाड़ः—बुरहानपुर । कसरादो । नीमाड़, ३—१७, ४—८) रु०, ५—१५०००, ६—३० साल । रुस्तमपुर । सोनीः—सोनी । खंडवा । वरधा । वरारः—ईलिचपुर, २—मनिराम जी । सुलतानपुर । अमरावतीः—अमरावती, ३—२७, ४—८) रु०, ५—२००००, ६—४४ वर्ष । भवगांवः—२—काशीचरण जी, ३—गोरखप्रसाद जी । चान्दूर । मुरतजापुर । कामकगांव । अकोलाः—अकोला, १—गोविन्दसिंह जी, २—मेलाराम जी । रूपराव । दुर्गः—दुर्ग । वेसेतरा । देवरखेड़ा । कोंठल । बलासपुरः—बलासपुर । गढ़गोरी । मदारा । पैडरारोड । नागपुरः—नागपुर सदर बाजार, १—आरसी बानियां, २—कुन्दनलाल जी । कामटी । बारधाः—बारधा । पेलाकील । रामपुरः—कसडौल । रमोईः—रमोई । खानदेस । भुसावल । रामपुर । बलौदाबाजार । कढिग्रा । हारम । वैतनः—जमोई, २—गणेशदत्त जी, नेवल बाजार । किशनगढ़ । बोड़ाबारः—बोड़ाबार । बलड़ानाः—खामगाँव । आराः—आरा । रांचीः—रांची । लोहरदगा, १—मधुसूदन लाल जी, २—जमनाप्रसाद जी ।

राजस्थान के आर्य्य समाज कुल २००

अजमेर, सूजित रोड, ३-१८, ४-३१) अजमेर १—राय साहिब मिट्ठनलाल जी, २—पं० जियालाल जी, ३-२१८, ४-१००), ५-११५००० । मोजत शहर, २—सुखदेव जी । मन्डावा, २—खेमराज जी । नागोर, १—सुन्दरलाल जी । पिलानी, ३—५१, ४ १२), ६—६ साल । बयावर, १—पं० नौरंगराय जी, २—महेशदत्त जी भार्गव, ३—३०, ४—१४) ५—२५०००, ६—३५ साल । बांदी कुई, ३—३०, ४—१०) ५—२०००, ६—११ साल । साम्बर, ३—२०, ४—१०), ६—५ साल । राजगढ़, १—पं० बालदत्त जी मिश्र, २—रामस्वरूप जी वर्मा । सुजानगढ़, १—पदमराम जी । बीकानेर, १—जयभगवान जी, २—नानकचन्द जी, ३—४०, ५—३००० । गंगानगर, ३—३०, ४—१३) ५—१००० । धौलपुर, ३—२५, ४—१०) ५—१०००, ६—१९ साल । भरतपुर, १—नानकराम जी, २—सालिग्राम जी, ३—३५, ४—१८) ५—१३००० । मुसावर, ३—७६, ४—१८), ५—४००) ६—२७ साल । बल्लभगढ़, ३—४०, ४—१०) ५—१०००० । बयाना, ३—३०, ४—१०) ६—२५ साल । लश्कर नगर गवालियर, ५—७००० । गवालियर शहर, ३—८०, ४—२२) ५—५०००, ६—७ साल । गौना गवालियर, १—महाबीरसिंह जी, २—नाथू लाल जी, ३—५०, ४—२०) । मित्र सभा चन्द्रनगर, १—तोताराम जी, २—राम आधार जी, ५—१०००० । मुरार, ६—६ साल । देवास, ३—८९, ४—२१) ५—६५००, ६—९ साल । कैसराबाद, ३—३०, ४—१०) ५—५००० । कोटा, ३—३१, ४—१२) ५—१००० । उदयपुर, ३—२५, ४—१०) ५—६००० । अलवर, १—दुरगप्रसाद जी, २—२५, ४—६) ५—६००० । माँगरोल, १—रंगविहारीलाल जी, २—श्रीकृष्ण जी । इन्दौर, ३—४२, ४—१०) ५—१२०००, ६—३० साल । बड़ौदा । केरली बड़ौदा । कोल्हापुर, १—डा० बालकृष्ण जी एम० ए०, २—देसाई जी, ५—१६३००० । मलकापुर, १—राव जी गोविन्द सेठ, २—हर गनपति जी, कालाकाँकर, १—राजाराम जी पण्डे । धाउपुर, १—रामपाल सिंह जी । जयपुर, १—सेठ जयनारायण जी, २—हरिचन्द जी । ३—६८, ४—३०) ५—८००० चित्तौड़गढ़, २—लाभइन्द्रसिंह जी । मदहोशी, २—त्रिवैनीलाल जी । झालावाड़, २—सीसराम जी । भूपाल, १—डा० बद्रीप्रसाद जी, २—गौरीशंकर वर्मा, ३—४६, ४—११०) ५—३५००, ६—२४ साल । केसरगंज (अजमेर) । नगर आर्य समाज (अजमेर) । अस्तावन, ७—भरतपुर । अम्बाह, ७—ग्वालियर । आलूट, ७—देवास । आगर, ७—मालवा । आबू रोड । अकलेरा, ७—कोटा । उज्जैन । उमरी, ७—भरतपुर । उण्ड, ७—जैपुर । केकड़ी । कड़ियल । कुम्हेर, ७—भरतपुर । कनुआ, ७—नीमाड़ । कुकली, ७—धार । किशनगंज, ७—टर । कोलारस, ७—ग्वालियर । कुन्भराज, ७—ग्वालियर । किशनगढ़ । कुई, ७—भरतपुर । कोट कासिम, ७—जयपुर । कंगेदी, ७—इन्दौर करौली । कसराबाद, ७—होल्कर । खेड़ली, ५—अलवर । खववाड़ा, ७—भरतपुर । खरगौन, ७—होल्कर । खरसूद खुर्द, ७—गवालियर । खाचरौड । गाँदोली, ७—भरतपुर । गंगापुर सिटी, ७—जयपुर । गरौठ, ७—होल्कर । गौरमी, ७—गवालियर । गुन्ना, ७—

गवालियर। गंगानगर, ७—बीकानेर। गौतमपुर। चित्तौड़गढ़। चाँपा नेरा, ७—अजमेर। चित्रगुप्तगंज, ७—गवालियर। छोटी सादड़ी। छोटी खाटू, ७—मारवाड़। छेपा बड़ौद, ७—कोटा। जुहरा, ७—भरतपुर। जोधपुर सिटी। जुलानियाँ, ७—बड़वानी। जींद, ७—गवालियर। झालरा पट्टन। झूं झूं। टमकोर ७—बसाऊं। डीग, ७—भरतपुर। तजारा, ७—अलवर। दूधूवा, ७—बसाऊं। दुजार, ७—ज्ञाडवन। देवलिया कलाँ। धरमपुरी, ७—धार। नन्दराय, ७—मेवाड़। नगर, ७—मेवाड़। नदोई, ७—भरतपुर। नागौर, ७—मारवाड़। नीमच। नारायणगढ़, ७—होल्कर। नयागाँव। बीसा नगर। पुष्कर। पीलबो, ७—मारवाड़। प्यारा, ७—अजमेर।

पाली, ७—मारवाड़। पीपाड़, ७—मारवाड़। पछार, ७—गवालियर। पेचवासा, ७—अजमेर। पैन्घोर, ७—भरतपुर। पटीलाबड़, ७—इन्दौर। फूलियो, ७—शाहपूर। फुलेरा। फुलौदी, ७—मारवाड़। बागली स्टेट। बनीड़ा। बाल कृपाल नगर। बाहरीड़, ७—अलवर। लसेरी, ७—भरतपूर। वीर, ७—भरतपूर। बाड़ मीर। बालसमन्द। नजतगढ़, ७—चारू। बारा, ७—कोटा। बढ़नगर, ७—गवालियर। बांकानेर, ७—गवालियर। ब्यावरा, ७—राजगढ़। बड़वानी। बड़कचियादास। बिजयनगर। वेदला, ७—मारवाड़। भीखनगांव। भिन्ड। भनाये, ७ अजमेर। भीलवाड़ा, ७—मेवाड़। भलेसा, गवालियर। भोंडर, गवालियर। मकरींडा। मदारपूर। मकड़ाऊ, ७—गवालियर। मड़ेना। मान्हड़ गोरमी, ७—हुल्कर। मूंड। मसूदा। मुन्डावा। महुआ, ७—जैपूर। महीदपुर। मयू। महेश्वर। मानपुर। मन्डोर। मरीनो। मन्गावली। मन्दसूर, ७—गवालियर। मनावर, ७—गवालियर। महामन्दिर, ७—जोधपुर। राजगढ़, ७—अलवर। राजगढ़, ७—अजनेर। राजपुरा, ७—शाहपुर। रामगड़, ७—शेखावाटी। रिड़, ७—मारवाड़। राजदलसेर। रायसिंहपुर, ७—बीकानेर। रतलाम। लाड़ नोन, ७—मारवाड़। लक्षमणगढ़, ७—अलवर। पुष्कर, ७—गवालियर। लक्ष्मीगञ्ज, ७—गवालियर। साराधुना, ७—अजमेर। सारंगपुर, ७—देवास। सांगासी, ६—शेखावाटी। सावर, ७—अजमेर। सुजानगढ़, ७—बीकानेर। सरदार शहर, ७—बीकानेर। सूत खच्चा। गवालियर। सोमेश्वर, ७—मारवाड़। साठ खेड़ा। सनावर। सान्गली, ७—जैपुर। सेहरा। सुमसेपूर। सरवाड़। सरदारपूर। सुनेल। सीसवाली। शाहपुरा, ७—मेवाड़। शिवपुरी, ७—गवालियर। जलालपूर, ७—गवालियर। शाजापुर, ७—गवालियर। श्रीकरनपूर, ७—बीकानेर। हलीना, ७—भरतपूर। हरसोली, ७—अलवर। हिन्डेन, ७—जैपूर। म[illegible] रामगञ्ज। सकेत रोड़। भगवतगढ़। मालवा। आर्य्य नवयुवक सभा बीकानेर। खेरादा। सीसवाली। बेगोद। गरनावर। आखेरी। बूवानी। छातड़ी। पालूथान। अतून। सातन खेड़ी। रामगञ्ज मन्डी। करदी, ७—नन्दोई।

बिहार उड़ीसा कुल, १२३ समाज

पटना, १—केदारनाथ जी, २—चूड़ामणि जी वर्मा, ३—४२, ५—३०००। बिहारशरीफ, १ जनकदेव जी, २—यज्ञदत्त जी, ३—३०, ५—३०००। पुनपुन, १—

हरीनारायण जी, २—डोमसिंह जी। आर्य्य टोला, १—ओ३म प्रकाश जी, २—बाबूलाल जी, ३—१०, ५—१००० । नौबतपूर, ३—४२), ४—४), ५—८००, ६—३४ साल। खैरपूर, ३—१२, ४—६), ५—२०००, ६—२१। खगोल, ३—१००, ४—८), ५—५०००) ६—४२ साल। बान्कीपूर, ३—१००, ४—४०), ५—१०००। पटना में चिन्तामणि चक। टिलसा। हरनौत। १-चन्द्रानारायणजी, २-अवधविहारीलालजी। खड़गिया, १-सुन्दरलाल जी। मुन्गेर। जमालपूर। चान्दचौरा, १—यदुवंशीसहाय जी। गया, ३—२०, ४—१०), ६—९ साल। मदहत, १—कुंवर जी, २—नारायणलाल जी। कमला, १—जैकिशनजी, २—नरसिंहदयालू जी। नवादा। बसतीगंज। जहानाबाद। औरङ्गाबाद। सिमरी। मुजफ्फरपूर, ३—३२,५१००० । प्रताप टाण्डा, ३—१०, ५—१०००)। मझनार। सीतामढ़ी सराय। शिवहर। चनपटिया,३-१३,५-५०००। नरकटियागंज। बेतिया। महेशी। छपरा। गडरया। मटाहागंज। सोनपुर। भगवानपुर। मीरगंज, हजारीबाग। भरिया। मानभूमि। जमशेदपुर, १—एस० एल० कोछड़। दारेवा, १—पुन्नूराम जी। अकोला, २—मेलाराम जी टण्डन। शेरगाँव, २—वैद्य श्रीराम जी। ऐलीचपुर। दानापुर, ३—१०१, ५—५०००० । गुरहट्टा, ३—१२, ५—२०००)। बभूमी। काशीडीह। वरहरवाँ, ३—१८, ५—१०००)। मोतिहारी, ३—२८, ५—१०००)। चकरधरपुर। डालटेनगंज। दार्जिलिङ्ग। मोगलपुर। फतुआ। बाढ़। मोकाम। नगरनौसा। व्यापुर। हाथीटोला। बिहटा। विक्रम। बेला। टिलहारी। रघुनाथपुर। ससराम। नसीरीगंज। केसठ। गोपालगंज। हरपुरजान। लालगंज। तिलहाड़ा। आदमपूर। खरगपूर हवेली। आता सराय। बैर गनियाँ। सीवान। समस्तीपूर। अली सराय। बरबिगहा। भागलपूर। कमतौल। बेतिया। मधुबनी।

बंगाल कुल ४६ समाज

कलकत्ता कार्नवालिज स्ट्रीट, १—श्री हरगोबिन्द जी गुप्ता, २—श्री नेतानन्द जी, ५—१००००। बड़ा बाजार, सवाये लेन, १—मनमालीराव जी, २—राधाकृष्ण जी। भवानीपुर, १—ला० नन्दलाल जी, एजेण्ट सैंटरल बैंक, २—हंसराज जी हण्डा। खदर पूर, १—नन्दलाल जी गुप्त, २—धर्मपाल जी ओझा। अलीपूर, १—तुलसीदास जी। शिवपूर, १—नन्दकुमारसिंह जी, २—मेहरचन्द जी। सोलख, ६—५६ साल। हारूगंज, १—नन्दकिशोर जी, २—महरचन्द जी। मंगलाहाट, १—पन्नालाल जी वकील, २—कालीचरनसिंह जी। आन्दूल, १—सत्येन्द्रनाथ जी। खड़गपूर व मोतीपूर, १—हण्डवानी शर्मा, २—पाण्डे रंगाचार्य्य जी। जमशेदपूर, एस० एन० कोछड़। जुगसलाई, २—हरि नारायण जी झा, ७—टाटा नगर। काशीडीह, १—चौ० गयाप्रसाद, ७—शाकवि. चापु-दानी, १—लक्ष्मण जी, २—रामद्वारनसिंह जी, ७—वैद्यवाटी। गुरहट्टी, १—धनदेवसिंह जी, २—उमादत्त जी अवस्थी जी। तेलीपाड़ा, १—रामनन्दन जी, १—जयनारायण जी मास्टर। बर्द्धमान नूतनगंज, २—धनपतराय जी। आंसनसोल, २—सूर्यनारायणसिंह जी, रानीगंज। कुल्टी, १—रामलखन राव जी, २—राम बड़ाई ओझा ७—केन्दुआ। आण्डाल,

१—पुरुषोत्तम शर्मा, २ पुरुषोत्तम जी वर्मा । कान्चरापाड़ा, १—विद्यासिंह जी, २—राजगोविन्द तिवारी । आसनपूर खोलरेलगार, २—सुखलाल जी यादव । हालीनगर, २—शिवप्रसाद जी गुप्त । गौरीपूर, १—नारायणराव जी, २—रघुनाथसिंह जी, ७—काँकिनारा। १—मुकुन्दराम जी गुप्त, २—मुनेश्वरप्रसाद जी । शामनगर, १—नन्दलालसिंह जी, २—रामानन्द प्रसाद जी, ७—मामलिया । इच्छापूर, १—रामऔतार जी, २—मेलाराम जी। टीटागढ़, १—सीताराम जी, २—सूर्यनाथसिंह । कमरहट्टी, १—बाबूराम जी शर्मा, २—रामचन्द्र जी । दमकैन्ट, २—सहदेवलाल जी गुप्त । आदपूर, १—बुद्ध साहब जी, २—चन्द्रमाप्रसाद जी बड़वा । छातक, १—राजेन्द्रकुमार शर्मा । करीमगंज, १—श्रीचन्द जी। ब्राह्मणगांव, १—डा० सहिसचन्द्रदास जी । हाबाजराना, १—अविनाशचन्द्र जी गुप्त बी० ए० । गोहारी, १—रमेशचन्द्र जी इन्जीनियर । बिड़लापूर, ७—भाभा बज बज । दार्जिलिंग। सलकिया, ५६ हारूगंज, १—नन्दकिशोर जी गुप्त, २—मेहरचन्द जी श्रीमान् झरिया । मुगलसराय । होड़ा । हुगली । मयागढ़ । खुसरोपुर ।

बम्बई, कुल ६१ समाज

बम्बई गिरगाँव का काकड़वाड़ी । १—गोविन्दलाल शिवलाल जी, २—विजयशंकर, मूलशंकर जी. ३—५९५, ४—२००, ५—२५००० । गतवर्ष की आय तथा व्यय १७०००, आधीन संस्थायें रात्री पाठशाला, जेठा प्रेम जी, ट्रस्ट श्रीमती जेठाबाई संस्कृत पाठशाला । आर्य व्यायामशाला । पुस्तकालय तथा रीडिंग रूम । विक्रय पुस्तकालय । यह काम समाज के हाथ में है । आर्य समाज बम्बई की शाखायें—

मान्टुगा:—१—पं० राजेन्द्रनाथ जी, २—देवराज जी मिश्र, ३–२१४, ५–७००० । कोट:—१—एच० एस० कलनार, २—वी० के० कोटीयन, ३—४६ । कालबादेवी, स्थापना ४-९-३२ । माण्डवी, स्थापना—२०-९-३२ । चीख पोखली, ५—१०००, स्थापना—विजय दशमी १९८९ को । कोलाबा । माहिम । चिञ्च । लोयर परेल । बोना:—१—मुकुन्दलाल जी, २—मंगलसेन जी । मोगर, १—केसरीसिंह जी । सरसपुर, १—जैसिंह भाई मथुरा भाई, २—जेठालाल सिंह । अहमदाबाद । सूरत । सगवा । वरासां । बारडौली । कर्मसद । नसराया । घड़ास । मोखी । बेजजा । नरसन्डा । शुक्र तीर्थ । बुन्नोरा । नड़ियाद ऐलचपूर । टन्कार । रानपूर । हल्दरा । पूना । सीन्होर । नासिक । नवसारी । राजकोट । सोजित्रा । बोरसदा । पानकोआ । आंवला । इटौला । आन्कलाओ । जामनगर । आनन्द । पुरबन्दर । भाव नगर । उस्मानाबाद । धारूर । घोंड । परेल । नाला । सोपारा । जसई दादर । शिवरी । तुलजापूर । कोंची । अहमदनगर । खड़की । अमलसाड । बज्रेश्वरी । रत्नगिरी । विजय दुर्ग । पनवेल । लाल बाग । चिक्खलवाड़ी । अन्धेरी । खार । घाट कोपा । घनोलज । सामरिया । वालौर । भरिया । जनोदरा । गडौल । रासे । भड़ौच, १—वृजभूखन दास सी, १—अम्बालाल जी, ३—४०, ५—३५००) ।

मदरास कुल ३१ समाज

मदरास:—३—२००, ४—५०० रु०, समाज के आधीन "वाचनालय," पुस्तकालय, हिन्दी ट्रेक्ट विभाग इत्यादि हैं । विजगा पट्टम:—३—८०, ४—३० रु०, १ पुस्तकालय है ।

गन्टूर:—३—४०, समाज का मासिक आर्य्य पत्र निकलता है। मदन पुर:—३—२५, ४—१२ रु०, १ पुस्तकालय है। हिन्दुपुर:—३—१५, ४—६ रु०, एक टैम्परेंस सोसायटी है। नीलोर:—३—२०। मदरास चाइना बाज़ार:—३—१४५, ४—८० रु०। ट्रिपली केन:—३—७०, ४—३० रु०, समाज के आधीन आर्य्य वीर दल और वाचनालय है। मसूली-पट्टम। राजमन्दरी। मैसूर। तीरथ बलो। कासर गौड़। कुन्डापुर। ललित गढ़ी। मङ्गलौर:—३—१२०, ५—७०००, समाज के आधीन आर्य्य अनाथालय है। बङ्गलौर:—३—९०, एक सन्तथा समाज और ब्रह्मचर्य्य आश्रम है। चौलड:—३—२६, ४—१२ रु०। मदुरा:—मिस्टर के० ई० शर्मा ने डेढ़ एकड़ भूमि लेकर मन्दिर बनवा दिया है दयानन्द अनाथ आश्रम भी समाज ने खोला है। बेलगांव हट्टी। पत्तूर। चनफन। पटयारा। पौन-कोनम। बालघाट। मनालम। कौन्टू। पालीघाट। निबडूरम। कोटीन। कमलीईंट।

ब्रह्मा कुल ३३ समाज

रंगून, १—डा० गुरदत्त जी, २—म० जगतराम जी, ५—८००००, डी० ए० वी० स्कूल समाज के आधीन है। मटकोला, ५—१००००। मांडले, ३—६०, ४—८० रु०, ५—३६०००, समाज के आधीन आर्य्य कन्या पाठशाला, डी० ए० वी० स्कूल हिन्दु बालकों के लिये इस प्रान्त में यही एक विद्या का आश्रम है है, स्कूल भवन, बोर्डिङ्ग हाउस, बोर्डिङ्ग हाउस का भवन, आर्य्य समाज मन्दिर। मेमयू, ५—२००००, समाज के आधीन डी० ए० वी० स्कूल है। लाशू, समाज के आधीन पाठशाला है तथा समाज का मन्दिर अपना ही है। नमटू, समाज का भवन बन रहा है। मनेवा, ५—३००००, समाज के आधीन प्राइमरी स्कूल है। ३—३७, ४—२५, ५—६०००, ६—२० साल। कमलू, मन्दिर अपना नहीं स्कूल है। येउ, समाज का मन्दिर अपना है। कल्लो, समाज के आधीन पाठशाला है तथा मन्दिर अपना है। शवेबो डी० ए० वी० स्कूल है। टौन्जी, समाज के आधीन १ पाठशाला है। अरावती, ३—२२, ५—१०००। मबीन, ३—३०, ४—२१० रु० ५—५००० ६—२८ साल, समाज के आधीन डी० ए० वी० स्कूल है जिसका भवन बहुत शानदार व सुन्दर है।

नोट:—इन सब समाजों के साथ यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला है। जिन समाजों के अपने मन्दिर नहीं हैं उन्होंने किराये के मकान लेकर यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध किया हुआ है।

ब्रह्मा की अन्य समाजें

पोन्बपू। वियू। चोया। सिन्ध पट्टन। वीर। रुई। थाज़ी। होपन। कथा। मोहियन। मदगरा। कलाम। मनई। शान स्टेट। टूँची। नामा। हमीदन। मेंग। ह्निज़ान अरावती।

निज़ाम हैदराबाद, कुल ४० समाज

लातूर, १—अमरनाथ जी शर्मा। बेलीखेड़ा, १—बन्सीलाल जी २—नानकराव जी। हैदराबाद, ३—१२५, ५—१५०००, १—विनायकराव जी बैरिस्टर, २—सूरज चन्द्र

जी वकील। बादिर, १—श्री निवास जी, २—भवानीसिंह जी। गुलबर्गा, १—दत्तात्रय प्रसाद जी वकील। उंगर, १—श्यामलाल जी। निलगर, २—गंगाराम जी। बोलारम, १—लक्ष्मण जी, २—दुर्गा जी। हनेगोई, इस समाज के लिये अजमेर के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प्रकाशचन्द्र जी से ३००) रु० चन्दा हुआ है। मण्डी, २—बलदेवसिंह जी। परी, १—नारायणराव जी B. A. L. L. B. २—राओ साहब जी वकील। दोली खेड़ा। हमनाबाद। हकमा। धौल पटना। सोमनाबाद। मबायूबाद। लाहैल बुराँ बदिर। धाड़ा। सिकन्दराबाद। परली बैजनाथ। लड़म। गौड़मेटकल। नान्देड़। निज़ामाबाद। रायचोर।

नोटः—प्रान्त में ४० से अधिक समजें काम करती हैं परन्तु बाकी के नाम मालूम नहीं होसके।

३१—भारत की आर्य्य कुमार सभायें १५०

लाहौर, १—देवमित्र, २—यशपाल जी। उकाड़ा, २—सदारंग जी। होशियारपुर, २—लक्ष्मीदत्त जी। शाहपूर, २—सोमनाथ जी। यङ्ग मैन सोशल क्लब डेरा गोपीपूर, २—पी० आर० युवक विद्यार्थी। आर्य युवक समाज फ़िरोजपूर। आर्य युवक समाज लाहौर, १—डा० गोरधनलाल जी २—वेदमित्र एम० ए०। आ० कु० सभा मुलतान, २—गोरधनदास जी। आ० कु० सभा जालन्धर शहर, २—मथुरादास जी। आ० यु० सभा कराची, १—लखनलाल जी, २—वीरभान जी, ६—१४ साल। आ० कु० सभा मद्रास, १—प्यारेलाल जी, २—सत्यपाल जी, ३—४३। आ० यु० सभा थयूग। आ० यु० सभा अरत मौर, १—दुरगाप्रसाद जी, २—सन्तराम जी, स्थापना ११ वैसाख सं० १९९० वि० आ० यु० सभा शेखपूरा। आ० कु० सभा रंगून। आ० यु० सभा पूंछ। आ० यु० बल्हड़ वाले। आ० यु० सभा खड्डियाँ, १—दीवानचन्द जी, २—परशराम जी, ३—३५। कमलिया, २—ब्रह्मप्रकाश जी। आ० यु० सभा चूनियाँ, १—कुन्दनलाल जी, २—विद्याभूषण जी। आ० बाल कु० सभा हसनपूर, १—रामस्वरूप गुप्त, २—श्यामसुन्दर जी। आ० यु० सभा जामपूर, २—दुलाराम जी।

आ० यु० स० झङ्ग शहर, १—देवीदयाल जी, २—चमनलाल जी। आ० यु० स० पेशावरशहर, २—परशोत्तमलाल जी। आ० कु० स० मेलसी, २—दीवानचन्द जी। आ० कु० स० अपरा। आ० कु० स० कोट सबजल, १—ला० मङ्गतराम जी, २—जीवाराम जी। आ० कु० स० गोजरा, १—चमनलाल, २—टेकचन्द जी, ३—४०, ४—३),। आ० यु० स० फीरोज़पुर छावनी,। आ० विद्यार्थी मण्डल, स्थापना, २९ जनवरी सन् ३२ ई०। अमृतसर। आ० कु० स० गुलबर्गा (दक्खन), २—शङ्करराव जी। आ० कु० स० फीरोज़पूर शहर। आ० कु० स० सनाल्हू (मुजफ्फरगढ), १—सन्तलाल जी, २—

प्रेमप्रकाश स्थापना १६ अप्रैल। बहादुराबाद (सहारनपूर) । गुरुदत्त भवन लाहौर। आ० यु० स० लालकुर्ती बा०, १—मदनलाल जी, २—गुरुचरनदास जी। आ० कु० स० नजीबाबाद, १—मुबारिकसिंह जी, २—कैलाशसिंह जी। आ० यु० स० लुधियाना। आ० यु० स० जालन्धर। आ० यु० स० देहली। आ० यु० स० मयानी (शाहपूर)। आ० यु० स० अमृतसर, १—डा० लालचन्द जी, २—लाला रोशनलाल जी। १—भानुशेखर जी, हरिनारायण जी। सेट्ठ, १—लखनलाल जी, २—अशर्फीलाल जी। आ० कु० स० लखनऊ। २—शम्भूनाथ जी। आ० कु० स० प्रतापगढ़। आ० कु० स० चन्दौसी। आ० कु० स० विजवार (खेरी)। आ० यु० दल मुजफ्फरनगर। आ० कु० स० रामगढ़। आ० कु० स० फजाबाद, २—बद्रीसिंह जी। आ० कु० स० पुन पुन बाज़ार पटना। आ० यु० सभा मुजफ्फरपूर। आ० कु० स० देहरा प्रेमनगर। आ० कु० स० शिकारपूर। गोरखपूर। शिवपूर (बनारसपूर)। आ० मित्र सभा आगरा, १—प्रोफेसर स्वरूपसिंह जी, २—भजनलाल जी। आ० कु० स० नाभा, १—मास्टर कुन्दनलाल जी, २—मास्टर जीवन-लाल जी। आ० कु० स० हाफिज़ाबाद, १—सत्यपाल जी, २—किशनचन्द जी। आ० यु० स० अम्बाला। आ० यु० स० फगवाड़ा, १—रामरखामल जी, २—मनीलाल जी। आ० यु० स० अलावलपूर। आ० यु० स० सिविल लाइन सरगोधा, २—जगदीशराय जी। आल आ० कु० स० मुलतान। आ० यु० स० हेलां। आ० कु० स० ज़फ़रवाल। आ० यु० स० लाडवा। आ० यु० स० मुन्नीगंज प्रयाग। आ० कु० स० मथुरा। आ० कु० स० काएठ। आ० कु० स० कान्धला, १—भूदेव जी, २—देवेन्द्रकुमार जी। आ० युवक दल मुजफ्फरपूर, १—द्वारकाप्रसाद जी, २—मथुराप्रसाद जी। आ० कु० स० मुरादाबाद, १—विश्वनाथ जी त्यागी B. A. L. L. B. आ० कु० सभा भुरण्डा, १—लाला शौक़तराय जी, २—डा० सत्यपाल जी। आ० यु० स० पिंडदादनखान। आ० कु० सभा खड़गपूर, १—पं० भवनलाल जी, २—मदनगोपाल जी। आ० कु० स० बुरहानपूर, २—२—छज्जूलाल जी। आ० यु० स० मोगा (फ़ीरोज़पूर)। आ० यु० स० घरोंडा। आ० यु० स० शिमला। आ० कु० स० अमोहर। आ० यु० स० लत्रपूर (जालन्धर) आ० कु० स० खानखाना। आ० यु० स० फुल्लखां (शाहपूर) आ० यु० स० स्यालकोट। आ० कु० सभा बल्लू। नौसहरा। कोट। जड़ावाला। (मेरठ)। बदायूं। शाहगंज। (जौनपूर)। भड़ायच। अजमेर। गवालियर। पूना शहर। जैतपूर। इत्यादि।

३२—स्त्री आर्य्य समाज

स्त्री समाजें अभी तक नियम पूर्वक बहुत कम चलती हैं, सालाना चुनाव और भी कम होता है। और डायरेक्टरी के लिये स्त्री समाजों के यथार्थ विवरण के प्राप्त होने की सम्भावना तो बिलकुल ही कम है प्राय पुरुष समाज अपने वार्षिकोत्सव के साथ आर्य्य-

अध्यापका आदि के द्वारा देवियों को प्रोत्साहित करके स्त्रियों में धर्म प्रचार कराता है। और उसे स्त्री समाज का वार्षिकोत्सव कहा जाता है निसन्देह अब अनेक स्थानों पर आर्य्य देवियां भी स्वतन्त्र रूप से प्रचार का प्रबन्ध करके पुरुषों को सहयोग दे रही हैं तथापि अभी उनके लिये नियम पूर्वक प्रत्येक स्थान में साप्ताहिक सत्संग तथा वर्षिक निर्वाचन करना कठिन सी समस्या है अतः हम सारे विवरण को छोड़ कर प्रायः समाजों के नाम देने पर ही सन्तोष करते हैं। स्त्री आर्य्य समाज धार।

भारतवर्ष के आर्य-स्त्री समाजों की संख्या अनुमान २००

देहली चावड़ी बाज़ार:—२—विद्यावती देवी जी, योग्य स्त्रियों द्वारा नियम पूर्वक साप्ताहिक सत्सङ्ग में प्रचार होता है। नयाबाँस देहली:—१—पुष्पादेवी जी, २—प्रकाशवती जी। सक्खर:—भाग्यवती जी, २—बीबी कृष्णा देवी जी। प्रतापगढ़:—१—सावित्रीदेवी, २—सुशीला देवी जी। गाज़ियाबाद:—१—कृष्णकुमारी जी रूहँरवाँ। गोरखपुर:—१—शामादेवी जी। पानीपत। करनाल। अम्बाला छावनी। शिमला। लाहौर। रावलपिण्डी। स्यालकोट। जम्मू। देहरादून। अलीगढ़। बुलन्दशहर। मेरठ। आगरा। अलाहाबाद। लखनऊ। नजफ़गढ़। शाहदरा। न्यू देहली। गुड़गाँवा। सोनीपत। हिसार। करनाल। रोपड़। अम्बाला शहर। मुरन्डा। सोलन। लुध्याना। रायकोट। जगरावाँ। फ़ीरोज़पुर। फ़ीरोज़पूर छावनी। मोगा। जालन्धर। जालन्धर छावनी। होशियारपुर। हरयाना। काँगड़ा। डेरा गोपीपुर। गुरदासपूर। बटाला। डलहौज़ी। श्रीगोबिन्दपूर। सरगोधा। शाहपूर। मंयानी। भुलवाल। गुजरात। जेहलम। भवन। सदर बाज़ार रावलपिण्डी। कोहभरी। अमृतसर। लाहौर छावनी। लाहौर बच्छोवाली। लाहौर अनारकली। कसूर। शेखूपूरा। गुजराँ वाला। शर्कपूर। हाफ़िज़ाबाद। वज़ीराबाद। जामकी। केम्बलपूर। तलागंग। पेशावर। पेशावर सदर। कोहाट। बनन्। डेरा इस्माईल खाँ। कुलाची। डेरा गाज़ी खाँ। जामपूर। मुफ्ज़फ़रगढ़। मुलतान। मेलसी। मिन्ट गुमरी। सतधरा। उकाड़। झंग। मघमाना। गोजरा। लायलपूर। टीमाटेकसिंह। कमालिया। कोयटा। लोरालाई। जम्मू। श्रीनगर। कोटलो। अलीपूर सनावा। सनावा। अहमदपूर शाक़ियां। पटियाला। सक्खर। कराची। कोहाट। पूँछ। खुशबाब। स्त्री आर्य्य समाज बान्दीकुई। स्त्री आर्य्य समाज बीकानेर। स्त्री आर्य समाज अजमेर नगर।

संयुक्त प्रान्त:—चौहड़ चोर। मन्सूरी। कान्सी। सहारनपुर। गगोह। रुड़की। मुजफ्फर नगर। मेरठ। मेरठ सदर। मवाना कलां। थाना भवन। अनूप शहर। अलीगढ़ जलाला। हाथरस। नैनीताल। जसपुर। बिजनौर। नगीना। नजीबाबाद। धामपूर। चान्दपूर। बदायूं। मुरादाबाद। मथुरा। आगरा। कोटला। मैनपूरी। शाहजहानपूर। तिलहर। बरेली। फरीदपूर। पीलीभीत। इटावा। अजीतमल। फरुखाबाद। ऐटा। कासगंज। कानपूर। जालून। झांसी। सीतापुर। अलाहाबाद। बनारस। गोरखपूर। लखनऊ। फैज़ाबाद। उन्नाव। भड़ायच। हरदोई। खेड़ी। बाराबंकी।

कलकत्ता। माण्डले। रंगून। बम्बई। अजमेर। बड़ोदा। गवालियर। कोना। भरतपूर। मुंगेर। पटना। दानापूर। इत्यादि।

उच्च धार्मिक साहित्य बहुत सस्ते दामों में

नव उपनिषद् संग्रह

एक बृहदारण्यक को छोड़ कर शेष ६ उपनिषदों का

शुद्ध सरल अनुवाद ।

आचार्य श्री पं० देवेन्द्रनाथजी शास्त्री सांख्यतीर्थ
मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल सिकन्दराबाद ने अनुवाद किया।
सस्ता वैदिक साहित्य मण्डल देहली ने छपवाया है।

सर्व साधारण के हितार्थ

४२८ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल ।।।) मात्र है।
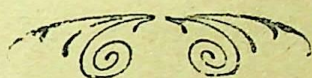
पुरुषार्थ प्रकाश

[ले०—स्व० ब्र० श्रीस्वामीनित्यानन्दजी श्रीस्वामीविश्वेश्वरानन्दजी महाराज।]

यह पुस्तक राजाधिराज शाहपुराधीश के यज्ञोपवीत के उत्सव पर श्री स्वामी महाराज ने बड़े परिश्रम से लिखी थी। इस पुस्तक का आर्य्य साहित्य में बहुत ऊंचा स्थान है। पहिले यह पुस्तक १।।) २) में मिलती थी हमने इसका केवल प्रचारार्थ बहुत सस्ता संस्करण प्रकाशित किया है। ४२४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ।।।)

मैनेजर—सस्ता साहित्य मण्डल, दरीबा कलां देहली।

विदेशों के आर्य्य समाज

आर्य्य डाइरेक्टरी कई वर्षों से प्रकाशित न होती थी, जब छपती भी थी, विदेशों का हाल इसमें या तो होता ही न था या केवल नाम मात्र होता था। उन दिनों विदेशों में काम भी आर्य्य समाज का थोड़ा था और नाम भी डाइरेक्टरी का भारत आर्य्य डाइरेक्टरी था इस वर्ष नाम

सार्व भौम आर्य्य डाईरेक्टरी

रक्खा गया है और समाचार पत्रों, तथा सभाओं के द्वारा विवरण प्राप्त करने का यत्न भी किया गया है। श्रीमती सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक से भी सहायता मिली है। श्री म० प्रभूदयाल जी जनरल सेक्रेटरी श्रीमती आ० प्र० नि० सभा बृटिश पूर्वीय अफ़रीका ने अपनी समाजों को विशेष सरक्यूलर पत्र भेजकर और कई समाजों से हाल मँगाकर भिजवाया है जिसके लिए हम आपका हार्दिक धन्यवाद देते हैं तथापि इसमें बहुत उन्नति हो सकती है और जब तक विदेशों के सारे समाजों के अधिकारी वर्ग हार्दिक सहयोग न देंगे, इसमें सफलता नहीं हो सकती। अत: हम बड़े प्रेम तथा नम्र भाव से प्रार्थना करते हैं कि जो विवरण प्रकाशित होरहा है, उसे विचारपूर्वक पढ़ा जाये और उसकी त्रुटियों वा अशुद्धियाँ से हमें सूचित किया जाये। साथही जिन समाजों या संस्थाओं का हाल दर्ज होने से रह गया हो, उसका विवरण लिखकर अथवा उस संस्था व समाज के अधिकारियों को बलपूर्वक प्रेरणा करके हमें भिजवाया जाय ताकि वह शीघ्र परिशिष्ट भाव में प्रकाशित हो और डाइरेक्टरी सम्बन्धी हमारा असन्तोष दूर हो। दूसरी प्रार्थना यह है कि वर्तमान काल में सफलता तथा उन्नति का आधार प्रापेगेंडा पर है और आर्य्य समाज के प्रोपेगण्डा का सबसे उत्तम साधन।

यह डाइरेक्टरी है कौनसा पुरुष है जिस पर आर्य्य समाज का इतना भारी काम देखकर प्रभाव नही पड़ सकता अत: आशा है इसकी हर सभा व समाज अधिक से अधिक कापिया मंगा कर और नगर नगर में इस डाइरैक्टरी को फैला कर आर्य्य समाज का गौरव बढ़ाया और इसे सर्वप्रिय बनाया जायगा। लक्ष्मण आर्य्योपदेशक,

लक्ष्मण आर्योपदेशक

नोट:—विवरण में यह बातें हों। १—नाम, २—डाकखाना, ३—रेलवे स्टेशन, ४—अधिकारियों के नाम, ५—सदस्य संख्या, ६—मासिक या वार्षिक चन्दा, ७—समाज मन्दिर की लागत, ८—अन्य सम्पत्ति, ९-नकद सरमाया, १०-कौन २ सा काम समाज के हाथ में है, ११—स्थापना की तिथि, १२—संक्षिप्त इतिहास। संस्थाओं का विवरण।

इसके पश्चात नं० १० में जो जो काम लिखे हैं। उनका हाल लिखना चाहिये, संस्था की स्थापना, अधिकारी, संख्या, आर्थिक विवरण, शिक्षा सम्बन्धी विवरण, कर्मचारी, मकान, सरमाया तथा अन्यावश्यक विषय। समाज के पुस्तकालय की पुस्तक संख्या तथा उनका मूल्य भी लिखा जावे।

१—भारतवर्ष से वैदिक मिशनरी

श्री पं० पूर्णानन्द जी १९०४ ई० में, द्वितीय बार पं० पूर्णानन्द जी १९१२ ई० में, पं० महाराणी शङ्कर जी बम्बई १९१३ में, स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी १९२१ में, पं० पूर्णानन्दजी तीसरी बार १९२२ में, प्रो० रामदेव तथा पं० सत्यव्रत जी १९२४ में, पं० चमूपति जी एम० ए० १९२५ में, पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार १९२६ में, बम्बई के पं० बालकृष्ण तथा पं० मनी-शङ्कर जी १९२७ में, पं० सत्यपाल जी १९२९ में पधारे। श्री डा० भगतराम जी वैदिक मिशनरी ने भी बड़ा प्रचार किया और कई समाज स्थापन किये। ठा० प्रवीणसिंह जी पं० रवीदत्त जी और माथुर शर्मा जी ने भी यहां पहुँच कर बहुत प्रचार किया। मैहता जैमिनी जी वैदिक मिशनरी ने १९३३ में पधारकर बड़े ज़ोर से प्रचार किया जिससे अत्यन्त उत्तम प्रभाव पड़ा। मैहता जी दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी महोत्सव के कारण भारतवर्ष म लौट आये पर पूर्वीय अफ़रीका वालों से आग्रह पूर्वक बुलावा आरहा है और वह १२ नवम्बर को बम्बई से जहाज़ पर सवार होंगे।

२—श्रीमती आर्य्य प्र० नि० सभा पूर्वीय अफ़रीका

उद्देश्यः—केनिया कालोनी, युगंडा, ज़ंजिबार, टांगानीका आदि में वैदिक धर्म प्रचार करना। (२) वैदिक धर्म की उन्नति के साधन सोचना तथा उनको क्रियात्मक रूप में लाना। (३) वैदिक शिक्षा को पुनर्जीवित करने तथा वैदिक धर्म सम्बन्धी प्रापेगेंडा के लिये ट्रैक्ट, पत्र और पुस्तक प्रकाशित करना। (४) धर्म और साइन्स सम्बन्धी पुस्तकों के पुस्तकालय खोलना। (५) समाजों की रक्षा और देख रेख तथा नवीन समाजों की स्थापना इत्यादि।

मु० कार्य्यालयः—आर्य्य समाज नैरोबी के समाज मन्दिर में है।

अधिकारीः—प्रधान श्री देवीदास जी पुरी, डि० प्र० बी० आर० शर्मा जी, उ० प्र० धृतराम जी, प्रधान मन्त्री प्रभुदयाल जी, सहकारी मन्त्री देवराज जी, कोषाध्यक्ष, रामरखा मल जी, ५ मेम्बर अन्तरङ्ग सभा के।

कामः—पूर्वीय अफ़रीका में वेद प्रचार तथा श्रद्धानन्द ब्रह्मचारी आश्रम।

इस वर्ष का बजट ३५००० शि० पास हुआ है।

उपदेशकः—श्री० पूर्णचन्द राय जी, डी० वी० डेसाई एम० ए० प्रिन्सीपल, कृष्णदेव जी कपल बी० ए०, म० बद्रीनाथ जी, म० ईश्वरदास जी आर्य्य मुनी जी प्रिंसिपल।

३—पूर्वीय अफ्रीका के आर्य्य समाज

१—नैरोबी, रेलवे स्टेशन खासः—मेम्बर १२०, मासिक चन्दा २५० शिलिंग, ३ अगस्त १९०३ को स्थापित हुआ।

अधिकारीः—छोटा भाई बी० पटेल प्रधान, भगतराम जी भल्ला उपप्रधान, राम रखा जी मन्त्री, हंसराज शर्मा जी सहकारी मन्त्री, अनन्तराम जी कोषाध्यक्ष, सालिग राम जी सेठी स्टोर कीपर, जगदीश मित्र वाली जी पुस्तकाध्यक्ष, रामप्रसाद जयदेव शर्मा जी सहायक कोषाध्यक्ष।

सम्पत्तिः—आर्य्य समाज की लागत ८००००, पुत्री पाठशाला की ५००००, रेस्ट हौस ३००००, फ़र्नीचर २००० शिलिंग, वार्षिकोत्सव पर ६००० शि० दान आया।

संक्षिप्त इतिहास—पूर्वीय अफ्रीका में नैरोवी सबसे बड़ा तथा प्रमुख समाज है। सबसे पहिले यही समाज बना, श्री० बद्रीनाथ जी, मथुरादास जी आर्य्य, पं० बैसाखी राम जी, भगतराम जी शर्मा आदि महानुभावों ने बड़े परिश्रम से और तप से समाज को प्रफुल्लित किया, जिसके लिये भावी सन्तान सदा उनकी कृतज्ञ रहेगी और कार्य्य कर्ता उनके उदाहरण से शिक्षा तथा पथ प्रदर्शन पाते रहेंगे।

वेद प्रचारः—अपने स्थापना दिवस से ही यह समाज भारतवर्ष से प्रसिद्ध व्याख्याताओं को बुलाकर और अनेक प्रकार के व्यय अपने जिम्मे लेकर इस देश में प्रचार करता आरहा है।

दानः—प्रचार के अतिरिक्त यहाँ के पुरुषार्थी भाई धन एकत्र करके लाखों रुपया भारतवर्ष की प्रसिद्ध संस्थाओं अर्थात् गुरुकुल कांगड़ी, डी० ए० वी० कालिज लाहौर गुरुकुल वृन्दाबन कन्या महाविद्यालय जालन्धर, गुरुकुल सूपा, तथा लुधियाना, लाहौर, रावलपिंडी, भेरा के आर्य्य स्कूलों, महाविद्यालय ज्वालापुर, आर्य्य कुमार परिषद बड़ौदा इत्यादि की सहायता में दे चुके हैं। भारतवर्ष में किसी भी सामाजिक काम के लिये अपील हुई तो यहाँ के भाइयों ने उस पर पूरा ध्यान दिया।

वर्तमान अवस्थाः—पूर्व की अपेक्षा अब कुछ शिथिलता है २०० से अधिक के स्थान में अब केवल १२० मेम्बर हैं इसलिये कि कई आर्य्य पुरुष Retrenchment के कारण अपने देश में आने पर वाधित हुए हैं।

मिश्रितः—७ अगस्त १९३२ को मैहता जैमुनी जी के सभापतित्व में अछूत उद्धार कान्फ्रेन्स हुई। ४ से ७ अगस्त तक वार्षिकोत्सव हुआ।

२—कसूमूः—विक्टोरिया झील के किनारेः—१९१० में पं० पूर्णानन्द जी के आने पर ला० मथरा दासजी खजानची के प्रयत्न से जारी हुई। मेम्बर २० मासिक चन्दा ४५ शि०

अधिकारीः—म० दुर्गादास जी सौदागर प्रधान, म० ईश्वर दास जी विशारद आ० सेक्रेटरी। रामकरण जीं बुकिङ्ग क्लर्क कोषाध्यक्ष, सरदारी लाल जी भसीन सौदागर स्टोर कीपर तथा पुस्तकाध्यक्ष, धृतराम तथा तुलसीराम जी अन्तरङ्ग मेम्बर।

सम्पत्तिः—कुल ३०००० शि०। मंदर का बुनियादी पत्थर रखा गया है इमारत पूरी नहीं बनो, श्रद्धानन्द आश्रम (विश्राम भवन) पुत्री पाठशाला का मकान, कर्मचारियों के मकान आदि मन्दिर से सम्बन्ध रखने वाली सम्पत्ति है।

आश्रम और स्कूल की भूमिः—९९ वर्ष के ठेके पर है और रैज़ीडैन्शल साट

(Residencial plot) का समाज मालिक है। ३ दुकानें और ९ रिहायशी कमरे व रसोई घर बने हुए हैं। आज कल की तंगी के दिनों में १५० शि० किराया आता है पहिले ५-६ सौ तक आता रहा है।

वार्षिकोत्सव:—बड़े दिनों की छुट्टियों में होता है। गत १९३२ दिसम्बर के उत्सव पर ३००० शि० चन्दा हुआ, इस समाज ने गुरुकुल कांगड़ी, कन्या महाविद्यालय जालन्धर आदि को अबतक १ लाख शिलिङ्ग दिया होगा। धन्यवाद:—इस समाज की इस उन्नत अवस्था का श्रेय मि० फ़कीर चन्द सेयर भू०पू० स्टेशन मास्टर कसूमो (हाल भिवानी) तथा तुलसीरामजी दोसाज असिस्टैंट स्टेशन मास्टर कसूमो (हाल Chief goods clerk नैरोबी) को है आपके पुरुषार्थ के फल स्वरूप में ही समाज को स्थिरता और सुयश प्राप्त हुआ है।

३—नक्रूरू:—रेलवे स्टेशन तथा बन्दरगाह ख़ास

सदस्य संख्या २९, मासिक चन्दा ४७ शि०।

अधिकारी, श्री डी० वी० पटेल प्रधान, एल० आर० शर्मा उपप्रधान, रामगोपाल जी सेक्रेटरी, सी० एच० पटेल, सहायक मन्त्री, एफ० सी० जोशी कोषाध्यक्ष, ५ मेम्बर अन्त-रङ्ग सभा के। मन्दिर—कुल लागत ११७९७ शि०। वार्षिकोत्सव, जून, १९३३ में हुआ, चन्दा ३५००। आधार शिला ९ अगस्त १९३१ को, उद्‌घाटन, २७ नवम्बर १९३२ को।

संक्षिप्त इतिहास:—अनेक ऐतिहासिक घटनाओं के कारण नकूरू को कुरुक्षेत्र कहते हैं। म० नत्थूराम जी जोशी ने बड़े परिश्रम से धन एकत्र करके समाज-मन्दिर बनवाया है। श्रीयुत देवराज विद्यासागर, सोहनलाल डी० एस० पटेल, एच० वी० शर्मा ने बड़े भारी विरोध के होते हुए भी पुत्री पाठशाला खोल कर समाज का गौरव इस नगर में बढ़ा दिया है।

४—ऐलडोरेट, रे० स्टेशन खास-बन्दर मम्बासा

सदस्य संख्या २१, मासिक चन्दा २८ शि०। अधिकारी, प्रधान श्री संजीवन, राजा जी मन्त्री, म० रामजीदास जी कोषाध्यक्ष, देशराज जी सहकारी मन्त्री, अमरचन्द जी स्टोर कीपर तथा पुस्तकाध्यक्ष, नानकचन्द जी, अन्तरङ्ग मैं० मि० डी० आर० भल्ला पी० एल० जी सेठ, श्रीराम जी कोरा, किशोरीलाल जी तथा आर० एन० सहाय जी।

सम्पत्ति:—२ प्लाट भूमि—एक पर मन्दिर बन रहा है। १०००० शि० कुल लागत होगी। २००० शि० नक़द और २००० का इमारती सामान है। कोशिश होरही है कि और धन एकत्र करके इस वर्ष मन्दिर को पूरा किया जाय।

मिश्रित:—यह समाज जनरवी १९२७ से क़ायम हुआ। आ० स० मन्दिर की आधारशिला श्री मेहता जैमिनी जी प्रसिद्ध वैदिक मिशनरी द्वारा १४ मई १९३३ को रखी गई।

५—ज़ंज़िबार—ज़ंज़िबार द्वीप का ख़ास बन्दर

मेम्बर ३२ मासिक चन्दा ३०) रुपया। १९०६ ई० में क़ायम हुई।

अधिकारी:—विठल जी भीम जी प्रधान, एन० आर० दुबे जी उपप्रधान, आर०

पी० महता जी मन्त्री, एन० के० नागर जी कोषाध्यक्ष, पी० के० सोनीजी कोषाध्यक्ष, जी०टी० प्रताप जी आडीटर, (अं० मैं०) वी० एस० पटेल, जी० एस० रुधनी, नरैदम जी, वेल जी विसराय, तथा आर० जी० दुबे।

ट्रस्टी:—जी० एच० पटेल, के० एच० हिमतपुर, केशव जी भान जी तथा सी० पी० जानी।

आर्थिक विवरण:—मकान नं० १७७, २५ साल के लिये ७५०) रुपया वार्षिक किराया पर लिया है। ४६००) रुपया इसकी मरम्मत पर लगा है। गत वार्षिकोत्सव पर समाज की सिलवर जिबली मनाई गई ७०००) रुपया चन्दा हुआ। समाज-मन्दिर की कुल लागत २००००) रुपया है। कुल सम्पत्ति ३००००) रुपया की। मन्दिर में अतिथि-गृह भी पृथक बना हुआ है।

मिश्रित :—सम्पत्ति आदि की दृष्टि से बम्बई प्र० नि० सभा से और प्रचारादि काम के लिहाज़ से आ० प्र० नि० स० पू० अफ्रीका से सम्बन्ध है। समाज ने बहुत शुद्धियां भी की हैं। यहां के कई बालक गु० कु० कांगड़ी में विद्याध्ययन करते हैं।

६—दारे सलाम—रे० स्टे० तथा बन्दरगाह खास

सदस्य संख्या ४०, मासिक चन्दा १०० शि०। अधिकारी, प्रधान म० ऋषि राम शर्मा, उपप्रधान गोविन्द जी पुरुषोत्तम जानी, मन्त्री, रामजी भाई के० गणात्रा, उपमन्त्री भक्तराम जी कोषाध्यक्ष, नारायणदत्त जी द्वारकादास, पुस्तकाध्यक्ष भीम जी मकन, (अ० मे०) कान जी भाई जे० राम, गोविन्द भाई नान जी, रामचन्द्र जी मैहता।

सम्पत्तिः—(१) मन्दिर की लागत ३०००० शि० (२) फ्रीहोल्ड प्लाट तथा सब भवनादि मिलाकर १ लाख कुल सम्पत्ति है। इस समाज की स्थापना १९६७ वि० (१९११ ई०) में हुई।

मिश्रित—(१) आर्य समाज मन्दिर १९८२ वि० (१९२६ ई०) में तय्यार हुआ। आधारशिला उस समय के प्रधान पं० शालिग्राम शर्मा जी के द्वारा रखी गई। (२) मन्दिर में नित्य सायं प्रातः दोनों काल संध्या हवन होता है। (३) साप्ताहिक सत्संग शनिवार को सायंकाल में होते हैं। सामाजिक पुरुष प्रचार की बड़ी भारी आवश्यकता का अनुभव करके विद्वान् उपदेशक आर्यावर्त से बुलाने का विचार करते हैं।

७—मुबाली:—यह नगर कुसुमू और कम्पाला के मध्य में है। स्थापना १२ मई १९२८ को हुई। सदस्य संख्या ३० है। समाज मन्दिर बना हुआ है। पाठशाला भी है।

८—मम्बासा:—केनिया कालोनी का बड़ा प्रसिद्ध बन्दरगाह है। बाबूराम जी मंत्री हैं श्रीरामजी एडवोकेट भी बड़े उत्साह से समाज का काम करते हैं। श्रद्धानन्द ब्रह्मचारी आश्रम अच्छी तरह चल रहा है।

९—कम्पाला:—विक्टोरिया झीलसे ६ मील, यूगंडा प्रान्तका बड़ा व्यापारी नगर है।

स्थापना—पं० पूर्णानन्द जी के आने पर १९०८ में स्थापना हुई और कुछ काल पीछे बन्द हुई फिर १९१२ में जारी हुई। यूरोपियन महासमर के प्रभाव से प्रचार कार्य

बन्द सा हो गया पर शीघ्र ही भारत से वैदिक मिशनरी पहुंचने पर चेत गया।

मन्दिर—१९२६ में ५१५३३ शि० की लागत से बड़ा शानदार मन्दिर बना। श्री पं० सुन्दरसिंह जी कालसी ने मन्दिर की तमाम भूमि दान दी, श्री नानजी कालीदास मेहता ने १० हज़ार शि० दान दिया। समाज के ५० सभासद् हैं।

१०—मचाकोस आर्य समाज।

११—जंजा (यूगंडा) आर्य समाज, देसाई जी एम० ए० बड़े पुरुषार्थी कार्य कर्ता हैं।

१२—लोगाजी (यूगंडा) सेठ नानजी कालीदास जी विशेष दिलचस्पी लेते हैं।

१३—ट्रोरू आर्य समाज।

१४—वटोरा आर्य समाज।

१५—नैरोबी (कालिज सैकशन), प्रधान सुन्दरसिंह जी, मंत्री प्यारेलाल जी। अनन्तराम एन्ड कम्पनी ने २५०० शि० की लायब्रेरी, मा० कस्तूरीसिंह जी ने ५००० शि० के मिशनरी क्वार्टर, मुन्शीराम जी ठेकेदार ने १३०० शि०, मैसर्ज़ मुन्शीराम एन्ड को० ने ९०० शि० इत्यादि वार्षिकोत्सव पर दान दिया जो २९-३० जुलाई १९३३ को हुआ।

४—आर्य्य स्त्री समाज

१—नैरोबी:—श्रीमती भगवन्ती जी, ध० प० म० जी० डी० प्रधान, श्रीमती दमयन्ती जी ध० प० महा० बी० आर० आर्य्य शर्मा उप प्रधान, विद्यावती जी, ध० प० महा० जे० डी० खन्ना, मन्त्री, श्रीमती सरस्वती जी, ध० प० महाशय रामरखा जी, उपमन्त्री, श्रीमती सोमावती जी, ध० प० महा० जे० डी० शर्मा।

मेम्बर:—६० मासिक चन्दा ६० शिलिंग, गत वार्षिक उत्सव पर ३०० शिलिंग दान आया।

साप्ताहिक सत्संग प्रति मङ्गलवार को होता है।

२—मम्बासा—आर्य स्त्री समाज भी नियम पूर्वक होता है।

५—आर्य्य युवक सभा

१—नैरोबी:—आर्य्य युवक सभा १९१८ ई० से क़ायम है। अब तक इसके ५ वार्षिकोत्सव हुए हैं। प्रो० रामदेव जी के आने पर इस सभा ने १००० शिलिंग गुरुकुल में कमरा बनवाने के लिये उनकी भेंट किया था।

६—आर्य्य सामाजिक संस्था

१—नैरोबी:—आर्य्य पुत्री पाठशाला, मैनेजर गोवर्धनलाल जी, प्रिन्सिपल, आर्य्य मुनि वर्मा, वाइस प्रिन्सिपल, जे० डी० कपूर बी० ए० एल-एल० बी० अध्यापक, वासा जी, स्त्री अध्यापिका मिस्ट्रैस उपाध्याय, मि० गोपालदास जी कपूर, मि० दौलतराम जी संख्या, पंजाबी और गुजराती दोनों विभाग में १३५ कन्या हैं।

शिक्षा:—भारतवर्षीय कन्या महाविद्यालय जालन्धर से भी उच्च शिक्षा का प्रबन्ध है। स्कूल बड़ी सफलतापूर्वक चल रहा है, पूर्वीय अफ्रीका की यह सबसे बड़ी अधिक प्रभावशाली तथा प्रशंसित संस्था है। कसीदा, मोज़े बुनना, सिलाई, बाजा पाक शास्त्र तथा अन्य घरेलू आवश्यक काम काज बड़े उच्च पैमाने पर सिखाया जाता है और लाज़मी भी है। धर्म शिक्षा पर बड़ा बल दिया जाता है, १९१० ई० में इसकी स्थापना हुई। परीक्षा परिणाम प्रति वर्ष अच्छे रहते हैं। एक कन्या ने यू० पी० की विनोदिनी परीक्षा में प्रथम स्थान पाया है।

२—आर्य्य समाज पुस्तकालय नैरोबी:—इसमें हिन्दी, अंग्रेज़ी, उर्दू, गुजराती, गुरमुखी भाषाओं में ८००० शिलिंग की २००० पुस्तकें हैं।

३—वाचनालय आ० स० नैरोबी:—इसमें भारतवर्ष के बहुत से दैनिक साप्ताहिक तथा मासिक पत्र आते हैं।

४—विश्राम गृह नैरोबी:—आर्य्य समाज नैरोबी के दोमंज़िलों के विश्राम गृह में १३ कमरे हैं, किसी भी मत का यात्री ठहर सकता है, किराया आदि कुछ नहीं, पानी, रोशनी का सब उत्तम प्रबन्ध है।

५—आर्य्य बीरदल नैराबी:—१९२८ में क़ायम हुआ। ४० मेम्बर हैं, इनका आर्य्य बैण्ड बड़ा प्रशंसनीय है।

६—हिन्दी रात्रि पाठशाला नैरोबी:—१ जुलाई १९३३ से जारी है।

७—श्रद्धानन्द आश्रम कसूमू:—७कमरे हैं और रसोईघर तथा सहन। इनमें से एक कमरा लाइब्रेरी के लिये है। इसमें किसी भी मत वा जाति के लोग ठहर सकते हैं। ४०००० शि० से १९२९ में बना।

८—अर्य्य पुत्री पाठशाला कसूमू स्थापना:—१९ अगस्त १९२४ से जारी है। मकान की आधार शिला अप्रैल १९२४ में म० फ़क़ीरचन्द जी मेयर के हाथ से रक्खी गई थी। और २५ दिसम्बर १९२५ को प्रो० रामदेवजी द्वारा इसका उदघाटन हुआ था। ३०००० शि० मकान पर और २०००० शि० अध्यापक गृहादि पर लगा है।

संख्या:—गुजराती विभाग में ८५ और पंजाबी में २५ अर्थात् कुल ११० कन्या हैं, इनमें ३ बोरा मुसलमान हैं। कर्मचारी, ३—गुजराती अध्यापिका, गुजराती मास्टर और पंजाबी। मास्टर श्री जोबन पुत्रा जी व्यवस्थापक हैं।

९—आर्य्य पुत्री पाठशाला नकूरू:—मई १९३३ में जारी हुई। १८ कन्या हैं। ९ गुजराती ९ पञ्जाबी। मन्दिर के २ कमरों में पढ़ाई होती है एक वैतनिक अध्यापक और गुजराती विभाग के लिये १ अवैतनिक अध्यापिका है।

१०—आर्य्य पु० पा० ज़ंज़िबार:—वार्षिक व्यय ४०००) रु०। १९१८ से जारी है। अधिक संख्या खोजादि जातियों की कन्याओं की है ८० तक हैं संध्या भजनादि यह सब अधिक श्रद्धा से सीखती हैं।

११—आर्य्य समाज लाइब्रेरी ज़ंज़िबार।२५०) रु० वार्षिक व्यय है।

१२—देव कुंवर आर्य्य कन्या पा० दारे इस्लाम:—आश्विन शु० त्रयोदशी मङ्गल, १९८६ वि० (१९-१०-२९) से जारी है। अगस्त १९३३ तक मन्दिर में लगती रही परन्तु कन्याओं की संख्या बढ़कर १५० हो गई तो दो एकड़ Free hold ज़मीन का टुकड़ा खरीद कर पाठशाला का जुदा भवन बनवाया गया। २० हज़ार शि० भूमि पर ४० हज़ार इमारत पर लगा। आधार शिला श्री गोविन्द जी पुरुषोत्तम जानी के हाथों से रखी गई और उद्घाटन श्री मैहता जैमिनी जी द्वारा १-७-३३ को हुआ। शिक्षा—जाति व मत के भेद भाव के बिना सब कन्याएँ दाखिल होती हैं। गुजराती माध्यम है, हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी, धार्मिक शिक्षा, सीना पिरोना, बुनना, क्रोसिये संगीत, व्यायामादि सब की शिक्षा का प्रबन्ध है।

१३—आर्य्य सेवा समिति दारे सलाम:—२०-१०-३१ को काइम हुई। पीड़ितों की सहायता, अनाथों, रोगियों को अन्न औषधि आदि देना, निराश्रयों को उनके देश में पहुँचाने की व्यवस्था करना आदि काम कर रही है।

१४—व्यायाम शाला दारे सलाम:—आर्य्य सेवा समिति की ओर से खोली गई है जिससे हिन्दू जनता बहुत लाभ उठाती है।

१५—आर्य्य विश्राम गृह:—यह काम भी आर्य्य सेवा समिति के विचाराधीन है जो शीघ्र पूरा होगा और अतिथियों को ठहरने आदि का आराम मिलेगा।

१६—श्रद्धानन्द वाचनालय दारे सलाम:—गुजराती, हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के ११ साप्ताहिक तथा मासिक पत्र आते हैं।

१७—आर्य्य पाठशाला मुबाली:—१८—आ० स० पुस्तकालय कम्बाला—अनुमान ४०० शि० के पुस्तक हैं।

१८—श्रद्धानन्द ब्रह्मचारी आश्रम:—आ० प्र० नि० स० ब्रिटिश पूर्वीय अफ़रीका के आधीन—प्रबन्ध कर्तृ सभा के प्रधान तुलसीराम जी दो साज, छोटा भाई जी पटेल सेक्रेटरी, म० रामरखा जी कोषाध्यक्ष ४ अन्य मेम्बर हैं।

२—दक्षिण अफ्रीका

१—भारतवर्ष से वैदिक मिशनरी।

१—श्री भाई परमानन्द जी M. A., ५ अगस्त १९०५ को दरबन पहुंचे और थोड़े ही समय में आपने विद्वत्तापूर्ण प्रचार से काम के लिये मैदान साफ़ कर दिया।

२—श्री स्वामी शङ्करानन्द जी, २५ सितम्बर १९०९ को दरबन पहुंचे। वैदिक धर्म प्रचार सम्बन्धी अनेक काम करके १९१२ में लौटे।

३—स्वामी भवानीदयाल जी, १९१४ में दक्षिण अफ्रीका में पधारे। हिन्दी तथा वैदिक धर्म प्रचार का काम करते रहे। १० अप्रैल १९२७ को प्रवासी भवन का उद्घाटन

करते हुए आपने संन्यास लिया। सन् १९२८ से १९३० तक आप सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रचार करते रहे।

४—श्री ईश्वरदत्त जी स्नातक, १९२१ में पधारे और अपने विद्वत्तापूर्ण भाषणों रामायण की कथा और राममूर्त्ति के खेलों आदि के द्वारा आपने आर्य समाज का नाम रौशन किया।

५—ठाकुर प्रवीण सिंह जी २३ फर्वरी १९२२ से १५ जुलाई तक, आपने इस देश के मुख्य मुख्य स्थानों में प्रचार किया। दूसरी बार १९ मई १९२७ को आप रामायण सभा की हिन्दी पाठशाला के अध्यापक के रूप में आए और भजनों द्वारा उत्सवों पर प्रचार भी करते रहे।

६—श्री डा० भगतराम जी, ३ फ़रवरी १९२९ को पूर्वीय अफ़्रीका से पधारे आप ने बहुत से समाज क़ायम किए। आपकी धर्मपत्नी के द्वारा स्त्रियों में भी प्रचार हुआ।

२—आर्य्य प्रतिनिधि सभा नेटाल

स्थापना:—१६ से २२ फ़रवरी, १९२५ तक दक्षिण अफ़्रीका के आर्य्य पुरुषों ने दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव बड़े उत्साह से लेडीस्मिथ में मनाया और इसी अवसर पर दक्षिण अफ़्रीका में सामाजिक काम को संगठित रूप से करने के लिये आर्य्य प्रतिनिधि सभा, नेटाल की स्थापना हुई।

सार्वदेशिक सभा देहली से सम्बन्ध:—इसी संघ शक्ति को और भी दृढ़ करने के लिये नेटाल सभा का २३ अक्तूबर १९२७ को सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली से सम्बन्ध होगया।

मिश्रित:—जिन समाजों तथा संस्थाओं का वृत्तान्त नीचे दिया जाता है वह इस सभा में सम्मिलित हैं। इनकी कुल सदस्य संख्या ४८० और सहायक सदस्य संख्या २५० है।

नोट:—इस प्रांत में पहिले बहुत सी सभायें भिन्न-भिन्न नामों से जारी हुईं पीछे कई नाम बदले गए पर अनेक सभायें उन्हीं नामों से काम करती हैं और सभा में सम्मिलित नहीं। इसलिये आर्य सदस्यों की पूरी संख्या का पता लग नहीं सकता तथापि आर्य समाज का प्रभाव दक्षिण अफरीका में प्रायः सारी हिंदू जनता पर है और आशा है कि शीघ्र ही सब अन्य सभाओं का नाम आर्य समाज हो जायगा।

३—दक्षिण अफ्रीका के आर्य समाज।

१—लेडीस्मिथ:—दरबन से ७२९ मील दूर दक्षिण को। १६ अप्रैल १९१६ को नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई, ३ अगस्त १९१९ को नाम बदल कर आर्य समाज रखा गया।

२—होरीवासपुर:—म० रघुनाथसिंह इस समाज के जीवन आधार हैं।

३—पेसेसलेयर:—मेरिट्सवर्ग से ७ मील, १९२२ ई० में नागरी हितैषिणी सभा जारी हुई। अप्रैल १९२९ में डा० भगतराम जी के आने पर आर्य समाज नाम हुआ। ३० मेम्बर हैं।

४—केटोमेनर:—दरवन से ४ मील। २० सितम्बर १९२२ को सत्य वैदिक सभा स्थापित हुई। २४ फरवरी १९२९ को डा० भगतराम जी के आने पर आर्य समाज नाम हुआ।

५—दरबन:—नेटाल प्रान्त का सब से अच्छा नगर तथा बड़ा बन्दर। फरवरी १९२७ में स्थापना हुई। ९० मेम्बर हैं।

६—सिडनम:—दरबन से ३ मील, २९ फरवरी १९२९ को समाज कायम हुआ। ३० इसके मेम्बर हैं।

७—मेरिट्सवर्ग:—वेद धर्म सभा, (नेटाल की राजधानी दरबन से ६० मील) १९०४ में हिन्दू यंगमैन्स ऐसोसीएशन कायम हुई। १० अप्रैल १९०८ को वेद धर्म सभा नाम रखा गया।

८—पेटरञ्ज:—१ मई १९२९ को स्थापित। २० सदस्य। छोटा सा समाज भवन बन गया है।

१०—डे० हौसर:—दरवन से २४६ मील उत्तर को ५ मई १९२९ को स्थापना हुई। २५ सदस्य। रामसुन्दर जी पाठक इसके मुख्य कार्यकर्त्ता हैं।

११—स्टागर:—दरबन से ५२ मील ईषाण कोण को २३ जून १९२९ ई० को आर्य्य समाज की स्थापना हुई।

१२—पोर्ट शेयस्तन:—दरबन से ७९ मील ईषाण कोण को। १४ जुलाई १९२९ को आर्य्य समाज की स्थापना हुई।

४—स्त्री आर्य्य समाज

१—मेरिट् सवर्ग:—११ अगस्त, १९२९ को श्रीमती आर० पी० महाराज के उद्योग से क़ायम हुआ। ३० सदस्य हैं।

५—आर्य युवक सभा।

१—आर्य युवक सभा दरबन, १२ अप्रैल १९१२ को म० सत्यदेव जी ने आर्य बाल मित्र मण्डल की स्थापना की। २ मास पश्चात् स्वामी शङ्करानन्द जी ने इसका नाम आर्य युवक सभा रखा। साप्ताहिक अधिवेशन तथा वार्षिकोत्सव नियम पूर्वक होते हैं। आर्य जाति के लालों को विधर्मी होने से बचाया जाता है।

२—आर्य युवक मण्डल सिकौलेक:—दरबन से ५ मील उत्तर को।

३—यंगमैन्स आर्य समाज दरबन:—२८ फरवरी १९२८ को काइम हुआ। ५० मेम्बर।

६—द० अ० की सामाजिक संस्थादि।

१—आर्य्य अनाथ भवन दरबन, १ मई १९२१ से कायम है। हिन्दू, मुसलमान ईसाई सब मतानुयाई की सेवा इस के द्वारा होती हैं। सरकार से १०० पौंड वार्षिक सहायता मिलती है।

२—आर्य पाठशाला दरबन, ४ श्रेणि, २०० विद्यार्थी, सरकारी सहायता मिलती है।

३—आर्य सेवा दल दरबन ।

४—रात्रि पाठशाला लेडीस्मिथ, श्रीमिट्ठनलाल जी द्वारा स्थापित । लड़के और लड़कियों को गुजराती, हिन्दी पढ़ाई जाती है । धर्मशिक्षा भी दी जाती है ।

५—होरीनासपुर पाठशाला, आर्य समाज के आधीन, हिन्दी अंग्रेज़ी पढ़ाई जाती है ।

६—रात्रि पाठशाला सिवकौलिक, स्थानीय आ० युवक मंडलकी तरफ़ से जारी है ।

७—आर्य्य पाठशाला पेसेसलेयर, १५ अक्टूबर १९२३ को कायम हुई । ६० विद्यार्थी हैं ।

८—आर्य अनाथालय केटोमेनर ।

९—पाठशाला केटोमेनर, हिन्दी अंग्रेज़ी की पढ़ाई होती है ।

१०—रात्रि पाठशाला केटोमेनर ।

११—वैदिक आश्रम मेरिट्सवर्ग स्थानीय वेद धर्म सभा द्वारा १००० पौंड से बना है ।

१२—विद्या प्रचारिणी सभा मेरिट्सवर्ग, १९२३ से कायम है । इसके होने से कई हिन्दी पाठशालाओं का वैदिक आश्रम से सम्बन्ध हो गया है ।

१३—श्रीवैदिक विद्या प्रचारक सभा पेट्रञ्च । इसके ७० मेम्बर हैं ।

१४—आर्य पाठशाला पेट्ररंच । वैदिक विद्या प्रचारक सभा के आधीन है ।

१५—शुद्धि सभा पेटरञ्चः—१९३० में कायम हुई ।

१६—रात्रि पाठशाला डेन्हौसर, स्थानीय आर्य समाज के आधीन, हिंन्दी पढ़ाई जाती है ।

३—मोरीशस

१—आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास ।

सब से प्रथम यहां से भारतीयों के मनों में सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से आर्य समाज का बीज बोया गया जो एक भारतीय सेना के कुछ सूबेदारों के द्वारा वितर्ण किये गये थे । तत्पश्चात् लाहौर के आर्य पत्रिका नाम अंग्रेज़ी पत्र द्वारा प्रभाव पड़ा १९०३ में श्री तोतालाल जी तथा गुरुप्रसाद जी, दलजीतलाल जी ने बड़े परिश्रम से समाज के लिये मार्ग साफ़ किया परन्तु पौराणिकों के विरोध ने सफलता न होने दी तथापि इन समाजों ने ट्रैक्टादि बाँटने जारी रखे यहाँ तक कि डा० मणिलाल जी वैरिस्टर यहां आए और आपने इस टापू के हिन्दुओं के उत्थान के लिये आर्य समाज की स्थापना की आवश्यकता को अनुभव किया और १७ अप्रैल १९११ को आर्यसमाज पोर्टलुइस इसमें कायम होगया । १ जून १९११ से मोरीशस आर्य पत्रिका (मासिक अंग्रेज़ी) प्रकाशित होने लगा । कुछ समय

पीछे मणिलाल जी कार्यवश रंगून आए और इनका मिशनरी स्पिरिट वाले तथा सत्यार्थ प्रकाश के अंग्रेजी अनुवादक डा० चिरञ्जीव जी भारद्वाज से मेल हुआ जो लाहौर से वहाँ आये थे। मोरीशस सम्बन्धी सामाजिक स्थिति का वर्णन करके आपने भारद्वाज जी को प्रेरना की जिस के फलरूप में आखिर

डा० चिरंजीव जी अपनी धर्मपत्नी सहित

वहाँ पहुंच गये। और मोरीशस में थोड़े ही दिनों में आर्य समाज चमक उठा। डा० चिरञ्जीव जी आर्य समाज में उच्चकोटि के विद्वान् और विचारक तथा अपना सर्वस्व धर्मार्पण समझते थे। आप दिन को प्रचार करते रात को घर पर पाठशाला का काम करते। आपकी धर्मपत्नी

श्रीमती सुमंगली देवी जी

में भी असाधारण मिशनरी भाव मौजूद था वह भी एक ओर स्त्रियोंमें प्रचार करती और दूसरी ओर कन्याओं को पढ़ाती थीं। डाक्टर जी के काम से पौराणिक कैम्प में बड़ी हलचल पड़ी और आपका घोर विरोध हुआ। प्रैक्टिस १५०० मासिक की जगह १००) रुपये ही रह गई। भय तथा प्रलोभनादि किसी भी कारण से इस वीर ने अपने उच्च मिशन में शिथिलता न आने दी परिणाम यह हुआ कि आर्य समाज बहुत उन्नत और सुदृढ़ हो गया।

२—आर्य प्रतिनिधि सभा मोरीशस।

१९१२ में यह सभा कायम हो गई पर सरकार ने इसकी रजिस्ट्री स्वीकार न की। अतः डाक्टर जी ने आर्य परोपकारिणी सभा के नाम से रजिस्ट्री कराई और प्रचारादि काम होते रहे। २७ नवम्बर, १९२६ को आ० प्र० नि० सभा का पुनः जीवन हुआ और अब के २७ फरवरी १९२८ को इसकी रजिस्ट्री भी हो गई। २० अक्टूबर १९३२ को इस का सम्बन्ध श्रीमती सा० दे० आ० प्र० नि० सभा देहली से हुआ। बहुत से समाज आदि इसके आधीन हैं।

३—श्रीमती परोपकारिणी सभा मोरीशस।

इसकी स्थापना तथा रजिस्ट्री डा० चिरञ्जीव जी भारद्वाज के द्वारा हुई। यह सभा बड़े जोर से प्रचार कार्य करती है। बहुत से समाज इसके आधीन हैं। पोर्टलुईस में दयानन्द धर्मशाला, वैदिक प्रेस, दयानन्द वाटिका तथा समाज मन्दिर ४० हजार की सम्पत्ति है।

४—उपदेशक जो भारत से पहुंचे

१—स्वामी मङ्गलानन्द जी पुरी, आप १९१२ में गए। कुछ दिनों समाज का प्रचार करके पौराणिकों से जा मिले और समाज के विरुद्ध प्रचार करने लगे। आप इसके पीछे मुसलमान भी रहे, फिर आर्य्य समाज में आये अब समाज से पृथक किये गये हैं।

२—लक्ष्मणदत्त जी पांडे, उक्त स्वामी जी के साथ आये थे। कुछ काल वे तनिक उपदेशक के तौर पर पोर्टलुईस समाज के आधीन काम करके यहाँ से चले गए।

३—श्री डा० चिरंजीव जी भारद्वाज आप ने अति प्रेम और लग्न से काम करके समाज की स्थिति को बहुत पुष्ट किया।

४—डा० मणिलाल जी वैरिस्टर।

५—श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी १९२३ से १९२९ तक परोपकारिणी के आधीन अच्छा काम करते रहे।

६—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, आप ढ़ाई साल यहाँ बड़े उत्तम रूप से प्रचार करते रहे। नेत्र रोग के कारण आपको लौटना पड़ा।

७—श्री महता जैमिनी जी, १९२५ में पधारे, १० मास परोपकारिणी सभा के आधीन अपने प्रभावशाली व्याख्यानों द्वारा प्रचार करते रहे।

५—वर्तमान प्रचारक

८—पं० नारायणदत्त जी सिद्धान्त भूषण आप उ० वि० गुरुदत्त भवन से पढ़कर वहाँ प्रचार करते हैं।

९—पं० यदुनन्दन शर्मा।

१०—पं० लक्ष्मण जी, श्याम आप दोनों सज्जन ब्रह्म महाविद्यालय लाहौर से पढ़कर अपने देश में लौटे हैं और यथा सम्भव प्रचार में सहायता देते हैं।

११—श्रीमती सौभाग्यवती देवी जी प्रतिनिधि की ओर से और पार्वती देवी जी परोपकारिणी की ओर से स्त्रियों में प्रचार करती हैं।

१—परोपकारिणी सभा के आर्य्य समाज

१—पोर्टलुईस, मनसासिंहजी प्रधान, सम्पत्ति ४० हज़ार। २—पेचितरिव्येर, शोमनाथजी प्रधान, मन्दिर १०००। ३—बोवासे ४—बेलरोज़ देवीदयालजी प्रधान, मन्दिर १५००। ५—सटेण्डले रामबालक जी प्रधान, मन्दिर ३०००। ६—बाका, जीयतधनपतजी प्रधान, मन्दिर १०००० । ७—अरिजेता, रामनारायणजी प्रधान, मन्दिर १५०० ८—रिव्येर-देज़ांगी। ९-तप्याक, श्रीकृष्ण जी प्रधान, २००० मन्दिर। १०-त्रेनाकेई। ११-बमेमेर १२—लेसेपरास, कपिलदेवजी प्रधान, ५००मन्दिर। १३—त्रियाण निगुणमहादेवजी प्रधान,मन्दिर २००। १४-सेप्येरले १५-फोंजी १६-क्युर्दिप १७-भायवर्ग, हरिचन्दगोपीजी प्रधान, मन्दिर ५०००। १८—गुडलेंस, मोहितजी प्रधान, मन्दिर २५००। १९-सामुती नारायणजी प्रधान, मन्दिर १५००। २०-रैयो, सुमारू जी प्रधान, मन्दिर २५००। २१-भुसकी, रामनारायणजी प्रधान ३०० मन्दिर। २२—क्रेवकेर, सुखदेवजी प्रधान मं० ५०० । २३—लाबुरदोने, ठाकुरदासजी प्रधान ३०००)। २४—बांसे रोड, रामकुमारजी प्रधान, १००० मन्दिर २५—गुरगोला, कोकीरजी प्रधान, ५०० मन्दिर।

आर्य प्रति नि० सभा के आ० स०

१—पोर्टलुईस, ११ स०,श्र० आ० ३०००। २—बेलरोज़ स० २६, मं० १०००। ३—अमोनी २४, स० मं० २५००। ४—लाबेनीर-१०, स० मं० ३००। ५—लालमाटी-स० १० मं० २००। ६—बेलवां, स० १०। ७—बुआर्शरी स० १२। ८—लारेन्यो स० १०। ९—

रिपाई, स० १२। १०—पीतीवर्ग—स० १७। ११—श्रोनेश स० ३२। १२ पोलार्जे स० ११। १३— तौरेल स० १० शिवदयालजी प्रधान, मन्दिर १५००। १४—स्तेन्दले स० ११ मं० २००। १५—कपूर पिपरोड। १६—आवेनी। १७—ओलिये। १८—रिवर दिवांपर। १९—सेन्ट्रल फ्लाक। २०—चोनाकोई। २१—मोताई जाको, हुकमसिंह जी प्रधान, मन्दिर १५००। २२-रिवरे दिपास्ट। २३-सेमेग्रे निये २४-केंजकातोरोड।

मिश्रित:—इनके अतिरिक्त ७० से अधिक छोटी २ और समाजें हैं, जिनके अपने मन्दिर हैं, इन सबमें रात्रि को हिन्दी पढ़ाई जाती है। टापू में १०००० से अधिक आर्य सभासद हैं।

प्रसिद्ध आर्य समाजी पुरुषों के नाम:—डाक्टर श्रीगोबिन्द लण्डन से डाक्टरी पास करके आए हैं, आर्य्य समाज का अच्छा काम करते हैं डाक्टर भागीरथी लक्ष्मीनारायन, मनसासिंह, सरनाम, सुग्रीव, हुकमसिंह, मोती मास्टर, जयनारायन, दर्शन, रामरूप, रामप्यारे, दौलतदेवी, रामकुंवर, निगुण महादेवप्रसाद, रामशरण, गोपीलाल, मणिराम, दुःखी शोभनाथ। प्रचार का काम करने वाले पण्डित यह हैं, पण्डित नारायनदत्त सिद्धान्त भूषण जी, पंडित वेनीमाधव जी, पंडित शिवशंकर जी, पंडित रामरतन जी, पंडित बलराम जी, पंडित विश्वेश्वर धुरेन्द्र जी, पंडित देवशरण जी, पंडित रामकृष्ण जी।

मोरीशस की आर्य्य जनता का प्रभाव:—हिन्दुओं मुसलमानों, फ्रेंचों, चीनियों, सब पर है, सब लोग समय समय पर धन से समाज की सहायता करते हैं, छोटे से छोटे ग्राम में भी आर्य्य समाज है, भजनों के द्वारा प्रचार बहुत होता है, लोगों को गाने का बहुत शौक़ है। हरएक समाज में एक भजन मण्डली है, प्रसिद्ध भजनोपदेशक जिनका टापू भर में अच्छा प्रभाव है, पण्डित शिवशंकर जी, पण्डित जगनन्दन जी मणिराम जी हैं।

६—मोरिशस टापू में सामाजिक संस्था।

१—आर्य वैदिक विद्यालय वाका, ५०० विद्यार्थी। सरकारी सहायता मिलती है। इमारत बहुत बड़ी है।

२—दयानन्द धर्मशाला।

३—वैदिक प्रेस।

४—आर्य पत्रिका, परोपकारणी सभा मुख पत्र। सम्पादक म० मनसासिंह जी। हिन्दी अंग्रेजी दोनों में छपता है।

५—श्रद्धानन्द प्रेस, आर्य प्रतिनिधि सभा मोरिशस की तरफ़ से।

६—आर्य वीर, साप्ताहिक हिन्दी अंग्रेजी तथा फ्रैंच भाषा में प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रकाशित होता है। सम्पादक पं० कांशीनाथ जी।

७—आर्य कन्या पाठशाला ओमेनी, स्थानीय समाज के आधीन।

८—रात्रि पाठशाला ओमेनी, स्थानीय समाज के आधीन।

९—सरस्वती एरियन एडिड स्कूल, एक्रोपार जिलाफ्लाक, १५० विद्यार्थी, प्रतिनिधि सभा के आधीन है ।

१०—आर्य कन्या पाठशाला सेन्ट्रलफ्लाक, स्थानीय समाज के आधीन ।

११—रात्रि पाठशाला वेलरोज, स्थानीय समाज के आधीन ।

१२—रात्रि पाठशाला आनेश, स्थानीय समाज के आधीन ।

१३—रात्रि पाठशाला वेलेना, स्थानीय समाज के आधीन ।

१४—रात्रि पाठशाला पीतेवर्ग, स्थानीय समाज के आधीन ।

(१) भारतवर्ष से गए वैदिक मिश्नरी ।

(१) स्वामी राममनोहरानन्द जी आप सन् १९१३ में वहां गए आपने सामाबूला, लौटोका में प्रचार किया, जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा परन्तु आप पीछे गृहस्थी बन बैठे ।

(२) श्री गोपेन्द्रनारायण जी भूत पूर्व अध्यापन्न गु० कु० वृन्दाबन, आप सन् १९२५ ई० में वहां पधारे । आपके शांत व मृदुल स्वभाव के कारण आर्य समाज में नूतन शक्ति का सञ्चार होगया ।

(३) श्री पं० कृष्ण जी, उपदेशक की आवश्मकता अनुभव होने पर आपने वहां आकर प्रचार किया ।

(४) श्री अमींचन्दजी तथा आपकी धर्मपत्नी शर्वतीदेवी जी, गोपेन्द्रनारायण जी की छुट्टी के समय में आपने गुरुकुल में कार्य किया फिर सामाबूला कन्या पाठशाल में ।

(५) श्री ठा० सर्दारसिंह जी तथा आपकी धर्मपत्नी दयावती जी, आपने कुछ काल सामाबूला आ० कन्या पाठशाला में काम किया ।

(६) श्री महता जैमुनि जी, आपने यहां हिन्दी व अंग्रेजी के व्याख्यानों द्वारा सारे फिजी में प्रचार किया जिससे भारतीय जनता तथा अंग्रेजों पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा ।

(२) आर्य्य प्रतिनिधि सभा फ़िजी ।

स्थापनाः—सन् १९१६ में द्रासा में इस सभा की स्थापना हुई । अब कार्यालय लौटोका में है ।

यह एक रजिस्टर्ड संस्था है, इसके आधीन १० समाजें हैं । श्रीमती सा० दे० आ० प्र० नि० सभा के साथ २८-३-२८ को सम्बन्ध हुआ ।

सम्पत्ति—सभा के पास इस समय लगभग ६५०००) की इमारतें हैं और १५०००)

रुपये की जमीन अर्थात् ८००००) स्थिर सम्पत्ति है। सभा का वार्षिक व्यय लगभग २०००) रुपया होता है।

मिश्रित:—१—१९१३ में समाज के सम्बन्ध में सरकार को क्रान्तिकारी संस्था होने का सन्देह हुआ, पुलिस काग़ज़ात उठा ले गई परन्तु कुछ दोष युक्त न होने से लौटा दे गई। गवर्नर को अंग्रेज़ी पुस्तक समाज के मिले तो सन्देह जाता रहा। २—१९९६ में आर्य्य सम्मेलत सूवा में हुआ, पाठशाला के लिये ३०० पौंड चन्दा हुआ, द्रासा में भी उसी वर्ष आर्य्य सम्मेलन हुआ ११०० पौंड चन्दा हुआ। ३—१९३१ में नौसौरी में भयंकर बाढ़ आई। पीड़ित जनता को समाज मन्दिर सामाबूला में पनाह तथा अन्न वस्त्र देकर समाज ने यश पाया। ४—श्री पं० कृष्ण जी द्वारा शुद्धि का बहुत कार्य हुआ। मि० जेकप मैथोडिस्ट मिशनरी को परिवार सहित शुद्ध करना बड़ा भारी काम था, श्री के० वी० सिंह जी के द्वारा यहाँ के मूल निवासियों की शुद्धि का काम शुरू है। ५—पं० कृष्ण जी तथा पं० विष्णुदेव जी ने वैदिक सन्देश नाम पत्र जारी किया। ६—२५ वर्ष बीतने पर सामाबूला में ३०, ३१ दिसम्बर १९२८ को आर्य समाज की रजत जयन्ती मनाई गई, सभापति डा० कुन्दनसिंह जी कुश थे। इस अवसर पर नगर में एक बड़ा जुलूस भी निकाला गया। ७—उच्च शिक्षा के लिये यहाँ के बालक बालिका गु० कु० वृन्दावन, डी० ए० वी० कालिज कानपुर, देहरादून, क० गु० देहरादून तथा क० म० वि० जालंधर में भेजे जाते हैं। ८—फ़िजी की समाजों के ३०० से अधिक सभासद हैं। ९—शुद्धि का काम आर्य समाज और सनातन धर्म आदि मिल कर करते हैं। एक वर्ष में २५० शुद्धियाँ हुई।

३—फ़िजी के आर्य्य समाज।

(१) सामाबूला आ० स० इस द्वीप में सबसे पहिले १९०४ में कायम हुआ। (२) नौसोरी, (३) सूबा, (४) नान्दी, (५) रा, (६) ताबुआ, (७) वा, (८), लौटोका, (९) नाशुआ, (१०) लम्बासा, (११) नन्दरोगा, (१२) तुरोकी, (१३) द्रासा।

४—आर्य स्त्री समाज सूबा।

श्रीमती शर्बतीदेवी जी (धर्मपत्नी पण्डित अमींचन्द जी) के आने पर स्त्री समाज की स्थापना हुई। आप इस में हवन तथा सत्यार्थप्रकाश का पाठ करती हैं।

५—फ़िजी की सामाजिक संस्थायें।

(१) गुरुकुल नसोबा:—५, ६ व ७ नवम्बर को बड़ा भारी उत्सव मनाया गया और १९०० पौंड धन से गुरुकुल की स्थापना हुई, पं० गोपेन्द्रनारायण जी भूतपूर्व अध्यापक गु० कु० वृन्दावन आचार्य हैं। वार्षिक व्यय लगभग १००००) के है।

(२) आर्य कन्या महाविद्यालय सामाबूला:—१०० से अधिक कन्यायें पढ़ती हैं। वार्षिक व्यय लगभग ५०००) रुपये है। अमींचन्द जी विद्यालङ्कार मुख्य अधिष्ठाता हैं।

(३) आर्य कन्या पाठशाला विशंशरी:—सन् १९२८ से इस पाठशाला का कार्य नियम पूर्वक चल रहा है। इन्स्पेक्टर शिक्षा विभाग ने इसे आदर्श विद्यालय बताया है।

शिवनन्दन जी तिवारी ने अपना निवास स्थान दान दे दिया है। आपकी धर्मपत्नी इस पाठशाला का सराहनीय काम करती हैं।

(४) आर्य अनाथालय विर्शशी:—इसके खुलवाने के लिये श्रीकृष्ण जी का उद्योग सराहनीय है।

(५) आर्य्य भवन सूबा:—सन् १९२९ में सामाबूला में आर्य्य समाज सूबा ने यह बिशाल आर्य्य भवन बनाया। इसके बनवाने में म० कन्हईसिंह जी ने अधिक परिश्रम किया है।

(६) आर्य्य भवन तुराकी:—१००००) रुपया के दान की नई भूमि मकान सहित कन्हईसिंह जी के पुरुषार्थ से लीगई है। इसमें एक रात्रि पाठशाला का काम भी होता है।

(७) आर्य भवन नौसोरी:—यह विशाल भवन १३०००) में बना है, यह भवन फ़िजी में सबसे बड़ा है, आर्य शिल्पकारों ने बिना किसी मज़दूरी लिये अपने ख़ाली समय में बनाया, जिससे बहुत अधिक धन की बचत हुई।

(८) आर्य पुत्र तथा ९ पुत्री पाठशाला रगरग:—पुत्र और पुत्रियों के लिये पृथक पृथक पाठशालायें हैं। श्री राघवानन्द जी बड़ी योग्यता से इनका संचालन करते हैं।

५—डच गायना

१—भारत से गये वैदिक मिश्नरी

१—पहिले तो अधिक प्रचार आर्य्य सामाजिक पुस्तक पहुँचने से हुआ।

२—श्री मेहता जैमुनी जी पहुँचे आपके प्रभावशाली और ओजस्वि व्याख्यानों के फल स्वरूप में वहाँ की आर्य्य जनता तथा पौराणिक जनता मुग्ध होगई और सामाजिक मनुष्यों की संख्या बढ़ गई।

३—श्री गिरजादयाल जी शर्मा:—आप यहाँ ६ वर्ष से आर्य्य समाज का बड़ी लग्न तथा योग्यतानुसार प्रचार कर रहे हैं। आप यहाँ वैदिक संस्कारों का अच्छा प्रचार कर रहे हैं।

२—निकेरी

(१) मेहता जैमुनीजी:—सन् १९२९ में एक सप्ताह में ३ व्याख्यान देकर बृटिश गायना को वापिस चले गये।

३—डच गायना के आर्य्य समाज

आर्य्य दिवाकर:—५ फ़रवरी सन् १९३० को आर्य्य दिवाकर नाम से आर्य्य समाज की स्थापना होकर सरकार द्वारा रजिष्ट्री होगई। समाज के उत्तम उद्देशयों व प्रयत्न

शीलता से जनता का समाज के प्रति विश्वास होता जाता है, सदस्यों की संख्या बढ़ती जा रही है। ४ जुलाई सन १९३० को आर्य्य समाज ने एक भूमि खरीदी है, जिसमें गौशाला, पाठशाला तथा अनाथालय के लिये पर्याप्त स्थान है।

३—डच गायना के आर्य समाज

(१)परामारीबो, हीरासिंहजी सं०-११० स०। (२) सरआका, अवतारसिंह जी सं० ६० स०। (३) करनाल र० २, जैजैरामजी सं० १५ स०। (४) कामेवाइगी, सूर्य्यसिंहजी सं० १५ स०। (५) कसावाहोलो, रामनारायणजी सं० ३० स०। (६) पाटापासी, सोमई सरदा जी सं०, ३० स०। (७) किरवलवेवती, सुखरामजी सं० १० स०। (८) कपटानेवेवती, श्यामलालजी सं० ४० स०। (९) लौखक डमवोर्ग दुरबलीजी सं० ३० स०। (१०) फैरलान्थ, शिवरनसिंहजी सं० ७० स०। (११) हन्सूसेवर्क, हुक्मसिंहजी सं० १५ स०। (१२) मीरपमवोर्ग, शिवनायकजी सं० २४ स०। (१३) अलखमार, रामदास जी सं० ५० स०। (१४) करमभोग, सरजूरामजी सं० ३५ स०। (सं=सञ्चालक—स=सदस्य)।

४—डच गायना में सामाजिक संस्थायें

आर्य्य दिवाकर खेल कमेटी:—नवयुवकों ने आपस में प्रेम और एकता बढ़ाने के लिये आर्य्य दिवाकर खेल क० नाम की समिति बनाई है जिसमें निम्नलिखित चार भाग हैं:—

(१) भजन मण्डली, (२) फुटबाल, (३) किरकिट, (४) व्यायाम, सन् १९३१ में इन विभागों के क्रमशः दलपति श्रीप्यारेलालजी, श्री सुखदेवजी भंडारी श्री चेतरामसिंह जी, तथा श्री हीरासिंहजी थे, समिति के प्रधान श्री पं० सूर्य्यप्रशाद शुकल हैं जनता समिति से बड़ी आकर्षित हैं।

५—बृटिश गायना

भारत से गये वैदिक मिशनरी।

१—पं० चन्द्रशेखर जी, आपने हिन्दी प्रचार का बड़ा ही प्रशंसनीय काम किया।

२—श्री पं० लक्ष्मण जी, आप भी हिन्दी प्रचार के लिये बड़ी लगन से काम करते हैं।

३—महता जैमिनि जी, आपने नागरी में व्याख्यान दिये तथा एक नागरी पाठशाला का उद्घाटन किया।

४—भाई परमानन्द जी:—आपके व्याख्यान बड़े प्रभावशाली हुवे जिससे आर्य समाज का काम और भी सफलता पूर्वक होने लगा।

५—पं० गिरजादयाल जी शर्मा, आप वैस्ट इण्डीज़ के समस्त उपनिवेशों में ६ साल से आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं।

बृटिश गायना में आर्य्य समाज

जार्जटाउन में २५ अप्रैल १९२८ ई० को आर्य समाज की स्थापना होकर रजिस्ट्री होगई है, इस समाज के आधीन ७ समाजें और हैं, ३५ स्थानों पर आर्य समाज का प्रचार हो चुका है आर्यों की कुल संख्या ५०० के लगभग है।

१—महता जैमुनि जी दिसम्बर सन् १९२८ में पधारे आपने कई व्याख्यान नागरी और अंग्रेज़ी में दिये। अंग्रेज़ी के व्याख्यानों का प्रभाव गैर भारतीयों पर अच्छा पड़ा।

२—गिरिजादयाल जी शर्मा—आपने व्याख्यानों द्वारा ८ स्थानों पर प्रचार किया।। इन स्थानों में आर्यों की संख्या १०० से अधिक है ।

३—श्री रामेश्वर जी मिश्र, आप ट्रिनीडाड में ही निवास करते हैं, आप के वैदिक सभ्यता के प्रचार तथा आपकी पुत्री कुमारी सरयुदेवी के हिन्दी प्रचार का उद्योग सराहनीय है।

४—मिश्रित:—यहाँ ८ स्थानों पर प्रचार हो चुका है। आर्यों की संख्या १०० से अधिक है।

७—लंका

कोलम्बो:—यहाँ पर श्री स्वामी शङ्करानन्द जी ७ जुलाई सन १९२९ को पधारे। आपने कितनों को ही सन्ध्या व प्राणायाम सिखाया, सहस्त्रों को यज्ञोपवीत धारण कराये। यहाँ आपने २७ हवन, १४३ पुरुष और ६८ स्त्रियों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया। यहाँ से ३ सितम्बर सन् २९ को आप करांची गये यहाँ पर अभी समाज मन्दिर की स्थापना नहीं हुई।

जफाना:—यहाँ पर श्री स्वामी शंकरानन्द जी ने भिन्न भिन्न विषयों पर १३ व्याख्यान दिये। स्वामी जी ने २६ अक्टूबर सन् १९२७ को भारतवर्ष के लिये प्रस्थान किया।

स्थापना:—२३ मई सन् १९२० ई० को ५० सज्जनों की उपस्थिती में इस सभा का नाम वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा रखा गया, २४ मार्च १९२१ को वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। १७ सितम्बर सन् १९२२ को बृहत सभा की गई। उस में भवन बनाने का प्रस्ताव पेश हुआ और अपील की गई ६६३ टिकल (१।) रु० के लगभग १ टिकल) उसी समय प्राप्त हुये। २००० टिकल के ठेके पर समाज मन्दिर बन कर त्यार होगया। ३००० टिकल में भूमी ली गई, ३ मार्च १९३३ को इसका तीसरा वार्षिकोत्सव हुआ, २ दिसम्बर सन् १९२३ को एक विशेष अधिवेषन करके इसका नाम आर्य समाज रख दिया गया। २०० सदस्य इस समाज के हैं। यह समाज १८ अप्रैल, सन् १९२४ को यू० पी० आर्य प्रतिनिधि में प्रविष्ट हो गई।

पुस्तकालय—समाज में एक पुस्तकालय है जिसमें महर्षि कृत पुस्तकें व वेदभाष्य आदि हैं। आवश्यक सामाजिक पुस्तकें सभासदों के घरों पर भी काफी हैं। श्री डा० भगतराम जी सहगल ने यहाँ पर भी आकर प्रचार किया।

९—आ० स० सिंहापुर

श्री डाक्टर भगतराम जी सहगल के उद्योग से ८ अक्टूबर सन् १९२७ को २० सभासदों द्वारा समाज की स्थापना हुई। सभासदों की संख्या लगभग २०० है। समाज मन्दिर नहीं बना इसके लिये १ सहस्र डालर एकत्र हो चुके हैं, साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से होता है, इस समाज ने २० शुद्धियाँ की हैं, समाज अनाथों व अबलाओं की सहायता भी करती है।

प्रधान व मन्त्री:—श्री पं० वासुदेव शर्मा समाज के प्रधान हैं, श्री कामताप्रसाद जी मन्त्री हैं।

१०—मलाया स्टेट

आर्यसमाज कोलालामपुर—यह नगर मलाया स्टेट में है, वहाँ पर समाज स्थापित है। पं० कन्हैयालाल जी आर्योपदेशक आ० वि० सभा काशी ने प्रचार किया।

११—सुमात्रा टापू

मैदान—आर्य समाज स्थापित है। मैदान सुमात्रा टापू की राजधानी है। रायसाहब हकीम भक्तराम जी समाज के मन्त्री हैं।

उपदेशकों द्वारा प्रचार—यहाँ पर प्रचार कार्य में सर्व प्रथम डा० भगतराम जी का कार्य सराहनीय रहा।

१२—बगदाद

स्थापना:—सन् १९२२ में आर्य्य समाज की रजिस्टरी हुई, १९१९ में स्थापना तथा २५० सभासद थे परन्तु कुछ सभासदों के भारतवर्ष वापिस आ जाने के कारण अब वहाँ पर ६० के लगभग सभासद हैं श्री मानकचन्द जी गुलशन इस समाज के प्रधान हैं। आर्य्य समाज ने हिन्दुओं में मृतकों के दाह कर्म संस्कार की प्रथा चलादी है, आर्य्य त्यौहार भी मनाये जाते हैं, समय समय पर शुद्धि भी होती है। १४ मार्च सन् १९३० को इस समाज का सम्बन्ध देहली सार्वदेशिक सभा के साथ हो चुका है।

१३—लन्दन

यहाँ पर श्री टेकचन्द जी टण्डन आठ वर्ष से रहते हैं आपकी आयु लगभग ६० वर्ष की होगी, आपही यहाँ पर आर्य समाज के कार्य में सहायता देते रहते हैं। अन्य आर्य पुरुष भी यहाँ हैं। अनेक बार किसी न किसी रूप में संगठित काम करने का प्रबन्ध कई महानुभावों ने किया है। आर्यसमाज की स्थापना भी हुई है परन्तु स्थाई रूप से यहाँ समाज के जलने तथा नियमित रूप में वैदिक धर्म का प्रचार होने का प्रबन्ध नहीं हुआ। गत वर्ष म० कुंवरमल जी उपप्रधान लन्दन चेम्बर आफ कामर्स इन ग्रेट ब्रिटेन मन्त्री आर्य्य भवन मण्डल की ओर से भी समाचार छपे थे। आशा है किसीसमय यहां जोरशोर से प्रचार होने पर अन्य स्थानों की अपेक्षा बहुत अधिक सफलता होगी। कार्यक्षेत्र यहाँ बहुत विस्तृत है।

१४—जरमनी

बहुत से आर्य्य पुरुष यहाँ गये हैं। वैयक्तिकरूप से वार्तालाप तथा पुस्तकोंके द्वारा विचारों में परिवर्तन होरहा है। वहाँ के सामाजिक प्रचार सम्बन्धी समाचारों से ज्ञात होता है कि अनेक विषयों में वैदिक सिद्धान्त वहाँ के शिक्षित विभागके मस्तिष्क पर अपना सिक्का जमा रहे हैं। जर्मन के डिक्टेटर हिटलरने हुक्म दिया है कि अनार्यों को जुम्मेदारीके अधिकारों से हटा दिया जाय। उसने एरियन गजट के नाम से एक पत्र निकाला है। संस्कृत शिक्षा लाजमी कर दी है। स्त्रियों की अनुचित स्वतन्त्रता तथा नुमायश पर पावन्दियां लगा दी हैं, संस्कृत पुस्तकों के जर्मन भाषा में अनुवाद करने का हुक्म दिया है। भारतवर्ष में संस्कृत पढ़ने के लिये विद्यार्थी भेजे हैं इत्यादि। योगाभ्यास तथा प्राचीन आर्य साहित्य में वहाँ श्रद्धा भी अधिक है। श्री इन्द्रसैन जी एम० ए० प्रो० दर्शन-शास्त्रहिन्दू कालिज देहली ने निग्सवर्ग में कई व्याख्यान दिये। एक का विषय था स्वामी विरजानन्द, स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज।

आपको यहाँ रह कर पूरा विश्वास हुआ है कि नियमित रूप से योग्य पुरुषों के द्वारा प्रचार होने पर आर्य समाज को यहाँ पूर्ण रूप से सफलता हो सकती है।

१५—मिश्रित

१—जावा टापू:—कई स्थानों में पण्डित कन्हैयालाल जी ने प्रचार किया। २—क्वाङ्गशो टापू। ३—अमोई टापू। ४—जापान। ५—संघाई में भी पं० कन्हैयालाल जी ने व्याख्यानों द्वारा प्रचार किया।

श्रीमद्दयानन्द नि० अ० श० महोत्सव अजमेर

मथुरा में दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव मनाने से पूर्व देहली में सार्वदेशिक तथा परोपकारिणी सभा का जो सम्मिलित अधिवेशन हुआ था, उस में एक पक्ष यह था कि स्वामी दयानन्द की स्मृति में अजमेर में उत्सव हो। निश्चय मथुरा के पक्ष में हुआ और वहाँ महोत्सव अपूर्व सफलता से हुआ और होता भी क्यों न, आर्य जनता ने बिना किसी मतभेद के सर्व सम्मत तथा संगठित रूप से इसकी सफलता के लिये परिश्रम किया था। अजमेर के भाइयों ने भी मथुरा के पक्ष में निश्चय होने पर पूरी प्रसन्नता से उस में योग दिया पर उन के मनों में यह इच्छा अवश्य रही कि अजमेर में भी इसी प्रकार का महोत्सव हो। हर्ष का स्थान है कि अजमेर को भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ और बड़ी शान से प्राप्त हुआ। इस में सन्देह नहीं कि अवस्था कुछ अधिक अनुकूल न थी। वहाँ के आर्यों के मत भेद से इस कार्य में भी त्रुटि रहने का भय था, परन्तु अर्द्ध शताब्दी कमेटी ने प्रापेगैंडा के कमाल से इस प्रतिकूल स्थिति को दबाया और पूरे तौर पर दबाया। समाचार पत्रों में लेख भेजते रहना, डेपुटेशनों का भिन्न २ प्रान्तों में जाना, आर्य जगत को प्रत्येक काम की रिपोर्ट देते रहना, आर्यावर्त तथा संसार भर की सभाओं से सत्कार पूर्वक सहयोग देने के लिये प्रार्थना करना इत्यादि अनेकानेक प्रयत्नों से अर्द्ध शताब्दी कमेटी ने प्रायः सारे आर्य जगत् को अपना सहकारी बना लिया। परिणाम यह हुआ कि अक्टूबर १४ से २० तक होने वाले इस महोत्सव पर भारतवर्ष के सारे प्रान्तों के ही नहीं चीन, जापान, नीपाल, लङ्का आदि से भी अनेक महानुभाव इस महोत्सव में श्रद्धा तथा प्रेम पूर्वक सम्मिलित हुए। दर्शकों की गणना करना बड़ा कठिन काम था। इतने विस्तृत आर्य नगर के खेमों, छपरों में ही नहीं, निकटवर्तीय ग्रामों और अजमेर जैसे बड़े नगर के अनेकानेक स्थानों में यात्री ठहरे हुए थे। अजमेर स्टेशन पर स्पेशल ट्रेनों तथा जयपुर आदि से मोटरों द्वारा आर्य जनता बड़ी भारी संख्या में आती मालूम होती थी कम से कम तखमीना ५० हज़ार का है परन्तु वास्तव में

दर्शकों की संख्या एक लाख से कम न थी

आर्य्य नगर में ठहरने तथा खाने पीने के सामान आदि का प्रबन्ध बड़े पैमाने पर किया था दुकानें काफ़ी थीं और जोश व धर्म प्रेम का दृश्य बड़ा प्रभावोत्पादक था। गाड़ियों में आते हुए गाड़ियों को मोटो, झण्डों आदि से सजाकर जहां आर्य्य यात्री देश भर में इस महोत्सव की घोषणा करते और भजनादि गाकर अपने अन्दर धर्म प्रेम तथा श्रद्धा के भाव दृढ़ करते थे वहां आर्य्य नगर में भी हर तरफ़ भजनादि तथा वैदिक धर्म और स्वामी दयानन्द की जय के नारे सुनाई देते थे। प्रायः

सभी आर्य संन्यासी और उपदेशक तथा नेतागण

सम्मिलित हुए। शाहपुराधीश श्री० ठा० उमीदसिंह जी, पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए० बा० पूर्णचन्द जो, पं० गंगाप्रसाद जी जज टीढ़ी (गढ़वाल), प्रो० रामदेव जी बी० ए०,

प्रो० चमूपति जी एम० ए०, प्रो० सुधाकर जी एम० ए०, श्री महा० हन्सराज जी, राजा नरेन्द्रनाथ जी, बा० खुशहालचन्द जी, मा० आत्माराम जी, डा० मथुरादास जी, पं० जगन्नाथ जी नि० र० आदि अनेक महानुभाव पहुँचे। पूज्य श्रीनारायण स्वामी जी संचालक अ० शा० कमेटी तो कई दिन पहिले से ही यहाँ सारा काम अपने पथ प्रदर्शन में करा रहे थे। स्वामी सर्वदानन्द जी की विद्यमानता ने भी धर्म प्रचार के काम में पूरी सफलता की व्याख्यानों, कान्फ्रेन्सों, भाषणों और प्रस्तावों का पूरा विवरण एक बड़ी पुस्तक के बिना वर्णन होना असम्भव है। अतः हम इस महोत्सव का सारा वृतान्त सार रूप से अपने दर्शकों की भेंट करते हैं।

पहिले दिन १४ अक्टूबर को क्या हुआ

प्रातःकाल हवन और भजनादि के अतिरिक्त झंडा खड़ा किया गया और प्रार्थना के गीत होकर

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी

ने आर्य्यों को स्पष्ट रूप से अपनी त्रुटियों को दूर करने के लिये खरी खरी बातें सुनाईं। स्वामी जी की वक्तृत्ता, आपका अनुभव और प्रेमभाव पूर्ण सत्य भाषण स्थूल दर्शियों को कुछ लाभकारी मालूम नहीं होता, परन्तु सूक्ष्मदर्शी निश्चय रखते हैं, कि हज़ारों दिलों में आपके विचार उच्च संस्कारों को दृढ़ करके बड़े २ उत्तम फल ला रहे हैं। आपके पीछे प्रो० सुधाकर जी ने श्री शाह पराधीश प्रधान शताब्दी सभा का भाषण पढ़कर सुनाया, दूर दूर से आये पुरुषों का स्वागत तथा धन्यवाद करते हुये आपने स्वामी जी के प्रादुर्भाव से पूर्व देश और जाति की अवस्था का वर्णन किया, फिर स्वामी जी के प्रचार और वेद की महिमा दर्शाकर आपने आर्यों को धर्म प्रचार सम्बन्धी कर्तव्य पालने की प्रेरणा की, भाषण का अन्तिम भाग जिसमें आपने अपने पूज्य पिता स्वर्गीय महाराज नाहरसिंह जी को स्वामी जी के सत्संग का सौभाग्य प्राप्त करने का वर्णन किया बहुत मुअस्सिर था। इसके पश्चात

श्री पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए०

का ओजस्वी भाषण हुआ। जिसमें आपने स्वामी जी और समाज के काम से विचारों में विचित्र परिवर्तन होने के प्रमाण देकर समाज की सफलता सिद्ध की और निराशा बाद को मनों से सर्वथा दूर करके वैदिक मिशन को संसार में फैलाने के लिए पूरा प्रयत्न करने की अपील की, दूसरे पिंडाल में इस समय शिक्षा सम्मेलन की बैठक हुई जिसमें लाला हरदयाल जी (जालन्धर) का बड़ा महत्व पूर्ण भाषण हुआ, और तीसरे पंडाल में श्री गंगाप्रसाद जी जज्ज टोढ़ी का मोक्ष के साधनों पर विद्वता पूर्ण तथा युक्ति प्रमाण युक्त व्याख्यान हुआ, यह शताब्दी व्याख्यान माला का पहिला पुष्प था। आपने अँग्रेज़ी में लिखा था, पर जनता के हितार्थ इसे भाषा में देना पड़ा और जनता ने इसे बहुत पसन्द किया।

रात्रि को मुख्य पिंडाल में पं० धर्मदेव जी तथा पं० बुद्धदेव जी के मनोहर व्याख्यान हुए। वर्षा के कारण पं० बुद्धदेव जी का व्याख्यान पूरा न हो सका।

१५ अक्टूबर—दूसरा दिन।

हवन भजनादि होकर श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने व्याख्यान दिया। इस विचार का आपने बड़ी उत्तमता से खंडन किया कि आर्य समाज गिर रहा है अनेक उदाहरण देकर जो प्राय: सबको स्पष्ट रूप से समझ में आरहे थे आप ने निश्चय कराया कि समाज उन्नति तथा सफलता के मार्ग पर जा रहा है। स्वामी जी के पीछे

श्री ला० खुशहालचन्द जी

ने अपने भाषण में आर्य समाज की अवस्था पर सरलता पूर्ण आलोचना करते हुए आर्य समाज को अपने अन्दर घुसे हुए नास्तिकादि से सावधान किया और देवियों से काम के लिये अपील की, दो पहर को छोटे पिंडाल में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के सभापतित्व में शिक्षा सम्मेलन हुआ जिस का सार "गुरुकुल शिक्षा प्रणाली" की महिमा तथा उसकी सफलता के लिये यत्न करने की प्रेरणा थी।

रात को सर्व प्रथम श्री बा० पूर्णानन्द जी प्रधान यू० पी० सभा का भाषण हुआ आपने युक्तियुक्त रूप से सिद्ध किया कि संसार की सारी कठिन समस्याओं का हल वैदिक सिद्धान्त द्वारा ही हो सकता है। पाश्चात्य फ़िलासोफ़र अर्नेस्ट हेगल की पुस्तक Riddle of the Universe को लक्ष्य रखकर आपने Idealist और Realist दो प्रकार के मनुष्यों के विचार बताए। पहिला पक्ष कहता है कि संसार कल्पना या भ्रम मात्र है केवल एक द्रव्य अवश्य है। दूसरा पक्ष कहता है इस मन्तव्य से दो पदार्थों की सत्ता सिद्ध होती है (१) जिसे भ्रम होता है। (२) जिसे यथार्थ वस्तु का भ्रम होता है। पदार्थवेत्ता Mather और Energly (प्रकृति और शक्ति) को मानते हैं शेष सब विकार हैं। साइन्स इन्द्रियों को सहायता देती है जैसे आँख को दूरबीन। प्रकृति के विकृत रूप भी विशेष नियमों के आधार पर हैं। न्यूटन ने सबको गिरता देखकर पृथिवी में आकर्षण का नियम मालूम किया तो उस ने नया नियम नहीं बनाया, केवल एक सच्चे और पूर्व से उपस्थित नियम का साक्षात् किया था। इसी प्रकार जगदीशचन्द्र बोस ने पशु तथा वृक्ष में आत्मा को सिद्ध किया है। इस प्रकार साइन्स प्रकृति को मानती है पर वैदिक सिद्धान्त कहता है कि प्रकृति में जो नियमित रूप से परिवर्त्तन होता है उसको Design करने वाली चेतन सत्ता भी अवश्य है। मेंडकों की चीरफाड़ से विद्यार्थियों को शिक्षा देने वाले मेंडक के कटे हुए टुकड़ों को जोड़ नहीं सकते। इसी प्रकार मनुष्यों की अवस्था के अनेक प्रकार के भेद फल प्रदाता शक्ति का प्रमाण है। अत: तीन अनादि का वैदिक सिद्धान्त ही संसार की गुत्थी को सुलझाता है। आपके पीछे

पं० शिवदत्त जी एम० ए० का व्याख्यान

हुआ जिसमें आपने वेदों को सर्व सत्य विद्या का भंडार तथा ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने के लिये प्रबल एवं अकाट्य युक्तियां दीं। तत्पश्चात्

श्री० मेहता जैमिनी जी वैदिक मिश्नरी

का भाषण मारीशसादि में हिन्दुओं के ईसाई होने तथा शुद्धि विषय पर १० मिनट हुआ।

आर्य्य कुमार सम्मेलनः—हिन्दू महासभा के पंडाल में ८ से १० बजे तक आर्य्य कुमार सम्मेलन पूज्य मा० आत्माराम जी के सभापतित्व में हुआ, कुमारों के लिये स्वाध्याय संस्कृत हिन्दी पढ़ना, सेवा धर्मादि के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास हुए।

आर्य सम्मेलन—एक बजे दो पहर से बड़े पिंडाल में आचार्य रामदेव जी के सभापतित्व में हुआ, पं० धर्मदेवजी ने आपका एक विद्वत्ता पूर्ण भाषण पढ़ा जिसका सार यह था कि ऋषि के सिद्धान्त सारे संसार में फैल रहे हैं। देहली में महात्मा गांधी से मिलने पर मैंने पूछा कि आपने नई बात क्या निकाली है, स्वराज्य, स्वदेशी, अछूतोद्धारादि कामों का तो स्वामी जी पहिले ही आरम्भ कर गये हैं। नमक का महसूल भी नई बात नहीं। १८७५ के सत्यार्थ प्रकाश में पहिले ही मौजूद है। महात्मा जी ने कहा तुमतो मुझे स्वामी जी को शिष्य बनाकर ही दम लोगे। मैंने कहा, बनाना क्या है आप तो पहिले ही उनके शिष्य हैं। एक मुसलमान से बातचीत हुई, उसने कहा बहिशत की। हूरें मोमनों की स्त्रियाँ ही तो हैं। ऐसी ही व्याख्या और बातों की की। मैंने कहा आप तो आर्य्य समाजी हैं उसने कहा नहीं मैं मुसलमान हूँ मैंने कहा फिर। आप आर्य समाजी हैं। मुसलमान एक ईसाई ने कहा हमारे मत में ईश्वर को पिता कहा है, मैंने कहा हमारे यहाँ उसको माता भी कहा है। रूस के कौंट टालस्टाय मेरे भेजे हुए सत्यार्थप्रकाश के पांचवें अध्याय को पढ़कर बानप्रस्थी बन गये। वराग्य की यह अवस्था थी कि अपनी स्त्री को कह दिया कि यदि मेरा पीछा करोगी तो मैं प्राण त्याग दूँगा, हुआ भी ऐसा ही। इस प्रकार के सरल उदाहरणों से आपने वैदिक धर्म का महत्व बताकर वैदिक मिशन को फैलाना आर्य्यों का परम कर्तव्य बताया। तत्पश्चात् प्रस्ताव पास हुए। सार यह था कि संस्थाओं के प्रबन्ध से अन्तरङ्ग सभा पृथक होकर धर्म प्रचार करे; सदाचार का नियम उत्तमता से पाला जाय, मन्दिरों की संस्थाओं से पाक करके उन्हें सच्चे अर्थों में धर्म स्थान बताना, परस्पर के दुख सुख में शरीक हुआ, योग शिक्षा का प्रचार किया जाए। इस अवसर पर सदाचार विषय में मतभेद हुआ, महानं हन्सराज जी ने इस महोत्सव पर ऐसे झगड़े के विषयों पर विचार करना अनुचित बताया। प्रातःकाल

१६ अक्टूबर को शानदार जुलूस निकला

बहुत से आर्य संन्यासी, सारे प्रान्तों के उपदेशक, भजनीक, गुरुकलों के निजातक, आर्य्य राजा, आर्य देवियाँ, आर्य बैंड, पुत्री पाठशालाओं, कन्या महा विद्यालयों, गुरुकुलों, स्कूलों के विद्यार्थियों तथा अनाथों की मण्डलियाँ, समाज की मण्डलियाँ, मण्डलियों के आगे बोर्ड, सबसे आगे सजा हुआ हाथी कहाँ तक लिखा जाए इस जलूस की पवित्र शान थी १ लाख तक आर्य पुरुष सम्मिलित हुए, ३ मील लम्बे जुलूस ने ६-७ मील लम्बा चक्कर काटा। स्वामी जी ने जिस कोठी में अपने प्राण त्यागे थे, वहाँ जलूस खतम हुआ।

१७ से २० अक्टूबर तक

इसी प्रकार तीनों मण्डपों में व्याख्यान कान्फ्रेन्स आदि हुए। स्वामी गंगागिरि जी ने सच्चा उपदेशक, पं० भगवद्दत जी ने अनुसंधान कार्य तथा वेद रक्षा और सिद्धान्त रक्षा विषय में पं० ठाकुरदत्त जी, अमृतधारा ने यज्ञ मय जीवन पर, पं० दीनबन्धु जी (बंगाल) ने बंगाल प्रान्त और आर्य्यसमाज विषय पर, पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री बम्बई, ने शान्ति के उपाय पर अति उत्तम तथा प्रभावशाली व्याख्यान दिये।

पं० सूर्यदेव जी शर्मा कानपुर ने "पाश्चात्य साइन्स वैदिक धर्म की शरण में" स्वा० वेदानन्द जी तीर्थ ने आत्मा और प्रमात्मा विषय पर, ला० देवीचन्द जी M. A. सञ्चालक दयानन्द "दलितोद्धार मण्डल ने आर्यसमाज के भूत तथा भावी कार्य" पर, स्वामी सर्वदानन्द जी ने आर्य्य समाजियों की त्रुटियों पर, आचार्य्य रामदेव जी ने वैदिक धर्म और वर्त्तमान विचार पर (अंग्रेज़ी में) तथा, पं० लोकनाथ जी आदि अनेक विद्वानों ने भिन्न भिन्न विषयों पर व्याख्यान दिये तथा बहुत से प्रभावशाली सम्मेलन हुए (१) टैम्प्रेंस सम्मेलन (२) महिला कान्फ्रेन्स, ३) जातपात तोड़क कान्फ्रेन्स, (४) शुद्धि सम्मेलन, (५) वर्ण व्यवस्था कान्फ्रेन्स, (६) विद्वत सम्मेलन, (७) आर्य्य सम्मेलन, (८) आर्य्य सिद्धान्त रक्षा सम्मेलन इत्यादि, इन में भी बड़े २ प्रसिद्ध व्याख्याताओं के भाषण हुए। पं० बुद्धदेव जी, पं० ईश्वरचन्द जी, पं० ब्रह्मानन्द जी, महात्मा हन्सराज जी, भाई परमानन्द जी एम० ए०, डा० भगतराम जी इत्यादि। बहुत से आवश्यक रेजोल्यूशन प्रत्येक सम्मेलन में सर्व सम्मति से पास हुए। इनके अतिरिक्त अनेक प्रकार के खेल भी दिखाये गए। गु० कु० कांगड़ी, गु० कु० सूपा के ब्रह्मचारियों के खेल के समय में उपस्थिती इतनी अधिक थी कि पिण्डाल में भीड़ के कारण हुल्लड़ मचता रहा और इस कारण से खेल न हो सके परन्तु हिन्दूमहासभा के पिण्डाल में कन्या महाविद्यालय बड़ौदा की कन्याओं के खेल शुरू करा दिये गये तो दो पिण्डालों में उपस्थिती बंट जाने से दोनों तरफ खेल अमन से हुए, कन्या महाविद्यालय बड़ौदा और आर्य्य कुमारों ने जो खेल दिखाये बहुत पसन्द किये गये। इस प्रकार उत्सव ईश्वर कृपा से निर्विघ्न तथा शान्ति पूर्वक समाप्त हुआ।

आ० प्र० नि० स० वृटिश पूर्वीय अफ्रीका

१—१९२० ई०, में पंडित ईश्वरदत्त जी विद्यालंकार के प्रधानत्व में आर्य्य कांफ्रेंस होने पर केनिया यूगंडा, ज़ंज़िवार, और टांगानीका प्रान्तों के समाजों को संगठित रूप से काम करने के योग्य बनाने के लिये इस सभा की स्थापना हुई। मि० डी० डी० पुरी उस समय के मन्त्री और वर्तमान प्रधान महोदय ने इसके लिए अत्यन्त परिश्रम किया।

२—पहिले-पहिल नैरोबी ज़ंज़िवार और कसूमू ३ समाज शामिल हुए परन्तु काम बढ़ते २ अब १५ समाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। इन सब समाजों के नाम छप चुके हैं। उनमें लुम्बवा एक और नाम बढ़ाया जावे।

३—प्रचार कार्य्य इन स्थानों के अतिरिक्त और जगहों में भी भारतवर्ष से गए योग्य मिशनरियों द्वारा कराया जाता रहा है।

४—वह दिन बड़ा शुभ था जब समाज को सेठ नान जी कालीदास मेहता का सहयोग प्राप्त हुआ आप लोगाज़ी के सब से बड़े मिल के मालिक तथा कारखानेदार हैं। आप के ही दानादि के प्रताप से यूगंडा प्रान्त में सभा को समाज तथा गुरुकुल काँगड़ी के तरीके पर गुरुकुल नैरोबी क़ायम करने में सफलता प्राप्त हुई है। लोगाज़ी, जिंजा और कम्पाला के मन्दिर अधिकतर आपके ही दान से बने हैं। दूसरी समाजें भी अपनी संस्थाओं की उन्नति के लिए आप से ही सहायता पाती रही हैं और सेठ जी ने काठियावाड़ और बड़ौदा आदि में भी स्कूल औषधालय आदि अनेक संस्थायें अपने देशवासियों के लिये जारी करा रखी है।

५—मेहता जैमिनी जी के प्रचार ने समाजों को असाधारण पुष्टि दी है और सब आर्य्य पुरुष एक स्वर होकर मेहता जी के पुनरागमन की अभिलाषा कर रहे हैं।

६—सभा एक योग्य उपदेशक रखने के लिये बहुत यत्न कर रही है और यदि इसमें सफलता होगई तो काम का इधर बड़ा विस्तृत क्षेत्र है।

७—उत्सव सभा के प्रबन्ध से होते हैं। म० बद्रीनाथ जी जिन्होंने सारा जीवन समाज सेवा में बिताया है, आर्य्य मुनिजी वर्मा प्रिन्सिपल, आर्य्य पुत्री पाठशाला नैरोवी, ईश्वरदास जी विशारद हेडमास्टर आर्य्य पु० पा० कसूमू, दयाल जी भाई, बी० डेसाज M. A. प्रिंसिपल इण्डियन गवर्नमेण्ट स्कूल जिंजा, म० कृष्णदेव जी कपिल बी० ए० गवर्नमेण्ट इण्डियन सैकन्डरी स्कूल नैरोबी, म० तुलसीदास जी दोसाज नैरोबी, मि० रवीदत्त जी दीक्षित बी० ए० प्रिंसिपल गवर्नमेण्ट इण्डिया स्कूल कसूमू, म० संजीवन जी एलडोरेट-वार्षिकोत्सवों में सभा की ओर से प्रचार कार्य तथा अपनी २ स्थानीय समाजों का संचालन करने से धन्यवाद के पात्र हैं।

८—सारे परोपकारी कामों में आर्यों का हाथ होने से एक ओर जनता समाज से हार्दिक प्रेम करती है दूसरी ओर लोकल गवर्नमेण्ट से समाज के बड़े अच्छे ताल्लुकात हैं।

९—आर्यसमाज मचाकोस (डाइरैक्टरी पृष्ठ ११७ नं० १०) रेलवे स्टेशन—अथीरस रिवर। सदस्य संख्या ८। मासिक चन्दा २० शिलिंग। अधिकारी—मि० स्वामी दास पुरी, मन्त्री मि० देसाई भाई पटेल। मन्दिर की लागत, १५००० शि०।

संक्षिप्त इतिहास—समाज का सारा भार पुरी परिवार पर है। मैसर्स एम० डी० सन्ज ने छोटा सा सुन्दर समाज भवन १५००० शिलिंग को बनवा दिया है। आपने आर्य समाज नैरोबी, आ० पु० पा० नैरोबी तथा भारतीय आ० सा० संस्थाओं की दिल खोल कर सहायता की है। मि० डी० डी० पुरी आर्य समाज नैरोबी के बड़े पुरुषार्थी कार्यकर्त्ता हैं। सारे मुख्य २ सामाजिक काम आप के ही घोर परिश्रम से हुए हैं। वर्षों ही आप पुत्री पाठशाला नैरोबी के मैनेजर रहे आप Government India Advisory Education Board के मेम्बर हैं तथा आ० प्र० नि० सभा के प्रधान हैं। आप की सहायता से समाज का भविष्य बड़ा उज्ज्वल प्रतीत होता है।

आर्य समाज लुगाज़ी, (पृष्ठ ११७-नं० १२) यहाँ का मन्दिर सेठ नान जी कालीदास मेहता कार्यकर्त्ता प्रधान आ० प्र० नि० सभा ने १५०००) रु० की लागत से बनवा दिया

है। इसी के साथ बड़ी भारी लाइब्रेरी है जो आप के मैनेजर मि० पुरुषोत्तम वी० मेहता की स्मृति में बनी है सेठ जी की तरफ़ से एक औषधालय भी जारी है। एक दोकान से बढ़ते २ यह अच्छा नगर बन गया है, यथार्थ रूप में इसका नाम नानजी नगर या आर्य नगर होना चाहिए।

आर्य समाज जिंजा:—(पृष्ठ ११७, नं० ११) पूर्वीय यूगंडा की राजधानी झील विक्टोरिया ननजा के किनारे पर रिपन फाल के निकट बड़ा सुन्दर रमणीक स्थान है। यहाँ सब उपदेशक आदि ठहरते हैं जो इस प्रान्त में आते हैं। सेठ नानजी कालीदास, मि० दयाल जी भाई, वी० देसाई एम० ए० प्रिंसिपल गवर्नमेंट इण्डियन स्कूल पर ही अब इसकी सारी सरगर्मियाँ निर्भर हैं। जिंजा प्रसिद्ध व्यापारिक नगर है हिंदू गुजराती सौदागर धर्म कार्यों में बड़ी उदारतापूर्ण दान देने के लिए प्रसिद्ध हैं। आशा है यह समाज आजकल के मन्दे के दिन गुज़रते ही सामाजिक सुधार तथा विद्या प्रचार का भारी काम कर दिखायेगा (पृष्ठ ११६, नं० ९) मि० बृजलाल जी कमल मन्त्री हैं। आप के भारी पुरुषार्थ, और मि० सुन्दरसिंहजी तथा सेठ नानजी कालीदास जी की उदारता तथा दान-वीरता से समाज मन्दिर के लिए ज़मीन मिली, और शानदार मन्दिर भी बन गया है। यह नैरोबी को छोड़ कर सबसे शानदार मन्दिर है।

आर्य समाज लुम्बवा:—यह बड़ा रेलवे स्टेशन होने से आशा थी कि यह स्थान सामाजिक काम का बड़ा केन्द्र बनेगा, परन्तु भारी तख़फ़ीफ़ होने से बहुत से क्लर्क चले गये हैं। मि० आर० एल० कोहली मुख्य कार्यकर्त्ता हैं।

आर्य समाज मबाली:—(पृष्ठ ११६—नं० ७) "विदेशों में आर्य समाज" नामक पुस्तक के आधार पर लिखा था कि मन्दिर बना हुआ है, परन्तु यह असत्य है। समाज का काम एक पटेल एडवोकेट महोदय के कार्यालय में होता है। मि० शङ्कर भाई पटेल (Law clerk) समाज के काम में बहुत दिलचस्पी लेते हैं।

आर्य समाज ट्रोरू, (पृष्ठ ११७—नं० १३):—यह समाज विशेष रूप से रेलवे स्टाफ़ की सेवा का केन्द्र है। म० रामलाल जी स्टेशन मास्टर, सोहनलाल महेन्द्र तथा विद्यासागर जी 'सूद' मुख्य कार्यकर्त्ता हैं।

आर्य्य समाज टबोरा, (पृष्ठ ११७ नं० १४), समाज के लिए १५००० शि० की लागत से छोटा सा परन्तु सुन्दर तथा आवश्यकतानुकूल भवन बन गया है।

आर्य्य समाज मम्बासा (पृष्ठ ११६, नं० ८) समाज का मन्दिर अपना न था। हर्ष का विषय है कि इसके लिए भूमि ले ली गई है इसमें भी सेठ नानजी कालीदास जी की दानवीरता का ही हाथ है। आशा की जाती है कि आर्य्य पुरुष इसके लिए घोर परिश्रम करेंगे और शीघ्र ही यह समाज बन्दरगाह पर शानदार मन्दिर का मालिक होगा।

आर्य्य समाज कमालिया [पंजाब]

प्रधान डा० सत्यपाल जी, मन्त्री मतुराम जी, मेम्बर ४०, मासिक चन्दा २०) रु०, मन्दिर ५०००, २ अन्य मकान ४०००, भूमि १००००, नकद १३९०, सर्वयोग २०३९०। पुस्तक संख्या १००० जिनका मूल्य ६००) रु० है।

कमालिया आ० पु० पाठशाला, प्रधान डा० सत्यपाल जी, मन्त्री मतुराम जी, मैनेजर श्री मा० लक्ष्मण जी, संख्या ३८२। पढ़ाई ८ श्रेणी पंजाब यूनिवर्सिटी तक, धर्म-शिक्षा आर्य्य-शिक्षा समिति के अनुसार। सरमाया ११२९७, मकान ५००००, योग ६१२९७। १२ अध्यापिका, २६०) रु० मासिक व्यय।

गुरुकुल कमालिया, (पृष्ठ १९०, नं० ११) प्रधान लक्ष्मीचन्द जी, मन्त्री सुखदयाल जी। ८५ ब्रह्मचारी, स्पेशल श्रेणी में पंजाब यूनिवर्सिटी की तालीम दी जाती है। मकान मकान ३५०००, अध्यापक १०, अन्य कर्मचारी ५।

आर्य्य समाज भलवाल [सरगोधा]

प्रधान, मंगलसैन जी। मेम्बर, ७०। चन्दा १५) रु०, मन्दिर २०००० का। पुस्कत १५० जिनका मूल्य ३५० है।

आर्य्य समाज बंगा (जालंधर)

प्रधान, नत्थूराम जी, मन्त्री, म० जगन्नाथ जी वकील। मेम्बर, १५। मा० चन्दा ५) रुपया। मन्दिर, ३०००।

आर्य्य समाज श्यामचौरासी (होशियारपुर)

प्रधान, लाला नौवतराय जी। मेम्बर, १२। चन्दा, २) रुपया। मन्दिर, ४०००। स्त्री समाज, २००० नकद ५००० कुल ११०००। पुस्तक, ८७।

अछूत पाठशाल शा०चौ० मैनेजर लाला गुरुवरुशराय जी। १३ विद्यार्थी समाज मन्दिर में पढ़ते हैं। ग्राम प्रचार के लिये उपदेशक हैं।

आर्य्य समाज ऊना (होशियारपुर)

प्रधान, रामदित्तामल जी। मेम्बर, २५। मा० च०, ७) रु०। मन्दिर, १५०००। भूमि ९०००, कुल २४०००। ३६ पुस्तक १६४) रु० के। १९११ से कायम है। डी० ए० वी० हाईस्कूल के प्रधान, रामदित्तामल जी। मन्त्री, कृपाराम जी। मैनेजर, राजाराम जी। १७५ विद्यार्थी, ११ अध्यापक। मकान सरमाया ४०००, पं० वजीरनन्द जी बी० ए०।

दयानन्द वैदिक प्राइमरी स्कूल, ६४ विद्यार्थी २ अध्यापक। आ० स० बनभुचरा—मियांवाली—प्रधान ला० अमीरचन्दजी, मन्त्री शिवरामदासजी, मैम्बर १५, मा० च० ३।।) रु० मंदिर ४०००, एक दो का, २२५ पुस्तक मूल्य २००) रु०

आर्य्य कन्या पाठशाला रा० सा० तेजभान जी प्रधान र० स० तेजभान जी, मैनेजर अमीचन्दजी। ९४ संख्या ६५०) रु० सरमाया, समाज मन्दिर।

आ० स० डिंगा [गुजरात]

मन्त्री प्र० पं० भक्तरामजी, मं० रजाराम जयदेवजी, मकान २००००, पुत्री पाठशाला। ०००, नकद ५०) रु० पुस्तक ५००, मूल्य ८००) रु०

वैदिक कन्य पाठशाला अमृतसर, प्रधान पं० जगन्नाथ जी नि० र० मन्त्री बाबू केशवचन्दजी ४५० कन्या, मकान २०००० का आ० स० सिलावाली, पृष्ठ ८२, समधन की जगह रामधन है।

गृहस्थ में सच्चा सुख लाने वाली बहु मूल्य पुस्तकें।

दम्पत्ति मित्र (४० चित्रों सहित) इस पुस्तक में ऐसे सुगम तथा दुःख न देने वाले साइंटीफिक तरीके बताये हैं जिनसे खास हालात (बीमारी अथवा ग़रीबी आदि) में गर्भ ठहरने को रोका जा सके और अधिक सन्तान दुःख का कारण न हो यह पुस्तक पुराने वैद्यों तथा डाक्टरों के अनुभवों का निचोड़ है, इस विषय पर आज तक ऐसी सर्वाङ्ग-पूर्ण पुस्तक नहीं लिखी गई। मूल्य हिन्दी ३।।)रु० उर्दू २) रु०

विवाहितप्रेम:—प्रत्येक विवाहित स्त्री पुरुष को इसका स्वाध्याय करना चाहिये काम कला पर योरुप के सबसे प्रसिद्ध डाक्टर की पुस्तक के आधार पर लिखी गई है और काम शास्त्र विषय में इससे बेहतर और दूसरी पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई इसके पढ़ने से मालूम हो जायगा कि आप आज तक कितनी ग़लतियां करते रहे हैं। मूल्य हिन्दी १।।) उर्दू केवल १।)

आदर्श पति:—इस खूबसूरत और शानदार पुस्तक में वह रहस्य पूर्ण बातें बताई गई हैं जिनको जान लेने से वाक़ई गृहस्थ स्वर्ग बन सकता है और जिनकी अनभिज्ञता से हम नर्क भोग रहे हैं परन्तु कुछ मनुष्यों का ऐसा विचार है कि हमें गृहस्थ सम्बन्धी सब बातों का ज्ञान है यह ग़लत है वह इस पुस्तक को पढ़कर अनुभव करेंगे कि सचमुच हम इस रहस्य पूर्ण ज्ञान से अनभिज्ञ रहे हैं। मूल्य ।।)

आदर्श पत्नी:—इसमें स्त्रियों के लिये उन गुप्त भेदों को खोला गया है जिन को जानकर वह सचमुच गृहस्थ को स्वर्ग बना सकती है पति, सास, ननद, देवर, इत्यादि सम्बन्धियों से किस प्रकार बर्ताव करना चाहिये, अपने पति को किस प्रकार प्रसन्न करना चाहिए-यह ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान सब स्त्रियों के लिये अत्यावश्यक है यह पुस्तक प्रत्येक कन्या को दहेज में देनी चाहिये। मूल्य ।।।)

अञ्जना हनुमान:—वीर हनुमान और वीराङ्गना अञ्जना का जीवन चरित्र स्त्री और पुरुष दोनों के लिये शिक्षादायक है यह पुस्तक बिल्कुल नये ढङ्ग पर तैयार कराई गई है इसमें पौराणिक मन घड़न्त और कपोल कलपित बातें नहीं हैं। मूल्य सचित्र केवल १।।)

स्त्री शिक्षा:—स्त्री शिक्षा पर अपने ढङ्ग की एक मात्र पुस्तक है, ऐडीटर रोज़ाना "प्रताप" लिखते हैं "पुस्तक इस योग्य है कि हर हिन्दी पढ़ी लिखी स्त्रियों के हाथ में पहुँचा दी जावे क्योंकि उनके लिये बहुत उपयोगी पुस्तक है।" दूसरा संस्करण मूल्य ।।।)

शिशु पालन:—हज़ारों बच्चे माताओं की नासमझी, बे अक़ली और अज्ञा-नता के कारण मौत से पहलेही काल का ग्रास बन जाते हैं। सबसे मुख्य कारण इनके पालन पोषण में असावधानता है, यह पुस्तक बालकों को नीरोग तथा हृष्ट पुष्ट बनाने के अनेक भेदों से भरी पड़ी है लड़कियों को नार्मल क्लास में कोर्स के तौर पर पढ़ाई जाती है। मूल्य सचित्र और सजिल्द पुस्तक केवल १) रु०

दो सहेलियां:—दो कन्याओं में रोचक वाद, विवाद जिससे भारत की स्त्रियों में काफ़ी परिवर्तन पैदा हो सकता है पाठशालाओं में पुस्तक कोर्स के ढङ्ग पर पढ़ाई जानी चाहिये। मूल्य हिन्दी ≡)

मिलने का पता:—

म० राजपाल एण्ड सन्स प्रोप्राइटर्स,

आर्य्य पुस्तकालय, सरस्वती आश्रम, लाहौर।

नवयुवकों को धर्म, सदाचार तथा पवित्रता के

सांचे में ढालने वाली पुस्तकें

राजपूती खून (उर्दू):—राजपूताने की वीर देवियों के शौर्य धैर्य तथा साहस का अन्दाज़ा वही लगा सकते हैं जिन्होंने टाड राजस्थानका पाठ किया हो, परन्तु इतनी बड़ी पुस्तक प्रत्येक नहीं पढ़ सकता, इसलिये हमने राजस्थानकी कुछबहादुर, पतिव्रतादेशभक्तदेवियों के कारनामे जमा किये हैं, किताब ऐसे ढङ्ग पर लिखी गई है कि पढ़कर दिल खुश हो जाता है। मूल्य केवल ।-)

प्यारा धर्म:—छोटी श्रेणियों के बालक बड़ी २ धर्म पुस्तकों के पढ़ने में असमर्थ रहने के कारण सदाचार सम्बन्धी बातों का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते, यह छोटी सी पुस्तक इस न्यूनताको पूरा करेगी इस में बालकों की बुद्धि बढ़ाने, आचार सुधारने के अलावा आर्य सिद्धान्तों का ज्ञान भी हो जाता है, आर्य एजूकेशन कमेटी के सेकरेटरी ने आर्य स्कूलों में इस पुस्तक को जारी करने के लिये जबरदस्त सिफारिश की है। मूल्य पुस्तक उर्दू ।≈)

हमारे स्वामी (हिन्दी):—अर्थात् स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र, किसी को कट्टर आर्य समाजी बनाना हो तो स्वामी जी का जीवनचरित्र पढ़ा दो, किताब इतनी दिलचस्प है कि बच्चे से बूढ़े तक शौक़ से पढ़ते हैं। मूल्य केवल ।≈) आने।

प्यारे ऋषि की प्यारी बातें (उर्दू):—ऋषि दयानन्द का सचित्र दिल लुभाने वाला, शिक्षा दायक जीवन चरित्र ख़ास कर बच्चों के लिये तय्यार किया गया है। मूल्य केवल ।≈) आने।

धर्मकी पहली व दूसरी पुस्तक:—आजकल के स्कूलों में अक्सर धार्मिक शिक्षा की न्यूनता होने के कारण से हमारी सन्तान उत्तम एवं शुद्ध विचारों से बिलकुल कोरी रहती है इस बात को लक्ष्य रखते हुए यह धर्म की पुस्तक तय्यार की गई है, प्रत्येक गृह में इसकी एक २ प्रति तो अवश्य होनी चाहिये यह तीन भागों में विभक्त है इसमें बड़े जरूरी विषय क्रमबद्ध दर्ज किये हैं। मूल्य प्रथम भाग ≈), द्वितीय ≡), तृतीय ।) पुस्तक हिन्दी में हैं।

कुछ करके दिखा कुछ बनके दिखा (नवयुवकों के लिये) अंग्रेजी इल्मी पुस्तक का उर्दू अनुवाद। मूल्य उर्दू ।)॥

नवयुवकों के लिये तरक्की और इक़बाल के इशारे—मूल्य उर्दू ।≈) आने।

आर्डर इत्यादि का पता:—

मैनेजर—आर्य पुस्तकालय सरस्वती आश्रम लाहौर